गोर्की की श्रेष्ठ कहानियां

लेखक :
मैक्सिम गोर्की

प्रभात प्रकाशन, मथुरा.

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा.

★

अनुवादक :
राजनाथ एम. ए.

★

अगस्त १९५६

★

★

मूल्य .
तीन रुपया

★

मुद्रक .
सुभाष प्रेस,
मथुरा।

गालवा

समुद्र हँस रहा था।

हल्की गर्म हवा के झोंकों से रह-रह कर काँप उठता और छोटी-छोटी लहरों से भर जाता जिन पर सूरज की किरणें चकाचौंध उत्पन्न कर देने वाली चमक से प्रतिबिम्बित हो रही थीं। वह अपनी हजारों रुपहली मुस्कानों से नीले आकाश को देख कर मुस्करा रहा था। समुद्र और आकाश के बीच फैला हुआ व्यवधान समुद्र की उठती हुई लहरों के मधुर संगीत से भर उठता था, जब वे लहरें एक दूसरे के पीछे भागती हुई तट पर खड़े हुए पहाड़ के ढलुवाँ भाग की ओर चली जातीं। छींटे उछालती हुई लहरें और सूरज की चमक सहस्रों छोटी छोटी लहरियों में प्रतिबिम्बित होकर निरन्तर होने वाली शान्त-गति में डूब जातीं—उल्लास और प्रसन्नता से भरी हुईं। सूर्य प्रसन्न था क्योंकि वह चमक रहा था और समुद्र भी-क्योंकि वह सूर्य की उल्लास से परिपूर्ण चमक को प्रतिबिम्बित कर रहा था।

हवा प्यार से समुद्र की मखमली छाती को थपथपा रही थी, सूरज अपनी जलती हुई किरणों से उसे गर्मी पहुँचा रहा था और समुद्र उस स्नेह-पूर्ण दुलार में पड़ा हुआ निद्रा-मग्न होकर गहरी साँसें लेता गर्म हवा में एक नमकीनी सुगन्धि भर रहा था। हरी लहरें पीले किनारे पर टकरा कर टूट जातीं और उसे सफेद झागों से भर देतीं जो गर्म बालू पर हल्की साँस लेता हुआ पिघलता रहता और उसे सदैव गीला रखता।

यह लम्बा, संकरा, ढलुवाँ पहाड़ का किनारा एक विशाल ऊँची मीनार की तरह दिखाई दे रहा था जो किनारे से समुद्र में गिर पड़ी हो।

उसकी पतली चोटियाँ चमकते हुए जल के समीप विस्तार से कट गई थीं। अधोभाग उस सुदूरवर्ती धुन्ध में खो गया था जो मुख्य भूमि भाग को छिपाए हुए थी। जहाँ से हवा के द्वारा लाई हुई दूसरी तरह की एक ऐसी गन्ध आ रही थी जो यहाँ निर्मल समुद्र के ऊपर और आकाश के चमकीले नीले गुम्बज के नीचे, अजीब सी और दुखदायी प्रतीत हो रही थी।

तट पर, जहाँ मछली तौलने के काँटे छितरे पड़े थे, एक मछली पकड़ने वाला जाल जमीन पर गड़े हुए लट्ठों पर टँगा हुआ था और जमीन पर मकड़ी के जाल जैसी छायायें डाल रहा था।

एक छोटी और बहुत सी बड़ी नावें एक कतार में पड़ी हुई थीं। लहरें किनारे की ओर दौड़ती हुई जैसे उनसे कुछ कह जाती थीं। नाव के काँटे, पतवारें, टोकनियाँ और पीपे इधर-उधर छितराए पड़े थे और उनके बीच में पेड़ की टहनियों और सरकन्डों से बनी हुई एक झोंपड़ी खड़ी थी, जो बड़ी-बड़ी चटाइयों द्वारा छाई गई थी। दरवाजे पर, दो गाँठदार टेढ़ी लकड़ियों पर उपर की ओर तले किए हुई, नमदे के जूतों का एक जोड़ा लटक रहा था। इस अस्तव्यस्तता के ऊपर एक लम्बा लट्ठा खड़ा हुआ था जिसके ऊपरी सिरे पर बँधा लाल कपड़ा हवा में फड़फड़ा रहा था।

एक नाव की छाया में, तट का चौकीदार वासिली लेगोस्टयेव लेटा हुआ था। यह स्थान ग्रेबेनश्चिकोव नामक मछली पकड़ने के स्थान की बाहरी चौकी पर स्थित था। वासिली पेट के बल लेटा हुआ हथेलियों पर अपनी ठोड़ी जमाए दूर समुद्र में जमीन की धुंधली सी दिखाई देने वाली पट्टी की ओर देख रहा था। उसकी निगाहें पानी पर एक छोटी सी काली चीज पर जमी हुई थीं। और उसे यह देखकर अपार प्रसन्नता हुई कि वह वस्तु जैसे २ नजदीक आती जा रही है उसका आकार बढ़ता जा रहा है।

उसने समुद्र में चमकती हुई सूरज की किरणों से अपने को बचाने के लिये हाथों की छाया करते हुए आँखों को सिकोड़ कर देखा और सन्तोष से मुस्करा उठा—मालवा आ रही थी। वह आयेगी और हँसेगी जिससे उसकी छातियाँ, मधुर लुभाने वाले आकर्षक ढंग से हिलने लगेंगी। वह उसे अपनी

कोमल, पुष्ट, गोल भुजाओं से आलिंगन में बाँध लेगी और जोर से चुम्बन करते हुए उसे बधाई देगी जिसे सुनकर समुद्री चिड़ियाँ भयभीत हो उठेंगी। फिर वह उसे तट पर होने वाली हलचलों का समाचार सुनायेगी। साथ २ वे दोनों बढ़िया खाना बनाएंगे, वोदका पीएँगे और बालू पर लेट कर बातें करते हुए एक दूसरे को प्यार करेंगे और फिर जब शाम की छायायें लम्बी हो उठेंगी केतली चढ़ा देंगे, जायकेदार बिस्कुटों के साथ चाय पियेंगे और फिर सोने चले जायेंगे। हर इतवार और प्रत्येक छुट्टी वाले दिन वहाँ यही होता था। तड़के ही वह उसे हमेशा की तरह किनारे पर ले जायगा—शान्त, चिकने समुद्र के पार ऊषा के उज्ज्वल प्रकाश में वह नाव के पिछले हिस्से में बैठी हुई झपकियाँ लेती रहेगी और वह नाव खेते हुए उसे देखता रहेगा। ऐसे अवसरों पर वह कितनी विचित्र दिखाई देती थी—विचित्र परन्तु आकर्षक, प्यार करने लायक एक स्वस्थ मोटी ताजी बिल्ली की तरह। सम्भव है वह अपनी सीट से नीचे सरक कर नाव के पेंदे में लेटकर गहरी नींद में सो जायगी। वह अक्सर ऐसा करती थी·······।

उस दिन समुद्री चिड़ियां भी गर्मी से व्याकुल हो उठी थीं। कुछ बालू पर एक कतार में अपने डैने लटकाए और चोंचें खोले बैठी हुई थीं। कुछ लहरों पर चुपचाप अपनी स्वाभाविक लालची आदतों को काबू में रख, धीरे धीरे तैर रही थीं।

वासिली को ऐसा लगा कि नाव में मालवा के पास कोई और बैठा है। क्या सर्योझका ने पुनः उसे जाल में फँसा लिया है? वासिली ने बालू पर गहरी करवट ली, उठकर बैठ गया और आँखों पर हाथ की छाया करते हुए समुद्र की तरफ चिन्तित होकर देखने लगा कि नाव में दूसरा और कौन है। मालवा पिछले हिस्से में बैठी हुई पहिए को घुमा रही थी। पतवार चलाने वाला सर्योझका नहीं था। उसे खेने का अभ्यास नहीं था। अगर सर्योझका उसके साथ होता तो मालवा पहिया नहीं घुमाती।

"एहो!" वासिली अधीर होकर चिल्लाया।

इस आवाज से चौंककर बालू पर बैठी हुई समुद्री चिड़ियाँ चौकन्नी होकर खड़ी होगईं।

"ए-हो-ओ!" नाव से मालवा की गूँजती हुई आवाज आई।

"तुम्हारे साथ वह कौन है?"

जवाब में एक ही हँसी सुनाई दी।

"खूबसूरत बला!" नफरत से थूकते हुए—वासिली साँस रोकक बड़बड़ाया।

वह यह जानने के लिए मरा जा रहा था कि मालवा के साथ नाव में कौन है। सिगरेट बनाते हुए वह गौर से पतवार चलाने वाले की गर्दन और पीठ को देखने लगा। उसे पतवारों की छपछपाहट की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। उसके पैरों के नीचे बालू खिसकने लगी।

"वह तुम्हारे साथ कौन है?" वह चीखा, जब उसने मालवा के सुन्दर चेहरे पर एक विचित्र और अपरिचित मुस्कराहट देखी।

"इन्तजार करो और देखो!" वह हँसती हुई चिल्लाई।

पतवार चलाने वाले ने किनारे की ओर अपना चेहरा मोड़ा और वासिली को देखकर हँस पड़ा।

चौकीदार घुर्राया और यह सोचने की कोशिश करने लगा कि यह अजनबी कौन हो सकता है। उसका चेहरा तो परिचित सा लग रहा है।

"जोर से चलाओ!" मालवा ने आज्ञा दी।

लहरें नाव को आधी के लगभग किनारे पर खींच लाईं। नाव एक तरफ को झुकी और बालू में धंस गई। लहरें वापस समुद्र को लौट गईं। पतवार चलाने वाला नाव से बाहर कूदा और बोला:

"हलो, फादर!"

"याकोव!" वासिली घुटती हुई आवाज में बोला, जिसमें सन्तोष के स्थान पर आश्चर्य की ध्वनि अधिक थी। दोनों ने एक दूसरे का आलिङ्गन और चुम्बन किया—तीन बार—होठों और गालों पर। वासिली के चेहरे के भावों में खुशी और परेशानी दोनों की झलक थी।

"........मैंने देखा और देखता चला गया......और मेरे हृदय में झनझनी सी उठने लगी। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह क्या है............ अच्छा, तो तुम थे? यह कौन सोच सकता था? पहले मैंने सोचा कि यह सयेफ्किा है परन्तु फिर मैंने देखा कि वह नहीं है। और वह तुम निकले!"

कहते हुए वासिली ने एक हाथ से अपनी दाढ़ी थपथपाई और दूसरे से इशारे करने लगा। वह मालवा को देखने के लिए मरा जा रहा था परन्तु उसके बेटे की हँसती हुई आँखें उसकी ओर घूमीं और उनकी चमक ने उसे सन्देह में डाल दिया। उसका वह सन्तोष, जो इतने सुन्दर और स्वस्थ लड़के को अपने बेटे की शकल में पाकर उसे हुआ था अपनी स्त्री की उपस्थिति से उत्पन्न हुई बेचैनी से नष्ट हो गया। वह याकोव के सामने खड़ा एक पैर से दूसरे पैर पर भार देता हुआ, बिना जवाब का इन्तज़ार किए उससे सवाल पर सवाल पूछता चला जा रहा था। उस समय सब चीज़ें जैसे उसके दिमाग में उलट-पलट हो रही थीं, जब उसने मालवा को हँसते हुए मजाक के स्वर में कहते सुना:

"वहाँ खुशी से नांचते हुए मत खड़े रहो। उसे झोंपड़ी में ले जाकर कुछ खिलाओ पिलाओ!" वह उसकी ओर मुड़ा। मालवा के होठों पर एक चिढ़ाने वाली मुस्कान खेल रही थी। वासिली ने उसे इससे पहले इस तरह मुस्कराते कभी नहीं देखा था। उसका सारा शरीर भी जो गोल-मटोल, कोमल और हमेशा की तरह ताज़ा था, कुछ दूसरी तरह का दिखाई दे रहा था। वह बड़ी अजीब सी लग रही थी। अपने सफेद दाँतों से तरबूज के बीज कुटकते हुए उसने अपनी कंजी आँखें पिता से हटा कर बेटे पर जमा दीं। याकोव उन दोनों की तरफ मुस्कराता हुआ बारी-बारी से देख रहा था। और बहुत देर तक, जो वासिली को अखर रहा था, वे तीनों खामोश खड़े रहे।

"अभी लो, एक मिनट में!" वासिली ने अचानक झोंपड़ी की ओर जाते हुए कहा। "तुम लोग धूप में से हट जाओ तब तक मैं जाकर थोड़ा

सा पानी ले आऊँ। हम लोग कुछ शोरवा बनाएँगे ...... मैं तुम्हें ऐसा शोरवा खिलाऊँगा याकोव, जैसा कि तुमने पहले कभी भी नहीं खाया होगा। तब तक तुम दोनों आराम करलो। मैं एक मिनट में अभी आया।"

उसने झोंपड़ी के पास जमीन से एक केतली उठाई, तेजी से जाल की ओर बढ़ा और शीघ्र ही उसकी भूरी पर्तों में ओझल होगया।

मालवा और याकोव दोनों झोंपड़ी की ओर चले।

"अब तुम यहां हो, मेरे सुन्दर बच्चे! मैं तुम्हें तुम्हारे बाप के पास ले आई हूँ!" मालवा ने बगल में याकोव के सशक्त शरीर, छोटी सी घुँघराली भूरी दाढ़ी से भरे हुए चेहरे और चमकती हुई आँखों की तरफ देखते हुए कहा।

"हाँ, हम लोग आ गए" उत्सुकतापूर्वक उसकी ओर चेहरा घुमाते हुए उसने जवाब दिया—"यह कितना अच्छा है। और समुद्र! यह सुन्दर नहीं है!"

"हाँ, यह एक चौड़ा सागर है ...अच्छा, क्या तुम्हारे बाप की उमर ज्यादा लगने लगी है।"

"नहीं, बहुत ज्यादा तो नहीं। मैं तो उन्हें और भी ज्यादा भूरे बालों वाला देखने की उम्मीद कर रहा था। अभी तो उनके कुछ ही बाल सफेद हुए हैं .... और वह अब भी कितने स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई देते हैं।"

"तुम कहते थे, तुम्हें उन्हें देखे हुए कितने दिन होगए?"

"पाँच साल के करीब, मैं सोचता हूँ ...... जब से कि उन्होंने घर छोड़ा है। मैं तब सत्रहवीं में चल रहा था..... ।"

वे झोंपड़ी में घुसे। अन्दर घुटनी थी। जमीन पर पड़े हुए सन के बोरों से मछली की गन्ध आ रही थी। वे बैठ गए। याकोव एक मोटे पेड़ तने पर बैठा और मालवा एक बोरों के ढेर पर। उनके बीच में एक पीपा ... हुआ था जिसका ऊपर की ओर उलटा हुआ पेंदा मेज का काम देता ... । वे चुपचाप एक दूसरे की ओर देखते हुए बैठे रहे। "अच्छा तो तुम

यहाँ काम करना चाहते हो"—मालवा ने चुप्पी भङ्ग करते हुए कहा।

"हाँ ··मैं नहीं जानता''''अगर मुझे यहाँ कोई काम मिल जाय तो मैं पसन्द करूँगा।"

"तुम्हें यहाँ आसानी से काम मिल जायगा।" उसकी तरफ अपनी कंजी, प्रश्न सी पूछती, अधमुंदी आँखों से देखते हुए, विश्वासपूर्वक मालवा बोली।

याकोव ने उस स्त्री की तरफ से अपनी आँखें हटा लीं और अपनी कमीज की बाँह से माथे का पसीना पोंछा। अचानक वह हँस उठी।

"मेरा ख्याल है तुम्हारी माँ ने तुम्हारे बाप के लिए शुभ-कामनाएँ और संदेश अवश्य भेजा होगा," वह बोली। याकोव ने उसकी तरफ देखा, माथे पर बल डाले और कटुता से जवाब दिया :

"भेजा है · तुम क्यों पूछ रही हो?"

"ओह, वैसे ही!"

याकोव को वह हँसी अच्छी नहीं लगी—वह परेशान करने वाली थी। उसने उस औरत की तरफ से मुँह मोड़ लिया और अपनी माँ के द्वारा भेजे गए सन्देश को याद करने लगा।

उसकी माँ उसे गांव के बाहर तक छोड़ने आई थी। सरपत की बनी हुई एक दीवाल के सहारे खड़े होकर उसने जल्दी २ बोलते हुए और तेजी से अपनी सूखी आँखें झपकाते हुए कहा था :

"उससे कहना, याशा''' '' ·· ईश्वर के लिए उससे कहना कि वह फिर भी एक बाप है! · तुम्हारी माँ बिल्कुल अकेली है, उससे कहना'''''' वह पिछले पाँच वर्षों से बिल्कुल अकेली है। उससे कहना बुड्ढी होती जा रही है। ईश्वर के लिए उससे कहना, याशा! तुम्हारी माँ जल्दी ही बुड्ढी हो जायेगी''' और वह बिल्कुल अकेली है। सख्त मेहनत करती है। ईश्वर के लिए उससे यह कहना · '''।"

और अपने आँचल में मुँह छिपाकर चुपचाप रोने लगी थी।

याकोव को तब उसके लिए दुःख नहीं हुआ था परन्तु अब होने लगा।

उसने मालवा की ओर देखा और माथे पर वल डाल लिए।

"अच्छा, मैं आगया" वासिली बोला और एक हाथ में मछली और दूसरे में एक चाकू लिये हुए झोंपड़ी में घुसा। अपनी व्यग्रता से उसने छुटकारा पा लिया था—उसे अपने हृदय की गहराई में छिपाकर और अब उन दोनों की ओर शांत होकर देख रहा था परन्तु उसकी हरकतें उसकी बेचैनी को प्रकट कर रही थीं जो उसके लिए बिल्कुल नई बात थी।

"मैं जाकर पहले आग जला आऊँ फिर अन्दर आऊँगा। तब हम लोग देर तक खूब बातें करेंगे, क्यों याकोव" उसने कहा।

इतना कह वह फिर झोंपड़ी में चला गया

मालवा बराबर तरबूज के बीज कुटकती रही और बेतकल्लुफी से याकोव को घूरती रही। परन्तु याकोव ने, यद्यपि वह उनकी तरफ देखने के लिये तरस रहा था, कोशिश करके अपनी आँखें हटा लीं।

कुछ समय बाद यह खामोशी उसे अखरने लगी और वह बोला:

"ओह, मैं अपना थैला तो नाव में ही भूल आया, जाकर ले आऊँ।"

वह आहिस्ते से उठा और झोंपड़ी के बाहर आया। उसी के फौरन बाद वासिली लौटा। मालवा की ओर झुकते हुये उसने गुस्से और जल्दी से पूछा:

"तुम उसके साथ क्यों आईं? मैं तुम्हारे बारे में उससे क्या कहूँगा? तुम मेरी कौन लगती हो?

"मैं आगई और इस विषय में इतना ही काफी है।" मालवा ने कटुतापूर्वक उत्तर दिया।

"ओह, तुम .....बेवकूफ औरत! अब मैं क्या करूँ? उससे साफ साफ कह दूँ? इस बात को बिल्कुल जाहिर कर दूँ? घर पर मेरी स्त्री है। उसकी माँ .....तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए थी।"

"इससे मेरा क्या सम्बन्ध है? क्या तुम समझते हो मैं उससे डरती हूँ या तुमसे डरती हूँ?" मालवा ने अपनी कंजी आँखों को सिकोड़ते हुए

कुढ़कर पूछा—"तुम उसके सामने कूदते हुए कितने अजीब दिखाई दे रहे थे ! मैं मुश्किल से अपनी हंसी रोक सकी ।"

"यह तुम्हें अजीब दिखाई दे सकता है ! परन्तु अब मुझे क्या करना चाहिए ?"

"तुम्हें यह बात पहले सोच लेनी चाहिए थी ।"

"मैं इस बात को कैसे जान सकता था कि समुद्र उसे इस तरह इस किनारे पर फेंक देगा ?"

पैरों के नीचे बालू के खिसकने की आवाज ने उन्हें याकोव के आने की सूचना दे दी और उन्होंने बातें बन्द करदीं । याकोव एक छोटा-सा झोला लाया और उसे एक कोने में फेंककर उस औरत की तरफ गुस्से से कनखियों द्वारा देखने लगा ।

वह आराम से खरबूज के बीज कुटकती रही । वासिली पेड़ के तने पर बैठ गया और हथेलियों से अपने घुटने मलते हुए मुस्करा कर बोला—

"अच्छा, तो तुम यहां आ गए............तुम्हें आने का ख्याल कैसे आया !"

"ओह, वैसे ही...हम लोगों ने तुमको लिखा था ...।"

"कब ! मुझे खत कभी नहीं मिला ।"

"क्या ऐसी बात है ! परन्तु हम लोगों ने लिखा था... ।"

"मुमकिन है खत किसी दूसरी जगह पहुंच गया हो" निराशा के स्वर में वासिली बोला—"शैतान ने गुम कर दिया होगा । तुम्हारा क्या ख्याल है । जब तुम्हें उसकी जरूरत होती है वह रास्ता भूल जाता है ।"

"अच्छा, तो तुम्हें यह नहीं मालूम कि घर पर क्या घटना घटी है" याकोव ने अविश्वासपूर्वक अपने बाप की ओर देखते हुए पूछा ।

"मुझे कैसे मालूम होता ! मुझे तुम्हारा खत ही नहीं मिला ।"

याकोव ने तब उसे बताया कि उनका घोड़ा मर गया है, कि उनके गल्ले का भंडार फरवरी में ही खत्म हो गया था, कि उसे कोई काम नहीं मिला है, कि घास खत्म हो गई है और गाय मरने को हो रही है । उन

लोगों ने किसी तरह अप्रैल तक तो दिन काट लिए और तब यह तय किया कि वह, याकोव, अपने पिता के पास जाय, खेत बोने के बाद तीन महीने के लिए, जिससे पैसा पैदा कर सके। उन्होंने पिता को अपने इस निश्चय के बारे में लिख दिया था और तब उन्होंने तीन भेड़ें बेचकर कुछ अनाज और घास मोल ली और ·· ·· ···· अब वह यहाँ था।

"अच्छा, तो यह बात है, क्यों!" वासिली बोला—"हूँ···लेकिन यह कैसे हुआ? मैंने तुम्हें कुछ रुपये भेजे थे, भेजे थे न?"

"वे ज्यादा नहीं थे, ज्यादा थे क्या? हमने घर की मरम्मत कराई ·· ·····मारिया की शादी की जिसमें हमें काफी खर्च करना पड़ा ···· ···· ·· एक हल खरीदा ····· क्यों, तुम्हें घर छोड़े हुए पांच साल हो गए हैं!"

"हां–आं–आं! यह बात तो है। रुपये काफी नहीं थे, तुम कहते हो? ·· ··· ए! शोरवा उफन रहा है!"

यह कहते हुए वासिली झोंपड़ी के बाहर भागा।

आग के सामने, जिस पर शोरवा उबल रहा था, पालथी मार कर बैठते हुए वासिली ने शून्य चित्त से शोरवे को चलाया और उसके झाग को उतार कर आग में डाल दिया। वह गहरे विचारों में खो गया था। याकोव ने जो कुछ उससे कहा था उससे वह अधिक प्रभावित नहीं हुआ था लेकिन उसकी बातों ने उसके मन में अपनी स्त्री और बेटे के प्रति कठोरता के भाव उत्पन्न कर दिये थे। उन रुपयों के बावजूद भी जो उसने इन पांच वर्षों में भेजे थे उन्होंने खेतों को बर्बाद कर दिया था। अगर मालवा यहाँ न होती तो वह याकोव को बता देता। बाप की बिना इजाजत के यहाँ आने की अक्ल तो उसमें आ गई परन्तु खेतों को ठीक तरह से रखने की अक्ल नहीं आई। वे खेत जिनके बारे में वासिली ने यहाँ की आजाद और आरामदेह जिन्दगी में रहते हुये बहुत कम सोचा था, अचानक उसके दिमाग में एक बिना पेंदे के ऐसे गढ़े की शक्ल में उभर आए जिसमें वह पिछले पांच वर्षों से बराबर रुपये फेंकता रहा था—इस तरह जैसे वे फालतू हों, जिनका उसकी जिन्दगी में कोई उपयोग न हो। उसने चम्मच से शोरवे को चलाया और गहरी सांस ली।

"आ हा—आ !......" मैं कभी कभी अपने आप सोचता था—अब याकोव कैसा लगता होगा ?" बेटे ने खुशी से मुस्कराते हुए बाप की ओर देखा और इस मुस्कराहट से वासिली की हिम्मत बढ़ी।

"अच्छी औरत है, है न," क्यों उसने पूछा।

"इतनी बुरी तो नहीं है,"—आँखें झपकाते हुए याकोव ने धीरे से कहा।

"भाई मेरे, एक आदमी क्या कर सकता है," हाथ हिलाते हुए वासिली बोला—"पहले तो मैंने इसे बर्दाश्त किया परन्तु फिर मुझसे नहीं रहा गया। यह आदत है..... मैं एक शादीशुदा आदमी हूँ। और इसके अलावा वह मेरे कपड़े सीं देती है और दूसरे काम कर देती है। प्यारे, ओह प्यारे ! जिस तरह कि तुम मौत से नहीं बच सकते उसी तरह औरत से भी नहीं बच सकते।" उसने उत्तेजित होकर बात खत्म की।

"इससे मुझे क्या मतलब ?" याकोव ने कहा—"यह तुम्हारी अपनी बात है। इसका फैसला करने का हक मुझे नहीं है।"

लेकिन उसने अपने आप मन में कहा :

"तुम मुझे यह कहकर बहका नहीं सकते कि इस तरह की औरत बैठकर के तुम्हारी पतलून ठीक करेगी।"

"दूसरी बात यह है कि"—वासिली बोला, "मैं सिर्फ पैंतालीस साल का हूँ" मैं उस पर ज्यादा पैसा खर्च नहीं करता। वह मेरी स्त्री नहीं है।"

"दरअसल यही बात है" याकोव सहमत होकर बोला और अपने आप सोचा - "लेकिन वह तुम्हारी जेब पूरी तरह खाली कर देती है, मैं शर्त लगा सकता हूँ।"

मालवा वोदका की एक बोतल और कुछ बिस्कुट लेकर वापस आई। वे खाने के लिए बैठ गए और वे चुपचाप खाते रहे। मछली की हड्डियों को खूब जोर से आवाज करते हुए चूसते और फिर दरवाजे के पास बालू में फेंक देते। याकोव ने खूब खाया—भूखे की तरह। इससे मालवा को बड़ी खुशी हुई क्योंकि उसका चेहरा एक मधुर और कोमल मुस्कान से चमक उठा जब उसने याकोव को अपने चिकने गालों को फुला कर, मोटे

भीगे हुए होंठों से खूब मन लगाकर खाते हुए देखा। वासिली ने थोड़ा खाया हालाँकि उसने यह दिखाने की कोशिश की कि उसका ध्यान पूरी तरह से खाने की तरफ है। उसे ऐसा इसलिए करना पड़ा जिससे वह बिना किसी बाधा के बेटे और मालवा की आँख बचाकर, अगला कदम उठाने के बारे में चुपचाप सोच सके।

लहरों का कोमल सङ्गीत समुद्री चिड़ियों की कर्कश चीख से भंग हो रहा था। गर्मी अब कम हो गई थी और रह रह कर समुद्र की गन्ध से भरे हुए ठंडी हवा के झोंके झोंपड़ी में घुस आते थे।

उस मसालेदार शोरवा और वोदका के असर से याकोव की पलकें भारी हो उठी थीं। उसके होंठों पर एक छूछी मुस्कान खेलने लगी। वह खांसने और जम्हाई लेने लगा। उसने मालवा की ओर इस तरह देखा जिससे वासिली को मजबूर होकर उससे कहना पड़ा :

"जाओ और थोड़ा सो लो, याकोव, मेरे बच्चे। एक नींद ले लो जब तक कि चाय तैयार हो। तैयार होने पर हम तुम्हें जगा देंगे।

"हाँ.............. मैं सोचता हूँ सो लूँ," बोरों के एक ढेर पर गिरते हुए याकोव बोला—"लेकिन ...... तुम दोनों कहाँ जा रहे हो? हा-हा-हा!"

उस हँसी से परेशान होकर वासिली झोंपड़ी से बाहर निकल गया परन्तु मालवा ने होंठ सिकोड़े, भौंहें चढ़ाईं और याकोव के प्रश्न का उत्तर दिया।

"हम कहाँ जा रहे हैं यह पूछना तुम्हारा काम नहीं है! तुम क्या हो? तुम सिर्फ एक लड़के हो! तुम अभी इन चीजों को नहीं समझ सकते!"

"मैं क्या हूँ? अच्छा! तुम इन्तजार करो.........मैं तुम्हें दिखा दूँगा! तुम समझती हो कि तुम बहुत तेज.........," जैसे ही मालवा ने झोंपड़ी छोड़ी याकोव ने ऊँची आवाज में कहा।

वह कुछ देर तक बड़बड़ाता रहा और फिर अपने लाल चेहरे पर सन्तोष की शराबी की सी मुस्कान लेकर गहरी नींद में सो गया। वासिली ने जमीन में तीन लकड़ियाँ गाड़ उनके ऊपरी सिरों को आपस में बांधा

और उनके ऊपर एक बड़ा सा टाट का बोरा डाल दिया और इस तरह बनाई हुई उस छायादार जगह में सिर के नीचे हाथ का तकिया लगाकर लेट गया और आसमान की ओर देखने लगा। जब मालवा उसके पास रेत में आकर बैठ गई तो उसने उसकी ओर मुँह घुमा लिया। मालवा ने देखा कि वह असन्तुष्ट और व्यग्र हो रहा था।

"क्या बात है, क्या तुम्हें अपने बेटे को देखकर खुशी नहीं हुई ?" उसने हँसते हुए पूछा।

"वह यहाँ है""""मुझ पर हँसता हुआ"""""""" 'सिर्फ तुम्हारी वजह से !" वासिली घुर्राया।

"ओह ! मेरी वजह से ?" मालवा ने मूक आश्चर्य से पूछा।

"तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"दुष्ट, पुराने पापी ? अब तुम मुझ से क्या कराना चाहते हो ? मैं तुम्हारे पास आना बन्द कर दूँ ? अच्छी बात है, मैं नहीं आऊँगी।"

"तुम जादूगरनी तो नहीं हो ?" वासिली ने डाटते हुए कहा— "उँह ! तुम सब एक से हो। वह मेरे ऊपर हंस रहा है और तुम भी यही कर रही हो""""और फिर भी तुम मेरी सबसे गहरी दोस्त हो ! तुम मुझ पर किसलिए हँस रही हो—शैतान ?" इतना कह कर उसने मालवा की तरफ पीठ कर ली और चुप होगया।

अपने घुटनों को मिलाकर शरीर को हिलाते हु. [illegible] था अपनी कंजी आँखों से चमकते हुए समुद्र को देखने लगी। उसके चेहरे [illegible] मुस्कान छा रही थी-उन विजयी मुस्कानों में से एक, जो उन नारियों के प.. अत्यधिक परिमाण में रहती हैं जिन्हें अपने सौंदर्य की शक्ति का ज्ञान होता है।

एक पालदार नाव पानी पर तैरती हुई चली जा रही थी—एक विशाल, भद्दे, भूरे रङ्ग के पंखों वाली चिड़िया के समान। किनारे से यह बहुत दूर थी और समुद्र में भीतर आगे की ओर बढ़ती चली जा रही थी, जहाँ समुद्र और आकाश अनन्त की नीलिमा में घुल मिल जाते हैं।

"तुम कुछ कहती क्यों नहीं ?" वासिली बोला।

"मैं सोच रही हूँ," मालवा ने जवाब दिया।

"किसके बारे में?"

"ओह, किसी खास चीज के बारे में नहीं," भौंहें सिकोड़ते हुए मालवा ने जवाब दिया। कुछ देर चुप रह कर उसने आगे कहा, "तुम्हारा बेटा सुन्दर लड़का है।"

"इससे तुम्हें क्या करना है?" वासिली ने कुढ़ कर पूछा।

"बहुत कुछ!"

"सावधान रहना!" उसकी तरफ क्रोध और सन्देह के साथ देखते हुए वासिली ने कहा। "बेवकूफ मत बनो! मैं एक खामोश तबियत का आदमी हूँ परन्तु जब मुझे गुस्सा आता है तो मैं राक्षस बन जाता हूँ। इसलिए मुझे परेशान मत करो। वर्ना इसके लिए तुम्हें पछताना पड़ेगा!"

हाथों की मुट्ठियाँ बांधते हुए उसने दाँत भींचकर फिर कहा :

"जबसे आज सुबह तुम यहां आई हो तभी से तुम्हारे मन में कुछ करने की भावना छिपी हुई है.......... मैं अभी तक नहीं समझ सका कि तुम्हारे मन में क्या है ...... लेकिन सावधान रहना, जब मुझे मालूम हो जायगा तो तुम्हारी मुसीबत आ जायगी! और तुम्हारी वह मुस्कराहट.... और दूसरी सभी हरकतें ..मैं तुम जैसों को ठीक करना जानता हूँ, इस बात से निश्चिंत रहना।"

"मुझे डराने की कोशिश मत करो, वास्या," वासिली की ओर बिना देखे हुए मालवा लापरवाही से बोली।

"तो तुम कोई बदमाशी करने की बात मत सोचो......।"

"और तुम मुझे धमकाओ मत.......।"

"मैं मारते मारते तुम्हारी भुसी उड़ा दूंगा, अगर तुमने यारों से आँखें लड़ाईं तो" वासिली भड़क कर बोला।

"क्या? तुम मुझे मारोगे," मालवा ने वासिली की ओर मुड़कर उसके उत्तेजित चेहरे को देखते हुए कहा।

"तुम अपने को क्या समझती हो—एक रानी? हाँ, मैं तुम्हें पीटूँगा।"

"और तुम क्या यह सोचते हो कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ" मालवा ने खामोशी से पूछा और जवाब का इन्तजार न कर आगे बोली—"क्योंकि तुम्हारी आदत अपनी स्त्री को बिना ही किसी कारण के पीटने की पड़ी हुई है। तुम सोचते हो कि तुम मेरे साथ भी वही करोगे, क्यों? लेकिन तुम भूल रहे हो। मैं अपनी मालकिन खुद हूँ और मुझे किसी का भी डर नहीं। मगर तुम—तुम अपने लड़के से डरते हो! आज सुबह जिस तरह तुम उसके सामने नाच रहे थे वह अत्यन्त अपमानजनक था। और फिर भी तुम मुझे धमकाने की जुर्रत कर रहे हो!"

उसने नफरत से अपना सिर हिलाया और खामोश हो गई। उसके शान्त, घृणा भरे शब्दों ने वासिली के क्रोध को शान्त कर दिया। उसने मालवा को इतने सुन्दर रूप में पहले कभी नहीं देखा था।

"तुम जहन्नुम में जाओ······" वह घुर्राया। वह उससे नाराज था परन्तु उसकी तारीफ करने से अपने को न रोक सका। "और मैं तुम्हें दूसरी बात बताऊँगी!" मालवा फट पड़ी "तुमने सर्योझका से डींग हाँकी थी कि तुम मेरे लिये रोटी की तरह हो। तुम वह नहीं हो जिसे मैं देखने आती हूँ, लेकिन वह यह जगह है" यह कहते हुए उसने अपने हाथ से चारों ओर इशारा किया। "शायद मैं इस जगह को इसलिए पसन्द करती हूँ कि यह निर्जन है—केवल समुद्र और आकाश—परेशान करने वाले घृणित मनुष्य यहाँ नहीं हैं। और यह बात कि तुम यहाँ रहते हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता···यह तो यहाँ आने के लिये मुझे कीमत भी चुकानी पड़ती है। अगर सर्योझका यहाँ रहता होता तो मैं उसके पास भी आती। अगर तुम्हारा बेटा यहाँ रहेगा तो मैं उसके पास भी आऊँगी ...यह अच्छा होगा कि यहाँ कोई न हो...मैं तुम सब से ऊब उठी हूँ...अपनी खूबसूरती से मैं हमेशा किसी न किसी आदमी को पा लूंगी जब मुझे किसी की जरूरत होगी और मैं उस व्यक्ति को पा सकती हूँ जिसे मैं चाहूँगी।"

"यह बात है?" अचानक मालवा का गला पकड़ते हुए वासिली गरजा "तुम्हारे ऐसे विचार हैं?" उसने उसे झकझोरा परन्तु वह शान्त

रही हालांकि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी आँखें खून की तरह लाल हो उठी थीं। उसने केवल वासिली के हाथों पर अपने हाथ रखे जो उसके गले को दबा रहे थे और उसके चेहरे की ओर घूरने लगी।

"अच्छा तो तुम इस तरह की औरत हो?" वासिली ने कर्कश आवाज में कहा। वह गुस्से से पागल होता जा रहा था। "तुम अब तक इस बारे में खामोश रही...बदतमीज मुझ से खेलती रही...मुझे थपथपाती रही....अब मैं तुम्हें बता दूँगा!"

उसने मालवा का सिर नीचे झुकाया और पूरी ताकत से उसकी गर्दन में घूंसे मारे—दो भारी घूंसे अपनी मजबूती से बाँधी हुई मुट्ठी द्वारा। जब उसकी कोमल गर्दन पर घूंसे पड़े तो वासिली को बहुत अधिक आनन्द प्राप्त हुआ।

"यह ले .. साँपिन!" उसे दूर फेंकते हुए वासिली गर्व से बोला।

बिना साँस लिए वह जमीन पर गिर पड़ी और पीठ के बल पड़ी रही—शान्त, चुप, बिखरी हुई, पीली परन्तु सुन्दर। उसकी हरी आँखें अपनी पलकों के नीचे से उसकी तरफ तीव्र घृणा से देखती रहीं परन्तु वासिली उत्तेजना से हाँपते और अपने गुस्से को पूरा कर उससे उत्पन्न हुए सन्तोष का अनुभव करते हुए, उसकी इस निगाह को नहीं देख पाया। और जब उसने मालवा की तरफ विजय पूर्वक देखा तो वह मुस्कराई—उसके पूरे होंठ मुड़ गए, आँखों में से प्रकाश की ज्वाला निकलने लगी और गालों में गड्ढे पड़ गये। वासिली ने आश्चर्य से चकित होकर उसकी ओर देखा।

"क्या बात है, खूबसूरत नागिन?" बुरी तरह से उसके हाथों को झकझोरते हुए वह चीखा।

"वास्का!" मालवा ने फुसफुसाहट के स्वर में कहा "क्या वह तुम थे जिसने मुझे मारा है?"

"हाँ, और कौन?" मालवा की ओर व्यग्रता से देखते हुए वासिली बोला। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसे फिर

पीटे ? परन्तु उसका गुस्सा शान्त हो चुका था और वह उसके ऊपर दुबारा अपना हाथ उठाने की बात नहीं सोच सका।

"इसका मतलब है कि तुम मुझे प्यार करते हो; क्यों करते हो न ?" मालवा फिर फुसफुसाई और इस फुसफुसाहट ने उसके शरीर में एक सन-सनी की लहर दौड़ा दी।

"अच्छा ठीक है" वह काँपा, "अभी जितनी मार पड़नी चाहिए थी उसकी आधी भी नहीं पड़ी है।"

"मैं सोच रही थी कि अब तुम मुझे प्यार नहीं करते" मैंने अपने आप सोचा: अब उसका बेटा आगया है, वह मुझे भगा देगा।"

वह अजीब तरह से हँस पड़ी। वह बहुत तेज हँसी थी।

"तुम बेवकूफ हो!" वासिली भी हँसते हुए बोला—"मेरा बेटा कौन होता है ? वह मुझ से यह नहीं कह सकता कि मुझे क्या करना चाहिए!"

उसे अपने ऊपर लज्जा आई और उसके लिए दुःख हुआ परन्तु यह याद करके कि उसने अभी क्या कहा था, कठोर आवाज में बोला।

"मेरे बेटे का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। अगर मैं तुम्हें मारता हूँ तो यह तुम्हारा अपना कसूर है। तुम्हें मुझको इस तरह परेशान नहीं करना चाहिए था।"

"परन्तु मैंने किसी खास वजह से ऐसा किया था—मैं तुम्हें परखना चाहती थी," उसके कन्धे से अपना गाल रगड़ते हुए वह बोली।

"मुझे परखना चाहती थी! किस लिए ? अच्छा, अब जान गई।"

"कोई बात नहीं!" आधी आँखें बन्द करते हुए मालवा ने विश्वास-पूर्वक कहा—"मैं तुमसे नाराज नहीं हूँ। तुमने मुझे प्रेम के कारण पीटा था, पीटा था न ? अच्छा, मैं तुम्हें इसका बदला दे दूँगी......।"

उसने अपनी आवाज धीमी की और वासिली के चेहरे की ओर सीधे देखते हुए दुहराया :

"आह, मैं तुम्हें कैसे बदला दूंगी ?"

वासिली को ये शब्द एक प्रतिज्ञा के समान लगे—एक सुन्दर प्रतिज्ञा के समान और इससे वह आनन्दित हो उठा। फिर मुस्कराते हुए पूछा—

"कैसे ? तुम इसका बदला कैसे दोगी ?"

"इन्तजार करो और देखो" मालवा पूरी शान्ति से बोली परन्तु उसके होठों पर एक ऐंठन दिखाई दी।

"ओह, मेरी प्यारी !" वासिली चिल्लाया और एक प्रेमी के दृढ़ आलिंगन में उसे आबद्ध कर लिया। "क्या तुम जानती हो," वह आगे बोला, "जब से मैंने तुम्हें मारा है तुम मुझे और भी प्यारी लगने लगीं हो ! मैं सच कह रहा हूँ ! मैं अनुभव कर रहा हूँ हम और तुम दोनों एक ही रक्त और माँस के बने हुए हैं।"

समुद्री चिड़ियाँ उनके ऊपर उड़ रही थीं। समुद्री हवा उन्हें दुलरा रही थी और लहरों के झाग को लगभग उनके पैरों के पास तक ले आती थी। समुद्र की न रुकने वाली हँसी बराबर गूंज रही थी।

"हाँ ऐसी बातें होनी चाहिए," वासिली बोला और मुक्ति की गहरी साँस लेकर उसने मालवा को प्यार करते हुए अपने सीने से चिपका लिया। "इस संसार में हर चीज कितनी विचित्र है—जो पाप है वही सुन्दर है ! तुम कुछ नहीं समझती ..परन्तु कभी कभी मैं जिन्दगी के बारे में सोचता हूँ तो मुझे भय लगता है। खास तौर से रात को...जब मैं सो नहीं सकता... तुम देखते हो और अपने सामने समुद्र को पाते हो, अपने सिर के ऊपर आकाश को और चारों ओर छाए हुए अन्धकार को देखते हो--ऐसे गहरे अन्धकार को जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं ..और तुम बिल्कुल अकेले हो ! तुम अपने को छोटा, इतना छोटा अनुभव करते हो। धरती तुम्हारे पैरों के तले काँपने लगती है और वहाँ तुम्हारे सिवा और कोई नहीं होता। अक्सर मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ होतीं .. कमसे कम वहाँ हम दो तो होते।"

मालवा उसके घुटनों पर चुपचाप पड़ी रही। उसकी आँखें बन्द थीं। वासिली का रूखा परन्तु दयालु चेहरा, धूप और हवा से सांवला पड़ा हुआ, उसके ऊपर झुका हुआ था। उसकी लम्बी चमकीली दाढ़ी मालवा की गरदन को सहला रही थी। वह हिली नहीं। केवल उसकी छाती

बराबर उठ और गिर रही थी। वासिली की आँखें कभी समुद्र की ओर उठतीं और कभी उसकी छाती पर खेलने लगतीं जो उसके इतने नजदीक थी। उसने उसके होठों को चूमा, धीरे से, बिना किसी जल्दी के, अपने होठों को जोर से चाटते हुए जैसे वह गर्म-गर्म हलुवा खा रहा हो जिस पर मक्खन की मोटी तह जमी हो।

इसी तरह लगभग तीन घन्टे बीत गए। जब सूरज समुद्र में डूबने लगा तो वासिली ने सुस्त आवाज में कहा—"मैं जाकर केतली को आग पर चढ़ा दूँ। हमारा मेहमान जल्दी ही उठ बैठेगा।"

मालवा उससे दूर हट गई, एक मोटी-ताजी अघाई हुई बिल्ली की तरह। सुस्ती से वह बे-मन से उठा और झोंपड़ी में गया। उस औरत ने अपनी जरा सी उठी हुई पलकों में से उसे जाते देखा और गहरी सांस ली जैसे कोई भारी बोझ को फेंक कर सांस लेता है।

कुछ देर बाद वे तीनों आग के पास बैठे हुए चाय पी रहे थे।

डूबते हुए सूरज ने समुद्र को चमकीले रङ्गों से भर दिया था। हरी लहरों में नीले और लाल रङ्ग झलक रहे थे।

वासिली ने एक सफेद प्याले में चाय की चुसकियां लेते हुए अपने बेटे से पूछा कि उनके गाँव में क्या हालचाल हैं और अपनी बारी आने पर अपने गाँव की बीती हुई बातें सुनाईं। मालवा उनकी बातचीत को बिना बीच में बोले चुपचाप सुनती रही।

"अच्छा, तो पुराने किसान घर पर अब भी वैसे ही रह रहे हैं, तुम कहते हो?" वासिली ने पूछा।

"हाँ, किसी न किसी तरह दिन काट रहे हैं।" याकोव ने जवाब दिया।

"हम किसानों को ज्यादा नहीं चाहिए, क्यों, चाहिए? सिर के ऊपर एक छत, खाने के लिए यथेष्ट भोजन और छुट्टियों वाले दिन वोद्का का एक ग्लास, परन्तु हमें यह भी नहीं मिलता। क्या तुम सोचते हो कि मैं घर छोड़ता अगर हमारे गुजारे के लिए वहाँ काफी पैसा होता? घर पर मैं

अपना खुद मालिक हूँ, गाँव में हरेक के बराबर हैसियत वाला। लेकिन यहाँ मैं क्या हूँ ?.........एक नौकर !........"

"लेकिन तुम्हें यहाँ खाने को काफी मिलता है और फिर काम भी आसान है।"

"देखो, मुझे यह नहीं कहना चाहिए ! कभी कभी तुम्हें इतनी सख्त मेहनत करनी पड़ती है कि हड्डियाँ दर्द करने लगती हैं। खास बात तो यह है कि तुम्हें मालिक के लिए काम करना पड़ता है। घर पर तुम अपने लिए काम करते हो !"

"लेकिन पैसा तो ज्यादा मिलता है," याकोव ने विरोध किया।

अपने दिल में वासिली बेटे से सहमत होगया। घर पर, गाँव में, जिन्दगी और काम यहाँ से मुश्किल है परन्तु किसी वजह से वह याकोव को यह बात नहीं बताना चाहता था। इसलिए उसने कठोर होकर जवाब दिया :

"क्या तुम जानते हो कि मुझे यहाँ कितने पैसे मिलते हैं ? अब देखो, घर पर, गाँव में मेरे बच्चे ......"

"यह एक गढ़े की तरह है—अन्धेरा और संकरा," मालवा मुस्कराती हुई बीच में बोली, "खास तौर से हम औरतों के लिए......आँसुओं के अलावा और कुछ नहीं।"

"औरत के लिए तो हर जगह एक सी ही है...... रोशनी भी वही है......वही सूरज सब जगह चमकता है।" मालवा की तरह घूरते हुए वासिली ने जवाब दिया।

"यहाँ तुम गलत बात कह रहे हो !" मालवा खुश होकर बोली— "गाँव में मुझे शादी करनी ही पड़ेगी चाहे मैं चाहूँ या न चाहूँ और एक शादी-शुदा औरत वहाँ जिन्दगी भर गुलाम रहती है। लावनी करो, चर्खा कातो, जानवरों को देखो और बच्चे पैदा करो। उसके पास अपने लिए करने के लिए क्या रह जाता है ? सिर्फ अपने मालिक के लात घूँसे।"

"पर सब केवल मार ही नहीं है" वासिली ने टोका।

"परन्तु यहाँ मैं किसी की गुलाम नहीं !" टोकती हुई मालवा बोली–

"मैं यहाँ समुद्री चिड़िया की तरह आजाद हूँ और जहाँ चाहूँ वहाँ उड़ सकती हूँ। कोई मेरा रास्ता नहीं रोक सकता ...... कोई मुझे छू नहीं सकता।"

"और अगर वे तुम्हें छुयें तो?" दिन में जो कुछ हो चुका था उसे याद करते हुए वासिली ने मुस्करा कर कहा।

"अगर वे छूयेंगे...मैं बदला दूंगी," मालवा ने धीमी आवाज में जवाब दिया, इसकी आँखों की चमक बुझ गई थी। वासिली दयाभरी हँसी हँसा।

"उँह!" तुम शिकारी बिल्ली! हो मगर कमजोर! तुम एक औरत हो और औरत की तरह बात करती हो। घर, गाँव में, एक आदमी औरत को अपनी जिन्दगी के साथी के रूप में चाहता है, मगर यहां यह केवल खेलने के लिए है।" क्षण भर रुक कर वह फिर बोला—"पाप करने के लिए।"

उन्होंने बातें बन्द करदीं... याकोव ने एक उदास गहरी साँस लेकर कहा—

"समुद्र इस तरह दिखाई देता है जैसा इसका छोर ही न हो।"

उन तीनों ने जल के उस विशाल विस्तार की तरफ देखा जो उनके सामने फैला हुआ था।

"अगर यह सब जमीन होती!" अपने हाथ फैलाते हुए याकोव बोला—"और काली जमीन जिसे हम जोत सकते!"

"ओह, तुम यह पसन्द करते हो?" वासिली ने प्रसन्नता से हँसते हुए अपने लड़के की ओर सहमत होकर देखते हुए कहा जिसका चेहरा अपनी व्यक्त की हुई अभिलाषा के कारण चमक उठा था। लड़के को जमीन को प्यार करते हुए देखकर उसे बड़ा सन्तोष हुआ। सम्भव है जमीन का मोह उसे वापिस गाँव बुला ले—उन आकर्षणों से दूर जिनसे खिंच कर वह यहाँ आया है। और वासिली—वह; मालवा के साथ अकेला रह जायगा और काम पहले की तरह चलने लगेंगे।

"हाँ, तुम ठीक हो, याकोव! किसान यही चाहता है। किसान

"मेरे कुचों पर तरस मत खाना,
इन दो सफेद हंसों पर !"

"तुम सुन रहे हो !" याकोव उस ओर, जिधर से ये शब्द आ रहे थे, जाने के लिए उठा और बोला :

"तो तुम खेत की देख-भाल न कर सके ?" उसने वासिली को कठोर आवाज में पूछते सुना।

याकोव ने चकित नेत्रों से बाप की ओर देखा और वहीं खड़ा रह गया।

लहरों के स्वर में डूब जाने से अब उस परेशान करने वाले गाने की सिर्फ एक आध कड़ी ही उनके कान तक पहुँच रही थी।

"ओह, मैं अपनी आखें बन्द नहीं कर सकती
······एकाकी यह रात !"

"आज गर्मी है !" वासिली ने बालू पर लेटते हुए बुझती सी आवाज में कहा—"रात हो गई, परन्तु अब भी वैसी ही उमस है ! कितना खराब मुल्क है !"

"यह बालू गर्म है ·· ·· वह दिन में गर्म हो गई थी······" दूसरी तरफ मुड़ते हुए याकोव लड़खड़ाती आवाज में बोला।

"सुनो ए। तुम किसलिए हँस रहे हो ?" उसके बाप ने कठोरता से पूछा।

"मैं ? हँसने की बात ही क्या है ?" याकोव ने भोलेपन से पूछा।

"बात तो कोई नहीं थी !···"

दोनों चुप हो गए।

लहरों के शोर से भी ऊपर उठती हुई ऐसी आवाजें सुनाई दीं जो या तो गहरी सांसें थीं या किसी की प्यार-भरी बुलाने वाली आवाजें थीं।

दो हफ्ते बीत गए। फिर इतवार आया और फिर वासिली लेगोस्तयेव अपनी झोंपड़ी के पास बालू पर लेटा हुआ समुद्र की ओर देख रहा था और मालवा का इन्तजार कर रहा था। निर्जन समुद्र हँस रहा था और सूर्य के प्रतिबिम्बों से खेल रहा था। लहरों के झुण्ड के झुण्ड पैदा होकर बालू

की तरफ दौड़ते, उसे अपने छींटों से नहला देते और फिर पीछे को खिसक कर समुद्र में खो जाते। हर चीज वैसी ही थी जैसी कि चौदह दिन पहले थी सिवाय इसके कि पिछली वार वासिली ने पूर्ण विश्वास के साथ मालवा के आने की प्रतीक्षा की थी; अब वह अधीरता से उसकी प्रतिक्षा कर रहा था। वह पिछले इतवार को नहीं आई थी—उसे आज आना ही चाहिये। इस बारे में उसे कोई सन्देश नहीं था परन्तु वह उसे देखने के लिए मरा जा रहा था। आज याकोव बाधा नहीं डालेगा। दो दिन पहले कुछ मल्लाहों के साथ वह जाल लेने के लिये आया था और कह रहा था कि वह इतवार को अपने लिए कुछ कमीजें खरीदने शहर जायगा। उसे पन्द्रह रूबल मासिक पर मछुए का काम मिल गया था, कई वार मछली पकड़ने बाहर जा चुका था और अब स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई देने लगा था। दूसरे मछुओं की तरह उसमें से मछली की गन्ध आने लगी थी और दूसरों की ही तरह वह भी गन्दे और फटे कपड़े पहने रहता था। वासिली ने गहरी साँस ली और अपने बेटे के बारे में सोचा।

"मुझे उम्मीद है उसका चाल भी चौका नहीं होगा," उसने अपने आप से कहा—"वह बिगड़ जायगा और फिर शायद घर जाना पसन्द नहीं करेगा" ऐसी हालत में मुझे जाना पड़ेगा…।"

समुद्र पर समुद्री चिड़ियों के अतिरिक्त और कोई भी नहीं था। जब तब अनेक काले बिन्दु रेतीले किनारे की संकरी पट्टी के सहारे, जो समुद्र को आकाश से अलग कर रही थी, चलते हुए दिखाई देते और गायब हो जाते। परन्तु एक भी नाव नजर नहीं आई हालांकि सूरज की किरणें समुद्र पर बिल्कुल सीधी पड़ रही थीं। मालवा सदैव इससे बहुत पहले ही आ जाया करती थी।

दो समुद्री चिड़ियां ऊपर हवा में इतनी भयङ्करता से लड़ रही थीं कि उनके नीचे हुए पङ्ख हवा में ऊपर उड़ते और उनकी भयङ्कर चीखें लहरों के मधुर सङ्गीत में कर्कश-ध्वनि उत्पन्न कर देतीं। लहरों के उस मधुर-सङ्गीत से जो आकाश के उस चमकते हुए शान्त वातावरण में अपनी लय मिला

देखा, ऐसी ध्वनि उत्पन्न होती मानो सूर्य की आह्लाद से भरी हुई किरणें जल के उस विशाल असीम विस्तार से खेल रही हों। वे चिड़ियाँ तेजी से नीचे पानी की तरफ झपटीं। उन्होंने अब भी एक दूसरे पर क्रोध और पीड़ा से तिलमिला कर चोंचों से आघात किए और फिर एक दूसरे का पीछा करती हुईं ऊपर हवा में उड़ गईं। और उनकी अन्य साथिनें—एक पूरा झुन्ड का झुन्ड—स्वच्छ चंचल हरे जल में डुबकियाँ लगाती हुईं, भूखों के समान मछलियों का शिकार करती रहीं मानो इस युद्ध से उनका कोई सम्बन्ध न हो।

समुद्र निर्जन ही रहा। वे परिचित काले बिन्दु उस सुदूरवर्ती किनारे पर अब दिखाई नहीं दे रहे थे।

"तुम नहीं आ रही हो?" वासिली जोर से बोला, "अच्छा, मत आओ! तुमने समझ क्या रखा है? ·····"

और उसने नफरत से किनारे की ओर थूका।

समुद्र हँसने लगा।

वासिली उठा और खाना बनाने के इरादे से झोंपड़ी में गया परन्तु उसे भूख नहीं थी इसलिए वह उसी पुरानी जगह पर लौट आया और फिर लेट गया।

"अगर कम से कम सर्योझका ही आ जाता!" उसने मन ही मन कहा और स्वयं को सर्योझका के विषय में सोचने के लिए मजबूर करने लगा— "वह वास्तव में भयङ्कर है! हरेक पर हँसता है। हमेशा लड़ने के लिए तैयार रहता है। सांड़ की तरह ताकतवर है। कुछ पढ़ा-लिखा भी है। कई मुल्कों में घूम आया है ·····परन्तु शराबी है। वह अच्छा साथी है, हालांकि······सब औरतें उस पर दिल हार बैठी हैं और हालांकि उसे यहाँ आए ज्यादा दिन नहीं हुए हैं, फिर भी वे सब की सब उसके पीछे दौड़ रही हैं। सिर्फ मालवा उससे दूर रहती है······वह यहाँ नहीं आई। वह कितनी अक्खड़ औरत है! शायद नाराज है क्योंकि मैंने उसे मारा था? लेकिन क्या उसके लिए वह नई बात थी, दूसरों ने भी उसे पीटा होगा···और किस तरह! और क्या मैं उसे अब नहीं मारूँगा?"

और इस तरह एक क्षण अपने बेटे के और दूसरे क्षण सर्योमका के, परन्तु ज्यादातर मालवा के बारे में सोचता हुआ वासिली वालू पर लेटा रहा और इन्तजार करता रहा। उसकी चिन्ता धीरे धीरे एक काले सन्देह में बढ़ने लगी और वह उसे दूर हटाने की कोशिश करता रहा। और इस तरह सन्देह को अपने से भी छुपाते हुए वह शाम तक इन्तजार करता रहा। कभी खड़े होकर वालू में इधर-उधर चहल-कदमी करता और कभी फिर लेट जाता। समुद्र के ऊपर अँधेरा छा गया था। परन्तु वह अब भी दूर निगाह गड़ाए नाव के आने का इन्तजार कर रहा था।

मालवा उस दिन नहीं आई।

भीतर लौटते हुए दुखी होकर वासिली ने अपनी तकदीर को कोसा जिसकी वजह से वह शहर नहीं जा सकता था। बार-बार ऊँघते हुए वह सोच ही रहा था कि उसे पतवारों की छपछपाट की आवाज़ सुनाई दी। वह उछल कर झोंपड़ी के बाहर भागा। आँखों पर हाथ का साया कर उसने चंचल काले समुद्र की ओर देखा। किनारे पर, मछली पकड़ने वाली जगह पर, दो स्थान पर आग जल रही थी परन्तु समुद्र निर्जन था।

"अच्छी बात है, डायन!" वह धमकाते हुए बड़बड़ाया और फिर भीतर आकर गहरी नींद में सो गया।

परन्तु इधर मछली पकड़ने वाली जगह यह घटना घटी।

याकोव सुबह जल्दी उठा। अभी धूप में ज्यादा गर्मी नहीं आ पाई थी और समुद्र की ओर से ठण्डी ताजी हवा आ रही थी। वह नहाने के लिए समुद्र के किनारे गया और वहाँ उसने मालवा को देखा। वह मछली पकड़ने वाली एक नाव के पिछले हिस्से पर बैठी अपने गीले बाल झाड़ रही थी। उसके नंगे पैर नाव की बगल में लटक रहे थे।

याकोव रुका और अजीब तरह से उसकी ओर घूरने लगा।

मालवा का सूती ब्लाउज, जिसकी छाती के बटन खुले हुए थे, एक कन्धे पर से उतर गया था और वह कन्धा अत्यन्त सफेद और आकर्षक लग रहा था।

लहरें नाव के पिछले भाग से टकरा कर नाव को ऊपर उछाल रही थीं जिससे मालवा कभी तो ऊपर उठ जाती और कभी इतने नीचे चली जाती कि उसके पैर पानी को लगभग छूने लगते।

"क्या तुम नहा लीं?" याकोव ने जोर से उससे पूछा।

उसने अपना चेहरा उसकी तरफ मोड़ा, एक झलक उसे देखा और बाल काढ़ते हुए जवाब दिया :

"हाँ.....आज तुम इतनी जल्दी कैसे उठ बैठे?"

"तुम तो मुझ से भी पहले उठी थीं।"

"क्या तुम मेरी नकल करोगे?"

याकोव ने कोई जवाब नहीं दिया।

"अगर तुम मेरी नकल करोगे," उसने कहा, "तो सम्भव है तुम्हें अपनी खोपड़ी से हाथ धोना पड़े!"

"ओह! यह कितनी भयङ्कर है!" याकोव ने हँसते हुए जवाब दिया और रेल पर बैठकर नहाने लगा।

उसने अपनी अजली में पानी भरा, मुँह पर छींटे मारे और उसकी ताजगी से प्रसन्न हो उठा। फिर अपनी कमीज के किनारे से मुँह और हाथ पोंछकर उसने मालवा से पूछा :

"तुम मुझे हमेशा डराती क्यों रहती हो?"

"और तुम मुझे घूरते क्यों रहते हो?" मालवा ने कड़ाई से जवाब दिया।

याकोव को याद नहीं आया कि उसने वहाँ रहने वाली दूसरी औरतों को जितनी बार देखा है उससे कभी भी अधिक बार मालवा की ओर देखा हो परन्तु अचानक वह बोल उठा :

"तुम इतनी लुभावनी जो लगती हो। मैं तुम्हें घूरने से अपने को रोक नहीं पाता।"

"अगर तुम्हारा बाप तुम्हारी हरकतों के बारे में सुन लेगा तो वह तुम्हारी गर्दन मरोड़ देगा!" मालवा ने उसकी तरफ एक मक्कारी और चुनौती भरी हुई नजर फेंकते हुए कहा।

याकोव हँसा और नाव पर चढ़ गया। वह नहीं जानता था कि उसकी 'हरकतों' से मालवा का क्या मतलब था परन्तु जब वह कह रही है तो वह उसकी तरफ बुरी तरह से जरूर घूरता होगा। वह ढीठ हो उठा—

"मेरे बाप से क्या मतलब" उसने उसकी बगल में एक रस्से पर बैठते हुए कहा—"क्या उसने तुम्हें खरीद लिया है या कोई और बात है ?"

मालवा के बराबर बैठे हुए उसने उसके खुले कन्धे, आधी खुली हुई छाती और उसके पूरे शरीर पर—जो इतना ताजा और स्वस्थ तथा समुद्र की गन्ध से परिपूर्ण था—नज़र दौड़ाई।

"ओह तुम कितनी खूबसूरत हो !" उसने प्रेम से अभिभूत होकर कहा।

"लेकिन तुम्हारे लिए नहीं !" मालवा ने बिना उसकी ओर देखे तीखा जवाब दिया और अपने कपड़े भी ठीक नहीं किए।

याकोव ने गहरी सांस ली।

उनके सामने समुद्र फैला हुआ था—सुबह की धूप में इतना सुन्दर कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। छोटी, खेलती हुई लहरें जो हवा की धीमी सांस से उत्पन्न हो रही थीं धीरे धीरे नाव के अगले हिस्से से टकरा रही थीं। दूर समुद्र पर पहाड़ का उभरा हिस्सा दिखाई दे रहा था—उसकी मखमली छाती पर एक घाव के निशान की तरह और नीले आकाश की पृष्ठभूमि के सामने वह लट्ठा एक पतली रेखा के समान खड़ा था। उसके सिरे पर बँधा हुआ लाल कपड़ा हवा में फड़फड़ाता हुआ दिखाई दे रहा था।

"हाँ, मेरे बच्चे !" याकोव की ओर बिना देखे हुए मालवा बोली—"मैं आकर्षक हो सकती हूँ परन्तु मैं तुम्हारे लिए नहीं हूँ ...... किसी ने मुझे खरीदा नहीं है और न मैं तुम्हारे बाप से बँधी हुई हूँ। मैं अपनी मर्ज़ी के मुताबिक रहती हूँ...... परन्तु तुम मेरी ओर झुकने की कोशिश मत करो क्योंकि मैं तुम्हारे और वासिली के बीच में नहीं आना चाहती...... मैं किसी भी तरह का झगड़ा नहीं चाहती......तुम मेरा मतलब समझ रहे हो न ?"

"तुम यह सब मुझसे क्यों कहती हो ?" याकोव ने ताज्जुब से पूछा—"मैंने तो तुम्हें छुआ तक नहीं, छुआ है कभी ?"

"तुम साहस नहीं कर सकते।" मालवा ने तीखा जवाब दिया।

उसके इस कहने में इतनी नफरत भरी हुई थी कि याकोव एक पुरुष और एक मानव होने के नाते तिलमिला उठा। उसके मन में एक शैतानी से भरी हुए और गन्दी भावना उत्पन्न हुई और उसकी आँखें चमकने लगीं।

"ओह, मैं हिम्मत नहीं कर सकता, ऊँह ?" उसके और पास खिसकते हुए वह बोला।

"नहीं, तुम नहीं कर सकते !"

"अगर मान लो मैं करूँ ?"

"कोशिश करो !"

"क्या होगा ?"

"मैं तुम्हारी गर्दन पर ऐसा झापड़ दूँगी कि तुम उछल कर पानी में जा गिरोगे।"

"चलो, मारो !"

"मुझे छूने की हिम्मत करो।"

याकोव ने अपनी जलती हुई आँखें उस पर जमा दीं और अचानक अपनी मजबूत बाहें उसकी छाती और पीठ को दबाते हुए उसके चारों ओर कस लीं। मालवा के स्वस्थ और गर्म शरीर के स्पर्श ने उसमें आग पैदा कर दी और उसे अपने गले में ऐसी घुटन सी महसूस हुई जैसे कोई उसका गला घोंट रहा हो।

"यह लो········चलो·······मारो मुझे·· ·· तुमने कहा था तुम मारोगी······।" उसने हांफते हुए कहा।

"छोड़ दो मुझे, याकोव !" उसके कांपते हाथों से अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए शान्त होकर मालवा ने कहा।

"लेकिन तुमने तो कहा था कि तुम मेरी गर्दन में झापड़ दोगी, नहीं कहा था ?"

"छोड़ो! तुम्हें इसके लिए पछताना पड़ेगा!"

"मुझे डराने की कोशिश मत करो!"' ओह'''तुम कितनी प्यारी हो!"

उसने उसे अब और भी कस कर पकड़ते हुए उसके गुलाबी गालों पर अपने मोटे होंठ जमा दिए।

मालवा शैतानी से हँसी, याकोव के हाथों को मजबूती से पकड़ा और अपने पूरे शरीर को आगे की तरफ फेंका। वे दोनों, एक दूसरे की मजबूत पकड़ में बँधे हुए ऊपर उछले, एक गहरे धमाके के साथ पानी में गिरे और तुरन्त ही झाग और छींटों के भँवर में आँखों से ओझल हो गए। कुछ देर बाद लहरों के ऊपर याकोव का सिर बाहर निकला। उसके बालों में से पानी टपक रहा था और चेहरा भयभीत हो उठा था। और तब मालवा भी उसके पास ही ऊपर निकली। अपने हाथों को बुरी तरह फेंकते और पानी को अपने चारों ओर उछालते हुए याकोव चीखने चिल्लाने लगा और मालवा खिलखिला-कर हँसती हुई उसके चारों ओर तैरने लगी। वह उसके मुँह पर खारी पानी के छींटे उछालती और उसकी लम्बी पकड़ से बचने के लिए गोता मार कर हट जाती।

"ओह, शैतान औरत?" अपनी नाक और मुँह से पानी उगलते हुए याकोव गरजा। "मैं डूब जाऊँगा? ''''' बहुत हो चुका''''''''''''' भगवान् की कसम '''' ' मैं डूब जाऊँगा। आह?''' ' पानी खारी है''' मैं डू—ब—र—हा—हूँ?"

परन्तु मालवा उसे छोड़ कर किनारे की ओर तैर रही थी—एक आदमी की तरह हाथ चलाती हुई किनारे पर पहुंच कर बड़ी फुर्ती से बजरे पर चढ़ गई। उसके पिछले हिस्से पर खड़े होकर याकोव को डुबकियां खाते और हांफते देख कर जोर से हँस पड़ी। गीले कपड़े उसके शरीर से चिपक गए थे जिनमें होकर उसके कन्धों से लेकर घुटनों तक का उभार स्पष्ट दिखाई दे रहा था। याकोव किसी प्रकार नाव तक पहुँच गया और उसके किनारे से चिपटा हुआ इस नग्नप्रायः औरत को भूखी आँखों से देखने लगा जो खड़ी हुई उस पर गर्व से हँस रही थी।

"चलो, पानी से बाहर निकलो, सुईस कहीं का !" उसने हँसते हुए कहा और घुटनों पर बैठते हुए अपना एक हाथ याकोव की ओर बढ़ा दिया और दूसरे हाथ से नाव का रस्सा पकड़ लिया। याकोव ने उसका हाथ पकड़ कर जोर से कहा:

"अब देखना मैं तुम्हें कैसे गोते लगाता हूँ !"

इतना कह कर, पानी में कन्धों तक खड़े होते हुए उसने मालवा को अपनी तरफ खींचा। लहरें उसके सिर के ऊपर दौड़ती हुई नाव से टकराईं और मालवा के चेहरे पर छींटे मारे। मालवा ने त्यौरी चढ़ाई और फिर हँस पड़ी। अचानक वह चीखी और अपने शरीर से याकोव को झटका देकर पानी में गिराते हुए कूद पड़ी।

और वे दोनों फिर पानी में दो सुईसों की तरह खेलने लगे-एक दूसरे पर छींटे उछालते, चीखते और घुर्राते हुए।

सूर्य उन्हें खेलते देखकर हँसने लगा। मछली विभाग के दफ्तर की खिड़कियों के काँच भी सूरज की रोशनी पड़ने से हँसने लगे। पानी में उनके मजबूत हाथों की चोटें पड़ने से लहरें उठने लगीं और खलबलाहट का शोर होने लगा। और समुद्री चिड़ियाँ, इन दोनों आदमियों को पानी में लड़ते हुए देख, चक्कर बाँध कर चीखती हुई उनके सिरों के ऊपर मंडराने लगीं जो जब तब उठती हुई लहरों में गायब हो जाते थे।

अन्त में, समुद्री पानी पी जाने के कारण थके और हांपते हुए वे किनारे पर आ बालू पर बैठ गये।

"फ़ू" याकोव ने साँस छोड़ी और मुँह बनाते हुए थूका।

"यह पानी बड़ा खारा है। कोई ताज्जुब नहीं यहाँ सब ऐसे ही हैं !

"दुनियाँ में सब तरह की खराब चीजें बहुतायत से मिलती हैं। मिसाल के तौर पर जवान लड़के। हे भगवान ऐसे कितने यहाँ है" मालवा ने अपने बालों का पानी निचोड़ते हुए हँस कर कहा—

उसके बाल काले थे और हालाँकि अधिक लम्बे नहीं थे परन्तु खूब घने और घुंघराले थे।

"इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि वह बुड्ढा आदमी तुम्हारे प्रेम में पड़ गया था !" याकोव ने मालवा को कुहनी से ठेलते हुए मक्कारी से हँस कर कहा ।

"कभी कभी एक बुड्ढा आदमी जवान आदमी से ज्यादा अच्छा होता है ।"

"अगर बाप अच्छा है तो बेटा उससे भी और ज्यादा अच्छा होगा ।"

"यह बात है ? तुमने इस तरह शेखी बघारना कहाँ से सीखा ?"

"हमारे गाँव की लड़कियाँ अक्सर कहा करती थीं कि मैं देखने में बिल्कुल बुरा नहीं लगता ।"

"लड़कियाँ क्या जानती हैं ? मुझ से पूछो ।"

"परन्तु क्या तुम लड़की नहीं हो ?"

मालवा ने उसे घूरा, शैतानी से हँसी और फिर गम्भीर होकर बोली :

"एक बार मेरे एक बच्चा हुआ था ।"

"रही मात-ऊँह ?" खिलखिलाकर हँसते हुए याकोव बोला ।

"बेवक़ूफ़ मत बनो !" उसकी तरफ मुड़ते हुए मालवा ने डाँटा ।

याकोव सहम गया । उसने होंठ चाटे और चुप होगया ।

दोनों लगभग आधे घन्टे तक धूप में अपने कपड़े सुखाते हुए खामोश बैठे रहे ।

मछुए उन लम्बी, गन्दी झोंपड़ियों में जो उनके रहने का काम देती थीं, नींद से जाग उठे । दूर से वे सब एक से दिखाई देते थे—रूखे, गन्दे और नंगे पैर ......उनकी भारी आवाजें किनारे पर गूंज रही थीं । कोई खाली पीपे के पेंदे में हथौड़े मार रहा था और उसकी वह खोखली आवाज ढोल की आवाज जैसी लग रही थी । दो औरतें चीखती हुई लड़ रही थीं । एक कुत्ता भौंकने लगा ।

"वे जाग उठे हैं," याकोव बोला, "मैं आज जल्दी ही नगर जाना चाहता था......परन्तु हूँ यहाँ, तुम्हारे साथ खिलवाड़ करते हुए ।"

"मैंने तुम से कह दिया था कि तुमने मुझसे शैतानी की तो

तुम्हें पछताना पड़ेगा,"—मालवा ने आधे मजाक और आधी गम्भीरता से कहा।

"तुम मुझे हमेशा डराती क्यों रहती हो?" याकोव घबड़ाकर मुस्कराते हुए बोला।

"मेरी बात पर ध्यान दो। जैसे ही तुम्हारे बाप के कानों में इसकी) खबर पहुँची..........."

दुबारा अपने बाप का नाम सुनकर याकोव गुस्से से भर उठा।

"मेरे बाप की क्या बात है?" उसने गुस्से से पूछा—"मान लो वह सुन लेता है? मैं बच्चा तो हूँ नहीं" वह समझता है कि वह मालिक है परन्तु वह यहां मेरे ऊपर हुकूमत नहीं कर सकता" हम लोग घर पर नहीं हैं मेरी आँखें नहीं फूट गई हैं। मुझे मालूम है कि वह भी साधू नहीं है। वह यहां जो चाहता है सो करता है। उसे मेरे बीच में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है।"

मालवा ने मजाक उड़ाती हुई निगाह से उसके चेहरे की ओर देखा और जिज्ञासा के स्वर में पूछने लगी।

"तुम्हारे बीच में दखल न दे! क्यों, तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं!" गाल फुलाकर, सीना तान कर जैसे कोई भारी बोझ उठा रहा हो, याकोव बोला—"मैं क्या करना चाहता हूँ? मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ! यहाँ की ताजी हवा ने मेरा सारा गंवारपन दूर कर दिया है। हाँ।"

"जल्दी का काम शैतान का होता है!" मालवा ने व्यंग करते हुए कहा।

"मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि क्या? मैं शर्त लगाता हूँ—मैं तुम्हें अपने बाप से जीत लूँगा।"

"अच्छा! सचमुच!"

"क्या तुम सोचती हो कि मैं डरता हूँ।"

"न-हीं।"

"इधर देखो।" याकोव वे समझे उत्तेजित होकर बोला-"मुझे परेशान मत करो नहीं तो"मैं""

"क्या ?" मालवा ने खामोशी से पूछा ।

"कुछ नहीं !"

"उसने मालवा की तरफ से मुँह मोड़ लिया और चुप हो गया परन्तु वह बहादुर और आत्म-विश्वास से पूर्ण लग रहा था ।

"क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ।" मालवा बोली "यहां के एजेन्ट के पास एक काला पिल्ला है । तुमने उसे देखा है ? वह तुम्हारी ही तरह है । भौंकता है और काटने की धमकी देता है तभी जब तुम उससे दूर होते हो । परन्तु जब तुम उसके पास जाओ तो वह टांगों में पूंछ दबाकर भाग जाता है ।"

"अच्छा !" याकोव गुस्से से बोला—"तुम देखना ! मैं तुम्हें बता दूंगा कि मैं किस धातु का बना हूँ ।"

मालवा हँस पड़ी ।

एक लम्बा-तड़ंगा मजबूत आदमी, जिसका चेहरा सांवला था और जिसके सिर पर घने भयानक लाल बाल थे, धीमे कदम रखता हुआ उनके पास आया । उसकी लाल सूती कमीज जिसे वह बिना पेटी के बांधे हुए था पीठ पर कालर तक फटी हुई थी और आस्तीनों को नीचे खिसकने से रोकने के लिए उसने उन्हें कन्धे तक चढ़ा लिया था । उसकी पतलून विभिन्न प्रकार की आकृतियों और आकारों वाले छेदों का एक गोरखधन्धा भी लग रही थी । उसके पैर नंगे थे । चेहरे पर घने चित्तीदार धब्बे पड़े हुए थे । बड़ी नीली आँखों में एक भयङ्कर चमक थी और चौड़ी व ऊपर की ओर उठी हुई नाक उसकी कठोर और क्रूर साहसी प्रकृति का परिचय दे रही थी । उनके पास पहुंच कर वह रुक गया ! उसकी पोशाक में बने हुए छेदों में से दीखते हुए उसके शरीर के अनेक हिस्से धूप में चमक रहे थे । उसने जोर से नाक साफ की और उन दोनों की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए अजीब मुंह बनाया ।

"कल मयोंमका ने दो बार शराब पी थी और आज उसकी जेब बिना पेंदे वाली टोकरी की तरह खाली है" उसने कहा, "मुझे बीस कोपेक उधार दे दो । तुम्हें यह यकीन कर लेना चाहिये कि मैं लौटाऊँगा

नहीं।" इस धृष्ट व्याख्यान को सुनकर याकोव दिल खोल कर हँसा। मालवा उस भद्दी शक्ल को देखकर मुस्कराई।

"मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्यों, शैतानों! मैं बीस कोपेक में तुम दोनों की शादी कर दूँगा! तुम करना चाहते हो?"

"ओह, मसखरे! क्या तुम पादरी हो?" याकोव ने दांत पीसते हुए पूछा।

"बेवकूफ! मैंने युग्लिच में एक पादरी के द्वारपाल का काम किया था.......मुझे बीस कोपेक दो!"

"मैं शादी करना नहीं चाहता!" याकोव बोला

"कोई फिकर की बात नहीं मुझे पैसे दे दो? मैं तुम्हारे बाप से नहीं कहूँगा कि तुम उसकी प्रेमिका के पीछे भागते फिर रहे हो," अपने सूखे और चटके हुए होठों को चाटकर, जोर देते हुए सर्योझका ने कहा।

"अगर तुम उससे कहोगे तो वह तुम्हारा यकीन नहीं करेगा।"

"वह करेगा, अगर मैं कह दूंगा तो! . ....और वह हन्टर से तुम्हारी खबर लेगा।"

"मैं डरता नहीं!" याकोव बोला

"ऐसी हालत में मैं खुद तुम्हारी हन्टरों से खबर लूँगा!" सर्योझका ने शान्ति पूर्वक आँखें सिकोड़ते हुए कहा। याकोव बीस कोपेक नहीं देना चाहता था परन्तु उसे पहले से ही सावधान कर दिया गया था कि वह सर्योझका से लड़ाई न मोल ले और उसकी मांगों को स्वीकार करले। वह कभी ज्यादा पैसे नहीं मांगता था परन्तु अगर उसे माँगे हुए पैसे न मिलते तो वह काम करते समय कुछ न कुछ शैतानी कर बैठता था या बिना किसी कारण के अपने शिकार को खूब मारता था। याकोव ने इस चेतावनी को याद कर गहरी साँस लेते हुए जेब में हाथ डाला।

"यह ठीक है!" उसके पास रेत पर बैठते हुए सर्योझका ने उसे उकसाते हुए कहा "जो कुछ मैं कहूँ हमेशा उस पर ध्यान दो और फिर तुम एक अक्लमन्द आदमी बन जाओगे। और तुम," वह मालवा की ओर मुड़ कर कहता गया—"क्या तुम जल्दी ही मुझसे शादी कर रही हो? जल्दी तय कर लो! मैं देर तक ठहर नहीं सकता?"

"तुम एक चिथड़ों के पुलिन्दे के अलावा और क्या हो। पहले अपने कपड़ों के छेद सीं लो और तब हम लोग इस बारे में बात करेंगे।" मालवा ने जवाब दिया।

सर्योझका ने अपनी पतलून के छेदों को गौर से देखा, सिर हिलाया और कहाः

"यह अच्छा हो कि तुम मुझे अपना एक घांघरा देदो।"

"क्या!" मालवा चौंक कर बोली।

"हाँ मेरा यही मतलब है! तुम्हारे पास जरूर कोई पुराना घांघरा होगा जिसका तुम स्तैमाल नहीं करतीं।"

"अपने आप एक पतलून खरीद लो," मालवा ने उसे सलाह दी।

"नहीं, मैं उस पैसे से शराब पीना चाहता हूँ।"

"अच्छा, तुम यही करो!" हाथ में पाँच पाँच कोपेक के चार सिक्के लिये हुए याकोव ने हँस कर कहा।

"हाँ, क्यों नहीं? एक पादरी ने मुझे बताया था कि मनुष्य को अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिए न कि शरीर की और मेरी आत्मा वोदका माँगती है, पतलून नहीं। पैसे मुझे दो!......अब मैं जाकर शराब पीऊँगा। मैं तुम्हारे बाप से तुम्हारे बारे में इसी तरह कह दूंगा।"

"कह देना!" याकोव बोला तथा हाथ हिलाते हुए और मालवा की ओर आँख मारते हुए उसने बदतमीजी से उसके कन्धे को हिलाया।

सर्योझका ने यह देख लिया। थूक कर उसने धमकाते हुए कहा।

"और मैं उस पिटाई को नहीं भूलूँगा जिसका मैंने तुमसे वायदा कर लिया है. जैसे ही मुझे थोड़ा सा खाली समय मिलेगा मैं तुम्हारे कान सुजा दूँगा!"

"किसलिए?" याकोव ने कुछ सतर्क होकर कहा।

"मैं जानता हूँ किसलिए!.. .... .अच्छा, क्या तुम मुझ से जल्दी शादी कर रही हो?" उसने मालवा से दुबारा पूछा।

"यह बताओ कि शादी हो जाने के बाद हम लोग क्या करेंगे,

हम किस तरह रहेंगे और तब मैं इसके बारे में सोचूंगी", उसने गम्भीर होकर जवाब दिया।

सर्योझका समुद्र की ओर घूरने लगा फिर अपनी आँखें सिकोड़ीं और होठ चाटते हुए बोलाः

"हम कुछ नहीं करेंगे। हमारा समय मजे से कटेगा।"

"लेकिन पैसा कहाँ से आयेगा ?"

"ऊँह !" हाथ को घृणा से हिलाते हुए वह बोला—"तुम मेरी बुड्ढी माँ की तरह बहस करती हो -- क्या ? और कहाँ से ? मुझे क्या मालूम ? .. मैं जाकर शराब पीऊँगा।"

वह उठा और उन्हें छोड़ कर चला गया। मालवा विचित्र ढग से मुस्कराती हुई उसे जाते हुए देखती रही। याकोव ने उसके पीछे गुस्से की निगाह से देखा।

"वह मस्त सॉंड है, है न ?" याकोव ने कहा जब सर्योझका इतनी दूर निकल गया कि सुन न सके—

"अगर वह हमारे गाँव में रहता होता तो वे उसे जंजीर से बाँध देते.. और ऐसा सबक देते कि वह अपनी सब हरकतों को भूल जाता। परन्तु यहाँ सब लोग उससे डरते हैं।"

मालवा ने उसकी ओर देखा और दाँतों में बड़बड़ाईः

"पिल्ला कहीं का ! तुम उसकी कीमत नहीं समझते !"

"समझने के लिए है ही क्या ? उसकी कीमत पाँच कोपेक से ज्यादा नहीं है !"

"तुम्हें सोचकर बात करनी चाहिए", मालवा बोली- "यह तो तुम्हारी कीमत है .. ...लेकिन...... वह सब जगह घूमा हुआ है, सारे देश में और वह किसी से भी नहीं डरता !"

"क्या मैं किसी से डरता हूँ ?" याकोव ने शेखी बघारते हुए पूछा।

मालवा ने उसे जवाब नहीं दिया परन्तु उदास होकर लहरों के खेल को देखने लगी जो दौड़ कर किनारे तक जाती और नाव को धक्के मारती।

नाव का मस्तूल इधर उधर हिल रहा था। उसका पिछला हिस्सा ऊपर उठता और फिर नीचा हो जाता था। लहरों के टकराने से ऐसी ध्वनि उठ रही थी जैसे नाव परेशान होकर किनारे से भाग चौड़े समुद्र में सटक जाना चाहती हो और वह रस्से पर नाराज हो रही थी जो उसे कस कर पकड़े हुए था।

"अच्छा, तुम जाते क्यों नहीं ?" मालवा ने याकोव से पूछा।

"कहां ?" उसने जवाब में पूछा !

"तुमने कहा था कि तुम शहर जाना चाहते थे !"

"मैं नहीं जाऊँगा !"

"तो अपने बाप के पास जाओ।"

"तुम्हारा क्या इरादा है ?"

"मेरा क्या इरादा है ?"

"तुम भी चलोगी ?"

"नहीं।"

"तो मैं भी नहीं जाऊँगा।"

"क्या तुम दिन भर मेरे पीछे लगे डोलना चाहते हो" मालवा ने उदासीनता से पूछा।

"हाँ। मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत है ?" याकोब तिरस्कारपूर्वक बोला और गुस्से से पैर पटकता हुआ चला गया।

परन्तु उसने यह गलत कहा था कि उसे मालवा की जरूरत नहीं थी। उसके बिना उसे सब चीजें उदास लगने लगीं। उसके हृदय में एक विचित्र भावना उठ खड़ी हुई थी जब से उसने मालवा से बातें की थीं—अपने बाप के खिलाफ एक अस्पष्ट से असन्तोष और विरोध की भावना। उसने इसे पहले उस दिन महसूस नहीं किया था और आज सुबह भी मालवा से मिलने से पहले उसके मन में ऐसी कोई भावना नहीं थी।... परन्तु अब उसे यह लगा कि उसका बाप रास्ते में एक रोड़ा है हालांकि वह दूर समुद्र की उस मुश्किल से दिखाई पड़ने वाली रेत की पट्टी पर था। तब उसे यह लगा कि मालवा उसके बाप से डरती है। अगर वह नहीं डरती होती तो उसके और मेरे सम्बन्ध कुछ दूसरे ही होते।

"उसने ऐसा क्यों किया ?"

"कौन जाने ?" याकोव ने पूर्ण उदासीनतापूर्वक कहा।

रेत के टीलों पर से हवा और लहरों द्वारा उड़ाई हुई बालू ने उन्हें घेर लिया। दूर से मछली पकड़ने वाली जगह पर होने वाले शोरोगुल की अस्पष्ट और तेज आवाजें सुनाई देने लगीं। सूरज बालू को अपनी किरणों से गुलाबी रंग में रंगता हुआ डूब रहा था। पेड़ों की छोटी डालों पर लगे पत्ते समुद्र से आती हुई हवा में धीरे धीरे फड़फड़ा रहे थे। मालवा खामोश थी। वह ऐसी लग रही थी मानों गौर से कुछ सुन रही हो।

"तुम आज वहाँ उस पहाड़ी के किनारे क्यों नहीं गईं ?" याकोव ने अचानक उससे पूछा।

"इससे तुम्हें क्या मतलब ?"

याकोव ने अपनी आँखों के कोनों से उस औरत को भूखे की तरह देखा, यह सोचते हुए कि कैसे बताए कि वह कहने के लिए व्याकुल हो रहा है।

"जब मैं अकेली होती हूँ और चारों ओर खामोशी छाई रहती है," मालवा उदास होकर बोली—"मैं रोना चाहती हूँ ....या ......गाना। मगर मैं अच्छे गीत नहीं जानती और रोने में मुझे झेंप लगती है ...."

याकोव ने उसकी आवाज सुनी—यह धीमी और कोमल थी परन्तु जो कुछ उसने कहा उसने याकोव के हृदय पर कोई प्रभाव नहीं डाला। इसने मालवा के लिए उसकी भूख को और भी ज्यादा तेज कर दिया।

"अच्छा, अब मेरी बात सुनो," उसने धीमी आवाज में उसके नजदीक खिसकते हुए परन्तु अपनी निगाहें उसकी तरफ से हटाए हुए कहा, "सुनो जो कुछ मैं तुमसे कहूँगा मैं जवान हूँ ..."

"और मूर्ख, वज्र मूर्ख !" मालवा ने उसे बोलने से रोकते हुए अपना सिर हिलाकर कहा।

"खैर, मान लो मैं मूर्ख हूँ" याकोव ने दुखित स्वर में कहा—"क्या इस तरह की बातों के लिए किसी को चालाक होना ही चाहिए ? अच्छी बात है—कहो, मैं मूर्ख हूँ ! परन्तु मुझे यही तो कहना है : क्या तुम चाहोगी ···· "

"नहीं, मैं नहीं चाहूँगी !"

"क्या ?"

"कुछ नहीं !"

"यह बात है । बेवकूफ मत बनाओ !" आहिस्ते से मालवा के कन्धे पकड़ते हुए याकोव प्रेम से बोला :

"कोशिश करो और समझो ··· "

"चले जाओ, याश्का !" उसके हाथ हटाते हुए मालवा ने कठोरता से कहा—"चले जाओ ।"

वह उठ कर खड़ा हो गया और चारों ओर देखा ।

"अच्छी बात है·· अगर यह बात है तो मुझे परवाह नहीं ! यहाँ तुम्हारी जैसी बहुत हैं ·· क्या तुम सोचती हो कि तुम दूसरों से अच्छी हो ?"

"तुम एक कुत्ते के पिल्ले हो," उसने निरपेक्ष भाव से कहा और घांघरे की धूल झाड़ती हुई खड़ी होगई ।

वे झोंपड़ी की ओर साथ-साथ चलने लगे । वे धीरे-धीरे चल रहे थे क्योंकि उनके पैर रेत में धँस जाते थे ।

याकोव ने उत्सुकता से मालवा को अपनी इच्छाओं के सम्मुख समर्पण करने के लिए फुसलाने की बहुत कोशिश की परन्तु वह खामोशी से उस पर हँसती रही और बुरी तरह से मजाक में उसकी मिन्नतों को ठुकराती रही ।

वे झोंपड़ियों के पास पहुँचने ही वाले थे कि याकोव अचानक रुक गया, मालवा के कन्धों को पकड़ा और दाँतों भींच कर बोला :

"तुम मुझे सिर्फ परेशान कर रही हो ····" मुझे उत्तेजित बना

"उसने ऐसा क्यों किया ?"

"कौन जाने ?" याकोव ने पूर्ण उदासीनतापूर्वक कहा ।

रेत के टीलों पर से हवा और लहरों द्वारा उड़ाई हुई बालू ने उन्हें घेर लिया । दूर से मछली पकड़ने वाली जगह पर होने वाले शोरोगुल की अस्पष्ट और तेज आवाजें सुनाई देने लगीं । सूरज बालू को अपनी किरणों से गुलाबी रंग में रंगता हुआ डूब रहा था। पेड़ों की छोटी डालों पर लगे पत्ते समुद्र से आती हुई हवा में धीरे धीरे फड़फड़ा रहे थे । मालवा खामोश थी । वह ऐसी लग रही थी मानों गौर से कुछ सुन रही हो ।

"तुम आज वहाँ उस पहाड़ी के किनारे क्यों नहीं गईं ?" याकोव ने अचानक उससे पूछा ।

"इससे तुम्हें क्या मतलब ?"

याकोव ने अपनी आँखों के कोनों से उस औरत को भूखे की तरह देखा, यह सोचते हुए कि कैसे बताए कि वह कहने के लिए व्याकुल हो रहा है ।

"जब मैं अकेली होती हूँ और चारों ओर खामोशी छाई रहती है," मालवा उदास होकर बोली—"मैं रोना चाहती हूँ .... या ...... गाना । मगर मैं अच्छे गीत नहीं जानती और रोने में मुझे झेंप लगती है .... "

याकोव ने उसकी आवाज सुनी—यह धीमी और कोमल थी परन्तु जो कुछ उसने कहा उसने याकोव के हृदय पर कोई प्रभाव नहीं डाला । इसने मालवा के लिए उसकी भूख को और भी ज्यादा तेज कर दिया ।

"अच्छा, अब मेरी बात सुनो," उसने धीमी आवाज में उसके नजदीक खिसकते हुए परन्तु अपनी निगाहें उसकी तरफ से हटाए हुए कहा, "सुनो जो कुछ मैं तुमसे कहूँगा मैं जवान हूँ . "

"और मूर्ख, वज्र मूर्ख !" मालवा ने उसे बोलने से रोकते हुए अपना सिर हिलाकर कहा ।

"खैर, मान लो मैं मूर्ख हूँ" याकोव ने दुखित स्वर में कहा—"क्या इस तरह की बातों के लिए किसी को चालाक होना ही चाहिए ? अच्छी बात है—कहो, मैं मूर्ख हूँ ! परन्तु मुझे यही तो कहना है : क्या तुम चाहोगी ·····"

"नहीं, मैं नहीं चाहूँगी !"

"क्या ?"

"कुछ नहीं !"

"यह बात है। बेवकूफ मत बनाओ !" आहिस्ते से मालवा के कन्धे पकड़ते हुए याकोव प्रेम से बोला :

"कोशिश करो और समझो ··· "

"चले जाओ, यारका !" उसके हाथ हटाते हुए मालवा ने कठोरता से कहा—"चले जाओ।"

वह उठ कर खड़ा हो गया और चारों ओर देखा।

"अच्छी बात है · अगर यह बात है तो मुझे परवाह नहीं ! यहाँ तुम्हारी जैसी बहुत हैं क्या तुम सोचती हो कि तुम दूसरों से अच्छी हो ?"

"तुम एक कुत्ते के पिल्ले हो," उसने निरपेक्ष भाव से कहा और घांघरे की धूल झाड़ती हुई खड़ी होगई।

वे झोंपड़ी की ओर साथ-साथ चलने लगे। वे धीरे-धीरे चल रहे थे क्योंकि उनके पैर रेत में धँस जाते थे।

याकोव ने उत्सुकता से मालवा को अपनी इच्छाओं के सम्मुख समर्पण करने के लिए फुसलाने की बहुत कोशिश की परन्तु वह खामोशी से उस पर हँसती रही और बुरी तरह से मजाक में उसकी मिन्नतों को ठुकराती रही।

वे झोंपड़ियों के पास पहुँचने ही वाले थे कि याकोव अचानक रुक गया, मालवा के कन्धों को पकड़ा और दाँतों भींच कर बोला :

"तुम मुझे सिर्फ परेशान कर रही हो ·····" मुझे उत्तेजित बना

रही हो ... .. 'क्यो, कर रही हो न ? क्यों कर रही हो ? होश्यार रहो वर्ना मैं तुम्हें इसके लिए पछताने के लिए मजबूर कर दूँगा।"

"मुझे अकेला छोड़ दो, मैं तुम से कहे देती हूँ।" मालवा ने अपने को उसकी पकड़ से छुड़ाते हुए कहा और चल दी।

एक झोंपड़ी के मोड़ पर सर्योझका दिखाई दिया। उन्हें देखकर वह उनकी ओर आया और अपने अस्त व्यस्त भयङ्कर सिर को हिलाते हुए होठों पर एक क्रूर मुस्कान लाकर बोला.

"घूमने गए थे, क्यों ? अच्छी बात है !"

"जहन्नुम में जाओ तुम सब के सब !" मालवा गुस्से से चीखी।

याकोव सर्योझका के सामने रुक गया और धृष्टतापूर्वक उसकी तरफ देखने लगा। वे दोनों एक दूसरे से लगभग दस कदम दूर थे। सर्योझका ने भी बदले में घूर कर देखा। वे लगभग एक मिनट तक एक दूसरे पर झपटने को तैयार दो मेढ़ो की तरह खड़े रहे और फिर चुपचाप अलग अलग दिशाओं की ओर चल दिए।

× × ×   × × ×   × × ×

समुद्र शान्त था परन्तु सूर्यास्त हो जाने के कारण एक भयानक चमक से चमक उठा था। झोंपड़ियों की तरफ से शोरोगुल की आवाजें आ रही थीं और उन आवाजों से ऊपर उठती हुई एक शराब के नशे में धुत बनी औरत की पागल की सी चीखने की आवाज में निम्नलिखित बेहूदे शब्द सुनाई दिए:

"   टा–अगरगा, मातागरगा,
मेरी माता–निचका का !
शराब पिए और ठोकर खाए मैं हूँ,
बिगड़ी, उलझी और झुर्रीदार—ओह !"

और ये शब्द जुए की तरह घृणास्पद, उन झोंपड़ियों में गूँजने लगे जिनमें शीरे और सूखी हुई मछलियों की दुर्गन्ध भर रही थी। ये शब्द लहरों के सङ्गीत के बीच अत्यन्त कर्कश लग रहे थे।

दूर पर समुद्र संध्या के कोमल प्रकाश में शान्त होकर अपने अन्तर में

मोतिया रंग के बादलों को प्रतिबिम्बित करते हुए झपकियाँ ले रहा था। तट के पहाड़ी ढाल पर ऊँघते हुए मछुए मछली पकड़ने वाली नाव में मछली उठाने की बड़ी मशीन लाद रहे थे।

जाल का एक भूरा ढेर रेत पर नाव की तरफ रेंगता हुआ बढ़ा और परतों के रूप में उसके पेंदे में जा पड़ा।

सर्योझका हमेशा की तरह नंगे सिर और अधनंगा, अपनी भारी आवाज में मछुओं को आज्ञा देता हुआ, नाव पर खड़ा था। हवा उसकी कमीज के छेदों में खेल रही थी और उसके बिखरे हुए लाल बालों को लहरा रही थी।

"वासिली! हरे पतवार कहाँ हैं?" कोई चीखा।

वासिली, अक्टूबर महीने के दिन की तरह घूरता हुआ जाल को नाव में इकट्ठा कर रहा था और सर्योझका होठ चाटते हुए उसकी झुकी हुई पीठ को घूर रहा था। यह इस बात का लक्षण था कि वह अपनी थकावट को मिटाने के लिए शराब चाहता है।

"तुम्हारे पास थोड़ी सी वोद्का है?" उसने पूछा।

"हाँ," वासिली ने उदासी से उत्तर दिया।

"ऐसी दशा में मैं बाहर नहीं जाऊँगा। यहीं किनारे पर ठहरूँगा।

"सावधान!" किनारे से कोई चीखा।

"छोड़ दो! सावधानी से!" सर्योझका ने आज्ञा दी और नाव से नीचे उतर आया। "तुम लोग जाओ," उसने आदमियों से कहा। मैं यहीं ठहरूँगा। ध्यान रखना कि जाल खूब चौड़ा फैलाया जाय। उसे उलझा मत देना, और उसको ठीक तरह से तर करना, गांठ मत बांधना।" नाव पानी में धकेल दी गई, मछुए उस पर चढ़ गए और अपनी पतवारों को पकड़, उन्हें उठाए हुए, चलने की आज्ञा का इन्तजार करने लगे।

"एक!"

पतवार एक साथ पानी में पड़े और नाव संध्या की धुंधली आभा में चमकते हुए विस्तृत सागर में चल पड़ी।

"दा !" नाव घुमाने वाले पहिए पर खड़े हुए आदमी ने आज्ञा दी। पतवार उठे और नाव की दोनों तरफ एक दैत्याकार कछुए के पंजों की तरह चलने लगे। "एक ? दो ! · एक ! ·· दो ! ·· "

पाँच आदमी किनारे पर जाल के सूखे भाग पर रह गए—सर्योझका वासिली तथा तीन और। उनमें से एक बालू पर नीचे बैठते हुए बोला :

"मैं थोड़ा और सोऊँगा।"

दो और मछुओं ने उसका अनुकरण किया और तीन शरीर चिथड़ों में लिपटे हुए बालू पर लेट गये।

"तुम इतवार को क्यों नहीं आये थे ?" झापड़ों की ओर चलते हुए वासिली ने सर्योझका से पूछा।

"मैं आ नहीं सका।"

"क्यों, क्या शराब पी ली थी ?"

"नहीं। मैं तुम्हारे बेटे की निगरानी कर रहा था और साथ ही उसकी सौतेली माँ की भी।" सर्योझका बोला।

"तुमने अपने लिए बड़ा अच्छा काम ढूँढ लिया है ?" वासिली ने सूखी मुस्कान से कहा—"क्यों ! क्या वे बच्चे हैं ?"

"बच्चों से भी बुरे··· एक मूर्ख है और दूसरा ··एक सन्त "

"क्या। मालवा और एक सन्त ? आँखों से क्रोध की ज्वाला फेंकते हुए वासिली ने पूछा—"क्या वह बहुत दिनों से ऐसी है ?"

"उसकी आत्मा उसके शरीर के योग्य नहीं, भाई।"

"उसकी आत्मा बड़ी मक्कार और दुष्ट है।"

सर्योझका ने कनखियों से वासिली की ओर देखा और घृणा-पूर्वक नाक के स्वर में बोला

"मक्कार। ऊँह। तुम काहिल मूर्ख टिड्डे ! तुम कुछ नहीं समझते ··· तुम तो औरत में सिर्फ यही चाहते हो कि वह एक मोटी चिड़िया की तरह हो। तुम उसके चाल-चलन की कोई फिकर नहीं करते "लेकिन औरत का सबसे बड़ा मजा तो उसके चरित्र मे है" " 'बिना चरित्र के तो

औरत ऐसी ही है जैसे बिना नमक की रोटी। क्या तुम ऐसी सारङ्गी को बजा कर आनन्द उठा सकते हो जिसमें तार न हो? मूर्ख!"

"उस्ताद? कल तुमने कितनी अच्छी बातें सुनी थीं।" वासिली रुक कर बोला।

वह सर्योझका से यह पूछने के लिए बड़ा उत्सुक था कि उसने मालवा और याकोव को कहाँ देखा था और वे क्या कर रहे थे परन्तु यह बातें पूछने में उसे बहुत शरम आ रही थी।

झोंपड़ी में आकर उसने एक प्याले में शराब उंडेली—सर्योझका के लिए, इस आशा से कि इससे उसकी जबान खुल जायगी और वह उन दोनों के बारे में अपने आप ही बता देगा।

परन्तु सर्योझका ने गिलास खाली कर दिया और गुर्राया, पूरी तरह गम्भीर होकर झोंपड़ी के दरवाजे पर बैठकर पैर फैलाये और जम्हाई ली।

"इस तरह की शराब पीना तो जैसे आग निगलना है," वह बोला।

"और क्या तुम इसे नहीं पी सकते!" जिस तेजी से सर्योझका ने प्याला भरी हुई शराब अपने गले में उंडेल ली थी उस पर आश्चर्य करते हुए वासिली ने पूछा।

"हां, मैं पी सकता हूँ!" वह शराबी अपना लाल सिर हिलाते हुए अपनी हथेली से भीगे गलमुच्छों को पोंछता हुआ बोला। "हाँ, मैं पी सकता हूँ, भाई। मैं सब काम जल्दी करता हूँ और बिल्कुल सीधे रूप में। मुझे इधर-उधर करना और ढील डालना पसन्द नहीं। सीधे आगे बढ़े चलो,—मेरा सिद्धान्त है! इससे कोई मतलब नहीं कि तुम कहाँ पहुँचोगे हम सब को एक ही रास्ते जाना है—मिट्टी में ······और तुम इससे बच नहीं सकते!"

"तुम कारेशस जाना चाहते थे, क्यों?" वासिली ने सावधानी से अपने विषय पर आते हुए पूछा।

"जब मेरा मन होगा चला जाऊँगा। और जब मेरी तबियत होगी

तो मैं फौरन चल दूंगा–एक, दो, तीन और गायब। या मुझे मौका मिल जायगा या मेरे दिमाग़ में कोई सनक उठ खड़ी होगी. .यह तो बहुत मामूली बात है।"

"इससे मामूली और कोई नहीं हो सकती! तुम बिना दिमाग का स्तैमाल किए अपनी ज़िन्दगी बिता रहे हो।"

सर्योझका ने वासिली की ओर मजाक से देखते हुए कहा

"तुम समझते हो कि तुम चालाक हो, क्यों सोचते हो न? क्यों, वोलोस्ट पुलिस थाने में तुम कितनी बार पिटे हो?"

वासिली ने घूर कर सर्योझका की ओर देखा मगर बोला नहीं।

"यह अच्छा है कि पुलिस तुम्हारी खोपड़ी में पीछे से चोट मार कर अक्ल भर देती है! .. ऊँह तुम! तुम अपने दिमाग से क्या कर सकते हो? तुम सोचते हो कि यह तुम्हें कहा ले जायगा? तुम इससे क्या सोच सकते हो? मैं ठीक बात नहीं कह रहा हूँ? परन्तु मैं बिना अपनी अक्ल की मदद के सीधा आगे बढ़ता हूँ और मुझे पछताना नहीं पड़ता। और मैं शर्त बद सकता हूँ कि मैं तुम से आगे पहुँच जाऊँगा," उस गंवार ने डींग हाँकते हुए कहा।

"हाँ, मैं तुम्हारी बात का यकीन करता हूँ," वासिली ने हँसते हुए जवाब दिया—"तुम साइबेरिया तक पहुच जाओगे!"

सर्योझका खिलखिला कर हँस उठा

वासिली की आशा के विपरीत वोदका ने सर्योझका पर कोई प्रभाव नहीं डाला था और इससे वह क्रोधित हो उठा। वह उसे एक गिलास भर कर और दे सकता था परन्तु वह वोदका को वर्बाद नहीं करना चाहता था। दूसरी तरफ जब तक सर्योझका गम्भीर बना रहता वह उससे कोई बात नहीं निकाल सकता था .. परन्तु उस गँवार ने बिना किसी और लालच के उस विषय को छोड़ दिया।

"यह क्या बात है कि तुम मालवा के बारे में नहीं पूछते?" उसने सवाल किया।

"मैं क्यों पूछूँ ?" वासिली ने लापरवाही से कहा परन्तु वह बिना कुछ सुने ही काँप उठा।

"वह पिछले इतवार को यहाँ नहीं थी, थी क्या ? तुम उसकी वजह से जलते हो, जलते हो न ? मूर्ख बुड्ढे !"

"उसकी जैसी बहुत सी हैं !" नफरत से अपना हाथ हिलाते हुए वासिली ने कहा।

"उसकी जैसी बहुत सी !" सर्योझका घुर्राया, "ऊँह तुम गँवार आदमी ठहरे, शहद और कोलतार में अन्तर नहीं जानते !"

"तुम उसे इतना ऊँचा उठाने की कोशिश क्यों कर रहे हो ? क्या यहाँ शादी कराने वाले दलाल बन कर आये हो ? तुमने बहुत देर करदी ! यह मौका तो बहुत दिनों पहले आया था !" वासिली ने ताना मारा।

सर्योझका कुछ देर तक उसकी तरफ देखता रहा और फिर उसके कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए गहराई से बोलाः

"मैं जानता हूं कि वह तुम्हारे साथ रह रही है। मैंने रुकावट नहीं डाली—इसकी कोई जरूरत भी नहीं थी.... .लेकिन अब याकोव—तुम्हारा वह बेटा उसके चारों ओर मंडराता फिरता है। उसे एक अच्छा सा सबक दे दो ! सुन रहे हो मैं क्या कह रहा हूँ ? अगर तुम नहीं सबक दोगे—तो मैं दूंगा... तुम भले आदमी हो ..सिर्फ तुम लकड़ी की तरह ठस्स हो ..मैंने तुम्हारे बीच में बाधा नहीं डाली थी... . मैं तुम्हें उसकी याद दिला देना चाहता हूँ।"

"अच्छा तो यह मामला चल रहा है ! तुम भी तो उसके पीछे पड़े हो, क्यों ?" वासिली गहरी आवाज में बोला।

"मैं भी !...अगर मैं जवान होता तो सीधा उसके पास पहुँचता और तुम सब को अपने रास्ते से उखाड़ कर दूर फेंक देता !......लेकिन मैं उसे क्या सुख दे सकता हूँ।"

"तो तुम क्यों इसमें अपनी नाक घुसेड़ रहे हो ? वासिली ने मजाक करते हुए कहा।

तो मैं फौरन चल दूंगा—एक, दो, तीन और शायद । या मुझे मौका मिल जायगा या मेरे दिमाग़ में कोई सनक उठ खड़ी होगी यह तो बहुत मामूली बात है ।"

"इससे मामूली और कोई नहीं हो सकती ! तुम बिना दिमाग का स्तैमाल किए अपनी ज़िन्दगी बिता रहे हो ।"

सर्योझका ने वासिली की ओर मजाक से देखते हुए कहा:

"तुम समझते हो कि तुम चालाक हो, क्यों सोचते हो न ? क्यों, वोलोस्ट पुलिस थाने में तुम कितनी बार पिटे हो ?"

वासिली ने घूर कर सर्योझका की ओर देखा मगर बोला नहीं ।

"यह अच्छा है कि पुलिस तुम्हारी खोपड़ी में पीछे से चोट मार कर अक्ल भर देती है ! उँह तुम ! तुम अपने दिमाग से क्या कर सकते हो ? तुम सोचते हो कि यह तुम्हें कहां ले जायगा ? तुम इससे क्या सोच सकते हो ? मैं ठीक बात नहीं कह रहा हूँ ? परन्तु मैं बिना अपनी अक्ल की मदद के सीधा आगे बढ़ता हूँ और मुझे पछताना नहीं पड़ता । और मैं शर्त बद सकता हूँ कि मैं तुम से आगे पहुँच जाऊँगा," उस गंवार ने डींग हाँकते हुए कहा ।

"हाँ, मैं तुम्हारी बात का यकीन करता हूँ," वासिली ने हँसते हुए जवाब दिया—"तुम साइबेरिया तक पहुंच जाओगे !"

सर्योझका खिलखिला कर हँस उठा

वासिली की आशा के विपरीत वोदका ने सर्योझका पर कोई प्रभाव नहीं डाला था और इससे वह क्रोधित हो उठा । वह उसे एक गिलास भर कर और दे सकता था परन्तु वह वोदका को बर्बाद नहीं करना चाहता था । दूसरी तरफ जब तक सर्योझका गम्भीर बना रहता वह उससे कोई बात नहीं निकाल सकता था परन्तु उस गँवार ने बिना किसी और लालच के उस विषय को छोड़ दिया ।

"यह क्या बात है कि तुम मालवा के बारे में नहीं पूछते ?" उसने सवाल किया ।

"मैं क्यों पूछूँ ?" वासिली ने लापरवाही से कहा परन्तु वह बिना कुछ सुने ही काँप उठा ।

"वह पिछले इतवार को यहाँ नहीं थी, थी क्या ? तुम उसकी वजह से जलते हो, जलते हो न ? मूर्ख बुड्ढे !"

"उसकी जैसी बहुत सी हैं !" नफरत से अपना हाथ हिलाते हुए वासिली ने कहा ।

"उसकी जैसी बहुत सी !" सर्योझका घुर्राया, "ऊँह तुम गँवार आदमी ठहरे, शहद और कोलतार में अन्तर नहीं जानते !"

"तुम उसे इतना ऊँचा उठाने की कोशिश क्यों कर रहे हो ? क्या यहाँ शादी कराने वाले दलाल बन कर आये हो ? तुमने बहुत देर करदी ! यह मौका तो बहुत दिनों पहले आया था !" वासिली ने ताना मारा ।

सर्योझका कुछ देर तक उसकी तरफ देखता रहा और फिर उसके कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए गहराई से बोला:

"मैं जानता हूँ कि वह तुम्हारे साथ रह रही है । मैंने रुकावट नहीं डाली—इसकी कोई जरूरत भी नहीं थी......लेकिन अब यास्का—तुम्हारा वह बेटा उसके चारों ओर मंडराता फिरता है । उसे एक अच्छा सा सबक दे दो ! सुन रहे हो मैं क्या कह रहा हूँ ? अगर तुम नहीं सबक दोगे—तो मैं दूँगा... तुम भले आदमी हो.. सिर्फ तुम लकड़ी की तरह ठस्स हो . मैंने तुम्हारे बीच में बाधा नहीं डाली थी. .. मैं तुम्हें उसकी याद दिला देना चाहता हूँ ।"

"अच्छा तो यह मामला चल रहा है ! तुम भी तो उसके पीछे पड़े हो, क्यों ?" वासिली गहरी आवाज में बोला ।

"मैं भी !...अगर मैं चाहता होता तो सीधा उसके पास पहुँचता और तुम सब को अपने रास्ते से उखाड़ कर दूर फेंक देता ! .....लेकिन मैं इसे क्या सुख दे सकता हूँ ।"

"तो तुम क्यों इसमें अपनी नाक घुसेड़ रहे हो ? वासिली ने नाक करते हुए कहा ।

तो मैं फौरन चल दूंगा–एक, दो, तीन और गायब। या मुझे मौका मिल जायगा या मेरे दिमाग में कोई सनक उठ खड़ी होगी. यह तो बहुत मामूली बात है।"

"इससे मामूली और कोई नहीं हो सकती! तुम बिना दिमाग का स्तैमाल किए अपनी ज़िन्दगी बिता रहे हो।"

सर्योझका ने वासिली की ओर मजाक से देखते हुए कहा:

"तुम समझते हो कि तुम चालाक हो, क्यों सोचते हो न? क्यों, वोलोस्ट पुलिस थाने में तुम कितनी बार पिटे हो?"

वासिली ने घूर कर सर्योझका की ओर देखा मगर बोला नहीं।

"यह अच्छा है कि पुलिस तुम्हारी खोपड़ी में पीछे से चोट मार कर अक्ल भर देती है! उँह तुम! तुम अपने दिमाग से क्या कर सकते हो? तुम सोचते हो कि यह तुम्हें कहा ले जायगा? तुम इससे क्या सोच सकते हो? मैं ठीक बात नहीं कह रहा हूँ? परन्तु मैं बिना अपनी अक्ल की मदद के सीधा आगे बढ़ता हूँ और मुझे पछताना नहीं पड़ता। और मैं शर्त बद सकता हूँ कि मैं तुम से आगे पहुँच जाऊँगा," उस गवार ने डींग हाँकते हुए कहा।

"हाँ, मैं तुम्हारी बात का यकीन करता हूँ," वासिली ने हँसते हुए जवाब दिया—"तुम साइबेरिया तक पहुच जाओगे!"

सर्योझका खिलखिला कर हँस उठा

वासिली की आशा के विपरीत वोदका ने सर्योझका पर कोई प्रभाव नहीं डाला था और इससे वह क्रोधित हो उठा। वह उसे एक गिलास भर कर और दे सकता था परन्तु वह वोदका को बर्बाद नहीं करना चाहता था। दूसरी तरफ जब तक सर्योझका गम्भीर बना रहता वह उससे कोई बात नहीं निकाल सकता था परन्तु उस गँवार ने बिना किसी और लालच के उस विषय को छोड़ दिया।

"यह क्या बात है कि तुम मालवा के बारे में नहीं पूछते?" उसने सवाल किया।

"मैं क्यों पूछूँ ?" वासिली ने लापरवाही से कहा परन्तु वह वि कुछ सुने ही काँप उठा।

"वह पिछले इतवार को यहाँ नहीं थी, थी क्या ? तुम उसकी वजा से जलते हो, जलते हो न ? मूर्ख बुड्ढे !"

"उसकी जैसी बहुत सी हैं !" नफरत से अपना हाथ हिलाते हुए वासिली ने कहा।

"उसकी जैसी बहुत सी !" सर्योझका घुर्राया, "ऊँह तुम गँवार आदमी ठहरे, शहद और कोलतार में अन्तर नहीं जानते !"

"तुम उसे इतना ऊँचा उठाने की कोशिश क्यों कर रहे हो ? क्या यहाँ शादी कराने वाले दलाल बन कर आये हो ? तुमने बहुत देर करदी ! यह मौका तो बहुत दिनों पहले आया था !" वासिली ने ताना मारा।

सर्योझका कुछ देर तक उसकी तरफ देखता रहा और फिर उसके कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए गहराई से बोलाः

"मैं जानता हूँ कि वह तुम्हारे साथ रह रही है। मैंने रुकावट नहीं डाली—इसकी कोई जरूरत भी नहीं थी..... लेकिन अब याश्का—तुम्हारा वह बेटा उसके चारों ओर मंडराता फिरता है। उसे एक अच्छा सा सबक दे दो ! सुन रहे हो मैं क्या कह रहा हूँ ? अगर तुम नहीं सबक दोगे—तो मैं दूँगा... तुम भले आदमी हो...सिर्फ तुम लकड़ी की तरह ठस्स हो ..मैंने तुम्हारे बीच में बाधा नहीं डाली थी... . मैं तुम्हें उसकी याद दिला देना चाहता हूँ।"

"अच्छा तो यह मामला चल रहा है ! तुम भी तो उसके पीछे पड़े हो, क्यों ?" वासिली गहरी आवाज में बोला।

"मैं भी !···अगर मैं चाहता होता तो सीधा उसके पास पहुँचता और तुम सब को अपने रास्ते से उखाड़ कर दूर फेंक देता !..... लेकिन मैं उसे क्या सुख दे सकता हूँ।"

"तो तुम क्यों इसमें अपनी नाक घुसेड़ रहे हो ? वासिली ने शक करते हुए कहा।

इस साधारण से प्रश्न ने सर्योझका को अवश्य आश्चर्य में डाल दिया होगा क्योंकि उसने आँखें फाड़कर वासिली की ओर देखा और खिल-खिला कर हँसते हुए बोला :

"मैं इसमें अपनी नाक क्यों घुसेड़ रहा हूँ—इस बात को तो केवल शैतान ही जानता होगा। ·· लेकिन वह कैसी औरत है ! उसमें बड़ी कशिश है !·· ···मैं उसे पसन्द करता हूँ······शायद मुझे उसके लिए अफसोस है ·· "

वासिली ने उसकी ओर अविश्वासपूर्वक देखा परन्तु किसी ने उसके हृदय में कहा कि सर्योझका निष्कपट हो बात कर रहा है।

"अगर वह एक पवित्र अक्षत योनि कुमारी होती तो मैं समझ भी सकता कि तुम्हें उसके लिए अफसोस है। परन्तु इस हालत में··· मुझे यह अजीब सा लगता है !" उसने कहा।

सर्योझका चुप रह गया और दूर समुद्र पर एक लम्बा चक्कर काट कर किनारे की ओर अपना मुँह घुमाती हुई नाव को देखने लगा। उसकी आँखें पूरी खुली हुई थीं और उनमें स्पष्टता झलक रही थी। उसका चेहरा सीधा और दयालु दिखाई दे रहा था।

वासिली ने जब उसे इस तरह देखा तो उसके हृदय में सर्योझका के प्रति कोमल भाव उत्पन्न हो आये।

"हाँ, जो तुम कह रहे हो सच है। वह एक अच्छी औरत है ···सिर्फ चाल-चलन की जरा ढीली है ! और याश्का ? मैं उसे जहन्नुम रसीद कर दूगा · पिल्ला !"

"मैं उसे पसन्द नहीं करता।" सर्योझका ने कहा।

"और तुम कहते हो कि वह उसके पीछे पड़ा है," अपनी दाढ़ी थपथपाते हुए वासिली दाँत भींच कर बोला।

"मेरी बात का यकीन करो, वह तुम्हारे और मालवा के बीच में आ जायगा," सर्योझका जोर देते हुए बोला।

उगते हुए सूरज की किरणें क्षितिज पर एक खुले हुए पंखे की तरह

फैल रही थीं। लहरों की आवाज के ऊपर, उन्हें दूर समुद्र में आती हुई नाव पर से, एक पुकारने की आवाज सुनाई दी।

"ए हो ओ-ओ!......इसे भीतर खींच लो!"

"उठो, लड़को ए! जाल को देखो!" सर्योझका ने आज्ञा दी।

आदमी उछल कर खड़े हो गए और शीघ्र ही उन पाँचों ने अपनी ड्यूटी के मुताबिक जाल के हिस्सों को पकड़ लिया। एक लम्बा तार—फौलाद की तरह मजबूत और लचीला—पानी से किनारे की ओर फैल गया और वे मछुए उसे अपनी कमर में लपेट कर घुर्राते और गहरी साँस लेते हुए किनारे की ओर खींचने लगे।

और दूसरी ओर वह नाव, लहरों के ऊपर फिसलती हुई जाल के दूसरे हिस्से से खिंच रही थी।

प्रकाशमान और भव्य सूर्य समुद्र के ऊपर निकल आया।

"अगर याकोव तुम्हें मिले तो उससे कहना कि वह कल आकर मुझ से मिल जाय," वासिली ने सर्योझका से कहा।

"अच्छी बात है।"

नाव किनारे पर आ गई और मछुओं ने उस पर से नीचे कूद कर जाल के अपने अपने हिस्से को पकड़ लिया और खींचने लगे। मछुओं के दोनों झुंड धीरे धीरे एक दूसरे के पास आ गए और जाल में लगे हुए कार्क के उतराने वाले टुकड़े एक अर्द्ध गोलाकार दशा में पानी में डूबने उतराने लगे।

उस शाम को कुछ अंधेरा हो जाने पर जब मछुए अपनी झोपड़ी में खाना खा रहे थे, मालवा थकी और उदास एक टूटी तथा उलटी पड़ी हुई नाव पर बैठी समुद्र की ओर देख रही थी जो अब अन्धकार में लिपटा पड़ा था। दूर एक आग की लपट चमकी। मालवा जानती थी कि यह वह आग है जिसे वासिली ने जलाया है। समुद्र के उस काले विस्तार में एक भटकती हुई एकाकी प्रेतात्मा की तरह यह लपट कभी जोर से चमक उठती और कभी बुझ जाती मानो डूबती हो। इस लाल धब्बे

को उस निर्जनता में लुप्त होते देखकर, मालवा उदास हो उठी, जो लहरों की निरन्तर होने वाली भनभनाहट में धीरे धीरे चमक रहा था। अचानक उसने अपने पीछे सर्योझका की आवाज सुनी:

"तुम यहाँ किसलिए बैठी हो?"

"इससे तुम्हें क्या मतलब?" उसने बिना मुड़े कठोर स्वर में उत्तर दिया।

"मुझे इसमें वैसे ही रुचि है!"

उसने आगे कुछ नहीं कहा परन्तु उसे ऊपर से लेकर नीचे तक देखा, एक सिगरेट बनाई, उसे जलाया और उसी नाव पर दूर बैठ गया। कुछ देर बाद उसने मित्रता के स्वर में कहा

"तुम अजीब औरत हो! तुम एक क्षण तक तो सबसे छिपी रहती हो और दूसरे ही क्षण हरेक की गरदन से लटक जाती हो।"

"मैं तुम्हारी गर्दन से तो नहीं लटकती, क्यों?" उसने चिड़चिड़ी होकर कहा।

"नहीं, मेरी से तो नहीं, परन्तु याश्का की से?"

"और तुम जलते हो?"

"उँह! ... सीधी बातें करो, बिल्कुल हृदय से," मालवा के कन्धों को थपथपाते हुए सर्योझका ने सलाह दी। वह उसकी बगल में बैठी थी इसलिए वह उसके चेहरे के भावों को न देख सका। जब वह बिगड़कर बोली.

"अच्छी बात है।"

"मुझे बताओ, तुमने वासिली को छोड़ दिया है?"

"मैं नहीं जानती," मालवा ने जवाब दिया कुछ देर बाद उसने आगे पूछा..

"तुम क्यों पूछते हो?"

"वैसे ही।"

"मैं उससे नाराज हूँ।"

"क्यों?"

"उसने मुझे मारा था।"

"क्या कह रही हो !........क्या, उसने ? और तुमने रोका नहीं ! ओह ! ओह !"

सर्योझका आश्चर्य में पड़ गया। उसने मालवा को कनखियों से देखा और कठोरतापूर्वक जीभ से टिटकारी भरी।

"मैं उसे कभी नहीं पीटने देती अगर मैं पिटना नहीं चाहती तो," उसने जोश में भर कर कहा।

"तो तुमने रोका क्यों नहीं ?"

"मैं नहीं चाहती थी।"

"इसका मतलब है कि तुम उस बुड्ढे विलांटे से बुरी तरह प्रेम करती हो," सर्योझका ने मजाक करते हुए कहा और सिगरेट का धुआँ उसकी ओर छोड़ा। "मुझे ताज्जुब है ! मैंने नहीं सोचा था कि तुम इस तरह की औरतों में से हो।"

"मैं तुम में से किसी को भी प्यार नहीं करती," धुँआ हटाते हुए उसने उदास होकर कहा।

"यह झूठ है !"

"मैं झूठ क्यों बोलूं ?" उसने कहा और उसकी आवाज से सर्योझका ने अनुभव किया कि वास्तव में वह झूठ नहीं बोल रही थी।

"अगर तुम उसे प्यार नहीं करतीं तो तुमने उसे अपने को मारने की इजाजत कैसे दी ?" सर्योझका ने उससे आग्रहपूर्ण स्वर में पूछा।

"मैं क्या जानूं ?........ तुम मुझे सता क्यों रहे हो ?"

"अद्भुत !" सिर हिलाते हुए सर्योझका ने कहा।

दोनों बहुत देर तक चुप बैठे रहे।

रात हो गई। बादल आकाश में धीरे धीरे रेंगते हुए समुद्र पर छाया डाल रहे थे। लहरों से मरमराहट की ध्वनि आ रही थी।

उस पहाड़ी ढाल पर जलती हुई बामिली की आग बुझ गई थी परन्तु मालवा अब भी उसी ओर देख रही थी। सर्योझका मालवा की ओर देख रहा था।

"मुझे बताओ," उसने कहा, "तुम जानती हो कि तुम क्या चाहतीहो?

"काश कि मैं जान सकती?" मालवा ने गहरी साँस लेकर बहुत धीमी आवाज में जवाब दिया।

"तो तुम नहीं जानतीं? यह बुरा है!" सर्योझका ने जोर देते हुए कहा। "मैं हमेशा जानता हूँ कि मुझे क्या चाहिए!" और उसने दुख से भरे हुए स्वर में आगे कहा: "मुसीबत तो यह है कि मैं बहुत कम किसी चीज की इच्छा करता हूँ।"

"मैं हमेशा कुछ चाहती रहती हूँ," मालवा ने खोई हुई सी आवाज में कहा—"परन्तु वह क्या है मैं नहीं जानती। कभी कभी मैं चाहती हूँ कि मैं बैठ कर समुद्र में दूर चली जाऊँ...... और फिर किसी से भी न मिलूँ। और कभी मैं चाहती हूँ कि मैं हरेक आदमी का दिमाग फिरा दूँ और एक लट्टू की तरह उसे अपने चारों ओर नचाती रहूँ। और मैं उसे देखूं और हँसूं। कभी मैं उन सब के लिए खास तौर से अपने आप के लिए इतनी दुखी हो उठती हूँ और कभी मैं उन सब की हत्या कर डालना चाहती हूँ और फिर खुद भी एक भयकर मौत से मर जाना चाहती हूँ कभी मैं उदास हो जाती हूँ और कभी खुश परन्तु अपने चारों ओर मुझे सब आदमी सुस्त मालूम पड़ते हैं जैसे लकड़ी के कुन्दे।"

"तुम ठीक कह रही हो, आदमी अच्छे नहीं हैं," सर्योझका ने स्वीकार कर लिया। "कई बार मैंने तुम्हें देखा और सोचा है कि तुम न तो मछली और गोश्त हो और न फाख्ता... परन्तु इतने पर भी तुम में कुछ ऐसी बात है .. .. तुम दूसरी औरतों की तरह नहीं हो।"

"और ईश्वर को इसके लिये धन्यवाद है!" मालवा ने हँसते हुए कहा।

उनकी बाँईं तरफ, बालू के टीले में से चाँद ऊपर निकला और समुद्र पर अपनी रुपहली चाँदनी बरसाने लगा। विशाल और कोमल चाँद आकाश के नीले गुम्बद पर धीरे धीरे तैरने लगा और तारों की चमक इसकी एक सी स्वप्निल चाँदनी में पीली होकर गायब होने लगी।

मालवा हँसी और बोली

"तुम जानते हो ? ..कभी मैं सोचती हूँ कि इन झोंपड़ियों में से एक में आग लगा दूँ तो कैसा मजा रहेगा। कैसी उथल पथल मच जायेगी।"

"मुझे भी यही कहना चाहिये!" सर्योझका ने प्रशंसा करते हुए कहा और अचानक मालवा के कन्धे पर हाथ मारता हुआ बोला: "तुम जानती हो ? मैं तुम्हें एक मजेदार खेल सिखाऊँगा और इसे हम लोग खेलेंगे। तुम पसन्द करोगी ?"

"जरूर ! खुशी से !" मालवा ने उत्सुकता से व्याकुल होकर कहा।

"तुमने याश्का के दिल में आग लगा दी है न ?"

"वह एक भट्टी की तरह जल रहा है," मालवा ने मुँह ही मुँह में हँसते हुए जवाब दिया।

"उसे अपने बाप से भिड़ा दो ! ईश्वर कसम बड़ा मजा रहेगा !... वे दोनों एक दूसरे पर रीछों की तरह झपट पड़ेंगे ... ...तुम उस बुड्ढे को थोड़ा सा और परेशान करो और उस छोकरे को भी.......और तब हम उन दोनों को आपस में भिड़ा देंगे। तुम्हारा क्या ख्याल है, क्यों ?"

मालवा मुड़ी और सर्योझका के लाल, मस्त चेहरे की ओर गौर से देखने लगी। चाँदनी में चमकता हुआ वह उसने कम चित्तीदार दिखाई दे रहा था जितना कि दिन में सूरज की चमकीली रोशनी में दिखाई देता था। उस पर क्रोध का कोई चिन्ह नहीं था। उस पर सिर्फ एक सुन्दर और कुछ शैतानियत से भरी हुई मुस्कान छा रही थी।

"तुम उन्हें इतनी घृणा क्यों करते हो ?" मालवा ने शंकित होकर उससे पूछा।

"मैं ? .. ..ओह, वासिली तो ठीक है। वह अच्छा आदमी है। मगर याश्का.......वह अच्छा नहीं है। देखो, मैं सब किसानों को नापसन्द करता हूँ......वे सब गन्दे होते हैं ! वे यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि वे गरीब और अभागे हैं......और रोटी या जो कुछ भी उन्हें दे दिया जाय ले लेते हैं। उनका जेमस्त्वो है। तुम जानती हो, जेमस्त्वो उनके सब काम कर देता है ..उनके अपने खेत हैं, अपनी जमीन है, अपने जानवर

हैं.... एक बार मैंने एक जेमस्तवो डाक्टर की कोचमैनी की थी और वहाँ उनके बारे में बहुत कुछ देखा। . बाद में मैं बहुत दिनों तक सड़क पर रहा। कभी तुम किसी गाँव में जाओ और रोटी का एक टुकड़ा माँगो तो वे तुरन्त तुम्हें पकड़ कर बाँध लेंगे।. तुम कौन हो ? क्या करते हो ? तुम्हारा पास-पोर्ट कहाँ है ?. ... मेरे साथ ऐसा कई बार हो चुका है.. .. कभी वे तुम्हें घोड़े चुराने वाला समझकर पकड़ लेंगे और कभी बिना किसी कारण के ही तुम्हें पत्थर के हौज में डाल देंगे वे हमेशा नाक फिनफिनाते रहेंगे और यह दिखायेंगे कि वे गरीब हैं, परन्तु वे जीना जानते हैं। उनके पास कुछ तो अपना है—जमीन—जिसे वे अपना समझते हैं। मेरा उनका क्या मुकाबला ?"

"तुम किसान नहीं हो ?" मालवा ने उसे टोकते हुए पूछा।

"नहीं !" सर्योझका ने गर्व से कहा "मैं शहरी हूं। मैं उग्लिच शहर का नागरिक हूँ।"

"और मैं पावलिश की रहने वाली हूँ," मालवा ने शान्त स्वर में उसे बताया।

"मेरा ऐसा कोई नहीं जो मेरे लिये खड़ा हो सके !" सर्योझका ने कहना जारी रखा—"लेकिन ये किसान. . वे रह सकते हैं शैतान ! उनका जेमस्तवो है और इसी तरह की और भी चीजें हैं !"

"जेमस्तवो क्या है ?" मालवा ने पूछा।

"जेमस्तवो क्या है ? शैतान जानता है ! यह किसानों के लिये बनाया गया था। यह उनका शासन है . . मगर इसे गोली मारो . .. मतलब की बातें करो—तो इस छोटे से मजाक का इन्तजाम करना चाहिए, क्यों ? इससे कोई नुकसान नहीं होगा। उनमें खाली लड़ाई होगी—खाली इतना ही, वासिली ने तुम्हें मारा था, मारा था न ? अच्छा तो उसके बेटे को ही उसे सजा देने दो।"

"यह विचार बुरा तो नहीं है।" मालवा मुस्कराती हुई बोली।

"जरा सोचो . .. जब तुम्हारी खातिर दूसरे आदमी एक दूसरे की पसलियाँ तोड़ेंगे तब मुझे उस दृश्य को देखकर मजा नहीं आयेगा ? और वह भी केवल तुम्हारे एक इशारे पर ? तुम अपनी जीभ केवल एक या दो बार

हिला दो और वे एक दूसरे की हड्डी पसली एक करने लगेंगे।"

आधे मजाक और आधी उत्सुकतापूर्वक बोलते हुए सर्योझका ने मालवा को विस्तार से समझाया और पूरे उत्साह पूर्वक उसके उस पार्ट का स्पष्टीकरण भी बताया जो उसे अदा करना था।

"ओह! अगर मैं एक सुन्दर औरत होता! क्या मैं इस दुनियाँ में कोई हलचल न पैदा करता!" उसने अपने हाथों को सिर पर रखकर और आँखों को तन्मयतापूर्वक बन्द करते हुए अपनी बात खत्म की।

चाँद आसमान में ऊँचा चढ़ चुका था जब वे दोनों अलग हुए और उन लोगों के वहाँ से जाते ही रात्रि का सौंदर्य द्विगुणित हो उठा। अब केवल वह अनन्त सागर, रुपहला चाँद और तारों से भरा हुआ नीला आकाश रह गया। वहाँ इनके अलावा रेत के टीले, उन पर उगी हुई छोटी छोटी झाड़ियाँ और दो लम्बी टूटी फूटी, बालू में खड़ी हुई इमारतें जो दो विशाल सुरदरे बने हुए लाश रखने के बक्सों की तरह दिखाई दे रही थीं, भी खड़ी हुई थीं। परन्तु ये सब समुद्र की तुलना में अत्यन्त साधारण और नगण्य दिखाई दे रहे थे। और तारे जो झांक कर इसे देख रहे थे, शान्त और शीतल प्रकाश छिटका रहे थे।

बाप और बेटा झोंपड़ी में आमने सामने बैठे हुए वोदका पी रहे थे। बेटा अपने साथ वोद्का लेता आया था जिससे बाप के साथ उसकी मुलाकात मनहूस न बन जाय और इसलिए भी कि बाप का दिल उसकी तरफ से नरम हो जाय। सर्योझका ने उसे बता दिया था कि मालवा की वजह से उसका बाप उससे नाराज था और यह कि उसने मालवा को मारते मारते बेदम कर देने की धमकी दी है, और यह कि मालवा इस बात को जानती थी। इसी वजह से वह उसे आत्म-समर्पण करने में हिचक रही थी। सर्योझका ने उससे मजाक करते हुए कहा था: "वह तुम्हारी हरकतों के लिए तुम्हें दुरुस्त कर देगा। वह तुम्हारे बाल [illegible] कि वे सब भर [illegible] हो जायगे। इसलिए अच्छा हो कि तुम वहाँ न जाओ।"

इन लाल बालों वाले, अभिमानी व्यक्ति के बारे में याकोव के

हृदय में अपने बाप के खिलाफ क्रोध की भयङ्कर ज्वाला प्रज्वलित करदी थी और इससे भी अधिक मालवा के व्यवहार ने तो उसे क्रोध से अन्धा बना दिया था। मालवा के इस व्यवहार ने, कि कभी तो वह उसे घृणापूर्वक बुरी तरह देखती और दूसरे ही क्षण प्यार करने लगती, याकोव के हृदय में यह इच्छा उत्पन्न करदी थी कि इस पीड़ा के असह्य हो उठने के पहले ही वह उसे प्राप्त करले।

और इसलिए, अपने बाप से मिलते समय उसने उसे अपने रास्ते का रोड़ा समझा—एक ऐसा रोड़ा कि जिस पर न तो तुम विजय प्राप्त कर सकते हो और न जिसे बचाकर आगे ही बढ़ सकते हो। वह उसके सामने बैठकर उसकी तरफ दृढ़तापूर्वक गम्भीर होकर घूरने लगा मानो कह रहा हो ·

"मुझे छूने की हिम्मत तो करो!"

उन्होने अब तक दो दो प्याले शराब चढ़ा ली थी परन्तु अभी तक एक दूसरे से एक शब्द भी नहीं कहा था। केवल मछली पकड़ने वाले स्थान के विषय में एक दो बहुत ही मालूमी बातें हुई थीं। समुद्र के बीच में अकेले एक दूसरे का सामना करते हुए वे अपने हृदय में एक दूसरे के प्रति भयङ्कर क्रोध बढ़ाते बैठे हुए थे। दोनों ही इस बात को जान रहे थे कि शीघ्र ही उनका क्रोध उबल पड़ेगा और उन्हें झुलसा देगा।

झोंपड़ी को ढकने वाली लम्बी चौड़ी चटाई हवा में फड़फड़ा रही थी। सरकंडे एक दूसरे से खड़खड़ा रहे थे। मस्तूल के सिरे पर बँधा हुआ कपड़ा फरफराहट का शोर मचा रहा था। परन्तु ये सारी आवाजें फीकी पड़कर ऐसी लग रही थीं मानो कोई बहुत दूर फुसफुसाती हुई आवाज में दीनतापूर्वक असम्बद्ध रूप से किसी चीज की भीख मांग रहा हो।

"क्या सर्योझका अब भी खूब शराब पीता है?" वासिली ने अप्रसन्न स्वर में पूछा।

"हाँ, वह हर रात शराब पीता है," याकोव ने और वोदका ढालते हुए कहा।

"इससे वह मर जायगा इसका यही नतीजा होता है, यह आज़ाद ज़िन्दगी···भयहीन ! और तुम भी वैसे ही हो जाओगे······"

याकोव ने संक्षेप में उत्तर दिया :

"नहीं मैं नहीं बनूंगा ।"

"तुम नहीं बनोगे ?" वासिली ने त्यौरी चढ़ाकर कहा—"मैं जानता हूँ कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ ···· तुम्हें यहाँ आए कितने दिन हुए हैं ? यह तीसरा महीना है ! जल्दी ही तुम्हारे घर लौटने का समय आ जायगा । क्या तुम्हारे पास घर ले जाने के लिए काफी पैसा होगा ?" उसने गुस्से से अपना प्याला उठा लिया, मुँह में शराब उंडेली, अपनी हथेलियों में दाढ़ी समेटी और उसे इतनी ताकत से खींचा कि उसका सिर भी नीचे झुक गया ।

"इतने थोड़े समय में मैं ज्यादा नहीं बचा सका," याकोव बोला ।

"अगर यह बात है तो तुम्हारे यहाँ रहने से कोई फायदा नहीं । गाँव, घर वापस चले जाओ ।"

याकोव मुस्कराया परन्तु बोला कुछ नहीं ।

"तुम यह अजीब शकल क्यों बना रहे हो ?" अपने बेटे की खामोशी से चिढ़कर वासिली ने गुस्से से पूछा ।

"तुम हँसने की हिम्मत कैसे करते हो जब तुम्हारा बाप तुमसे बात कर रहा है ! होशियार रहो ! तुमने बहुत जल्दी आज़ादी लेना शुरू कर दिया है ! मुझे तुम्हारे ज़ंज़ीर डालनी पड़ेगी ।"

याकोव ने थोड़ी सी शराब उंडेली और पी गया । बाप की फटकार ने उसके गुस्से को उत्तेजित कर दिया था परन्तु उसने अपने ऊपर काबू कर लिया और जो कुछ वह कहने की सोच रहा था उसे चबा गया, क्योंकि ऐसा करके वह बाप के गुस्से को और ज्यादा भड़काना नहीं चाहता था । सच बात तो यह थी कि वह बाप की आँखों में कठोर और भयङ्कर चमक देखकर डर गया था ।

यह देखकर कि बेटे ने बिना उसके दिए हुए दूसरी बार शराब पी ली है, वासिली और भी उत्तेजित हो उठा ।

"तुम्हारा बाप तुम्हें घर जाने के लिए कह रहा है और तुम उस पर हँसते हो, क्यों ?" उसने जवाब तलब किया।

"शनिवार को नौकरी छोड़ दो और जल्दी घर चले जाओ ! सुन रहे हो मैं क्या कह रहा हूँ ?"

"मैं नहीं जाऊँगा !" याकोव ने सिर हिलाते हुए दृढ़ता और अक्खड़ता से कहा।

"तुम नहीं जाओगे, क्यों ?" वासिली गरजा और हाथों को पीपे पर टिका कर खड़ा होगया।—"तुम समझते हो कि किससे बातें कर रहे हो ? क्या तुम कुत्ते हो जो अपने बाप पर भौंकते हो ? तुम भूल गए कि मैं तुम्हारे साथ क्या कर सकता हूँ ? क्या तुम भूल गए ?"

उसके होंठ काँपे, चेहरा विक्षोभ से सिकुड़ गया, नसें उभर आईं।

"मैं कुछ भी नहीं भूला हूँ," बाप की ओर बिना देखे हुए धीमी आवाज में याकोव ने जवाब दिया। "मगर तुम्हें तो सब बातें याद हैं न ? तुम पहले अपनी तरफ देखो !"

"मुझे उपदेश देने की हिम्मत मत करो ! मैं मारते मारते तुम्हारा भुरता बना दूंगा।…… "

याकोव बाप के हाथ को बचा गया, जैसे ही उसने उस पर चोट की और दाँत भींच कर बोला :

"मुझे छूने की हिम्मत मत करना ! तुम गाँव में घर पर नहीं हो।"

"खामोश ! मैं तुम्हारा बाप हूँ—चाहे कहीं भी हूँ !"

"तुम मुझे यहाँ गाँव के पुलिस थाने पर कोड़ों से नहीं पिटवा सकते ! यहां तो थाना है नहीं !" याकोव ने टठते हुए और अपने बाप के मुँह पर हँसते हुए कहा।

वासिली लाल आँखें किए खड़ा था। वह आगे को सिर झुकाए, मुट्ठी बांधे, वोदका की गन्ध मिली हुई गरम सांसें अपने बेटे के मुँह पर छोड़ रहा था। याकोव पीछे हटा और भौंहें नीची कर बाप की प्रत्येक गतिविधि को देखने लगा जिससे वह उसकी चोट को बचा सके। बाहर से

वह बिलकुल शांत था परन्तु उसके सारे शरीर पर गरम पसीने की धारें बह उठीं। उनके बीच में वह पीपा खड़ा था जो मेज का काम देता था।

"मैं तुम्हें कोड़ों से नहीं मार सकता, तुम कहते हो," वासिली ने घर-घराती आवाज में पूछा और शिकार पर उछलने को तत्पर बिल्ली की तरह अपनी पीठ मोड़ी।

"यहाँ सब बराबर हैं ''तुम भी एक मजदूर हो और मैं भी हूँ!

"अच्छा, तो यह बात है?"

"तुम क्या समझते हो? मुझ पर गुस्से से पागल क्यों हो रहे हो? क्या तुम समझते हो कि मैं नहीं जानता? तुम्हीं ने यह शुरू किया था''"

वासिली गरजा और इतनी तेजी से अपना हाथ घुमाया कि याकोव उसे बचा न सका। हाथ उसके सिर पर पड़ा। वह लड़खड़ाया और बाप के गुस्से से तमतमाए हुए चेहरे को देखकर चिल्ला उठा :

"सावधान!" उसने उसे चेतावनी दी और जैसे ही वासिली ने दुबारा हाथ उठाया उसने अपनी मुट्ठी तान ली।

"मैं तुम्हें बताऊँगा कि सावधान कैसे रहा जाता है?"

"मान जाओ, मैं कहे देता हूँ!"

"अहा!'''तुम अपने बाप को धमका रहे हो!'''अपने बाप को!'''अपने बाप को!''''"

उस छोटी सी झोंपड़ी ने उनकी उछल-कूद को रोक दिया। वहाँ अधिक स्थान नहीं था। वे नमक के बोरों, उलटे रखे हुए पीपे और पेड़ के तने के ऊपर लड़खड़ाने लगे।

पीला पड़ा हुआ और पसीने से नहाया हुआ याकोव अपने घूंसे पर पोरों को रोकते हुए, दाँत भींच कर भेड़िये की तरह आँखों से आग बरसाते हुए, धीरे से अपने बाप के सामने से पीछे हटा जबकि बाप ने गुस्से से अन्धे होकर घूंसे दिखाते हुए उसका पीछा किया और लगातार इसी तरह से पाँव घिसटाते हुए एक जंगली रीछ की तरह चीखा :

"रहने दो ! बहुत हो चुका ! बन्द करो !" याकोव ने झोंपड़ी के खुले दरवाजे से बाहर निकलते हुए शान्त परन्तु भयंकर आवाज में कहा ।

उसका बाप और भी जोर से गरजा और उसके पीछे भागा परन्तु उसकी चोटें केवल बेटे के हाथों पर ही पड़ीं ।

"तुम पागल तो नहीं हो गए हो...पागल तो नहीं हो !" याकोव ने छेड़ते हुए कहा—यह अनुभव कर कि वह अपने बाप से बहुत ज्यादा फुर्तीला है !

"तू ठहर तो सही,..तू जरा ठहर तो सही..." परन्तु याकोव एक तरफ उछल कर समुद्र की ओर भागा ।

वासिली नीचा सिर किए और बाहें फैलाए उसके पीछे भागा परन्तु किसी चीज से टकराया और मुँह के बल जमीन पर जा गिरा । वह जल्दी से उठकर घुटनों के बल बैठ गया और हाथों से शरीर को सहलाने लगा । वह इस भाग दौड़ से थक गया था और इस से बेचैन हो रहा था कि बेटे को उसकी गलती के लिये दंड नहीं दे सका । उसे अपनी कमजोरी का अनुभव कर बहुत दुख हुआ ।

"भगवान तुझे गारत करे !" वह घरघराती आवाज में चीखा--उस ओर अपनी गर्दन बढ़ा कर जिधर याकोव भागा था और अपने कांपते होठों से पागलों की तरह झाग डालने लगा ।

याकोव एक नाव से टिककर गौर से बाप को देखता जाता और अपना सिर सहलाता जाता था । उसकी कमीज की एक बाँह पूरी तरह फट गई थी और केवल एक धागे से लटक रही थी । कालर भी फट गया था । उसकी पसीने से भीगी हुई छाती धूप में इस तरह चमक रही थी मानो उस पर ग्रीस चुपड़ दी गई हो । अब उसके मन में बाप के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई । उसने उसे हमेशा अपने से ताकतवर समझा था । और अब उसे बालू पर बुरी तरह और दीन दशा में बैठे घूंसा दिखा कर धमकाते हुए देखकर वह गहरे सन्तोष से मुस्कराया, एक ऐसी मुस्कान से जिसके द्वारा ताकतवर कमजोर की तरह नफरत से देखता है ।

"तेरा बुरा हो !...... तू हमेशा के लिए नर्क में पड़े !"

वासिली ने इतने जोर से उसे गालियाँ दीं कि याकोव उपेक्षा का भाव दिखाते हुए समुद्र की ओर देखने लगा--उन झोपड़ियों की ओर, मानो डर रहा हो कि वहाँ कोई निर्बलता की इन चीजों को सुन न ले। परन्तु वहाँ—दूर-लहरों और सूरज के अलावा और कोई भी न था। उसने तब थूका और बोला :

"चीखते रहो !......तुम किसे नुकसान पहुचा रहे हो ? सिर्फ अपने को......और जब कि यह घटना हम लोगों के बीच घटी है। मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं क्या सोचता हूं"

"चुप रहो !...मेरी नजरों से हट जाओ।...भाग जाओ !" वासिली गरजा।

"मैं गाँव वापिस नहीं जाऊँगा," अपनी आँखों को बाप के ऊपर जमा कर उसकी हरेक हरकत को देखते हुए वासिली ने कहा : "मैं यहाँ जाड़ों तक ठहरूँगा। यहाँ रहना मेरे लिए अच्छा है। मैं बेवकूफ नहीं हूँ ! मैं सब समझता हूँ। यहाँ जिन्दगी आसान है ......घर पर जो तुम चाहो मेरे साथ कर सकते हो मगर यहाँ देखो !"

यह कह कर उसने अपना घूंसा उठाया और बाप को दिखाते हुए हँसा, जोर से नहीं, परन्तु इतनी जोर से कि उसे सुनकर वासिली फिर गुस्से से पागल होकर उठ खड़ा हुआ। उसने एक पतवार उठाई और चीखता हुआ याकोव की ओर दौड़ा।

"अपने बाप को ? अपने बाप को घूंसा दिखाता है ? मैं तुझे मार डालूँगा !"

गुस्से से पागल बना हुआ जब तक वह नाव तक पहुंचा, याकोव दूर भाग चुका था—अपनी फटी हुई आस्तीन को पीछे फरफराता हुआ।

वासिली ने उसके पीछे पतवार फेंकी परन्तु वह [illegible] और फिर हांफते हुए उस बुड्ढे ने नाव के सहारे खड़े होकर, अपने बेटे की ओर देखते हुए पागल के समान नाव की लकड़ी को खरोंच डाला।

याकोव ने दूर से चिल्लाते हुए कहा :

"तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। तुम्हारे बाल सफेद हो चुके हैं और फिर भी तुम एक औरत के पीछे इस तरह पागल हो उठे हो! उँह, तुम! परन्तु मैं गाँव वापिस नहीं जा रहा हूँ तुम चले जाओ। तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं है!"

"यास्का! चुप रहो!" याकोव की आवाज को डुबाते हुए वासिली गरजा। "यास्का! मैं तुम्हें मार डालूँगा। यहाँ से भाग जाओ!"

याकोव धीरे धीरे कदम रखता हुआ चल दिया।

उसका बाप सूनी और पागल सी आँखों से उसे देखता रहा। वह छोटा दिखाई दे रहा था। उसके पैर जैसे बालू में गड़ गए थे ''वह कमर तक घुस गया'''कन्धे तक, गर्दन तक। वह चला गया था। एक क्षण बाद, उस जगह से कुछ दूर, जहाँ वह गायब हुआ था, उसका सिर दिखाई दिया, फिर उसके कन्धे और फिर उसका पूरा शरीर ''' लेकिन अब वह और भी छोटा लग रहा था। वह मुड़ा, वासिली की तरफ देखा और कुछ चिल्लाया।

"तेरा बुरा हो! तेरा बुरा हो! तेरा बुरा हो!" वासिली जवाब में चीखा।

बेटे ने घृणा प्रकट की, मुड़ा और चल दिया '' फिर रेत के टीलों के पीछे गायब हो गया।

वासिली बहुत देर तक उधर देखता रहा जिधर उसका बेटा गया था। वह तब तक देखता रहा जब तक कि उसकी गर्दन में दर्द न होने लगा क्योंकि वह नाव के सहारे उटंग कर यकी कष्टपूर्ण मुद्रा में बैठा हुआ था। वह उठा पर हरेक जोड़ में होने वाले दर्द से लड़खड़ा गया। उसकी पेटी कोख तक खिसक आई थी। उसने अपनी सुन्न पड़ी हुई उँगलियों से उसे खोला, अपनी आँखों के पास लाया और फिर रेत पर फेंक दिया। फिर वह झोंपड़ी में गया और धूल में बने हुए एक गढ़े के सामने रुक गया। उसे याद आया कि यही वह जगह है जहाँ वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा था और

यह कि अगर वह गिरा न होता तो अपने बेटे को पकड़ लेता। झोंपड़ी में सब सामान तितर बितर हो गया था। वासिली ने वोदका की बोतल के लिए चारों ओर देखा। उसने उसे बोरों के ऊपर पड़ा देखा और उठा लिया। बोतल की डाट कसी हुई थी इसी से वोदका फैलने से बच गई थी। वासिली ने धीरे से डाट निकाली और बोतल का मुँह होठों से लगाकर उसने शराब पीना चाहा। परन्तु बोतल उसके दाँतों से टकराई और वोदका उसके मुँह से निकलकर उसकी दाढ़ी और सीने पर फैल गई।

वासिली ने अपने कानों में गूंजने की सी आवाज सुनी, उसका दिल जोर से धड़कने लगा और पीठ में असह्य पीड़ा हो उठी।

"फिर भी मैं बुड्ढा हूँ!" उसने जोर से कहा और झोंपड़ी के दरवाजे पर धूल में गिर पड़ा।

उसके सामने समुद्र फैला हुआ था। लहरें शोर मचाती हुई खेल रही थीं—हमेशा की तरह। वासिली बहुत देर तक पानी की तरफ देखता रहा और अपने बेटे के उत्सुकता से कहे हुए उन शब्दों को याद करने लगा :

"काश कि यह सब धरती होती! काली धरती! और अगर हम इसे जोत सकते!"

इस किसान के मन में एक तीखा विचार उठा। उसने जोर से अपना सीना रगड़ा, चारों ओर देखा और एक गहरी सांस ली। उसका सिर नीचे को लटक गया और उसकी पीठ झुक गई मानो उस पर भारी बोझ रखा हो। गले में सांस अटकने लगी जैसे उसका दम घुट रहा हो। उसने गला साफ करने के लिए जोर से खांसा और अपने ऊपर आकाश की ओर देखते हुए क्रॉस का निशान बनाया। उसके मन में उदास विचार उठने लगे।...

...... " एक बदमाश औरत के लिए उसने अपनी स्त्री को छोड़ दिया था जिसके साथ वह पन्द्रह वर्ष तक ईमानदारी से मेहनत करते हुए रहा था... और इसके लिए भगवान ने उसके पुत्र द्वारा विद्रोह करा कर उसे सजा दी थी। हाँ, यही बात थी। हे भगवान!

याकोव ने दूर से चिल्लाते हुए कहा :

"तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। तुम्हारे बाल सफेद हो चुके हैं और फिर भी तुम एक औरत के पीछे इस तरह पागल हो उठे हो! उँह, तुम! परन्तु मैं गाँव वापिस नहीं जा रहा हूँ तुम चले जाओ। तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं है!"

"याश्का! चुप रहो!" याकोव की आवाज को डुबाते हुए वासिली गरजा। "याश्का! मैं तुम्हें मार डालूँगा। यहाँ से भाग जाओ!"

याकोव धीरे धीरे कदम रखता हुआ चल दिया।

उसका बाप सूनी और पागल सी आँखों से उसे देखता रहा। वह छोटा दिखाई दे रहा था। उसके पैर जैसे बालू में गड़ गए थे...वह कमर तक धुस गया' कन्धे तक, गर्दन तक। वह चला गया था। एक क्षण बाद, उस जगह से कुछ दूर, जहाँ वह गायब हुआ था, उसका सिर दिखाई दिया, फिर उसके कन्धे और फिर उसका पूरा शरीर ... लेकिन अब वह और भी छोटा लग रहा था। वह मुड़ा, वासिली की तरफ देखा और कुछ चिल्लाया।

"तेरा बुरा हो! तेरा बुरा हो! तेरा बुरा हो!" वासिली जवाब में चीखा।

बेटे ने घृणा प्रकट की, मुड़ा और चल दिया' फिर रेत के टीलों के पीछे गायब हो गया।

वासिली बहुत देर तक उधर देखता रहा जिधर उसका बेटा गया था। वह तब तक देखता रहा जब तक कि उसकी गर्दन में दर्द न होने लगा क्योंकि वह नाव के सहारे उठंग कर बड़ी कष्टपूर्ण मुद्रा में लेटा हुआ था। वह उठा पर हरेक जोड़ में होने वाले दर्द से लड़खड़ा गया। उसकी पेटी कोख तक खिसक आई थी। उसने अपनी सुन्न पड़ी हुई उँगलियों से उसे खोला, अपनी आँखों के पास लाया और फिर रेत पर फेंक दिया। फिर वह झोंपड़ी में गया और भूल में बने हुए एक गढ़े के सामने रुक गया। उसे याद आया कि यही वह जगह है जहाँ वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा था और

यह कि अगर वह गिरा न होता तो अपने बेटे को पकड़ लेता। झोंपड़ी में सब सामान तितर बितर हो गया था। वासिली ने वोद्‌का की बोतल के लिए चारों ओर देखा। उसने उसे चोरों के ऊपर पड़ा देखा और उठा लिया। बोतल की डाट कसी हुई थी इसी से वोद्‌का फैलने से बच गई थी। वासिली ने धीरे से डाट निकाली और बोतल का मुँह होठों से लगाकर उसने शराब पीना चाहा। परन्तु बोतल उसके दाँतों से टकराई और वोद्‌का उसके मुँह से निकलकर उसकी दाढ़ी और सीने पर फैल गई।

वासिली ने अपने कानों में गूंजने की सी आवाज सुनी, उसका दिल जोर से धड़कने लगा और पीठ में असह्य पीड़ा हो उठी।

"फिर भी मैं बुड्ढा हूँ!" उसने जोर से कहा और झोंपड़ी के दरवाजे पर धूल में गिर पड़ा।

उसके सामने समुद्र फैला हुआ था। लहरें शोर मचाती हुई खेल रही थीं—हमेशा की तरह। वासिली बहुत देर तक पानी की तरफ देखता रहा और अपने बेटे के उत्सुकता से कहे हुए उन शब्दों को याद करने लगा :

"काश कि यह सब धरती होती! काली धरती! और अगर हम इसे जोत सकते!"

इस किसान के मन में एक तीखा विचार उठा। उसने जोर से अपना सीना रगड़ा, चारों ओर देखा और एक गहरी सांस ली। उसका सिर नीचे को लटक गया और उसकी पीठ झुक गई मानो उस पर भारी बोझ रखा हो। गले में सांस अटकने लगी जैसे उसका दम घुट रहा हो। उसने गला साफ करने के लिए जोर से खांसा और अपने ऊपर आकाश की ओर देखते हुए क्रॉस का निशान बनाया। उसके मन में उदास विचार उठने लगे।... ......एक बदमाश औरत के लिए उसने अपनी स्त्री को छोड़ दिया था जिसके साथ वह पन्द्रह वर्ष तक ईमानदारी से मेहनत करते हुए रहा था... और इसके लिए भगवान ने उसके पुत्र द्वारा विद्रोह करा कर उसे सजा दी थी। हाँ, यही बात थी। हे भगवान!

उसके बेटे ने उसका मजाक उड़ाया था, उसके दिल को तोड़ दिया था। इससे अच्छा तो यह होता कि अपने बाप के दिल को सताने के बजाय वह मर जाता ! और किसलिए ! एक बदमाश औरत के लिए जो पाप की जिन्दगी बिता रही है उसके लिए यह पाप था, एक बुड्ढा आदमी जिसने अपने स्त्री और बेटे को छोड़ दिया था, भुला दिया था और इस औरत के साथ रहने लगा था ' ।

इसलिए भगवान् ने अपने दैवी कोप के द्वारा उसे उसके कर्त्तव्य की याद दिला दी और उसके बेटे से उसके दिल पर चोट पहुंचा कर ठीक और मुनासिब सजा दी। यही बात थी। हे भगवान् !

बालू पर उदास बैठे हुए वासिली.ने अपने ऊपर क्रॉस का निशान बनाया और आँखें झपका कर पलकों पर आए हुए आँसुओं को, जो उसे अन्धा बना रहे थे, गिरा दिया ।

सूरज समुद्र में डूब गया। डूबते हुए सूरज का अद्‌भुत प्रकाश धीरे-धीरे मिट गया। किसी शान्त एव सुदूर प्रदेश से आते हुए हवा के गर्म झोंके ने उस किसान के ऊपर पखा किया जो आँसुओं से भीग रहा था । प्रायश्चित के इन विचारों में डूबा हुआ वह वहाँ तब तक बैठ रहा जब तक कि गिर कर सो न गया।

अपने बाप से हुई लड़ाई के दो दिन बाद याकोव दूसरे कई मछुओं के साथ, एक स्टीम बोट से खींची जाने वाली बड़ी नाव से, उस जगह से तीस मील दूर समुद्र में एक विशेष प्रकार की समुद्री मछली पकड़ने गया । पाँच दिन बाद वह अकेला एक पाल वाली नाव में वहाँ लौट आया । उसे खाने पीने का सामान लाने के लिए वापिस भेजा गया था । वह दोपहर बाद आया जब मछुए खा पीकर आराम कर रहे थे । सख्त गर्मी पड़ रही थी, तपती हुई बालू पैरों को जला रही थी और मछली तौलने के काँटे और मछली की हड्डियाँ पैरों में चुभ रही थीं। याकोव सावधानी से झोंपडी की ओर चलने लगा। चलते हुए वह अपने बूटों को न पहनने के लिए अपने को कोसता जा रहा था। उसने नाव तक वापिस जाकर बूट लाने में बड़ी

सुस्ती अनुभव की और साथ ही वह कुछ खाने और मालवा को देखने के लिये व्याकुल हो रहा था। उसने वहां समुद्र पर सुस्ती से समय बिताते हुए कई बार मालवा के बारे में सोचा था और अब वह यह जानना चाहता था कि उसके बाप से उसकी मुलाकात हुई है या नहीं और अगर हुई है तो उसने मालवा से क्या कहा है .....शायद उसने मालवा को पीटा हो। यह तो बुरी बात नहीं है—यह उसकी अकड़ को जरा ढीला कर देगी! अपने इस रूप में तो वह बड़ी अक्खड़ और घमण्डिन है।

झोंपड़ियाँ पूर्ण शान्त और निर्जन थीं। झोंपड़ियों की खिड़कियाँ पूरी तरह खुली हुई थीं और ये बड़े काठ के बक्स भी गर्मी से हाँफते हुए से लग रहे थे। एजेन्ट के दफ्तर में जो झोंपड़ियों से छिपा हुआ था एक बच्चा अपनी पूरी ताकत से चिल्ला रहा था। पीपों के एक ढेर के पीछे धीमी आवाजें सुनाई दीं।

याकोव सीना तान कर पीपों की तरफ बढ़ा। उसे लगा कि उसने मालवा की आवाज सुनी थी। वहाँ पहुँच कर और उनको देखकर वह पीछे लौटा, त्यौरी चढ़ाई और रुक गया।

पीपों के पीछे, उनकी छाया में, लाल बालों वाला सर्योझका अपने सिर के नीचे हाथ रखे, पीठ के बल लेटा हुआ था। उसके एक तरफ मालवा बैठी हुई थी।

"वह यहाँ क्या कर रहा है?" अपने बाप के विषय में सोचते हुए याकोव ने अपने आप कहा। "क्या उसने यहाँ मालवा के और ज्यादा नजदीक रहने के लिये अपना वह आराम का काम छोड़ दिया है जिससे वह याकोव को उससे दूर रख सके? ओह! क्या हो अगर माँ इसको इन हरकतों को सुने? ..... मैं उनके पास जाऊँ या नहीं?"

"अच्छा!" उसने सर्योझका को कहते सुना "तो, यह अलविदा है, क्यों? अच्छी बात है! जाओ और धरती को जोतो!"

याकोव ने खुशी से आँखें झपकाईं।

"हाँ, मैं जाऊँगा!" उसका बाप बोला।

याकोव तब बहादुरी से आगे बढ़ा और प्रसन्न होकर बोला :

"सच्चे साथियों को बधाई !"

उसके बाप ने उसकी तरफ एक तेज निगाह फेंकी और हटा ली। मालवा ने पलक भी नहीं हिलाई परन्तु सर्योझका ने टांग हिलाते हुए गहरी धीमी आवाज में कहा :

"अरे देखो ! अपना प्यारा बेटा याश्का दूर देश से लौट आया है !" और फिर वह अपनी पहली आवाज में कहने लगा "यह इस लायक है कि इसकी चमड़ी उधेड़ कर भेड़ की खाल की तरह उसे ढोल पर मढ़ दिया जाय।"

मालवा धीरे से हँसी।

"बड़ी गर्मी है !" याकोव बैठते हुए बोला।

वासिली ने फिर उसकी तरफ देखा और बोला :

"मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा था, याकोव।"

याकोव ने देखा कि उसकी आवाज पहले से कोमल थी और उसका चेहरा भी पहले से कम उम्र का दिखाई दे रहा था।

"मैं खाने पीने का सामान लेने वापिस आया हूँ" उसने घोषणा की और फिर उसने सर्योझका से सिगरेट बनाने के लिए तम्बाकू मांगी।

"तुम मुझ से तम्बाकू नहीं पा सकते, बेवकूफ छोकरे !" सर्योझका ने बिना हिले डुले जवाब दिया।

"मैं घर जा रहा हूँ, याकोव," वासिली ने जोर देकर कहा और रेत पर उँगली से निशान बनाता रहा।

"ऐसी बात है ?" बाप की तरफ भोलेपन से देखते हुए याकोव ने जवाब दिया।

"तुम्हारा क्या ख्याल है ⋯⋯क्या तुम यहीं ठहर रहे हो ?"

"हाँ, मैं यहीं रहूँगा। घर पर हम दोनों के लिये काफी काम नहीं है।"

"अच्छा, मुझे कुछ नहीं कहना। जैसा तुम्हें ठीक लगे करो⋯⋯"

तुम अब बच्चे नहीं हो·········सिर्फ यह याद रखना—मैं ज्यादा नहीं चलूँगा। शायद मैं जिन्दा रहूँ······परन्तु जहाँ तक काम करने का सवाल है—मुझे विश्वास नहीं कि मैं कर सकूँगा·········मैं खेतीबारी करना भूल गया हूँ···इसलिए इस बात को मत भूलना कि ···घर पर तुम्हारे एक माँ है।"

उसे बोलना बड़ा कठिन लगा होगा। उसके शब्द ऐसे लग रहे थे मानो उसके दाँतों में चिपक गए हों। उसने अपनी दाढ़ी को थपथपाया और उसका हाथ काँपने लगा।

मालवा ने उसकी तरफ गौर से देखा। सर्योझका ने एक आँख सिकोड़ी और दूसरी से, जो बड़ी और गोल थी, याकोव के चेहरे की ओर कठोरता पूर्वक देखा। याकोव खुशी से फूल रहा था परन्तु इस डर से कि उसकी खुशी कहीं प्रकट न हो जाय, चुपचाप बैठा हुआ अपने पैरों को देखता रहा।

"तो अपनी माँ को मत भूल जाना···याद रखो कि तुम उसके इकलौते बेटे हो!" वासिली ने कहा।

"तुम्हें मुझको यह बताने की जरूरत नहीं, मैं जानता हूँ!" याकोव ने सिकुड़ते हुए जवाब दिया।

"अच्छी बात है, जब तुम जानते हो!" उसे अविश्वासपूर्वक देखते हुए उसके बाप ने कहा—"मुझे सिर्फ यही कहना है—भूल मत जाना!"

वासिली ने एक गहरी साँस ली। बहुत देर तक चारों खामोश बैठे रहे। तब मालवा बोली :

"घन्टी जल्दी ही बजने वाली है।"

"अच्छा, मैं भी चल रहा हूँ।" खड़े होते हुए वासिली बोला। बाकी तीनों ने भी यही किया।

"अलविदा, अच्छो! ···अगर तुम कभी वोल्गा की तरफ आओ तो शायद तुम मुझसे मिलने अवश्य आओगे? सिमबिर्स्क, युन्द, मार्कों का गाँव, युन्द निकोलो—निकोलस्काया वोलोस्ट!"

"अच्छी बात है !" वासिली से हाथ मिलाते हुए सर्योंझका ने कहा—उसके हाथ उसने अपनी उभरी हुई नसों वाले पंजे में पकड़ते हुए जिस पर लाल बाल उगे हुए थे, मिलाये। वह उसके उदास गम्भीर चेहरे की ओर देखकर मुस्कराया।

"लिकोवो-निकोलस्काया काफी बड़ी जगह है.........यह उधर देहात में बहुत मशहूर है और हम लोग इससे करीब चार मील दूरी पर रहते हैं ' ...."वासिली ने समझाते हुए कहा।

"अच्छी बात है, ठीक है......अगर मैं कभी उधर गया तो जरूर आऊँगा !"

"अलविदा !"

"अलविदा, भाई !"

"अलविदा, मालवा," उसकी तरफ बिना देखे हुए उसने घुटती हुई आवाज में कहा।

मालवा ने धीरे से अपनी बाँह से होठ पोंछे और वासिली के कन्धों पर अपने दोनों सफेद हाथ खामोशी और गम्भीरतापूर्वक देखते हुए तीन बार उसके गालों और होठों को चूमा।

वासिली परेशान हो उठा और असम्बद्ध रूप से कुछ बड़बड़ाया। याकोव ने अपनी कुटिल मुस्कान छिपाने के लिये सिर नीचा कर लिया और सर्योंझका ने ऊपर आसमान की तरफ देखा और धीरे से जम्हाई ली।

"तुम्हें पैदल चलने में बड़ी तकलीफ होगी," उसने कहा।

"ओह, कोई बात नहीं अच्छा, अलविदा, याकोव !"

"अलविदा !"

वे दोनों, यह न जानते हुए कि क्या किया जाय, एक दूसरे के सामने खड़े थे। इस उदास वाक्य—"अलविदा", ने जो वहाँ इतनी बार और उबा देने वाले ढङ्ग से कहा गया था, याकोव के मन में अपने बाप के लिए एक कोमल भावना उत्पन्न करदी परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसे प्रकट कैसे करे। मालवा की तरह उसका आलिंगन करे या सर्योंझका की

रह उससे हाथ मिलाए। वासिली अपने बेटे के चेहरे पर अस्थिरता के
व देखकर परेशान हो उठा और अब भी उसने याकोव की उपस्थिति में
छ ऐसा अनुभव किया जो शर्म से मिलता जुलता था। यह भावना उसके
न में अपनी झोंपड़ी में याकोव के साथ हुई घटना और मालवा के चुम्बनों
उत्पन्न कर दी थी।

"और देखो···अपनी माँ को मत भूलना।" अन्त में उसने कहा।

"अच्छी बात है, ठीक है," याकोव सौजन्यतापूर्ण मुस्कराहट के
ाथ बोला—"फिक्र मत करो···मैं ठीक काम ही करूंगा!"

उसने अपना सिर हिलाया।

"अच्छा इतना ही कहना है! अलविदा! ईश्वर तुम्हें सब कुछ
··· ··मुझे प्यार से याद करना ······ ओह, सर्योझका! मैंने हरी नाव के
ीछे रेत में चाय का डिब्बा गाड़ दिया है।"

"उसे चाय के डिब्बे की क्या जरूरत है?" जल्दी से याकोव ने पूछा।

वह मेरी जगह काम करेगा······वहाँ" वासिली ने बताया।

याकोव ने सर्योझका को देखा, मालवा की तरफ निगाह फेंकी और
ापनी आँखों में छाई हुई खुशी को चमक को छिपाने के लिए सिर नीचा
र लिया।

"अच्छा, अलविदा दोस्तो···मैं चल दिया!"

वासिली ने सब को सिर झुकाया और चल दिया। मालवा भी
सके साथ चली।

"मैं तुम्हें थोड़ी दूर तक छोड़ आऊँ," वह बोली।

सर्योझका रेत पर गिर पड़ा और याकोव के पैर को जोर से पकड़
लया जिसने मालवा के पीछे जाने के लिए क़दम उठाया था।

"हूँ! तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जाओ! मुझे जाने दो।" अपने पैर को छुड़ाने की कोशिश करता
हुआ याकोव बोला। परन्तु सर्योझका ने उसका दूसरा पैर भी पकड़ लिया
और बोला:

वह धीरे धीरे चलती हुई पीपों के पास आ गई जहाँ सर्योझका ने यह सवाल पूछते हुए उसका स्वागत किया :

"अच्छा, तो तुम उसे छोड़ आईं ?"

मालवा ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया और उसकी वगल में बैठ गई। याकोव ने उसकी तरफ देखा और कोमलता पूर्वक मुस्कराया, अपने होठों को हिलाता हुआ मानो वह कुछ कह रहा हो जिसे केवल वही सुन पाया हो।

"अब, जब तुम उसे विदा कर चुकीं तो तुम्हें उसके चले जाने से दुख है, क्यों ?" सर्योझका ने एक गीत के शब्दों को दुहराते हुए उससे फिर पूछा।

"तुम वहाँ, वासिली की झोंपड़ी में कब जा रहे हो ?" मालवा ने समुद्र की ओर इशारा करते हुए जवाब देकर पूछा।

"इसी शाम को !"

"मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"तुम चलोगी ! अब मैं यही चाहता हूँ।

"और मैं भी चलूंगा !" याकोव जोर देते हुए बोला।

"तुम्हें कौन बुला रहा है ?" सर्योझका ने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए पूछा।

एक घन्टे की, आदमियों को काम पर वापिस बुलाती हुई आवाज गूंज उठी। बराबर बजने वाले घन्टे की आवाजें एक दूसरी का पीछा करती हुई लहरों की उस सुन्दर मरमराहट में डूबने लगीं।

"मालवा बुला रही है !" याकोव मालवा की ओर चुनौती देती हुई आँखों से देखता हुआ बोला।

"मैं ?" उसने ताज्जुब से कहा, "मुझे तुम्हारी क्या जरूरत है ?"

"अच्छा हो कि हम लोग बात साफ करलें, याश्का !" सरजी ने अपने पैरों पर खड़े होते हुए कठोरता से कहा—"अगर तुमने इसे सताना शुरू किया तो मैं मारते मारते तुम्हारा भुरता बना दूंगा ! और अगर तुमने इस पर उङ्गली भी उठाई···मैं तुम्हें मक्खी की तरह मसल कर

मार डालूँगा। तुम्हारी खोपड़ी पर एक चोट काफी है और तुम उसके बाद सीधा नर्क का रास्ता नापोगे! मेरे लिए यह बहुत आसान है।"

उसका चेहरा, उसका पूरा शरीर और याकोव के गले की तरफ बढ़े हुए गठीले हाथ, ये सब पूरी तरह इस बात का विश्वास दिला रहे थे कि यह उसके लिए बहुत आसान है।

याकोव एक कदम पीछे हट गया और रुँधी हुई आवाज में बोला :

"एक मिनट ठहरो! क्यों, मालवा ने खुद ही······"

"अब देखो, बहुत हो चुका! तुम अपने को क्या समझते हो? भेड़ का गोश्त तुम्हारे खाने के लिए नहीं है, कुत्ते। तुम्हें अपनी तकदीर सराहनी चाहिए अगर तुम्हें चिचोड़ने के लिए हड्डी का एक टुकड़ा मिल जाय··· अच्छा···तुम इस तरह घूर किसे रहे हो?"

याकोव ने मालवा की तरफ देखा। उसकी हरी आँखें उसके चेहरे पर हँस रही थीं—एक चोट करने वाली, मजाक उड़ाती हुई हँसी और वह सर्योझका की बगल में इतने प्यार से चिपट गई कि याकोव का सारा शरीर पसीने से भीग उठा।

वे साथ साथ चलते हुए उससे दूर हट गए और जब वे थोड़ी दूर पहुँचे तो दोनों जोर से खिलखिलाकर हँस उठे। याकोव ने अपना दाहिना पैर बालू पर जोर से गड़ा दिया और गहरी सांसें लेता हुआ पत्थर की तरह खड़ा रहा।

दूर, पीली, निर्जन लहराती हुई बालू पर एक छोटी सी मनुष्य की काली मूर्ति हिल रही थी। उसकी दाहिनी तरफ प्रसन्न शक्तिशाली समुद्र चमक रहा था। और बायीं तरफ क्षितिज तक बालू फैली हुई थी—एक निर्जन उदास रेगिस्तान। याकोव ने उस एकाकी मूर्ति को देखा और आँखें झपकाईं जिनमें दुःख और घबराहट भरी हुई थी। उसने दोनों हाथों से बुरी तरह अपनी छाती मसली।

मछली पकड़ने वाली जगह काम की हलचल से गूँज रही थी।

याकोव ने मालवा को एक गूँजती हुई तीखी आवाज में कहते सुना :
"मेरा चाकू किसने लिया ?"
लहरें शोर मचाती हुई छींटें उछाल रही थीं, सूरज चमक रहा था और समुद्र हँस रहा था।

विदूपक

एक दिन जब मैं एक सर्कस के भीतरी भाग में होकर निकल रहा था मेरी नजर एक विदूपक के खुले हुए कमरे की ओर पड़ी। मैं जिज्ञासावश उसे अच्छी तरह देखने के लिए रुक गया। एक लम्बा कोट, नृत्य के समय पहनने वाला टोप और दस्ताने पहने तथा कांख में एक पतला बेंत दबाये वह एक शीशे के सामने खड़ा था। अपने कुशल एवम् अभ्यस्त हाथों में बड़ी अनोखी अदा से अपना टोप उठाए हुए वह उस शीशे में पड़ते हुए अपने प्रतिबिम्ब के सामने झुकता हुआ उसे खरोंच रहा था।

शीशे में मेरे आश्चर्यचकित चेहरे का प्रतिबिम्ब देखकर वह जल्दी से मेरी ओर मुड़ा और शीशे में अपने चेहरे की ओर उङ्गली कर मुस्कराते हुए बोला :

"मैं–मैं ? हाँ !"

फिर वह एक तरफ हट गया। शीशे में पड़ता हुआ उसका प्रतिबिम्ब भी गायब हो गया। उसने धीरे से हवा में हाथ हिलाया और एक भरे स्वर में कहा :

"मैं अब नहीं हूँ ! समझे ?"

मैं उसकी इस पहेली को समझने में असमर्थ रहा और परेशान होकर चल दिया। मुझे अपने पीछे उसकी धीमी हँसी सुनाई दी। परन्तु उसी क्षण से उस विदूपक के विषय में मेरे मन में एक विचित्र और व्याकुल कर देने वाली जिज्ञासा उत्पन्न हो गई।

वह अधेड़ अवस्था और काली आँखों वाला एक अँग्रेज था। सर्कस के बीच में खड़ा होकर वह अत्यन्त कुशलता से दर्शकों का मनोरञ्जन करता था। उसके चिकने छोटे से चेहरे से चालाकी और विशिष्टता के भाव झलकते परन्तु उसकी गूँजती हुई आवाज में मजाक उड़ाने की ध्वनि भरी रहती जो मेरे कानों को बड़ी कर्कश लगती उस समय जब वह एक बड़े वनविलाव की तरह सर्कस के मच पर खड़ा होकर रूसी शब्दों का टूटा-फूटा उच्चारण करता।

शीशे के सामने खड़े होकर झुकने वाली घटना के बाद मैंने उसका पीछा करना आरम्भ कर दिया। सर्कस के बीच में होने वाले क्षणिक अवकाश के समय मैं उसके कमरे के छोटे से दरवाजे के आसपास मँडराता रहता और उसे अपने चहरे पर सफेदी पोतते और उस पर काले और लाल रंग की रेखाऐं बनाते देखता रहता। वह प्रत्येक कार्य करते समय सदैव अपने आप से बातें करता या सीटी बजाता हुआ हमेशा एक ही गाना गुनगुनाया करता।

मैंने उसे शराबखाने में छोटे-छोटे घूंट लेकर वोदका पीते हुए देखा। उसने टूटी-फूटी रूसी भाषा में नौकर से पूछा :

"क्या समय है ?"

"बारह बजने में दस मिनट हैं।"

"ओह, कितना समय हो गया, परन्तु इतना ज्यादा नहीं" और उसने रूसी भाषा में गिनना शुरू किया—"ओदिन [एक], द्वा [दो], तिरी [तीन], चेरतिरी [चार], चेरतिरी सबसे आसान है।"

उसने शराबखाने के काउन्टर पर एक चाँदी का सिक्का फेंका और गुनगुनाता हुआ सड़क पर निकल गया. "तिरी, चेरतिरी-तिरी, चेरतिरी।"

वह हमेशा अकेला घूमता था। मैं सदैव जासूस की तरह उसके पीछे लगा रहता। मुझे ऐसा लगा कि इस व्यक्ति का जीवन बड़ा रहस्यपूर्ण और अद्भुत है। प्रत्येक वस्तु के प्रति उसका दृष्टिकोण मेरे अपने दृष्टिकोण से पूर्णत भिन्न है। अनेक बार मैंने कल्पना की कि मानो मैं इङ्गलैंड में

हूँ जहाँ मुझे कोई नहीं समझता, जहाँ की प्रत्येक वस्तु मेरे लिए भयंकर रूप से विदेशी है, जहाँ के भयङ्कर, अपरिचित कोलाहल से मेरे कान बहरे हो रहे हैं। क्या ऐसे स्थान पर मैं अपने चेहरे पर एक शान्त मुस्कराहट लिए, केवल स्वयम् को ही अपना मित्र बनाए, उस तरह मस्त होकर रह सकता हूँ जिस प्रकार यह साहसी, रौबीला व्यक्ति यहां रहता है?

मुझे अनेक ऐसी घटनाओं का पता चला जिनमें इस अँग्रेज ने एक दुस्साहसी व्यक्ति का पार्ट अदा किया था। मैं उसके चरित्र में सम्पूर्ण गुणों का अनुमान कर उसका प्रबल प्रशंसक बन गया। उसे देखकर मुझे डिकिन्स के उन पात्रों की याद आती जो बुराई और भलाई दोनों ही अवसरों पर दुस्साहसी बने रहते हैं।

एक बार दिन के समय, जब मैं ओका नदी के पुल पर होकर जा रहा था, मैंने उसे नावों पर बने पुल के किनारे बैठे हुए मछली पकड़ते देखा। मैं रुक गया और बहुत देर तक उसे मछली पकड़ते देखता रहा। हर बार जब उसके कांटे में कोई मछली फँस जाती तो वह उसे बाहर निकाल कर अपने मुँह के पास लाता और उसके मुँह से सीटी बजाता हुआ कुछ कहता। इसके बाद बहुत होशियारी से वह उसे कांटे में से छुड़ाता और फिर पानी में फेंक देता। हर बार जब वह अपने कांटे में केंचुआ लगाता तो उससे कुछ कहता और अगर पुल के नीचे होकर कोई नाव उसके पास होकर गुजरती तो वह अपनी बिना गोट वाली छोटी टोपी को उतार कर नाव पर बैठे हुए अपरिचित व्यक्तियों को सलाम करता। और अगर उसे इसका जवाब मिलता तो वह उनकी ओर भयङ्कर चेहरा बनाता और भौंहें ऊपर चढ़ा लेता। साधारणतः वह अपना मनोरञ्जन करना जानता था और ऐसा करने में उसे बहुत खुशी होती थी।

दूसरी बार मैंने उसे एक पहाड़ी पर '[illegible]' [illegible] में बाग में बैठे देखा। वहां से वह नीचे लगे हुए मेले को देख रहा था।

मेले का दृश्य ऐसा दिखाई दे रहा था, मानो वोल्गा और ओका नदी के बीच में कोई मनुष्य की भीड़ का खूंटा ठोक रहा हो। वह अपने पतले और लचीले बेंत को हाथ में पकड़े हुए उस पर इस तरह उँगलियाँ फेर रहा था मानो वह एक बांसुरी हो। साथ ही धीरे धीरे सीटी बजाता हुआ कुछ गा रहा था। उस मेले और वोल्गा नदी से उठता हुआ, उसके लिए सर्वथा अपरिचित, कोलाहल का शब्द हवा में लहरा रहा था। स्टीमर, बजरे और नावें उस गन्दे पानी और उस पर पड़े हुए पेट्रोल के रंगीन धब्बों पर मुश्किल से रेंगती हुई आगे बढ़ रही थीं। सीटियों और लोहे के आपस में टकराने की आवाजें उसके कानों तक पहुच रही थीं। किसी की ताक्तवर हथेलियाँ पानी को काट रही थीं। दूर, नदी के किनारों से परे, जगल में लगी हुई आग दिखाई दे रही थी और धुंधला लाल सूरज, जिसकी किरणें मानों तलवार से काट दी गई हों, गजा सा, उस धुंए से भरे हुए आकाश में चुपचाप लटक रहा था।

अपने बेंत से, एक वृक्ष के तने पर ताल सहित ठकठक करते हुए, उस विदूषक ने गाना शुरू किया—इतने धीरे से मानो वह प्रार्थना कर रहा हो: ' एक, संध्या, घास का मैदान, सुन्दर—"

उसकी मुद्रा विचारपूर्ण और गम्भीर थी। भौंहों में गाठें पड़ी हुई थीं। उसके गीत के अद्भुत स्वरों ने मेरे मन में एक भय उत्पन्न कर दिया। मैं उसे सुरक्षित रूप से घर-मेले में ले आना चाहता था।

अचानक एक खजैला कुत्ता कहीं से आ गया। वह विदूषक की बगल में से निकल कर उससे दो कदम की दूरी पर घास में बैठ गया और एक लम्बी जम्हाई लेकर उसकी तरफ मुड़ कर देखने लगा। विदूषक ने सीधे खड़े होकर अपने बेंत को बन्दूक की तरह कन्धे पर रखकर उस कुत्ते की तरफ निशाना साधा।

"हुर्र—र—र—र" कुत्ता धीरे से घुर्राया।

"र, र्र, र, हाउ!" विदूषक ने बिल्कुल कुत्ते की सी आवाज में जवाब दिया। कुत्ता खड़ा हो गया और गुस्से से पीछे को हटा। विदूषक ने

पीछे मुड़कर देखा और मुझे पेड़ के नीचे खड़ा देख प्रसन्न होकर मेरी तरफ आँख मारी।

हमेशा की तरह वह शानदार, भड़कीली, दूल्हे की सी पोशाक पहने हुए था—लम्बा भूरा कोट और उसी रंग की पतलून। उसके सिर पर चमकीला आपेरा हैट और पैरों में सुन्दर जूते थे। मैंने सोचा कि केवल एक विदूषक ही, इस प्रकार बड़े आदमियों की भी शानदार पोशाक पहन कर, जनता में एक गंवार का सा व्यवहार कर सकता है। और साधारण रूप से, मुझे यह लगा कि यह आदमी जो यहाँ पूर्ण रूप से अपरिचित है, तथा यहाँ जिसकी कोई बोली नहीं समझता, इस शहर और मेले के कोलाहल में अपने को इतना आज़ाद केवल इसी कारण समझ रहा है क्योंकि वह एक विदूषक है।

वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के समान फुट पाथ पर चल रहा था। चलते समय वह किसी भी दूसरे आदमी के लिये रास्ता नहीं छोड़ता था। केवल औरतों के लिये एक तरफ हट कर रास्ता छोड़ देता था। और मैंने देखा कि उस झुंड में से जब कोई व्यक्ति उसके कन्धे अथवा कुहनी से रगड़ता हुआ निकलता तो वह खामोशी से तथा नाक भौं चढ़ा कर अपने दस्ताने वाले हाथ से उस स्थान को झाड़ देता जहाँ उस अजनबी ने उसे स्पर्श किया था। गम्भीर प्रकृति वाले रूसी तथा अन्य व्यक्ति उसकी इस बात की तरफ कोई विशेष ध्यान दिये बिना उससे टकरा जाते। और जब वे जल्दी चलते हुए बिल्कुल एक दूसरे के सामने पहुँच जाते या टकरा जाते तब भी एक दूसरे से माफी न माँगते और न नम्रतापूर्वक अपनी टोपी या हैट उतार कर एक दूसरे के सामने झुकते। इन गम्भीर प्रकृति वाले व्यक्तियों के इस प्रकार चलने में एक तनाव, भाराक्रान्त भावना भरी हुई थी। कोई भी व्यक्ति यह जान सकता था कि ये लोग बहुत जल्दी में हैं और इन लोगों के पास इतना भी समय नहीं है कि वे रुक कर दूसरों के लिए रास्ता छोड़ सकें।

परन्तु यह विदूषक प्रसन्न एवन् मनमौजी व्यक्ति के समान इस

प्रकार अकड़ कर चल रहा था जैसे युद्धक्षेत्र में काला पहाड़ी कौवा अकड़ कर चलता है। और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी नम्रता से रास्ते में आने जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को लज्जित कर यह दिखाना चाहता है कि उसे उनकी कोई चिन्ता नहीं। हो सकता है कि उसके विषय में इस बात ने या किसी अन्य बात ने मेरे मन में उसके प्रति अरुचि की भावना उत्पन्न कर दी।

उसने देखा कि यहाँ के आदमी अक्खड़ हैं। एक दूसरे की बगल से निकलते हुए वे द्वेषपूर्ण शपथें खाते हैं। उसने केवल इन बातों को देखा अथवा समझा ही नहीं बल्कि वह स्वयम् मनुष्यों की उस धारा में मिल कर फुटपाथ के ऊपर इस प्रकार चलने लगा मानो वह किसी भी चीज को नहीं देख रहा हो और यह देख मैंने गुस्से में भर कर सोचा : "तुम अभिनय कर रहे हो। मुझे तुम्हारा विश्वास नहीं।"

परन्तु मैंने अपने को बुरी तरह अपमानित अनुभव किया जब मैंने एक बार उस व्यक्ति को एक शराबी की मदद करते देखा जिसे एक घोड़े ने ठोकर मार कर गिरा दिया था। इसने उस शराबी को उठा कर खड़ा कर दिया और उसके तुरन्त बाद ही अपने पीले दस्ताने उतार कर कीचड़ में फेंक दिये।

एक बार सर्कस का एक विशेष प्रोग्राम आधी रात के बाद समाप्त हुआ। अगस्त समाप्त हो रहा था। काले शून्याकाश से काँच के चूरे जैसा पानी उस मेले के उदास और नीरस तम्बुओं की कतारों पर पड़ रहा था। सड़क की बत्तियों के धुँधले चकत्ते उस सीली हवा में गायब हो गये थे। सड़क के घिसे पत्थरों पर चलने वाली किराये की गाड़ियों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी। गैलरी में खड़े होकर सर्कस देखने वालों की भीड़ चिल्लाती हुई बगल के दरवाजों में से निकल रही थी।

वह विदूषक एक लम्बा बालों वाला कोट और उसी रङ्ग की टोपी पहने तथा काँख में अपना पतला बेंत दबाए बाहर सड़क पर निकला। ऊपर के अन्धकार पर निगाह डालकर उसने जेबों से हाथ बाहर

निकाले, कोट का कालर ऊपर चढ़ाया और हमेशा की तरह निश्चिन्त होकर धीरे-धीरे चौक पार करने के लिये कदम बढ़ाये।

मुझे मालूम था कि वह सर्कस के पास ही एक होटल में रहता है। परन्तु इस समय वह अपने निवास स्थान से दूसरी तरफ जा रहा था।

उसके पीछे चलते हुए मुझे उसकी सीटी की आवाज सुनाई दे रही थी।

सड़क के पत्थरों के बीच बने हुए गड्ढों में, जो पानी से भरे हुए थे, बत्तियों का प्रतिबिम्ब डूब रहा था। काले घोड़े हमारे बराबर आ गए। गाड़ी के पहियों के टायरों के नीचे पानी उछल रहा था। सराय की खिड़कियों से सङ्गीतों की अजस्र धारा प्रवाहित हो रही थी। अन्धकार में औरतें चीख रही थीं। मेले की कामुकता से परिपूर्ण रात्रि प्रारम्भ हो रही थी।

फुटपाथों पर नवयुवतियाँ बतखों की तरह तैरती हुई चली जा रही थीं। वे अपने साथ के आदमियों से बातें कर रही थीं। वर्षा के कारण उनकी आवाज भारी और कर्कश हो उठी थी।

उनमें से एक ने उस विदूषक को बुलाया। उसकी आवाज पादरी के समान धीमी थी। उसने उसे अपने साथ आने के लिये निमन्त्रित किया। वह एक कदम पीछे हटा, अपनी काँख में से बेंत निकाला और उसे तलवार की तरह पकड़ कर चुपचाप उस औरत के चेहरे की ओर तान दिया। औरत ने गालियाँ दीं और उछल कर एक तरफ हट गई। वह मस्ती से धीमे धीमे पग रखता हुआ एक मोड़ पर मुड़ा और एक सड़क पर चलने लगा जो सितार के तार की तरह बिल्कुल सीधी थी। कहीं हम लोगों से बहुत आगे कुछ आदमी रेंग रहे थे। ईंटों के फुटपाथ पर पैरों से घिसट कर चलने की आवाज आ रही थी और अचानक किसी औरत की दर्द भरी चीख गूँज उठी।

लगभग बीस कदम आगे, मैंने वर्षा के धुँधले प्रकाश में देखा कि मेले के तीन चौकीदार फुटपाथ पर शोर मचाते हुए एक औरत से अपना मनोरंजन कर रहे हैं और बारी-बारी से उसका आलिंगन कर रहे

नोंच-खसोट कर उसे दूसरे को दे देते हैं। वह औरत एक छोटे कुत्ते की तरह बुरी तरह चीख रही थी। वह लड़खड़ाती और मजबूत हाथों द्वारा आगे धकेली जाने पर इधर उधर हिलती हुई उनके उस चक्कर में घूम रही थी। सारा फुटपाथ इस व्यभिचारिणी स्त्री और उन कामुक पुरुषों की इस खींचे-तान से भर गया था जिससे वहां निकलने की भी जगह नहीं रही थी।

जैसे ही वह विदूषक उनके पास पहुंचा उसने कांख में से पुनः अपना बेंत निकाला और उन चौकीदारों के चेहरों की ओर इशारा करते हुए उसे तलवार की तरह घुमाने लगा।

वे लोग घुर्राते हुए ईंटों पर पैर पटकने लगे परन्तु उन्होंने उसके जाने के लिए रास्ता नहीं छोड़ा। फिर उनमें से एक उसके पैरों पर झपटा और जोर से चिल्लाया .

"इसे पकड़ लो!"

विदूषक गिर पड़ा। वह औरत, जिसके बाल अस्तव्यस्त हो रहे थे, उसकी बगल में से होती हुई जान बचाकर भागी। भागते हुए उसने अपना पेटीकोट ठीक किया और कर्कश आवाज में गालियां दीं .

"कुत्ते के बच्चे! हरामी!"

"उसे बाँध लो!" एक आवाज ने भयङ्कर स्वर में आज्ञा दी। "आहा, तो तुम बेंत का इस्तैमाल करोगे, क्यों? करोगे!"

विदूषक किसी विदेशी भाषा में बुरी तरह से चीखता हुआ कुछ कहने लगा। वह मुँह के बल फुटपाथ पर पड़ा हुआ पैरों की एड़ियो से उस आदमी की पीठ पर चोट मार रहा था जो उसकी बगल में बैठकर उसके हाथ पीछे की ओर मरोड़ रहा था।

"ओहो! शैतान के बच्चे! इसे ऊपर उठाओ और ले जाओ!"

मेहराव को उठाए हुए ढले हुए लोहे के खम्बे का सहारा लिए हुए मैंने तीन मूर्तियों को अन्धकार में एक दूसरे से सटे हुए जाते देखा। वे सड़क पर दूर चली जा रही थीं। वे धीरे-धीरे और लड़खड़ाती हुई चल रही थीं जैसे हवा इन्हें आगे धकेले लिये जा रही हो।

उस चौकीदार ने,जो पीछे रह गया था, माचिस जलाई और पंजों पर
ठ कर वहां कुछ ढूंढने लगा।

"आहिस्ते चलो!" उसने कहा जब मैं उस के पास आया। "मेरी
सीटी पर पैर मत रख देना। वह यहीं कहीं गिर गई है।"

"वह कौन है जिसे वे ले गए?" मैंने पूछा।

"ओह, कोई खास आदमी नहीं है।"

"उसने क्या किया था?"

"अगर उसने कुछ नहीं किया होता तो वे उसे ले क्यों जाते?'

मुझे कुछ बेचैनी अनुभव हुई—कुछ चोट सी लगी। परन्तु मैंने सोचा
और मुझे एक विजयी का सा सन्तोष हुआ! "अच्छा, यह बात है!"

एक सप्ताह बाद मैंने उस विदूषक को फिर देखा। वह एक वन-
बिलाव की तरह मंच पर अजीब ढङ्ग से लुढ़क रहा था तथा उछल-कूद मचा
रहा था।

परन्तु मुझे ऐसा लगा कि वह अपना पार्ट पहले की तरह कुशलता-
पूर्वक अदा नहीं कर रहा है। वह पहले की तरह जनता का मनोरञ्जन करने
में असमर्थ था।

और जब मैंने यह देखा तो अपने को, किसी न किसी रूप में, इसके
लिये अपराधी अनुभव किया।

के हरे वृक्षों का कालीन बिछा दिया था। उनके हाथों द्वारा, पृथ्वी का यह स्वर्ग के समान सुन्दर भाग, मुग्ध कर देने वाले सौन्दर्य से जगमगा उठा था।

इस संसार में मनुष्य का शरीर धारण करना सबसे बड़ा सौभाग्य है! कितनी अद्भुत वस्तुएं वह चारों ओर देखता है। जब कोई व्यक्ति तन्मय होकर इस सौंदर्य को निहारता है तो उसके हृदय में एक अव्यक्त वेदनामिश्रित सुख लहरा उठता है।

हाँ, यह बिल्कुल सत्य है, कभी कभी इसका उपभोग व्याकुल बना देता है। तुम्हारे हृदय में एक तीव्र घृणा प्रज्वलित हो उठती है और दुख क्षुधार्त व्यक्ति के समान तुम्हारे हृदय का रक्त चूसने लगता है—परन्तु यह अवस्था हमेशा नहीं रहती यहाँ तक कि कभी २ सूर्य भी मनुष्यों को अपने हृदय में असह्य अवसाद छिपाए देखने लगता है। उसने इनके लिये कितना परिश्रम किया और ये मनुष्य कितने दीन और दुखी बन गये हैं! ...

वास्तव में, यहाँ अच्छे आदमी भी काफी हैं परन्तु उन्हें सस्कार की अपेक्षा है। और सबसे अच्छा तो यह हो कि उनका पुन निर्माण किया जाय।

मैंने अपनी बाँयी तरफ झाड़ियों से ऊपर उठे हुए काले सिरों का कोलाहल सुना। उनका यह स्वर समुद्र की लहरों के गर्जन और नदी की कलकल ध्वनि में मुश्किल से सुनाई दे रहा था। वे मनुष्यों की आवाजें थीं। ये लोग वे भूखे थे जो 'सुखुम' से, जहाँ वे एक सड़क बना रहे थे, ओचेमचिरी की तरफ कोई नया काम पाने की आशा में जा रहे थे।

मैं उन्हें जानता था। वे ओरेल के रहने वाले थे। मैंने उनके साथ सुखुम् में काम किया था और हम लोगों को एक दिन पहले एक साथ ही वेतन मिला था। मैं रात को उनसे पहले ही चल दिया था—इस आशा से कि समुद्र तट पर ठीक समय पर पहुच कर उदय होते हुए सूर्य को देख सकूं।

उनमें चार मजदूर और एक गाल की ऊँची हड्डियों वाली किसान औरत थी जो गर्भवती थी। उसका बड़ा पेट बाहर निकल रहा था। उसकी

आँखें नीलापन लिए हुए भूरी थीं जो भय से बाहर निकली पड़ रही थीं। मुझे उन झाड़ियों के ऊपर पीले रूमाल से ढका हुआ उसका सिर दिखाई दिया जो पूरी तरह से खिले हुए सूरजमुखी के फूल की तरह हवा में इधर उधर हिल रहा था। उसका आदमी सुखुम में अधिक फल खाने से मर गया था। मैं वहाँ इन लोगों के साथ एक ही झोंपड़ी में रहता था। पुराने रूसी स्वभाव के अनुसार वे अपनी मुसीबतों की इतनी अधिक और इतने ऊँचे स्वर में शिकायत करते थे कि उनका विलाप पाँच मील की दूरी से सुना जा सकता था।

ये लोग दुख से सताये हुए सुस्त आदमी थे। मुसीबत ने, इन्हें अपने ऊजड़ और ऊसर जमीन वाले वतन से, पतझड़ में टूटे हुए सूखे पत्तों की तरह, उड़ा कर इधर फेंक दिया था। जहाँ की अद्भुत और समुद्री जलवायु ने उनकी आँखों में चकाचौंध उत्पन्न कर दी थी और जहाँ के अत्यधिक कठोर परिश्रम ने उन्हे पूरी तरह से तोड़ दिया था। वे अपने चारों ओर फैली हुई चीजों को गौर से देखते और आश्चर्य से अपनी उदास निष्प्रभ आँखों को झपकाते हुये, होठों पर करुण मुस्कान बिखेर एक दूसरे की ओर देखते और धीमी आवाज में कहते:

"ओ ... ह ... ह ... कितनी सुन्दर जमीन है!"

"चीजें जैसे पृथ्वी फाड़ कर निकली पड़ती हैं।"

"हाँ ... ओं ... ओं ... परन्तु फिर भी ... ... यह पथरीली अधिक है।"

"यह इतनी अच्छी नहीं है, यह तुम्हें मानना ही पड़ेगा।"

और फिर उन्हें अपने गाँव याद आए—कोबिलो वोम्झोक, सुखोइ गोन मोक्रेन्की आदि। जहाँ की मिट्टी के कण कण में उनके पूर्वजों की राख मिली हुई है। उन्हें उस मिट्टी की याद आई, यह उनकी प्यारी और परिचित थी। उन्होंने अपने पसीने से इसे सींचा था।

उनके साथ एक और औरत थी—लम्बी, सीधी, तख्ते की तरह चौड़ी छाती, भारी जबड़ा और उदास, कोयले सी काली भेंड़ी आँखें।

शाम को वह पीले रूमाल वाली औरत के साथ झोंपड़ी के पीछे कुछ दूर जाती और पत्थरों के एक ढेर पर पालथी मार कर बैठ जाती। फिर अपनी हथेली पर ठोढ़ी रख कर तथा एक तरफ को सिर झुका कर गुस्से से भरी हुई ऊँची आवाज में गाती।

"गाँव के गिरजे की चहार-दीवारी के पीछे, हरी झाड़ियों में, पीली बालू पर मैं अपने अत्यन्त स्वच्छ और शुभ्र दुशाले को फैला दूंगी और वहाँ उस समय तक प्रतीक्षा करूँगी जब तक कि मेरा प्रियतम आयेगा और जब वह आ जायगा मैं हृदय से उसका स्वागत करूँगी।"

साधारणतया पीले रूमाल वाली औरत हमेशा चुपचाप बैठी अपने पेट की तरफ देखा करती परन्तु कभी कभी अचानक एक गहरी, मन्द मर्दानी आवाज में गीत की अन्तिम शोकपूर्ण कड़ी गा उठती।

"ओह मेरे प्रियतम, मेरे प्रिय प्रियतम, मेरे भाग्य में तुम्हें अब देखना नहीं बदा है।"

दक्षिण प्रदेश के काले, दम घोंटने वाले अन्धकार में, ये कराहती हुई आवाजें मेरे हृदय में उत्तर की वर्फीली निर्जनता, चिंघाड़ते हुए वर्फीले तूफान और भेड़ियों की भयङ्कर घुर्राहट की स्मृति जगा देतीं।

कुछ समय बाद उस भेंड़ी औरत को बुखार आ गया और उसे स्ट्रेचर पर डाल कर शहर ले जाया गया। रास्ते में वह काँपती और कराहती गई। कराहने की वह आवाज ऐसी लगती मानो वह 'गिरजे की चहार-दीवारी और बालू' वाला गीत गा रही हो।

पीले रूमाल वाले उस सिर ने झाड़ियों के नीचे डुबकी लगाई और गायब हो गया।

मैंने अपना नाश्ता समाप्त किया। चाय के डिब्बे में रखे हुए शहद को पत्तियों से ढका, झोला बाँधा और अपनी छड़ी को ठोस जमीन पर ठोकता हुआ दूसरे लोगों के पीछे रास्ते पर चल दिया।

और फिर मैं उस संकरी, भूरी सड़क की पट्टी पर चलने लगा । मेरी दाहिनी तरफ गहरा नीला समुद्र लहरा रहा था । ऐसा मालूम देता था जैसे हजारों अदृश्य बढ़ई अपने रन्दों से इसे छील रहे हों और इसकी सफेद छीलन, हवा से उड़कर किनारे पर टकरा रही हो—गीली, गर्म और सुगन्धित जैसी स्वस्थ नारी की साँस होती है । एक पालदार तुर्की नाव सुखुम की ओर बढ़ी जा रही थी । इसके पाल सुखुम के इन्जीनियर—जो बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति था—के मोटे गालों की तरह फूल रहे थे । वह किसी कारण वश सदैव 'चुप हो' के स्थान पर 'चुप रोहो' का उच्चारण करता था ।

"चुप रहो ! शायद तुम समझते हो कि तुम लड़ सकते हो परन्तु मैं दो सैकिन्ड मे तुम्हे थाने पहूंचा दूंगा ।"

उसे आदमियों को पुलिस थाने की ओर घिसटवाने में बड़ा आनन्द आता था और अब यह सोचना अच्छा लगता था कि अब तक कब्र में कीटों ने उसके शरीर की हड्डियों तक को खा लिया होगा ।

पैदल चलना कितना आरामदेह लग रहा था जैसे हवा में उड़े चले जा रहे हों । सुन्दर विचार, सुखद स्मृतियाँ मन में तरल सङ्गीत उत्पन्न कर रही थी । मेरी आत्मा में ये शब्द समुद्र की झागदार सफेद लहरों के समान लहरा रहे थे जो ऊपर से चंचल और अपनी अतल गहराई में शान्त होती हैं । उन्हीं की तरह मेरी आत्मा में अनन्त शान्ति का साम्राज्य छा रहा था । यौवन की सुन्दर आशाएँ मन में लहरा रही थी जैसे रुपहली मछली समुद्र की गहराई में लहराती फिरती है ।

यह रास्ता समुद्रतट को जाता था और चक्कर खाता हुआ रेतीले किनारे के और नजदीक खिसकता जाता था जहाँ लहरें तट को धो रही थीं । झाड़ियाँ मानो समुद्र की एक झलक देखने को तरस रही थीं । वे इसी खातिर सड़क के किनारे खड़ी हिल रही थीं मानो उस अनन्त नीले विस्तार को प्रणाम कर रही हों ।

पहाड़ों की तरफ से हवा आ रही थी । पानी बरसने का भय था । ······· झाड़ियों में एक धीमी कराहट सुनाई दी—एक मनुष्य की कराहट जो सीधी दिल पर चोट करती है ।

झाड़ियों को एक तरफ हटा कर मैंने देखा कि वह पीले रूमाल वाली औरत एक अखरोट के तने से पीठ लगाए बैठी है। उसका सिर एक तरफ कन्धे पर लटक रहा था, मुख विकृत हो उठा था, आँखें पागल की आँखों की तरह बाहर को निकली पड़ रही थीं। वह अपना पेट दोनों हाथों से पकड़े इतने अस्वाभाविक ढङ्ग से साँसें ले रही थी कि दर्द से उसका पेट उछलता सा लग रहा था। वह धीरे से कराही और अपने पीले भेड़िये के से दाँतों को बाहर निकाला।

"क्या बात है? क्या किसी ने तुम्हें मारा है?" मैंने उसके ऊपर झुकते हुए पूछा। उसने धूल में एक पैर से दूसरे पैर को रगड़ा, जैसे मक्खी अपने परों को साफ कर रही हो, और अपने भारी सिर को घुमाती हुई बोली

"चले जाओ! क्या तुम्हें बिल्कुल शर्म नहीं? चले जाओ!"

अब मुझे मालूम पड़ा कि क्या बात थी—मैंने पहले भी एक बार ऐसा देखा था! मैं चुपचाप सड़क पर वापस चला आया परन्तु उस औरत ने एक तीखी और लम्बी चीख मारी। उसकी बाहर निकली हुई आँखें फटती सी प्रतीत हुईं और उसके लाल सूजे हुए गालों पर आँसू बहने लगे।

इसी चीख ने मुझे पुन उसके पास जाने के लिए मजबूर कर दिया। मैंने अपना झोला, पतीली और चाय का डिब्बा आदि सारा सामान जमीन पर फेंक दिया और उस औरत को पीठ के बल चित लिटाकर उसकी टाँगें घुटनों पर से मोड़ने ही वाला था कि उसने मुझे धकेल कर हटा दिया। मेरे मुँह और छाती पर घूँसे मारे और पलट कर चारों हाथ पैरों पर रेंगती हुई झाड़ियों में और गहरी घुस गई और एक रीछनी की तरह घुर्राने लगी।

"शैतान!' 'जानवर!"

उसके हाथ शिथिल पड़ पड़ गए और वह जमीन पर मुँह के बल गिर पड़ी। फिर चीखी और अपने पैरों को मरोड़ने लगी।

इससे उत्तेजित होकर अचानक मुझे वह सब याद हो आया जो कुछ मैं इस काम के विषय में जानता था। मैंने उसे पीठ के बल उलट दिया और टाँगें मोड दीं— गर्भ की बाहरी झिल्ली दिखाई देने लगी थी।

"चुपचाप लेटी रहो, वह आ रहा है," मैंने उससे कहा।

मैं दौड़ा हुआ किनारे पर गया, कमीज की आस्तीनें ऊपर उठाईं, हाथ धोये और लौट आया। अब मैं दाई का काम करने के लिये पूरी तरह से तैयार था।

वह औरत आग की लपटों में पडी हुई भोजपत्र की छाल की तरह ऐंठ रही थी। अपने बगल की जमीन को हथेलियों से पीटती और मुरझाई हुई घास को हाथ से उखाड़ कर मुँह में ठूंसने का प्रयत्न कर रही थी। और ऐसा करने में उसने अपने भयभीत और वेदना से विकृत चेहरे और जंगली, खूनी जैसी लाल आँखों पर मिट्टी डाल दी। अब झिल्ली फट गई और बच्चे का सिर बाहर निकाला। मैंने जोर लगा कर उसके पैरों के झटकों को रोका, बच्चे को बाहर निकलने में सहायता पहुंचाई और इस बात का ध्यान रखा कि वह अपने दर्द से खुले हुए मुँह में घास न डाल ले।

हमने एक दूसरे को गालियाँ दीं—उसने अपने दाँतों की भिच्ची मारे हुए और मैंने धीमी आवाज में। उसके मुँह के कोनों में झाग भर रहा था और आँखों से, जो अचनक धूप में पथरा सी गई थीं, माता की असह्य वेदना के प्रतीक आँसू बराबर अजस्र रूप से बह रहे थे। उसका सारा शरीर तन गया था जैसे उसके दो टुकडे कर दिए गए हों :

"चले···जाओ···तुम···शैतान।"

वह अपनी आशक्त भुजाओं से मुझे बराबर धकेलती रही। मैंने उससे विनती के स्वर में कहा।

"बेवक़ूफ मत बनो! जोर लगाओ, खूब ताकत से। जल्दी ही समाप्त हो जायगा।"

उसके लिए दया से मेरा हृदय फटा जा रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे उसके आँसू मेरी आँखों में लहरा रहे हो। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे मेरा हृदय फट जायगा। मैं चीखना चाहता था और चीखा भी।

"कोशिश करो! जल्दी करो!"

और देखो—मेरे हाथों पर एक छोटा सा मानव लेटा हुआ था—चुकन्दर की जड़ की तरह लाल। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे, परन्तु अपने इन आँसुओं में से मैंने देखा कि यह छोटा सा लाल प्राणी ससार से बुरी तरह असन्तुष्ट था। वह बराबर लातें फेंकता, छटपटाता और चीखता रहा यद्यपि यह आदमी अपनी माँ से जुड़ा हुआ था। इसकी आँखें नीली थीं। इसकी छोटी सी विचित्र नाक ऐसी लग रही थी मानो उसे उसके लाल, सिकुड़े हुये चेहरे पर चिपका दिया गया हो। जब वह चीखता तब उसके होंठ हिलते।

"या-आ आ-आह .. ..या-आ-आ-आह।"

उसका शरीर इतना चिकना था कि मुझे भय हुआ कि कहीं वह मेरे हाथ से फिसल न जाय। मैं अपने घुटनों के बल बैठा हुआ उसके मुँह को देखता जाता और हँसता—उसे देखकर एक प्रसन्नता की हँसी हँसता और मैं यह भूल गया कि अब इसके बाद क्या करना है।

"नाल को काट दो . . . " माँ फुसफुसाई। उसकी आँखें बन्द थीं। उसका चेहरा निष्प्रभ और सफेद पड़ गया था—बिल्कुल मुर्दे की तरह। उसके नीले होंठ मुश्किल से हिले जब उसने कहा,

"इसे काट दो . अपने चाकू से।"

परन्तु झोंपड़ी में रहते समय किसी ने मेरा चाकू चुरा लिया था इसलिये मैंने नाल को अपने दाँतों से काट दिया। बच्चा ओरेल की असली धीमी आवाज से चीखा। माँ मुस्काई। मैंने उसके नेत्रों में अद्भुत तेजी से लौटती हुई चमक को देखा और उनकी उस अतल गहराई में एक नीली ज्वाला चमक उठी। उसके मैले और काले हाथ अपने पेटीकोट

की जेब को ढूंढ़ने लगे और उसके दाँतों से काटे हुये खून से भरे हुए होंठ हिले:

"मुझ में .....ताक़त .. नहीं ..है .. .. फीते का...टुकड़ा... ारी ..जेब ..में ..बाँध दो . नाल को . ...." उसने कहा। मैंने फीते का कड़ा निकाल कर बच्चे का नाल बाँध दिया। माँ और प्रसन्नता से मुस्कराने ागी। वह मुस्कराहट इतनी निर्मल और प्रखर थी कि उससे मैं आश्चर्यचकित ो उठा।

"तुम अपने को बिलकुल सीधी रखो जब तक कि मैं उसे जाकर धो ाऊँ" मैंने कहा।

"सावधानी से काम करना। अभी उसे आहिस्ते से धोना—होश्यारी े," उसने उद्विग्न होकर कहा।

परन्तु इस लाल आदमी के बच्चे को सावधानी से उठाने की जरूरत नहीं थी। वह अपनी मुट्ठियाँ बाँध कर हवा में हिलाता और चीखता मानो द्वन्द युद्ध के लिये ललकार रहा हो:

"या–या—आ—आह, या—आ आ आह।"

"शाबाश! शाबाश, मेरे भाई! शान्त हो। अगर तुम चुप नहीं रहोगे तो पड़ोसी तुम्हारा सिर उखाड़ लेंगे," मैंने उसे चेतावनी दी।

जैसे ही पहली लहर ने आकर हम दोनों को भिगोया वह बुरी से चीखा परन्तु जब मैंने धीरे धीरे उसकी छाती और पीठ को धोना शुरू किया तो वह आँखें चलाने लगा और जब एक लहर के बाद दूसरी लहर आकर उसे धोती तो वह चीखता और छूटने की कोशिश करता।

"और चीख! अपनी पूरी ताकत से चीख! उन्हें यह दिखा दे कि तू ओरेल से आया है," मैंने उसे उत्साहित करते हुए जोर से कहा।

जब मैं उसे उसकी माँ के पास वापस लाया तो वह पुनः अपनी आँखें बन्द किए जमीन पर लेटी हुई थी और प्रसव के उपरान्त होने वाले दर्द से व्याकुल होकर अपने होंठ काट रही थी। परन्तु उसकी उस व्याकुल

कराहट के बीच मुझे उसकी फुसफुसाहट सुनाई दी।

"दे दो" उसे दे दो 'मुझे.."

"वह इन्तजार कर सकता है!"

"नहीं! दे दो उसको" मुझे!"

उसने काँपते हाथों से अपने ब्लाऊज के बटन खोले। मैंने छाती उघाड़ने में उसकी सहायता की जिसे कुदरत ने बीस बच्चों को दूध पिलाने के योग्य पुष्ट बनाया था और हाथ पैर फेंकने वाले उस छोटे से ओरेल निवासी को उसके गर्म शरीर पर रख दिया। वह तुरन्त समझ गया कि इसका क्या परिणाम होगा इसलिए उसने चीखना बन्द कर दिया।

"पवित्र कुमारी, ईश्वर की माता!" माँ गहरी सांस लेकर बुदबुदाई और अपने अस्तव्यस्त सिर को मेरे झोले पर इधर उधर हिलाने लगी।

अचानक वह धीरे से चीखी, फिर चुप हो गई और तब उसने अपनी भावशून्य सुन्दर आँखें खोलीं-एक माँ की पवित्र आँखें जिसने अभी एक बच्चे को जन्म दिया है। वे आँखें नीली थीं और नीले आकाश को ताक रही थी। उन आँखों में कृतज्ञता से भरी हुई प्रसन्न मुस्कराहट चमक रही थी। उसने अपने थके हुए हाथ को मुश्किल से ऊपर उठाया तथा अपने बच्चे के ऊपर क्रॉस का निशान बनाया।

"तुम्हारी रक्षा करे ' पवित्र कुमारी, ईश्वर जननी'''''''' तुम्हारी रक्षा करे ''"

उसकी आँखों की चमक फिर बुझ गई। चेहरे पर पुनः पहले की सी कालिमा छा गई। वह बहुत देर तक शान्त पड़ी रही। बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी। परन्तु अचानक उसने दृढ़ आवाज में कहा :

"लेड्डी मेरा थैला खोलो!"

मैंने उसका थैला खोला। उसने निगाह गड़ाकर मेरी तरफ देखा। उसके चेहरे पर एक फीकी मुस्कराहट दिखाई दी और मैंने उसके पिचके हुए गालों और पसीने से भरी हुई भौंहों पर लज्जा की एक अस्पष्ट झलक देखी।

"यहाँ से जरा हट जाओ," उसने कहा।

"सावधानी रखना, ज्यादा मेहनत मत करना," मैंने उसे चेतावनी दी।

"ठीक है···ठीक है हट जाओ!"

मैं पास की झाड़ियों में चला गया। मैं बहुत थक गया था। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे हृदय में सुन्दर चीटियाँ मधुर गीत गा रही हैं और उनका यह संगीत समुद्र से निरन्तर उठने वाली मर्मर ध्वनि से मिलकर इतना आकर्षक हो उठा है कि मैंने सोचा मैं इसे पूरे वर्ष भर तक बैठा हुआ सुनता रहूँ ।

कहीं, पास ही एक झरने की कलकल ध्वनि का शब्द आ रहा था। इसकी ध्वनि इतनी मधुर थी मानो कोई लड़की अपनी सखी से अपने प्रियतम की बातें कर रही हो·· ।

झाड़ियों के ऊपर एक शिर चमका—पीले रूमाल से ढका हुआ जो अच्छी तरह से बाँध लिया गया था।

"ऐ! यह क्या किया? तुम जल्दी उठ बैठी हो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए," मैं आश्चर्यचकित हो चिल्ला उठा।

वह औरत डालों का सहारा लेकर जमीन पर बैठ गई। वह ऐसी दिखाई दे रही थी मानो उसकी सारी शक्ति उसमें से खींच ली गई हो। उसके राख जैसे भूरे चेहरे पर कालिमा छा रही थी। केवल उसकी आँखों में जो बड़े, नीले सरोवर सी लग रही थी, एक विशेष चमक थी। उसने मृदु मुस्कान से मुस्कराते हुए कहा :

"देखो—वह सो रहा है।"

हाँ, वह अच्छी तरह सो रहा था, परन्तु जहाँ तक मैं देख सका उसका सोना दूसरे बच्चों से भिन्न प्रकार का नहीं था। अगर कोई अन्तर था तो केवल परिस्थितियों का ही। वह पत्तों के एक ढेर पर ऐसी झाड़ी के नीचे सो रहा था जैसी झाड़ियाँ ओरेल प्रान्त में पैदा नहीं होतीं।

"तुम भी थोड़ी देर लेट लो, माँ," मैंने कहा।

"न··हीं," शिथिलता से अपना सिर हिलाते हुए वह बोली। "मुझे अभी अपनी चीजें इकट्ठी करनी हैं और फिर उस जगह जाना है उसका क्या नाम है?"

"ओचेमचिरी ?"

"हाँ, वहीं ! मेरा ख्याल है मेरे साथी अब यहाँ से कुछ ही मील आगे होंगे ।"

"लेकिन क्या तुम चल सकोगी ?"

"पवित्र कुमारी का सहारा है । क्या वह मेरी मदद नहीं करेगी ?"

खैर, जब वह पवित्र कुमारी के सहारे जा रही थी तो मुझे उससे और कुछ नहीं कहना था ।

उसने नीचे झुक कर उस छोटे से सिकुड़े हुए असन्तुष्ट चेहरे की ओर देखा । उसके नेत्र से स्नेह की मधुर किरणें निकलने लगीं । उसने अपने होंठ चाटे और धीरे से अपनी छाती थपथपाई ।

मैंने आग जला कर केतली रखने के लिए उसके चारों तरफ कुछ पथर रख दिए ।

"मैं एक मिनट में तुम्हारे लिए चाय तैयार किए देता हूँ, माँ," मैंने कहा ।

"ओह ! यह बहुत अच्छा रहेगा मेरी छाती सूख सी गई है," उसने जवाब दिया।

"क्या तुम्हारे साथी तुम्हें छोड़कर चले गए थे ?"

"नहीं ! वे क्यों ऐसा करते ? मैं खुद ही पीछे रह गई थी । उन लोगों ने थोड़ी शराब पीली थी । और यह भी अच्छा ही हुआ । मैं नहीं जानती कि अगर वे यहाँ होते तो मैं क्या करती ..."

उसने मेरी तरफ देखा, हाथ से अपना मुँह ढक लिया, मुँह से खून थूका और फिर शर्मा कर मुस्कराने लगी ।

"यह तुम्हारा पहला बच्चा है ?" मैंने पूछा ।

"हाँ, मेरा पहला · तुम कौन हो ?"

"यह दिखाई देता है कि मैं आदमी सा हूँ ।"

"हाँ, तुम बिल्कुल आदमी जैसे ही लगते हो ! तुम्हारी शादी हो गई ?"

"अभी मुझे यह सम्मान नहीं मिला।"

"तुम झूँठ बोल रहे हो, बोल रहे हो न ?"

"नहीं, मैं झूँठ क्यों बोलूँ ?"

उसने अपनी आँखें नीची करलीं। फिर उसने पूछा :

"तुम औरतों के इस काम के विषय में इतना कैसे जानते हो ?"

अब मैं झूँठ बोला—मैंने कहा :

"मैंने यह सीखा है। मैं विद्यार्थी हूँ। तुम जानती हो विद्यार्थी कौन होता है ?"

"हाँ मैं जानती हूँ। हमारे पादरी का सबसे बड़ा लड़का एक विद्यार्थी है। वह पादरी बनने की पढ़ाई पढ़ रहा है।"

"अच्छा, तो मैं भी उन्हीं में से एक हूँ····· अच्छा मैं जाकर केतली भर लाऊँ।"

उस औरत ने सिर घुमाकर अपने बच्चे की तरफ देखा कि वह साँस ले रहा है या नहीं। फिर उसने समुद्र की ओर देखा और बोली :

"मैं अपने को साफ करना चाहती हूँ लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि पानी कैसा है ··यह कैसा पानी है ? क्या यह नमकीन और कड़ुवा दोनों ही तरह का है ?"

"अच्छा, तुम जाकर अपने को साफ कर लो। यह अच्छा पानी है।"

"क्या कहा ?"

"मैं तुमसे सच कह रहा हूँ। और यह झरने के पानी से अधिक गरम है। झरने का पानी तो बरफ की तरह ठंडा है।"

"तुम ठीक जानते होगे !"

एक अजरबाईजान का निवासी, भेड़ की खाल का टोप पहने, घोड़े पर चढ़ा हुआ धीमी चाल से वहाँ से निकला। उसका सिर सीने पर लटक रहा था। वह झपकियाँ ले रहा था। उसके छोटे से थके हुए घोड़े ने, अपने दोनों कान खड़े कर अपनी गोल आँखों को तिरछा कर हमारी तरफ देखा

और हिनहिनाया। सवार ने झटके से अपना सिर ऊँचा किया, हमारी तरफ देखा और फिर सिर झुका लिया।

"यहाँ के आदमी कैसे अजीव हैं और वे कितने भयंकर दिखाई देते हैं," ओरेल की उस स्त्री ने धीरे से कहा।

मैं झरने पर गया। उसका जल, जो पारे की तरह चमकीला और चंचल था, पत्थरों पर उछलता कूदता चला जा रहा था। पतझड़ में टूटे हुए पत्ते इसमें पड़कर आनन्दपूर्वक नाच रहे थे। कितना अद्भुत और सुन्दर दृश्य था! मैंने अपना हाथ मुँह धोया और केतली भरी। अपने पीछे झाड़ियों में मैंने उस औरत को हाथ पाँव पर रेंगते देखा। वह चिन्तित होकर पीछे देखती जा रही थी।

"क्या वात है?" मैंने पूछा।

वह औरत रुक गई जैसे डर गई हो। उसका चेहरा काला पड़ गया और उसने अपने शरीर के नीचे कुछ छिपाने की कोशिश की। मैंने भाँप लिया कि क्या चीज थी।

"इसे मुझे दो, मैं इसे जमीन में गाड़ दूंगा," मैंने कहा।

"ओह मेरे प्यारे! तुम किसके वारे में वात कर रहे हो? यह तो किसी स्नानघाट के फर्श के नीचे गाड़ा जायगा. "

"क्या तुम्हारा ख्याल है कि वे तुम्हारे लिये अभी यहाँ एक स्नानघर वनवा देंगे?"

तुम मजाक कर रहे हो और मुझे डर लग रहा है! मान लो कोई जंगली जानवर इसे खा जाय तो फिर भी इसे गाड़ना तो पड़ेगा ही "

और इतना कहकर उसने अपना मुँह घुमा लिया और मुझे एक गीली, भारी पोटली देकर, शरमाते हुए, धीमे शब्दों में विनती सी करती हुई वाली

"तुम इसे अच्छी तरह गाड़ दोगे न? जितना गहरा गाड़ सकते हो उतना गहरा गाड़ना ईश्वर की खातिर मेरे वच्चे की खातिर। तुम ऐसा करोगे न?"

जब मैं लौटा तो मैंने उसे समुद्र तट की ओर से लड़खड़ाती हुई टांगों पर हाथ फैलाये चलता हुआ देखा। उसका पेटीकोट कमर तक भीगा हुआ था। उसके चेहरे पर चमक आ गई थी। वह आन्तरिक प्रसन्नता से चमक रहा था। मैं उसे सहारा देकर आग के पास ले आया और ताज्जुब में भर सोचने लगाः

"इसमें एक बैल की सी ताकत है!"

बाद में, जब हम दोनों शहद के साथ चाय पी रहे थे, उसने धीरे से मुझसे पूछा:

"क्या तुमने किताब पढ़ना समाप्त कर दिया है?"

"हाँ।"

"क्यों? क्या तुम शराब पीने लगे थे?"

"हाँ, माँ। मैं बुरी सोहबत में पड़ गया था!"

"यह तुमने अच्छा किया! मुझे तुम्हारी याद है। मैंने सुखुम में तब गौर से देखा था जब मालिक से खाने के ऊपर तुम्हारा झगड़ा हुआ था। तब मैंने अपने आप कहा थाः वह जरूर शराब पीता है। वह किसी से भी नहीं डरता।"

अपने सूजे हुए होठों से शहद चाटते हुए वह अपनी नीली आँखों को बराबर उस झाड़ी की तरफ घुमा रही थी जहाँ वह नवजात ओरेल वासी शान्तिपूर्वक सो रहा था।

"वह कैसे जिन्दा रहेगा?" उसने मेरे चेहरे की ओर देखते हुए गहरी साँस लेकर कहा, "तुमने मेरी मदद की। इसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ...परन्तु यह इसके लिये अच्छा भी रहेगा या नहीं ....मैं नहीं जानती।"

जब उसने खाना खा लिया तो लेट गई। जब तक मैं अपनी चीजें इकट्ठी करता रहा, वह आलस्य में बैठी हुई अपने शरीर को हिलाती रही और आँखें जमीन पर गड़ाए हुए किसी विचार में डूबी रही! उसकी आँखों की चमक फिर गायब हो गई थी। कुछ देर बाद वह उठ कर खड़ी हो गई।

"क्या तुम वास्तव में जा रही हो ?" मैंने पूछा ।

"हाँ ।"

"अपना ख्याल रखो, माँ ।"

"पवित्र कुमारी मेरी सहायता करेगी ? .उसे उठा कर मुझे दे दो !"

"उसे मैं ले चलूँगा ।"

इस बात पर हम दोनों में थोड़ी देर तक बहस हुई और फिर वह मान गई । हम लोग तब साथ साथ, कन्धे से कन्धा भिड़ा कर चल खड़े हुए।

"मुझे उम्मीद है मैं लड़खड़ाऊँगी नहीं," उसने अपराधी के समान हँसते हुए मेरे कन्धे पर हाथ रख कर कहा ।

रूस का नया निवासी, ऐसा मानव, जिसका भाग्य अज्ञात था, गहरी साँस लेता हुआ मेरे हाथों पर लेटा हुआ था ! समुद्र, जो सफेद गोटे की कतरनो से ढका हुआ था, किनारे पर टकरा रहा था झाड़ियाँ आपस में कानाफूसी कर रही थीं । सूर्य मध्याह्न की रेखा को पार करता हुआ चमक रहा था ।

हम धीरे धीरे चलते रहे । कभी कभी माँ रुक जाती, एक गहरी साँस लेती और अपना सिर उठा कर चारों ओर, समुद्र, जंगल, पहाड़ और फिर अपने बेटे के चेहरे की ओर देखती । उसकी आँखें, जो वेदना के आँसुओं से पूरी तरह धुल चुकी थीं, पुन आश्चर्य जनक रूप से निर्मल हो गई थी । उनमें पुन. असीम स्नेह का प्रकाश चमकने लगा था ।

एक बार वह रुकी और बोली·

"भगवान् ! मेरे प्यारे अच्छे भगवान् ! यह कितना अच्छा है ! कितना अच्छा ! ओह, अगर मै इसी तरह चलती रहती, सदैव दुनियाँ के अन्ति छोर तक, और यह, मेरा छोटा सा बच्चा बड़ा होता जाता, आजादी से बढ़ता रहता, अपनी माँ की छाती के पास रह कर मेरा प्यारा छोटा बच्चा "

समुद्र मे निरन्तर मर्मर की ध्वनि उठ रही थी—

१

कामरेड: एक कहानी

इस शहर की प्रत्येक वस्तु बड़ी अद्भुत और बड़ी दुर्बोध थी। इसमें बने हुए बहुत से गिरजाघरों के विभिन्न रंगों के गुम्बज आकाश की ओर सिर उठाये खड़े थे परन्तु कारखानों की दीवालें और चिमनियाँ इन घण्टाघरों से भी ऊँची थीं। गिरजे इन व्यापारिक इमारतों की ऊँची ऊँची दीवालों से छिपे हुए, पत्थर की उन निर्जीव चहारदीवारियों में इस प्रकार डूबे हुए थे जैसे मिट्टी और मलबे के ढेर में भद्दे, कुरूप फूल खिल रहे हों। और जब गिरजों के घण्टे प्रार्थना के लिए लोगों को बुलाते तो उनकी झनकारती हुई आवाज लोहे की छतों से टकराती और मकानों के बीच बनी हुई गहरी गलियों में खो जाती।

इमारतें विशाल और अपेक्षाकृत कम आकर्षक थीं परन्तु आदमी कुरूप थे। वे सदैव नीचता पूर्ण व्यवहार किया करते थे। सुबह से लेकर रात तक वे भूरे चूहों की तरह, शहर की पतली टेढ़ी मेढ़ी गलियों में इधर से उधर भागा करते और अपनी उत्सुक तथा लालची आँखें फाड़े कुछ रोटी के लिये तथा कुछ मनोरञ्जन के लिये भटकते रहते। इतने पर भी कुछ लोग चौराहों पर खड़े होकर, निर्बल मनुष्यों पर द्वेषपूर्ण निगाहें जमाए रहते, यह देखने के लिये कि वे सबल व्यक्तियों के सामने नम्रतापूर्वक झुकते हैं या नहीं। सबल व्यक्ति धनवान थे और और वहाँ के प्रत्येक प्राणी का यह विश्वास था कि केवल धन ही मनुष्य को शक्ति दे सकता है। वे सब अधिकार

"क्या तुम वास्तव में जा रही हो ?" मैंने पूछा ।

"हाँ ।"

"अपना ख्याल रखो, माँ ।"

"पवित्र कुमारी मेरी सहायता करेगी ? उसे उठा कर मुझे दे दो !"

"उसे मैं ले चलूँगा ।"

इस बात पर हम दोनों में थोड़ी देर तक बहस हुई और फिर वह मान गई । हम लोग तब साथ साथ, कन्धे से कन्धा मिड़ा कर चल खड़े हुए।

"मुझे उम्मीद है मैं लड़खड़ाऊँगी नहीं," उसने अपराधी के समान हँसते हुए मेरे कन्धे पर हाथ रख कर कहा ।

रूस का नया निवासी, ऐसा मानव, जिसका भाग्य अज्ञात था, गहरी साँस लेता हुआ मेरे हाथों पर लेटा हुआ था ! समुद्र, जो सफेद गोटे की कतरनों से ढका हुआ था, किनारे पर टकरा रहा था झाड़ियाँ आपस में कानाफूसी कर रही थीं । सूर्य मध्याह्न की रेखा को पार करता हुआ चमक रहा था ।

हम धीरे धीरे चलते रहे । कभी कभी माँ रुक जाती, एक गहरी साँस लेती और अपना सिर उठा कर चारों ओर, समुद्र, जगल, पहाड़ और फिर अपने बेटे के चेहरे की ओर देखती । उसकी आँखें, जो वेदना के आँसुओं से पूरी तरह धुल चुकी थीं, पुन आश्चर्य जनक रूप से निर्मल हो गई थी । उनमें पुन असीम स्नेह का प्रकाश चमकने लगा था ।

एक बार वह रुकी और बोली

"भगवान् ! मेरे प्यारे अच्छे भगवान् ! यह कितना अच्छा है ! कितना अच्छा ! ओह, अगर मै इसी तरह चलती रहती, सदैव दुनियाँ के अन्तिम छोर तक, और यह, मेरा छोटा सा बच्चा बड़ा होता जाता, आजादी से बढ़ता रहता, अपनी माँ की छाती के पास रह कर मेरा प्यारा छोटा बच्चा "

समुद्र मे निरन्तर मर्मर की ध्वनि उठ रही थी—

१

कामरेड: एक कहानी

इस शहर की प्रत्येक वस्तु बड़ी अद्भुत और बड़ी दुर्बोध थी। इसमें बने हुए बहुत से गिरजाघरों के विभिन्न रंगों के गुम्बज आकाश की ओर सिर उठाये खड़े थे परन्तु कारखानों की दीवालें और चिमनियाँ इन घण्टाघरों से भी ऊँची थीं। गिरजे इन व्यापारिक इमारतों की ऊँची ऊँची दीवालों से छिपे हुए, पत्थर की उन निर्जीव चहारदीवारियों में इस प्रकार डूबे हुए थे जैसे मिट्टी और मलवे के ढेर में भद्दे, कुरूप फूल खिल रहे हों। और जब गिरजों के घण्टे प्रार्थना के लिए लोगों को बुलाते तो उनकी झनकारती हुई आवाज लोहे की छतों से टकराती और मकानों के बीच बनी हुई गहरी गलियों में खो जाती।

इमारतें विशाल और अपेक्षाकृत कम आकर्षक थीं परन्तु आदमी कुरूप थे। वे सदैव नीचता पूर्ण व्यवहार किया करते थे। सुबह से लेकर रात तक वे भूरे चूहों की तरह, शहर की पतली टेढ़ी मेढ़ी गलियों में इधर से उधर भागा करते और अपनी उत्सुक तथा लालची आँखें फाड़े कुछ रोटी के लिये तथा कुछ मनोरञ्जन के लिये भटकते रहते। इतने पर भी कुछ लोग चौराहों पर खड़े होकर, निर्बल मनुष्यों पर द्वेषपूर्ण निगाहें जमाए रहते, यह देखने के लिये कि वे सबल व्यक्तियों के सामने नम्रतापूर्वक झुकते हैं या नहीं। सबल व्यक्ति धनवान थे और और वहाँ के प्रत्येक प्राणी का यह विश्वास था कि केवल धन ही मनुष्य को शक्ति दे सकता है। वे सब अधिकार

के भूखे थे, क्योंकि सब गुलाम थे। धनवानों की विलासिता गरीबों के हृदय में द्वेष और घृणा उत्पन्न करती थी। वहाँ किसी भी व्यक्ति के लिये स्वर्ण की झनकार से अधिक सुन्दर और मधुर दूसरा कोई भी सङ्गीत नहीं था। और इसी कारण वहाँ का हरेक व्यक्ति दूसरे का दुश्मन बन गया था। सेब पर क्रूरता का शासन था।

कभी कभी सूर्य उस शहर पर चमकता परन्तु वहाँ का जीवन सदैव अन्धकार पूर्ण रहता और मनुष्य छाया की तरह दिखाई देते। रात होने पर वे असख्य चमकीली बत्तियाँ जलाते परन्तु उस समय भूखी औरतें पैसों के लिए अपना कंकालवत् शरीर बेचने के लिये सड़कों पर निकल आतीं। विभिन्न प्रकार के सुगन्धित भोजनों की सुगन्धि उन्हें अपनी ओर खींचती और चारों ओर भूखे मानव की भूखी आँखें, चुपचाप चमकने लगतीं। नगर के ऊपर दुख और विषाद की एक धीमी कराहट, जो जोर से चिल्लाने मे असमर्थ थी, प्रतिध्वनित होकर मड़राने लगती।

जीवन नीरस और चिन्ताओं से भरा हुआ था। मानव एक दूसरे का दुश्मन था और प्रत्येक व्यक्ति गलत रास्ते पर चल रहा था। केवल कुछ व्यक्ति ही यह अनुभव करते थे कि वे ठीक मार्ग पर हैं परन्तु वे पशुओं की तरह रूखे और क्रूर थे। वे दूसरो से अधिक भयानक और कठोर थे।

हरेक जीना चाहता था परन्तु यह कोई नहीं जानता था कि कैसे जिये। कोई भी अपनी इच्छाओं का अनुसरण स्वतत्र रूप से करने में समर्थ नहीं था। भविष्य की ओर बढ़ा हुआ प्रत्येक कदम उन्हे पीछे मुड़कर उस वर्तमान की ओर देखने के लिये बाध्य कर देता था, जो एक लालची राक्षस के शक्तिशाली और क्रूर हाथो द्वारा मनुष्य को अपने रास्ते पर आगे बढ़ने से रोक देता और अपने चिपचिपे आलिंगन के जाल में फास लेता।

मनुष्य जब जिन्दगी के चेहरे पर कुरूप दुर्भाग्य की रेखायें देखता तो कष्ट और आश्चर्य विजड़ित होकर निस्सहाय के समान ठिठक जाता, जिन्दगी उसके हृदय में अपनी हजारों उदास और असहाय आँखों से झाकती, और निशब्द रूप उससे प्रार्थना करती जिसे सुन कर भविष्य की सुन्दर आशाएँ

उसकी आत्मा में मर जातीं और मनुष्य की नपुंसकता की कराहट, उन दुखी और दीन मनुष्यों की कराह और चीख पुकारों के लयहीन संगीत मे डूब जाती जो जिन्दगी के शिकंजे में पड़े तड़फड़ा रहे थे।

वहाँ सदैव नीरसता और उद्विग्नता तथा कभी कभी भय का वातावरण छाया रहता और वह अन्धकारपूर्ण अवसाद में लिपटा हुआ नगर अपने एक से विद्रोही पत्थरों के ढेर को लिए जो मन्दिरों को कलंकित कर रहे थे, मनुष्यों को एक कारागृह के समान घेरे तथा सूर्य की किरणों को ऊपर ही ऊपर लौटाते हुए, चुपचाप खड़ा था।

वहाँ जीवन के संगीत मे क्रोध और दुख की चीख, छिपी हुई घृणा की एक धीमी फुसकार, क्रूरता का भयभीत करने वाला कोलाहल और हिंसा की भयकर पुकार भरी हुई थी।

[२]

दुख और दुर्भाग्य के अवसादपूर्ण कोलाहल के बीच लालच और इच्छाओं के दृढ़ बन्धन में जकड़े हुए, दयनीय गर्व की कीचड़ में फंसे हुए, थोड़े से एकाकी स्वप्न द्रष्टा उन झोपड़ियों की ओर चुपचाप, छिप कर चले चले जा रहे थे जहाँ वे निर्धन व्यक्ति रहते थे जिन्होंने नगर की समृद्धि को बढ़ाया था। तिरस्कृत और उपेक्षित होते हुए भी मानव में पूर्ण आस्था रख वे विद्रोह की शिक्षा देते थे। वे दूर पर प्रज्वलित सत्य की विद्रोही चिनगारियों के समान थे। वे उन झोपड़ियों में अपने साथ छिपाकर एक सादे परन्तु उच्च सिद्धान्त की शिक्षा के फल देने वाले बीज लाए थे। और कभी अपनी आँखों में कठोरता की ठंडी चमक भर कर और कभी सज्जनता और प्रेम से उन गुलाम मनुष्यों के हृदय में इस प्रकाशवान प्रज्वलित सत्य की जड़ रोपने का प्रयत्न करते, उन मनुष्यों के हृदय में, जिन्हें क्रूर और लालची व्यक्तियों ने अपने लाभ के लिए अन्धे और गूँगे हथियारों मे बदल दिया था।

और ये अभागे, पीड़ित मनुष्य अविश्वास पूर्वक इन नवीन शब्दों को

संगीत को सुनतीं-एक ऐसा संगीत जिसके लिए उनके क्लान्त हृदय युगों से प्रतीक्षा कर रहे थे। धीरे धीरे उन्होंने अपने सिर उठाए और अपने को उन चालाकी से भरी हुई झूठी बातों के जाल से मुक्त कर लिया जिसमें उनके शक्तिशाली और लालची अत्याचारियों ने उन्हें फसा रक्खा था।

उनके जीवन में, जिसमें उदासी से भरा हुआ दमित असन्तोष व्याप्त था, उनके हृदयों में जो अनेक अत्याचार सहकर विषाक्त बन चुके थे, उनके मस्तिष्क में जो शक्तिशालियों की धूर्तता पूर्ण चतुरता से जड़ हो गया था-उस कठोर और दीन अस्तित्व में जो भयकर अत्याचारों से सूख चुका था-एक सीधा सा दीप्तमान शब्द व्याप्त हो उठा।

"कामरेड"

यह उनके लिये नया नहीं था। उन्होंने इसे सुना था और स्वयं भी इसका उच्चारण किया था। परन्तु तब तक इसमें भी वही रिक्तता और उदासी भरी हुई थी जो ऐसे ही अन्य परिचित और साधारण शब्दों में भरी रहती हैं जिन्हें भूल जाने से कोई नुकसान नहीं होता।

परन्तु अब इसमें एक नई झकार थी .. सशक्त और स्पष्ट। एक नए अर्थ का सगीत व्याप्त था और एक हीरे के समान कठोर चमक और दिग्व्यापी ध्वनि थी।

उन्होंने इसे अपनाया और इसका उच्चारण किया . सावधानी से नम्रता पूर्वक और इसे अपने हृदय से इतने स्नेह पूर्वक लगा लिया जैसे माता अपने बच्चे को पालने में झुलाती है।

और जैसे जैसे वे इस शब्द की जाज्वल्यमान आत्मा में भीतर प्रविष्ट होते गए वह उन्हें उतना ही अधिक उज्वल और सुन्दर दिखाई देता गया।

"कामरेड!" उन्होंने कहा।

और उन्होंने अनुभव किया कि यह शब्द सम्पूर्ण संसार को एक सूत्र में सगठित करने के लिए सब मनुष्यों को आजादी की सब से ऊँची चोटी तक उठा कर उन्हें नए बन्धनों में बाँधने के लिए—एक दूसरे का सम्मान

करने के लिए तथा मनुष्य को स्वतन्त्रता के बन्धन में लिए हुए—इस संसार में आया है।

जब इस शब्द ने गुलामों के हृदय में जड़ जमा ली तब वे गुलाम नहीं रहे और एक दिन उन्होंने शहर और उसके शक्तिशाली शासकों से पुकार कर कहा—

"बस, बहुत हो चुका।"

इससे जीवन रुक गया क्यों कि ये लोग ही अपनी शक्ति से इसका संचालन करते थे—केवल यही लोग, और कोई नहीं। पानी बहना बन्द हो गया, आग बुझ गई, नगर अन्धकार में डूब गया और शक्तिशाली लोग बच्चों के समान असहाय हो उठे।

अत्याचारियों की आत्मा में भय समा गया। अपने ही मल मूत्र को दम घोंटने वाली दुर्गन्ध से व्याकुल होकर उन्होंने विद्रोहियों के प्रति अपनी घृणा का गला घोंट दिया और उनकी शक्ति को देख कर किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गए।

भूख का पिशाच उनका पीछा करने लगा और उनके बच्चे अन्धकार में करुणाजनक ढंग से रोने लगे।

घर और गिरजे अवसाद में डूब गए और पत्थर और लोहे के क्रूर अट्टहास में घिर गई सड़कों पर मृत्यु की सी भयावनी निस्तब्धता छा गई। जीवन गतिहीन हो गया क्योंकि जिस शक्ति ने इसे उत्पन्न किया था वह अब अपने अस्तित्व के लिए चौकन्नी हो उठी थी और गुलाम मनुष्य ने अपनी इच्छा को प्रकट करने वाले चमत्कार पूर्ण और अजेय शब्द को पा लिया था। उसने अपने को अत्याचार से मुक्त कर अपनी शक्ति को पहचान लिया था, जो विधाता की शक्ति थी।

शक्तिशालियों के लिए वे दिन दूर न थे क्योंकि वे लोग अपने को इस जीवन का स्वामी समझते थे। वह रात हजार रातों के समान थी, दुख के मामने गहरी। मुरदे के समान उस नगर में चमकने वाली बत्तियाँ

अ यन्त धूमिल और अशक्त थीं। वह नगर शताब्दियों के परिश्रम से बना था। वह राक्षस जिसने मनुष्यों का रक्त चूस लिया था अपनी सम्पूर्ण कुरूपता को लेकर उनके सामने खड़ा हो गया था—पत्थर और काठ के एक दयनीय ढेर के समान। मकानों की अधेरी खिड़कियाँ भूखी और दुखी सी सड़क की ओर झाँक रहीं थीं जहाँ जीवन के सच्चे स्वामी हृदय में एक नया उत्साह लिए चल रहे थे। वे भी भूखे थे, वास्तव में दूसरों से अधिक भूखे, परन्तु उनकी यह भूख की वेदना उनकी परिचित थी। उनका शारीरिक कष्ट उन्हें इतना असह्य नहीं था जितना कि जीवन के उन स्वामियों को। न इसने उनकी आ मा में प्रज्वलित उस ज्वाला को ही कम किया था। वे अपनी शक्ति का परिचय पाकर उत्तेजित हो रहे थे। आने वाली विजय का विश्वास उनकी आँखों में चमक रहा था।

वे नगर की सड़कों पर घूम रहे थे जो उनके लिए एक उदास, दृढ़ कारागृह के समान थी। जहाँ उनकी आत्मा पर असंख्य चोटे पहुचाई गई थीं। उन्होंने अपने परिश्रम के महत्व को देखा और इसने उनको जीवन का स्वामी बनने के पवित्र अधिकार के प्रति सतर्क बना दिया, जीवन के नियम बनाने वाला तथा उसे उत्पन्न करने वाला। और फिर एक नई शक्ति के साथ, एक चकाचौंध उत्पन्न कर देने वाली चमक के साथ, सब को संगठित करने वाला वह जीवनदायक, शब्द गूंज उठा।

"कामरेड।"

यह शब्द वर्तमान के झूठे शब्दों के बीच गूंज उठा, भविष्य के सुखद सन्देश के समान, जिसमें एक नया जीवन सब की प्रतीक्षा कर रहा था। वह जीवन दूर था या पास? उन्होंने महसूस किया कि वे ही इसका निर्णय करेंगे। वे आजादी के पास पहुच रहे थे और वे स्वयम् ही उसके आगमन का स्वागत करते जा रहे थे।

[३]

वह वेश्या जो कल एक आधे जानवर के समान थी और गन्दी गलियों में थकी हुई इस बात का इन्तजार करती रहती थी कि कोई

आये और दो पैसे देकर उसके सूखे ठठरी के समान शरीर को खरीद ले। उस वेश्या ने भी उस शब्द को सुना परन्तु मुस्कराते हुए परेशान सी होकर उसने इसका उच्चारण करने का साहस किया। एक आदमी उसके पास आया, उनमें से एक जिन्होंने इससे पहले इस रास्ते पर कदम नहीं रखा था। उसने उस वेश्या के कन्धे पर हाथ रखा और उससे इस प्रकार बोला जैसे कोई अपने भाई से बोलता है:

"कामरेड !" उसने कहा।

वह इस प्रकार मधुरता और लज्जापूर्वक हँसी जिससे अत्यधिक प्रसन्नता के कारण रो न उठे। उसके दुखी हृदय ने इससे पूर्व इतनी प्रसन्नता का अनुभव कभी नहीं किया था। आँसू, एक पवित्र और नवीन सुख के आँसू, उसकी उन आँखों में चमकने लगे जो कल तक पथराई हुई और भूखी निगाह से संसार को घूरा करती थीं। परित्यक्तों की यह प्रसन्नता, जिन्हें संसार के श्रमिकों की श्रेणी में शामिल कर लिया गया था, नगर की सड़कों पर चारों ओर चमकने लगी और उसके घरों की धुँधली आँखें इसे बढ़ते हुए द्वेष और क्रूरता से देखने लगीं।

वह भिखारी, जिसे कल तक बड़े आदमी, उससे पीछा छुड़ाने के लिये एक पैसा फेंक दिया करते थे और ऐसा करके यह समझते थे कि आत्मा को शान्ति मिलेगी, उसने भी यह शब्द सुना। यह शब्द उसके लिए पहली भीख के समान था जिसने उसके गरीब, निर्धनता से नष्ट होते हुए हृदय को प्रसन्नता और कृतज्ञता से भर दिया था।

वह ताँगे वाला, एक छोटा सा भद्दा आदमी, जिसके ग्राहक उसकी पीठ में इसलिये घूंसे मारते थे कि जिससे उत्तेजित होकर वह अपने भूखे, टूटे शरीर वाले टट्टू को तेज चलाने के लिये हंटर फटकारे। वह आदमी घूंसे खाने का आदी था। पत्थर की सड़क पर पहियों से उत्पन्न होने वाली खड़खड़ाहट की ध्वनि से उसका दिमाग जड़ हो गया था। उसने भी खूब अच्छी तरह से मुस्कराते हुए एक रास्ता चलने वाले से कहा:

"ताँगे पर चढ़ना चाहते हो''''''कामरेड ?"

इस पर, इस शब्द की ध्वनि से भयभीत होकर उसने घोड़े को तेज चलाने के लिये लगाम सम्हाली और उस राहगीर की तरफ देखा। वह अब भी अपने चौड़े, लाल चेहरे से मुस्कराहट दूर करने में असमर्थ था।

उस राहगीर ने प्रेम पूर्वक उसकी ओर देखा और सिर हिलाते हुए बोला,

"धन्यवाद, कामरेड! मुझे ज्यादा दूर नहीं जाना है।"

अब भी मुस्कराते और प्रसन्नता से अपनी आँखें झपकाते हुए वह ताँगे वाला अपनी सीट पर मुड़ा और सड़क पर खड़खड़ाहट का तेज शोर करते हुए चला गया।

फुटपाथों पर आदमी बड़े २ झुंडों में चल रहे थे और चिनगारी के समान वह महान शब्द, जो संसार को सगठित करने के लिये उत्पन्न हुआ था, उन लोगों में इधर से उधर घूम रहा था।

"कामरेड!"

एक पुलिस का आदमी—गलमुच्छेवाला, गम्भीर और महत्वपूर्ण, एक झुंड के पास आया, जो सड़क के किनारे व्याख्यान देने वाले वृद्ध मनुष्य के चारों ओर इकट्ठा हो गया था। कुछ देर तक उसकी बातें सुन कर उसने नम्रता पूर्वक कहा

"सड़क पर सभा करना कानून के खिलाफ है ... तितर बितर हो जाओ, महाशयो......"

और एक सैकिन्ड रुक कर उसने अपनी आँखें नीची कीं और धीरे से जोड़ा

"कामरेडो ..."

उन लोगों के चेहरे पर जो इस शब्द को अपने हृदय में संजोये हुए थे, जिन्होंने अपने रक्त और माँस से इसे और एकता की पुकार की तीव्र ध्वनि को बढ़ाया था—निर्माता का गर्व झलकने लगा। और यह स्पष्ट हो रहा था कि वह शक्ति, जिसे इन लोगों ने मुक्तहस्त होकर इस शब्द पर व्यय किया था अविनाशी और अक्षय थी।

उन लोगों के खिलाफ, भूरी वर्दी पहने हथियार बन्द आदमियों के अन्धे समूह एकत्रित होने लगे थे। वे चुपचाप एक सी पंक्तियों में खड़े थे। अत्याचारियों का क्रोध उन विद्रोहियों पर फट पड़ने को तैयार था जो न्याय के लिये लड़ रहे थे।

उस नगर की टेढ़ी मेढ़ी संकरी गलियों में, अज्ञात निर्माताओं द्वारा बनाई हुई ठंडी, खामोश दीवालों के भीतर मनुष्य के भाई चारे की भावना फैल रही थी और पक रही थी।

"कामरेडो !"

जगह जगह आग भड़क उठी जो एक ऐसी लपट में फूट पड़ने को प्रस्तुत थी जो सारे संसार को भाई चारे की मजबूत और उज्वल भावना में बाँध देने वाली थी। वह सारी पृथ्वी को अपने में समेट लेगी और उसे सुखा डालेगी। द्वेष, घृणा और क्रूरता की भावना को जला कर राख बना देगी जो हमारे रूप को विकृत बनाती हैं। सब हृदयों को पिघला कर उन्हें एक हृदय में—केवल एक हृदय में ढाल देगी। सरल और अच्छे स्त्री पुरुषों का हृदय परस्पर सम्बन्धित स्वतंत्र काम करने वालों का एक सुन्दर स्नेहपूर्ण परिवार बन जायगा।

उस निर्जीव नगर की सड़कों पर जिसे गुलामों ने बनाया था, नगर की उन गलियों में जहाँ क्रूरता का साम्राज्य रहा था, मानव में विश्वास तथा अपने ऊपर और संसार की सम्पूर्ण बुराइयों पर मानव की विजय की भावना बढ़ी और शक्तिशाली बनी।

और उस बेचैनी से भरे हुए नीरस अस्तित्व के कोलाहल में, एक दीप्तिमान, उज्ज्वल नक्षत्र के समान, भविष्य को स्पष्ट करने वाली उल्का के समान, वह, हृदय को प्रभावित करने वाला सादा और सरल शब्द चमकने लगा:

"कामरेड !"

-❧-

मोर्ड्वीया की लड़की

प्रत्येक शनिवार को जब शहर के सारों घंटाघर, सान्ध्य-प्रार्थना के निमित्त अपने घण्टे बजाते तो उनकी गहरी आवाज़ का जवाब पहाड़ी की तलहटी में बनी फैक्टरियों की सीटियों की कर्कश ध्वनि से दिया जाता और कई मिनट तक दो भिन्न प्रकार की टकराती हुई आवाजें हवा में गूँजती रहतीं जो परस्पर अत्यन्त भिन्न थीं—एक स्नेहपूर्वक आह्वान करती तथा दूसरी अनिच्छा पूर्वक बाहर निकाल देती।

और हमेशा प्रत्येक शनिवार को, फैक्टरी के दरवाजे से बाहर निकलते समय पावेल माकोव—वहाँ का एक कारीगर—दुविधा और लज्जा का अनुभव करता। वह धीरे धीरे घर की ओर चलता। उसके साथी उससे आगे निकल जाते। वह चलते हुए अपनी नुकीली दाढ़ी को उँगलियों से सुलझाता और अपराधी के समान हरे कालीन से ढकी हुई पहाड़ी की ओर देखता जाता जिसकी गोट पर फलों के बाग घने लगे हुए थे। फलदार पेड़ों वाले बागों की काली मजबूत दीवाल के पीछे से भूरे तिकोने मकानों का ऊपरी भाग, ढलुवाँ छतों की उभरी हुई खिड़कियाँ, चिमनियों का ऊपरी हिस्सा आकाश में काफी ऊँचाई पर बने हुए छोटी चिड़ियों के घोंसले जो लम्बे बाँसों पर टँगे हुए थे, उससे भी ऊपर बिजली द्वारा भस्म किये हुये एक चीड़ के पेड़ का ठूँठ और उसके नीचे मोची वास्याजिन का मकान आदि दिखाई देते थे। वहाँ पावेल की स्त्री, उसकी बेटी और उसका ससुर उसका इन्तज़ार कर रहे थे।

ऊपर "ढुंग, ढुंग .. ..." की गंभाविन करने वाली आवाज हो रही थी।

और नीचे, पहाड़ी की ओर से, क्रुद्ध तूफान की चिंघाड़ आ रही थी:

"ओ-ओ-ो... ो . ो..... "

पतलून की जेबों में हाथ ठूंसे, शरीर को आगे झुकाये पावेल पत्थर की एक सड़क पर ऊपर की ओर चढ़ता जा रहा था जबकि उसके साथी बागों में होकर जाने वाले एक छोटे रास्ते से, काली बकरियों की तरह एक पगडंडी से दूसरी पगडंडी पर उछलते हुए आगे बढ़ रहे थे।

मिशा सर्दीकोव—एक ढलाई का काम करने वाला—कहीं ऊपर से चीखा

"पावेल, तुम आओगे ?"

"मैं नहीं जानता, भाई, कोशिश करूँगा," पावेल ने मज़दूरों को उस सीधी खड़ी चढ़ाई पर लड़खड़ाते हुए चढ़ते देखा और जवाब दिया। चारों ओर हँसी और सीटियों की आवाजें आ रही थीं। सब लोग इतवार को मिलने वाले विश्राम की भावना से प्रसन्न हो रहे थे। उनके उदास चेहरे और सफेद दांत खुशी से चमक उठे थे।

सब्ज़ी के खेतों की टहनियों से बनी हुई बहार दीवारी इस घर लौटने वाले झुंड के पैरों से टूट रही थी। खेत वाली बुढ़िया इवानिख्वा हमेशा की तरह अपनी नकीली आवाज में गालियों से उनका स्वागत कर रही थी और नदी से दूर, 'प्रिमेज ग्रोव' के पास डूबता हुआ सूरज उस बुढ़िया के चिथड़ों को गुलाबी और उसके भूरे सिर को सुनहरी रंगों में रंग रहा था।

नीचे की तरफ से जलते हुए तेल और सीले दलदलों की दुर्गन्ध आ रही थी। पहाड़ी की तलहटी में ताजे खीरों, तरबूजों और काले अंगूरों की सुगन्ध भर रही थी। उस बुढ़िया की गालियाँ गिरजे से उठी हुई प्रसन्न ध्वनि में विलीन हो गईं।

"हाँ-हाँ " याकोव ने बेमन सोचा—"चरित्र की ऐसी कमजोरी बड़ी लज्जाजनक है—बड़ी लज्जाजनक... . "

उसने पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर नीचे की ओर देखा। पाँच चिमनियाँ, एक चिकने दैत्य के पंजों की तरह, जिसे उस दुर्गन्धपूर्ण दलदल में गाड़ दिया गया हो, ऊपर उठी हुई थीं।

पतली टेढ़ी मेढ़ी नदी जिसे छोटे छोटे अस्थि टापुओं ने काट दिया था, लाल दिखाई दे रही थी। जब डूबता हुआ सूरज पहाड़ियों के बीच गदले पानी में अपनी अन्तिम किरण फेंकता तो दलदल में उगे हुए छोटे छोटे चीड़ के क्षुद्र फेफड़ों पर पड़े हुए क्षय रोग के धब्बे से चमकने लगते। वे सुन्दर किरणें उस नीरस दलदल में पड़कर बर्बाद हो रही थीं। दलदल का सड़ा दुर्गन्ध से भरा हुआ पानी उन्हें पूरी तरह से निगल रहा था।

"अच्छा, अब चलें!" याकोव बुदबुदाया।

परन्तु वह कुछ देर तक विचारों में खोया हुआ खड़ा रहा।

घर के दरवाज़े पर उसकी मुलाकात वास्याजिन से हुई। वह दुबला पतला, गंजा और काना आदमी था। अपनी फूटी हुई दाहिनी आँख के गढ़े को छिपाने के लिए वह बाहर निकलते समय धूप का काला चश्मा पहन लेता था जिसकी वजह से आस पास रहने वाले मजदूरों ने उसका नाम—"धूप का चश्मा वाली आँख का बालक" रख रखा था। उसकी मुड़ी हुई नाक के नीचे छितरे हुए, सूअर के से कड़े कुछ भूरे बाल उगे हुए थे जिन्हें वह छुट्टियों वाले दिन किसी चिपकने वाली चीज से मूछों की तरह चिपका लेता था जिससे उसका होठ इस प्रकार सिकुड़ जाता मानो वह लगातार किसी गर्म चीज के ऊपर फूंक मार रहा हो।

अभी उसका मुँह एक मधुर मुस्कराहट से फैल गया था जब उसने अपने दामाद से फुसफुसाते हुए कहा:

"शनिवार की रात को, अगर तुम्हें सुभीता हो तो!"

पावेल ने बीस कोपेक वाला एक सिक्का उसके हाथ पर रख दिया और घास से ढके हुए एक छोटे से अहाते में होकर गुज़रा जहाँ एक कोने में पेड़ के नीचे खाने की एक मेज सजी हुई थी। मेज के नीचे चर्किन नामक कुत्ता पड़ा हुआ अपनी पूंछ में से कलीलियाँ पकड़ रहा था। बरसाती की

सीढ़ियों पर उसकी स्त्री, पैर फैलाये बैठी थी। उसकी बेटी, तीन साल की छोटी सी ओल्गा, घास पर लड़खड़ाती हुई चल रही थी। जब उसने अपने पिता को देखा तो अपनी दोनों छोटी छोटी हथेलियाँ उसकी ओर बढ़ा चहकी :

"दा-दा ! दाद-आ आओ !"

"इतनी देर कैसे हुई ?" उसकी स्त्री ने शंकित होकर पूछा—"और सब लोग तो देर के घर आ गये ?"

उसने चुपचाप गहरी साँस ली—सब चीजें पहले जैसे ही थीं। अपनी लड़की की नाक को उँगली से छूते हुए उसने अपनी स्त्री के फूले हुए पेट की ओर अपराधी की तरह देखा।

"जल्दी करो ! हाथ मुँह धो लो !" स्त्री ने कहा।

वह चला गया और उसके पीछे शिकायत भरे शब्दों की एक बौछार सी आई :

"तुमने फिर पिता को शराब पीने के लिये पैसे दे दिये ? मैंने तुमसे हजारों बार ऐसा न करने के लिए कहा है। लेकिन मेरी बातों की तुम्हारे लिये क्या कीमत है। मैं तुम्हारी अर्द्धांगिनी नहीं हूँ। तुम मुझे रात की मुलाकातों के समय अब नहीं पा सकोगे जिस तरह अपनी उन कुलटा औरतों को पाते हो।"

पावेल ने हाथ मुंह धोया और अपने कानों में साबुन के झाग भरने का प्रयत्न किया जिससे वह उस पुराने भाषण को न सुन सके जो उसके चारों तरफ लकड़ी की सूखी छीलन की तरह खड़खड़ा रहा था। उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसकी स्त्री उसके हृदय को किसी भोथरे रन्दे से छील रही हो।

उसने उन दिनों को याद किया जब अपनी स्त्री से उसकी पहली मुलाकात हुई थी। कुहरे से ढकी हुई चाँदनी रातों को जब वे शहर की सड़कों पर घूमते थे, बरफ पर फिसलने वाली गाड़ी पर पहाड़ों के नीचे सैर करते थे, रात को सर्कस में जाते थे। सिनेमा में उनका समय आनन्द से कटता था। उस अन्धकार में उस समय एक दूसरे से सट कर बैठना कितना अच्छा

लगता था--जब वे परदे पर मूक छायाओं को चलते फिरते देखते थे। यह सब कितना अच्छा और कितना मनोरञ्जक था।

वे दुख से भरे हुए दिन थे। वह अभी जेल से छूटा था और उसने बाहर आकर देखा कि सब कुछ बर्बाद हो गया है। वे लोग जो पहले प्रसन्नता से खिल कर उसका स्वागत करते थे अब उन बातों पर बिगड़ उठते थे जो पहले उनमें उमंग भर देती थीं।

छोटी घुँघराले बालों और भूरी आँखों वाली ओल्गा गाती हुई उसके पैरों से लिपट गई

"दादा मुझे प्याल कलते हैं, दादा मुझे गुरिया ले दो, मुझे मिठाई ले दो.. ।"

उसने अपनी उँगली पर लटकती हुई पानी की बूंदों को उस बच्ची के चहरे पर छिड़क दिया। बच्ची किलकारती हुई भागी। उसने अपनी स्त्री से धीमी आवाज में कहा

"दाशा आओ, हिनहिनाओ मत !"

छोटी सी ओल्गा ने चर्किन के भारी सिर को कठिनता से ऊपर उठाते हुए आज्ञा दी

"देख, देख, मैं तुझ से कह रही हूँ ... !"

कुत्ते ने उसकी तरफ ध्यान न देते हुए सिर नीचा कर लिया--वह बहुत कुछ देख चुका था। अपने जबड़े खोलते हुए वह धीरे से घुर्राया।

"जब यह पति इतना चालाक आदमी है कि उसे अपने साथी अपने घर वालों से ज्यादा अच्छे लगते हैं," उसकी स्त्री बेरहमी से उसके हृदय को कचोटती हुई कहने लगी। पावेल अहाते के बीचोंबीच खड़ा था। खुले हुए दरवाजे से उसे जगल के वृक्षों की कतारें दिखाई दे रहीं थीं। एकबार, पहले, वह दाशा के साथ नीचे जाने वाली ढलुवाँ सडक पर पड़ी हुई एक बेंच के ऊपर बैठा था और दूर तक फैले हुए दृश्य को देख कर उसने कहा था

"सुनो, क्या हम एक साथ रह कर सुखी होने नहीं जा रहे हैं !"

"मेरा ख्याल है कि वह गर्भ से है इसलिए ऐसी बातें करती है," उसने इन बातों को याद कर अपने मन को प्रसन्न बनाने की कोशिश की और लड़की को गोद में उठा लिया।

याकोव चुपचाप मेज पर बैठ गया और उसकी लड़की उसके घुटनों पर चढ़कर उसकी दाढ़ी के भीगे घुँघराले बालों को अपनी छोटी छोटी उँगलियों से सहलाती हुई चहकती रही :

"ओल्गा दादा के साथ नाच में जायगी और ममी दूर रहेगी। गाड़ी पर--घोड़े पर !"

"चुप रहो, ओल्गा ! मैं दिन भर तुझ से परेशान रहती हूँ !" उसकी माँ ने कठोर होकर कहा।

पावेल की इच्छा हुई कि अपनी स्त्री के माथे पर कसकर एक चम्मच मारे और उस मारने से उठी हुई आवाज सारे अहाते और बाहर सड़क तक सुनाई दे। परन्तु अपने इस विचार को उसने क्रोधपूर्ण आकृति द्वारा ही प्रकट कर अपने को रोक लिया और अनिच्छापूर्वक सोचा :

"तुम ज्यादा जानती होगी ... . "

ससुर महोदय भीतर आए, मेज पर बैठे, अपने पतले होठों को सूखे चेहरे पर फैलाते हुए बेवकूफों की तरह प्रसन्नता से हँसे और अपनी जेब से एक छोटी सी बोतल निकाली।

"ये वहाँ जाते हैं !" दाशा नाक भौं चढ़ाकर बोली।

याकोव ने अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिए सिर नीचा कर लिया। वह पहले ही जानता था कि बालेक क्या जवाब देगा :

"जब तक खुद वहाँ न जाओ यह नहीं मिल सकती !"

उस बुड्ढे की अकेली आँख अजीब ढङ्ग से नाचने लगी जिस समय वह बोतल से गरगराहट की आवाज के साथ बाहर निकलती हुई शराब को देखने लगा। गिलास को खाली कर उसने तृप्त होकर अपने होंठ चाटे। फिर टकटकी बाँधकर उनकी ओर देखने लगा। उस मोची ने कुत्ते को सम्बोधित करते हुए कहा .

"तुम्हें नहीं मिलेगी। अगर तुमने वोदका पी तो तुम पर डाट पड़ेगी।"

ये शब्द पावेल के लिए पुराने और परिचित थे। यहाँ की हरेक चीज उसके लिए पूर्ण रूप से परिचित थी।

उसकी स्त्री ने शिकायत की

"दिन भर में एक क्षण भी ऐसा नहीं मिलता जिसे कोई अपना कह सके—कपड़े सीना, पकाना, धोना—और यह बच्ची केवल एक काम जानती है कि चहारदीवारी पर खड़ी होकर चीखती रहती है कि कोई एक ककड़ी चुराए लिए जाता है।"

दाशा एक लम्बी, मोटी ताजी, सुन्दर स्त्री थी जिसका चेहरा गोल तथा भौंहें सुन्दर, चिकनी और सफेद थीं। उसके कान छोटे और तेज थे और वह जब बात करती तो उन्हें बड़े सुन्दर ढङ्ग से हिलाती।

परन्तु अब वह इतनी सुन्दर नहीं लग रही थी। उसका बिना कढ़े बालों वाला सिर बहुत बड़ा लग रहा था। बिखरे हुए बाल कई दिनों की धूल और पसीने से गन्दे होकर उसके माथे और कानों पर लटक रहे थे। गुस्से से उसके नथुने फूल रहे थे और मोटे लाल होठ फड़क रहे थे। जब बालों की एक लट उसके मुँह में चली गई तो दाशा ने उसे अपने चम्मच से एक ओर हटा दिया। उसका मैला ब्लाऊज कौंख पर फट रहा था और सामने के बटन लापरवाही से लगे थे। गुलाबी गोल बाहें जो कुहकियों तक खुली हुई थीं, धूल से गन्दी हो रही थीं। ठोड़ी पर पसीने की एक पीली बूँद लटक रही थी।

"नहाने और बाल काढ़ने में तो इसे ज्यादा समय नहीं लगेगा," पावेल ने सोचा।

वह कल खाना खाने के बाद अपने बाल काढ़ेगी, धारीदार पीले और हरे रंग का ब्लाऊज पहिनेगी और कमर में रेशमी घाघरा बाँधेगी। घाघरा उसके पेट पर अटक जायगा जिससे पैरों में पहने हुए बटनदार बूटों का जोड़ा और मोजों की झलक दिखाई देने लगेगी। मोजे काले हैं जिन

पर पीली आभा चमकती है। वे उसे बहुत पसन्द हैं। वह इन्हें खरीद कर बड़ी प्रसन्न हुई थी।

शाम को उसके साथ चलती हुई, शहर की प्रमुख सड़क पर वह अपना पेट लेकर चलेगी। उसके होंठ कठोरतापूर्वक बन्द होंगे और भौंहों में गांठ पड़ी होंगी। इस वेशभूषा में वह एक दुकानदार सी लगती है। और जब रास्ते में उन्हें उसके साथी मिलेंगे तो पावेल उनकी आँखों में उपहास की एक उत्तेजित चमक देखेगा।

उसका शरीर गर्मी से झनझना उठेगा जैसे किसी न दिखाई देने वाले परन्तु भारी शरीर ने उसे गर्म और दम घोंटने वाले आलिंगन में जकड़ लिया हो। उसने इससे कोई दूसरी बात सोचना अच्छा समझा, जोर से सोचना, जिससे इस विचार से उसे मुक्ति मिल सके।

"आज दोपहर के खाने के समय टाइम कीपर कुलीगा ने बिजली के फ्रांसीसी कारीगरों के बारे में बताया था…"

उसकी स्त्री ने जल्दी जल्दी खाना शुरू कर दिया और उसके ससुर ने और भी धीरे धीरे। ससुर के होंठ मुड़े और उसके चेहरे और गंजे सिर पर एक मुस्कराहट फैल गई।

"यह संगठन तुम्हारे लायक है!" पावेल ने स्वप्निल दशा में कहा।

"और जर्मनी में क्या हालत है?" वालेक ने शहद जैसी मीठी आवाज में आसमान की तरफ अपनी आँख उठाते हुए पूछा।

"वहाँ सब ठीक है! पार्टी का सङ्गठन वहाँ घड़ी की तरह काम कर रहा है… ."

"इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद है!" बुड्ढे ने कहा, "मुझे इस बात की चिन्ता होने लगी कि जर्मनी में सब काम ठीक तरह से चल रहा है या नहीं।"

वालेक की आवाज कर्कश हो उठी थी। पावेल बेचैन होने लगा। वह उन शब्दों को जानता था जो इस बुड्ढे के हिलते हुए काले दाँतों में होकर लड़खड़ाते हुए बाहर निकलेंगे। बुड्ढे ने अपने गाल फुला लिए थे,

---

अपने सिर को कौवे की तरह एक तरफ झुका लिया था और अपने दामाद पर आँख गढ़ाकर उसने पतली चहचहाती हुई आवाज में, जिसमें द्वेष भरा था, कहना शुरू किया

"अच्छा, तो जर्मनी में सब ठीक है, उँह ? और यहाँ के पैसे का क्या हुआ ?"

और वह अपनी कुर्सी पर ऊपर नीचे उछलता हुआ कूकता रहा। छोटी ओलगा पर भी उसकी इस हँसी का असर पड़ा। उसने ताली बजाई और चम्मच को मेज के नीचे गिराकर अपनी माँ से सिर पर एक थप्पड़ खाया। माँ ने चिल्लाते हुए आज्ञा दी :

"उसे ऊपर उठा, शैतान !"

बच्ची सुबकती हुई धीरे धीरे रोने लगी। बाप ने रोती हुई बेटी को अपने सीने से चिपटा कर अपने चारों ओर देखा। शाम की धुंध बढ़ती जा रही थी। एक घण्टे बाद उजेला और अँधेरा मिलकर एक भूरे धुँधलके में बदल जायेंगे।

कुछ अविवाहित प्रसन्न नवयुवकों का सुन्दर संगीत और हाथ से बजाये जाने वाले बाजों का परेशान कर देने वाला स्वर हवा में लहरा रहा था। उसके ससुर के शब्द उसके चारों तरफ चिममादडा की तरह मंडरा रहे थे।

"नहीं, तुम्हें अपनी आमदनी के विषय में सोचना चाहिए न कि जर्मनी के विषय में। तुम मेरी बात मानो ! एक बार जब तुमने शादी करली है तो तुम्हें अपनी आमदनी के विषय में सोचना है। हाँ, साहब ! और अगर तुमने बच्चे पैदा करना शुरू कर दिया है तो उन्हें इस दुनियाँ में अच्छी तरह से रखो और यह तुम तभी कर सकते हो जब तुम्हारी आमदनी अच्छी हो, हाँ, साहब खूब मोटी आमदनी हो।"

झपकियाँ लेती हुई बेटी को हाथों में झुलाते हुए याकोव अपने ससुर के विषय में सोच रहा था। चार साल पहले उसका परिचय एक भिन्न प्रकृति के व्यक्ति से हुआ था। उसे याद आया कि कैसे ईंटों से

बने हुए अहाते के छप्पर में जब वे मिले थे तो उस मोची ने अपनी आँखों के आँसू पोंछते हुए ऊँचे स्वर में कहा था :

"लड़कों ! मुझे तुम्हारे लिये दुख है—परन्तु सब ठीक है। आगे बढ़े चलो ! बहादुरी से आगे बढ़ो ! देखो, हम लोगों ने बहुत सहा है, हमसे जैसे कहा गया वैसे ही हम रहे, हम लोगों ने तुम्हारी खातिर धैर्य-पूर्वक सब सहा और अब तुम लोगों को सहना चाहिये और यह सब तुम्हें अपने बच्चों के लिये सहना ही पड़ेगा।"

और उससे—पावेल से—एक दिन उस मोची ने कहा था :

"जब मैं तुम्हें देखता हूं, मेरे बच्चे, और जब तुम्हारी बातें सुनता हूँ तो मुझे यह दुख होता है कि मेरे इस लड़की के बजाय एक लड़का क्यों न हुआ। मैं तुम जैसा बेटा पाने के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर कर सकता था।"

परन्तु जब से शहर के उन गुन्डे 'देशभक्तों' ने बालेक की दाहनी आँख फोड़ दी उस बुड्ढे आदमी ने अपने विचारों को पूरी तरह से बदल लिया है।

"केवल वही तो एक ऐसा नहीं है जो बदल गया हो !" पावेल ने उदास होकर सोचा।

उसकी स्त्री अपने शरीर को फूहड़पन से हिलाती हुई मेज साफ करने लगी। गन्दी तश्तरियों को हटाती, बड़ी प्लेटों को खटखटाती और चम्मचों को नीचे गिराती हुई वह जोर से चीखी :

"इन्हें उठाओ ! तुम जानते हो कि मुझे झुकने में कितनी तकलीफ होती है !"

"नहीं, तुम राजनीति को दूसरे देशों पर छोड़ दो और अपने घरेलू मामलों की ओर ध्यान दो।"

याकोव सोती हुई बच्ची को भीतर ले गया। बरसाती की सीढ़ियाँ चरमराईं और उसकी स्त्री भी उसी तरह फड़फड़ाती आवाज से हिनहिना उठी :

"अगर यह सब बेवकूफी न होती . "

"हाँ, हाँ, हाँ !" उसके वाप की नीरस आवाज ने चोट की।

चाँद का लाल गोला काले पेड़ों के ऊपर चढ़ आया। पावेल वरसाती की सीढ़ियों पर अपनी स्त्री की वगल में बैठा हुआ उसके बालों को थपथपाता रहा और वातें करता रहा—धीरे धीरे, फुसफुसाहट के स्वर में

"अगर मैं जेल चला जाऊँ तो कामरेड तुम्हारी मदद करेंगे "

"मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि उसकी कोई आशा नहीं !" दाशा नाक के स्वर में बोली।

"हम सब लोगों को कोशिश करनी चाहिये और संगठित होना चाहिये।"

"कोशिश ! फिर तुमने शादी किसलिए की थी ?"

उसके प्रिय विचार उसके मस्तिष्क और हृदय में चक्कर काटने लगे। उसने दाशा के नीरस विरोधों की चिन्ता नहीं की और दाशा ने उसकी वातें नहीं सुनी।

"उस वेवकूफी की वात के बारे में मुझसे कुछ मत कहो। तुम पहले महीने में सौ रूबल लाया करते थे और अब—क्या लाते हो ?"

"यह मेरा दोष नहीं, सब की ही हालत ऐसी है "

"परिस्थिति को गोली मारो अपने कामरेडों का साथ छोड़ो और मन लगाकर अपना काम देखो।"

वह नम्रतापूर्वक और स्नेह से वात करना चाह रही थी परन्तु दिन भर खटते रहने के कारण थक गई थी और सोना चाहती थी। ये वातें तीन साल से इसी तरह होती चली आरही थीं और हालत में कोई सुधार नहीं हो पाया था। वह अपने आदमी के लिये चिन्तित थी। वह हमेशा की तरह अब भी उतना ही सीधा, दुनियाँदारी में अनभिज्ञ तथा उतना ही अक्खड़ था। यह दशा देख कर दाशा के हृदय में अपने और अपनी लड़की के भविष्य के बारे में

भय समा गया। पति के प्रति दया की भावना एक भयंकर दुख में बदल गई और कोई और निकास न पाकर कटुता के रूप में प्रकट होकर चोट पहुँचाने लगी।

जब वह बैठा हुआ वृक्ष की छाया को अहाते में होकर अपनी असंख्य उंगलियों को फैलाये तथा किसी वस्तु को अपने बन्धन में जकड़ने के लिए उन्हें हिलाते हुए अपने पैरों की ओर बढ़ते देख रहा था तब उसने अपनी स्त्री से रहस्यपूर्ण ढङ्ग से फुसफुसाते हुए कहा:

"वहाँ, तुम जानती हो..... फ्राँस में तो ....."

"ओह, चुप रहो!" उसने चिड़चिड़ाती आवाज में चीखते हुए कहा और अपने सिर को पीछे की ओर झटक कर घुटती सी आवाज में बोली—"परन्तु हम तो इसे देखने के लिए जिन्दा नहीं रहेंगे। बच्चों को मत भूलो..."

वह अपनी उस अद्भुत, एकाकी और स्वच्छ विचारों की ऊँचाई से नीचे अहाते में फैले हुए जीवन के सिकुड़े हुए टेढ़े मेढ़े छोटे रास्तों पर गिर कर खामोश हो गया।

वह रोना चाहती थी परन्तु गुस्से ने उसके आँसुओं को सुखा दिया था और जब उसने खड़े होते हुए कहा तो उसकी आवाज काँपने लगी:

"मैं सोने जा रही हूँ। मैं सोचती हूँ कि तुम अपने कामरेडों के पास जाओगे?"

"हाँ," उसने कुछ रुक कर कहा।

वह जाते हुए बड़बड़ाती गई

"अगर वे लोग तुम्हें जल्दी ही गिरफ्तार कर लें—तुम सब बदमाशों को—क्योंकि देर या सबेर मे यह तो होना ही है! हो सकता है कि इससे तुम लोगों को कुछ अक्ल आ जाय।"

चन्द्रमा अब आकाश में ऊँचा चढ़ गया था। छायायें सिकुड़ गई थीं, कुत्ते भौंक रहे थे।

कहीं दूर बागों में से शहर की औरत फेन्का लुकेवित्सा की गाने की कर्कश आवाज आ रही थी। वह उन्माद से भरी हुई सिसकती आवाज में गा रही थी.

"मेरा प्रियतम एक छोटी सी नाव में बैठ कर वोल्गा में यात्रा पर गया। वह गया और तूफान में फँस कर डूब गया"

कभी कभी ये बातें भयंकर रूप धारण कर लेती थीं। दाशा चीखती, गुस्से से उसका गला रुँध जाता। हाथों को इधर उधर झटकारती जिससे गन्दे ब्लाउज के नीचे उसके बड़े बड़े स्तन हिलने लगते जिन्हें देख कर घृणा होती। उसका यह रूप देख कर पावेल का जी मिचलाने लगता और वह भद्दी गालियों की इस बौछार को अपनी खामोशी से दूर कर ताज्जुब में भर कर सोचता'

"यह कैसे हुआ कि मैं इस औरत के इस रूप को पहले नहीं देख सका?'

और फिर, एक ऐसी ही घटना के बाद, उसके जीवन में वह अवस्था आ गई जब उसके हृदय में दुविधा और अविश्वास के भाव उत्पन्न होने लगे। इन विचारों की पीड़ा से वह एक साल से व्याकुल हो रहा था। इस स्थिति से उसे लज्जा आती थी परन्तु वह उसे सुलझाने में असमर्थ था।

एक शनिवार को वह बहुत थोड़े पैसे लेकर घर लौटा जिसे देखकर उसकी स्त्री ने भयंकर रूप धारण कर लिया। वह उन पैसों को जमीन पर फेंक कर पावेल पर बरस पड़ी। इससे उत्तेजित होकर उसने दृढ़ और कठोर आवाज में कहा था।

"अपना मुँह बन्द कर!" उसकी स्त्री उसे दरवाजे की ओर धकेलती हुई जानवर की तरह चीखी

"निकल जाओ, भिखारी कहीं के! यह मेरे बाप का घर है--मेरा घर! तुम निठल्ले आदमी हो, तुम्हारी जगह जेल में है,वही तुम्हारे लिये ठीक जगह है! निकल जाओ!"

वह उस गुस्से का कारण समझ गया। यह गोभी का अचार डालने

का मौसम था और उसे गोभी खरीदने के लिए काफी पैसे नहीं मिले थे। बहुत दुखी होकर वह गुस्से में भर कर सड़क पर निकल आया। कुछ देर तक एक तरकारी के बाग में बैठा रहा और गुस्से को छिपाने की कोशिश करता रहा। फिर उठ कर शहर में आया जहाँ एक गन्दे शराबखाने में बैठकर उसने वोदका पी और अचानक अपने को 'चर्च चौक' में पाया जहाँ एक छोटे से बाग के सामने पांच भद्दे गुम्बजों वाला गिरजा खड़ा था।

हवा चल रही थी और एक लटकती हुई रस्सी घण्टों से बार बार टकरा उठती थी जिससे पीतल में से हल्की सिसकी की सी आवाज उत्पन्न हो उठती थी। सड़क की बत्तियों की रोशनी एक घेरे में चर्च के चारों ओर आवेश से कांप रही थी और गुम्बजों के ऊपर लगे हुए क्रॉसों के ऊपर होकर भूरे हलके बादल हवा में तैर रहे थे। उनके बीच में बिलकुल खाली और ठंडे आकाश के नीले गड्ढे दिखाई देने लगते थे। ऐसा लग रहा था मानो हवा इन आकाश की खिड़कियों से होकर तूफ़ान की तेजी से बह रही हो।

कभी कभी एक भयभीत चन्द्रमा बदलों में अपना चेहरा दिखा देता जो उसके चारों ओर इस तरह इकट्ठे हो गये थे जैसे चाँदी के एक सिक्के पर भिखारियों का झुँड टूट पड़ता है। वे चन्द्रमा के उज्ज्वल मुख पर अपने गीले शरीरों को रगड़ कर कलंक की भयंकर कालिमा पोत रहे थे। हवा पृथ्वी को इस प्रकार झकझोर रही थी जैसे कोई बदमिजाज नर्स किसी ठुकराए हुए बच्चे की खाट को झकझोरती है।

याकोव एक सीट पर बैठा हुआ अपने व्याकुल मस्तिष्क को हाथों से पकड़े हुए, जीवन के क्रूर मजाकों के बारे में सोच रहा था कि जितना ही कोई व्यक्ति अच्छी चीजों के पीछे भागता है उसे बदले में उतनी ही बुराई मिलती है।

कोई आकर उसके पास बैठ गया। उसने सिर ऊपर उठाया— एक लड़की थी। उसने सोचा कि जैसा होना चाहिये था वही हुआ है। चोर और वेश्या को छोड़कर और ऐसा कौन है जो इतने खराब मौसम में बिलकुल निर्जन स्थान में बैठे हुए आदमी के पास आने का साहस करेगा?

उन्होने बातें कीं और फिर नगर की सड़कों पर बहुत देर तक घूमते रहे। रास्ते भर पावेल उत्तेजित अवस्था में अपने दुखी विवाहित जीवन के विषय में बातें करता रहा—अपनी स्त्री के विषय में जिसे उसने एक सौम्य नारी के रूप में देखने की आशा की थी परन्तु असफल रहा और जिससे वह अपने मन की बातें कह कर अपना जी हलका नहीं कर सकता था।

लड़की ने कहा

"अक्सर ऐसा होता है • "

"अक्सर ?" पावेल ने पूछा—"तुम कैसे जानती हो ?"

"आदमी अक्सर शिकायत करते हैं • "

पावेल ने गौर से उसकी ओर देखा—कोई विशेषता नहीं थी—बिलकुल एक वेश्या का साधारण चेहरा था।

फिर अपनी स्त्री की याद करते हुए उसने द्वेषपूर्वक कहा •

"तुमने यह बात पूछी है ! और अब मुझे अपने यहाँ जाते हुए देखकर समझ लो "

उसके घर पहुच कर उसने पुन बातें शुरू कर दीं—जीवन और अपने विचारों के विषय में। फिर वह खाट पर गया और लड़की के उसके पास आने से पहले ही सो गया।

सुबह बहुत शरमाते और झिझकते हुए उसने उसके साथ चाय पी और उसकी नज़र को बचाता रहा। जाने से पहले उसने पैंतीस कोपेक—उसके पास इतने ही थे—लड़की को देने चाहे।

परन्तु उसने धीरे से उसका हाथ एक तरफ हटाते हुए अत्यन्त स्पष्ट स्वर में कहा

"किसलिए ? इसकी कोई जरूरत नहीं।"

पावेल को उसकी यह हरकत और उसके शब्द अच्छे नहीं लगे।

"अच्छा !" लड़की ने मजूर करते हुए चांदी के दो सिक्के उठा लिए और फिर कन्धे उचकाते हुए बोली •

"दरअसल—इसकी जरूरत तो नहीं थी "

"अब वह मुझे फिर आने के लिये कहेगी," कोट पहनते हुए पावेल ने सोचा "वह मुझे अपना नाम और यह बतायेगी कि वह घर पर कब मिलती है ......"

फर्श पर अपने पैरों के पास देखकर लड़की ने सोचते हुए कहा :

"कल तुमने बहुत अच्छी बातें की थीं...हम नारियों के विषय में..."

इन शब्दों को सुन कर उसे बड़ी खुशी हुई और उसके मन में उसके प्रति उठी हुई घृणा कुछ देर के लिए दब गई। उसने माफी सी माँगते हुए मुस्करा कर कहा :

"मुझे बहुत खुशी हुई कि तुम ऐसा सोचती हो...मैं शराब पिए हुए था.. मैं वैसे पीता नही हूँ, तुम जानती हो' अच्छा सलाम !"

उसने चुपचाप अपना हाथ बढ़ा दिया।

बाहर सड़क पर आकर उसने सोचा :

"उसने मुझसे फिर आने के लिए नहीं कहा ! वह पैसे लेना नहीं चाहती थी—मुझे ताज्जुब है, क्यों ?"

उसे यह भी याद नहीं रहा कि कल उसने क्या बातें की थीं और उसे उसके चेहरे की भी धुँधली सी याद रही।

अपने घर के पास पहुँच कर उसने आनन्द और पश्चाताप से भर कर सोचा :

"अगर मैं उससे दुबारा मिलूँ तो उसे पहचान भी न सकूँगा..."

पानी धीरे धीरे बरस रहा था। उसका कोट भीग कर उसके कन्धों पर चिपक गया था। उसका सिर दर्द कर रहा था और उसे नींद आ रही थी।

उसकी माँ उससे मिलकर बोली भी नहीं। उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह एक कोने में बैठकर देर तक उसे अपनी मजबूत बाहों से आटा गूँधते देखता रहा। उसकी बाहों में मुड़ने समय पेशियाँ उभर उठती थीं। वह कितनी सुन्दर और स्वस्थ थी।

मौन भंग करने के लिये उसने पूछा :

"ओल्गा कहाँ है ?"

"ओल्गा कहाँ है ? तुम नहीं जानते कि आज सब भले आदमियों की छुट्टी का दिन है। वह अपने नाना के साथ गिरजा गई है ।"

पावेल मित्रभाव से बोला:

"अच्छा ! मुझे इसमें कोई अक्लमन्दी नहीं दिखाई देती। इस खराब मौसम में बच्ची को उस जगह ले जाना ठीक नहीं था !"

वह चुप हो गया। उसने महसूस किया कि उसने अनेक बार अपनी स्त्री के व्यंग का उत्तर इन्हीं शब्दों में दिया है।

आटा गूँधते समय जोर लगाने से मेज चरमरा उठती थी।

"क्या मैं उसे बता दूँ कि तुमने मुझे पतन के गर्त में कितना नीचे गिरा दिया है, क्या तुम देख रहो हो ? देखो तुम मुझे किधर खदेड़ रही हो, क्या मैं यह बता दूँ ?"

अचानक उत्साह में भर कर वह उसके पास गया और उसके कधों पर हाथ रख दिया।

"अपने हाथ हटा लो" उसने सिर को झटका देते हुए चीख कर कहा। गुस्से से उसका मुँह और गर्दन लाल हो गए।

"जहन्नुम में जाओ-वर्ना मैं तुम्हारा मुँह तोड़ दूँगा !"

वह तन कर खड़ी हो गई और आटे में सने हुए हाथ अपने बालों पर फेरे जिससे वे भूरे हो गए।

"भगवान रक्षा करे... ..."

"दादा, दादा," बच्ची चिल्लाई।

पावेल उसे गोदी में लेना चाहता था परन्तु उसे याद आया कि उसने रात कहाँ बिताई थी और हाथ धोने के लिये कमरे से बाहर खिसक गया।

दिन भर उसकी स्त्री घुर्राती और बड़बड़ाती रही और उसका ससुर बिना रुके बराबर तिरस्कार और व्यग्य की बौछारें करता रहा:

"अच्छा मिस्टर सामाजिक-राजनीतिज्ञ, तुम समोसे क्यों नहीं

खाते ? उस समय तक खाते रहो जब तक कि मजदूर वर्ग की पूर्ण विजय हो, जब सारे भिखारियों को समोसे खाने को मिलेंगे..... अभी उसमें बहुत देर है !"

"कम से कम तुम अपना हिनहिनाना तो बन्द करो ?" पावेल ने गम्भीर होकर कहा—"इससे कोई फायदा नहीं होगा..."

"यह ठीक है !" वाकेरू ने अपनी सहमति प्रकट की–"तुमने कहा ही है—इससे कोई फायदा नहीं होगा..."

कुछ मिनटों तक खामोश रहकर उसने फिर कहा·

"तुमने देखा, मैंने तुम्हारे बूट सी दिए हैं ?

"हाँ,"

"तुम सन्तुष्ट हो ?"

"धन्यवाद ।"

"दाशा, इस धन्यवाद का अचार डाल लो, डालोगी न ? जब भंडार में कुछ नहीं रहेगा तो मैं इन्हें लाऊँगा ।"

खिड़की के शीशों पर वर्षा की बूंदें टकरा रही थीं, घर के सबसे ऊपरी हिस्से में हवा टकरा कर शोर मचा रही थी और किसी चीज को जोर से हिलाती हुई टनटनाहट की ध्वनि उत्पन्न कर रही थी । घर की छत पर एक चीड़ का पेड़ चरमराया । कहीं एक खुली हुई खिड़की जोर से बन्द हुई । सिटकनी की खटखटाहट सुनाई दी, वर्षा का संगीत पानी के पीपे में पड़कर सिसकियों में बदल गया । कमरा में एक उदासी छा गई । कमरा भुनी हुई प्याज, चमड़ा और कोलतार की गन्ध से भर उठा ।

वाकोर ने देखा कि उसकी लड़की ने वातावरण की गम्भीरता को भाँप लिया है । वह मन की ओर शंकित और प्रश्नवाचक आँखों से देखने लगी और उसका छोटा सा चेहरा इस प्रकार सिकुड़ उठा जैसे रोने से पहले हो जाता है ।

"इस लड़की को क्या हो रहा है ?" जैसे ही उसने [illegible] के चेहरे की ओर देखा, सोचा और मरने को [illegible] मानने लगा ।

"बच्ची, यहाँ मेरे पास आओ, उसने अपनी बाँहें फैलाते हुए उसे बुलाया। परन्तु जब ओल्गा उसके पास जाने के लिए नीचे कूदी तो माँ ने उसे पकड़ लिया और चीखीः

"वहाँ जाने की हिम्मत मत करना!"

ओल्गा रोने लगी। उसका चेहरा उसकी माँ की गोद में छिपा हुआ था परन्तु उसकी माँ उछल कर खड़ी हो गई,बच्ची को एक कोने में धकेल दिया

"सो जा, शैतान! मुझे अपनी झलक भी मत दिखाना. ।"

पावेल भी खड़ा होगया। उसका चेहरा तमतमा रहा था। उसके शरीर में सिहरन की लहर दौड़ गई।

"अगर तुमने," अपनी स्त्री के पास जाते हुए वह बोला—"फिर कभी ऐसा किया तो "

स्त्री ने उन्मत्त की तरह उसके सामने अपना चेहरा करके दुख और घृणा से भरकर कहा .

"मुझे मारोगे, आओ मारो!"

उसके बाप ने जूता बनाने का एक फर्मा उठा लिया और चारों ओर नाचते हुए चिल्लाने लगा

"अच्छा, यह बात है, उँह? तुम्हें यहाँ हमारा हुक्म मानना ही पड़ेगा!"

पावेल ने स्त्री को एक तरफ धकेल कर अपनी टोपी उठाई और तेजी से बाहर चला गया।

वह पानी में भागते हुए हताश होकर सोच रहा था

"अगर वह बीच में न बोलता तो मैं "

गन्दे पानी की धारायें उससे मिलने के लिये दौड़ी हुई आईं और उसके पैर धोने लगीं। हवा उसके चेहरे पर वर्षा की सिहरन उत्पन्न करने वाली तीखी बौछार मारने लगी।

और अब वह फिर उस लड़की के कमरे में मेज पर बैठा था। उसकी

भीगी जाकेट फर्श पर पड़ी थी। वह एक हाथ हिलाते हुए तथा दूसरे से अपना गला रगड़ते हुए तेजी से बोल रहा था:

"मै जानवर नहीं हूं! मैं समझता हूँ—उसका कोई दोष नहीं..."

लड़की किन्हीं अदृश्य हाथों द्वारा जोर से घुमाए जाते हुए लट्टू की तरह कमरे मे इधर उधर दौड़ रही थी। समोवार जलाने के लिए घुटनों पर रख कर लकड़ियों को तोड़ती जाती थी। कोयलों को सम्हालने में खसखसाहट की आवाज उठ रही थी और उसके पीछे उस शाल के छोर लटक रहे थे जो उसने अपने नंगे कन्धों पर डाल रखा था।

"देखो, मै तुम्हारे पास आया हूं—यद्यपि मेरे और भी साथी हैं परन्तु मुझे उनसे यह सब कहने में झिझक लगती है हालाँकि मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि उनकी जिन्दगी में भी ये दिन आये होंगे जब घर मे एक दूसरे को सताता है—क्यों? मुझे बताओ ऐसा क्यों होता है।"

"मै कैसे जान सकती हूँ?" उसने एक धीमा उत्तर सुना।

"यह गन्दी ज़िन्दगी आदमियों की हड्डी तक को चूस डालती है और हृदय को भी—और एक दिन अचानक तुम पाते हो कि तुम्हारा हृदय वेदना और घृणा से जल रहा है.."

लड़की उसके पास आई, धीरे से उसकी कमीज को सहलाया और आँखें झपकाती हुई बोली:

"तुम बिल्कुल भीग रहे हो—और मेरे पास कुछ भी नहीं जिसे तुम्हें दे सकूँ...अब क्या किया जाय?"

"कोई फिकर की बात नहीं" पावेल ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा:

उसने आहिस्ते से अपनी उँगलियाँ छुड़ा कर हमदर्दी दिखाते हुए कहा:

"तुम्हें ठंड लग जायगी और बीमार पड़ जाओगे! एक कामकाजी आदमी के लिये यह बहुत बुरी बात है।"

वह दहलीज में गई और तुरन्त ही एक रंगीन धारीदार कपड़ा लेकर

लौट आई जिसे उसने अँगीठी के ऊपर सुखाया और पावेल से आग्रह करने लगी:

"तुम अपने कपड़े बदल लो। यह औरत की पोशाक है लेकिन कम से कम सूखी तो है ·· ·· "

उस कपड़े को मेज पर फेंक कर फिर बाहर गई। याकोव ने अपनी आँखों से उसका पीछा किया और उसके विचार धुँधले हो उठे मानो वह सपना देख रहा हो!

"भाग्य! भाग्य? क्या बेवकूफी है। मेरे लिये तो यह जगह जाने योग्य है और उसके लिए यह सब एक ही जैसी बात है।"

उसकी चेतना में वे सारी अपमान की बातें चक्कर काट रही थीं जैसे उसके पतले होठों वाले ससुर की फुसफुसाहट हमेशा उसके कानों में गूँजती रहती थी:

"परेशान हो उठे, उँह? कामरेडों से? इस मुसीबत के समय तुम अपने कामरेडों के पास क्यों नहीं गए, उनके पास क्यों नहीं जाते? अहा! शर्म आती है, क्यों?"

उसने अपने भीगे बालों पर हाथ फेरा और होंठ एक तकलीफ-भरी मुस्कराहट के साथ ऐंठे।

"तुमने कपड़े क्यों नहीं बदले?" मेजमान ने दरवाजे से झाँकते हुए अभ्यस्त स्वर में कहा।

उसके गीले कपड़े शरीर से चिपक गए थे जिससे वह बार बार ठंड से काँप उठता था। पावेल ने जल्दी से उन्हें उतारा और उस औरतों वाली लम्बी पोशाक में लिपट गया।

"अब ठीक है" लड़की ने भीतर आते हुए कहा।

"कैसा अजीब सा लग रहा हूँ?" उसने पूछा।

"हाँ" लड़की ने स्वीकार किया परन्तु उसके चहरे पर शैतानी से भरी हुई मुस्कराहट नहीं थी।

पावेल ने पहली बार उस लड़की को गौर से देखा। वह छोटे कद

की थी। उसके गालों की हड्डियाँ ऊँची उठी हुई और आँखें पतली तथा लम्बी थीं।

"मैं अजीब सा लग रहा हूँ फिर भी तुम नहीं हँसी!" उसने चारों तरफ देखते हुए कहा

उस छोटे से कमरे में एक पलंग, एक मेज, दो कुर्सियाँ, एक अल्मारी और दरवाजे के पास एक बड़ा स्टोव था। सामने वाले कोने में एक मूर्ति लटक रही थी। उसके ऊपर फूले हुए सरपत की टहनी, और एक कमल का फूल लगा हुआ था। काली दीवालों पर भड़कीले रंग वाली छोटी छोटी तस्वीरें लटक रही थीं। छिपकलियाँ उन पर शोर करती हुईं रेंग रही थीं। कड़ियों के बीच रस्सी के टुकड़े लटके हुए थे। खिड़की की जगह एक चौकोर शीशा लगा हुआ था जो पुराना होने के कारण धुँधला पड़ गया था।

अँगीठी पर झुकी हुई लड़की ने जवाब नहीं दिया। उसे बुरा लगा और घृणापूर्वक सोचने लगा:

"सम्भव है बदतमीज हो।"

जोर से उसने पूछा:

"क्या यही रसोई घर है?"

"हाँ"

"क्या घर में कोई और भी रहता है?"

उसने उबलती हुई केटली को मेज पर रख दिया और जौ की डबल रोटी के कतले काट कर, चाय बनाते हुए, बाहर पड़ती हुई वर्षा की धीमी और ऊबा देने वाली सी आवाज में बोली:

"दो बुड्ढी औरतें यहाँ रहती हैं। लेकिन घर पर कभी भी खाना नहीं पकातीं। वे अपने धनवान रिश्तेदारों के यहाँ जाकर खाना खा लेती हैं। अक्सर वह रात को भी घर नहीं आतीं। मेरे पास इस रोटी के अलावा और कुछ भी नहीं है—मुझे इसका अफसोस है!"

"मुझे भूख नहीं है" अपने हृदय में एक बेचैनी अनुभव करते हुए

पावेल बोला। वह यहाँ क्यों आया? अचानक इससे पहले कि वह इसका खुद ही कोई कारण ढूंढ सके, उसने तेजी और कठोरता के साथ पूछा:

"क्या तुम्हारा नाम, पता लिख लिया गया है?"

"कहाँ?"

"पुलिस में?"

उसने शान्त होकर उत्तर दिया .

"हाँ, वेशक, मेरा पासपोर्ट वहाँ दर्ज है। मैं यहाँ रसोईदारिन और नौकरानी के रूप में काम कर रही हूँ। दिन भर मेरे पास कोई काम नहीं रहता "

पावेल ने अनुभव किया कि कहीं कोई गल्ती अवश्य हुई है, कुछ ऐसी गल्ती जिसे वह समझ नहीं सका है।

"मेरा यह मतलव नहीं था "

वह समझ गई। उसका चेहरा काला पड़ गया और आँखें बन्द हो गईं।

"ओह," वह बुदबुदाई "मैं अब समझी कल मैं उस पार्क में जो गई थी? नहीं, मै वह काम नहीं करती।"

उसने यकीन नहीं किया। वह झटके के साथ अपनी कुर्सी पर वैठ गया और उसके बारे में सोचने लगा। यह सोचकर उसे मजा आया कि वह अपना पेशा छिपा रही है। इस से उस लड़की के लिए उसके मनमें दुख और प्रसन्नता दोनों ही हुई।

लड़की की तिरछी आँखें अचानक खुल गईं। वे नीली और मादक थीं। उनसे उसके चेहरे का आकर्षण वढ़ गया था।

"मैं कल वैसे ही वाहर चली गई थी," वह कह रही थी और रोटी को नोचती हुई उसकी गोलियाँ वनाती जाती थी—"मैं यहाँ की हर चीज से ऊब गई थी इसीलिए वाहर चली गई। सम्भव था कि मै नदी में कूद पड़ती परन्तु मैने तुम्हें देख लिया। वहाँ, मैंने सोचा कि एक आदमी है जो मेरी ही तरह दुखी है इसीलिए मै पास चली गई। और तुमने खुलकर

बातें करना शुरू कर दिया। मैंने देखा कि तुम बहुत परेशान हो रहे थे। मुझे यह शक था कि तुम भी आत्महत्या करने आए हो''''''प्रतिदिन ऐसा होता है—मनुष्य अपने को गोली मार लेते हैं, फांसी लगा लेते हैं''"

उसने अब भी अविश्वास करते हुए उसकी बातें सुनीं और मनमें सोचने लगा :

"बाहर गई''''''इसलिए पास आई'''ज्यादा बातून नहीं है? यह आकर्षक नहीं''''''"

और वह लड़की उसी तरह संक्षेप में बोलती गई। वह मोड्ंयोया की रहने वाली थी। उसका खानदान खाता पीता था। उसने शिक्षा भी पाई थी— जिले के स्कूल में। एक आग ने खानदान को तबाह कर दिया। उसका बाप जमीन ढूंढने के लिये साइबेरिया गया और फिर कभी लौटकर नहीं आया। वह रेलवे स्टेशन पर नौकर होगई और वहाँ तीन साल रही। स्टेशन मास्टर का एक भाई था। वह वहाँ तार बाबू का काम करता था।

"जब तुम बात करते हो तो मुझे उसकी याद आ जाती है।"

अपनी हल्की पलकों से आँखों को बन्द करते हुए उसने विश्वासपूर्वक दुहराया :

"हाँ, बिलकुल उसकी तरह।"

"वह कहाँ है?" पावेल ने पूछा।

"वह गिरफ्तार होगया।"

उसकी आवाज़ में दुख की ध्वनि नहीं थी, परन्तु उसने अजीब ढङ्ग से गर्दन मोड़ी जिसमें उसकी गाल की हड्डियाँ खिचीं और उसका चेहरा इस तरह सिकुड़ गया जैसे भौंकने से पहले कुत्ते का सिकुड़ जाता है।

पावेल ने इस बात पर देर तक ध्यान नहीं दिया कि उसका यकीन किया जाय या नहीं—वह इस बारे में सोचना भी नहीं चाहता था।

अचानक उस लड़की ने जोर से कहा:

"मेरे एक बच्चा भी हुआ था' "

"उस तार बाबू का ?"

"हाँ, वह मरा हुआ पैदा हुआ था।"

"क्या वह तार बाबू अच्छा आदमी था ?"

वह खुल कर मुस्कराई।

"हाँ—आँ, वह बहुत मज़ेदार बातें करता था। तुम्हारी ही तरह अकेला ही था। सब लोग उस पर हँसते थे। वे उस अकेले को ही पकड़ ले गये। मुझे उन्होंने ठोकर मार कर बाहर निकाल दिया।"

हवा चिमनी में एक आवारा बुड्ढे कुत्ते की तरह चीख उठी।

ज़िन्दगी बिलकुल झूठी लगने लगी और विश्वासघात एक फोड़े की तरह पावेल के आत्म सम्मान की जड़ों को कुरेदने लगा।

वह अपनी स्त्री को प्यार करता था। उसकी मजबूत, चौड़ी और गर्म देह को अपनी बाहों में भरना उसे अच्छा लगता था। उसकी काली आँखों में झलकता हुआ वासना को उत्तेजित करने वाला भाव पावेल के ऊपर बहुत गहरा प्रभाव डालता था।

कभी कभी जब वह अच्छे मूड में होती जो अक्सर बहुत कम ही आते थे—तो वह पावेल से बहुत धीमी नाक की आवाज़ में कहती.

"कहो, अपनी स्त्री के पास जाकर उसे प्यार करने और चूमने का तुम्हारा इरादा है, सुस्त लड़के ?"

कभी कभी कई दिनों और हफ्तों तक वह शहर की बाहरी सीमा पर बने हुए उस काले और टूटे फूटे पुराने छोटे से मकान को बिल्कुल भूल जाता। वह मकान जो मिट्टी की झोंपड़ी की तरह जमीन में गड़ा हुआ दिखाई देता, जिसकी दोनों खिड़कियों में काँच नहीं थे, छत पर घास जम रही थी और एक अँधेरे कमरे का कोना और उसके रहने वाले वे गूँगे, निर्बल, रात में घूमने वाले प्राणी आदि सभी की स्मृति उसके मस्तिष्क से मिट जाती, उनका कोई अस्तित्व नहीं रहता और अगर उनकी स्मृति आती भी तो एक बुरे सपने की तरह उसके दिमाग में उठती। पावेल मुक्ति की सांस लेकर सोचता

"सब समाप्त होगया !" प्रारम्भ में तो उसके मनमें यह विचार दृढ़ता से उठा कि वह उसके बारे में अपनी स्त्री को सब कुछ बतादे और इस तरह बताए जिससे उसकी स्त्री अपने अपराध को समझ सके और उस खतरे को महसूस करने लगे जो उन दोनों के लिए उनकी इस आत्मिक कलह में छिपा हुआ था।

परन्तु वह इस बात को छेड़ेने में डरता था। वे क्षण, जब उसकी स्त्री का मिजाज अच्छा और प्यार से भरा होता, बहुत जल्दी बीत जाते और जब कभी वह ऐसा विषय छेड़ता जिससे तुरन्त ही घर को कोई लाभ नहीं हो सकता था तो वह उसके प्यार से पूरी तरह सन्तुष्ट होकर एक लम्बी जम्हाई लेती और आलस्यपूर्ण आवाज में यह कहती हुई विषय को बदल देती :

"भगवान के लिए, उसी पुराने राग को फिर मत छेड़ो‥ ‥"

वह विनती करती और आज्ञा देती :

"अपने इन शब्दों को दूर रख कर ही मुझे प्यार करो‥‥‥"

अगर वह अपनी बात पर जोर देता तो उसकी स्त्री की भौंहों में बल पड़ जाते, उसकी आँखें नीरस होकर चमकने लगतीं और वह चिड़चिड़ी होकर उससे प्रार्थना करती :

"यह बातें बन्द करो—मैं कहे देती हूँ—मत भूलो कि तुम्हारे बच्चे हैं। इन बातों को बताने वाली किताबें घर पर बहुत हैं—एक पूरी अलमारी भरी है एक शादीशुदा आदमी को किताबों और कामरेडों से कोई वास्ता नहीं रखना चाहिए देखो घरबार वाले कितने आदमी इन बातों को छोड़ चुके हैं—वे चुपचाप अपना काम करते हैं—अपनी स्त्रियों और बच्चों के लिए। केवल सर्दीकोव अपनी स्त्री के साथ तुम लोगों का साथी है परन्तु वह तुम्हारे पास कैसी हालत में आता है ? क्यों, पिछले महीने वह सिर्फ छत्तीस रूबल घर लाया था। उस पर दो बार जुर्माना किया गया था‥ ‥"

द्वेष के कारण उत्साहित होकर अपने पास पड़ौस की अफवाहों

को इकट्ठा करके वह आदमियों की बुराइयों को खूब अच्छी तरह से जान गई थी। इसी से कभी किसी के विषय में अच्छी बातें नहीं करती थी। बात करते समय वह अपनी घृणा के पूरे खजाने को खाली करने को तैयार रहती थी। अक्सर अपने पति के सिर पर गन्दी और झूँठी बातें थोपकर उसे बड़ा आनन्द और मजा आता।

"यह सच नहीं, दाशा !" वह शंकित होकर आपत्ति उठाता।

वह शिकायत करती हुई जवाब देती :

"बिलकुल सच है ! अपने कामरेडों का तो तुम विश्वास करते हो, मैं जानती हूँ, लेकिन स्त्री का नहीं ... ..."

पत्नी के इस भाषण के नीचे दबकर, पावेल के अच्छे विचारों की पूरी शक्ति नष्ट हो जाती, उसे लकवा मार जाता और वे विचार एक ऐसे हृदय में दबा दिए जाते जो निरंतर अपनी स्त्री के सम्मुख खामोश रहने का आदी होता जा रहा था।

वह बिना कुछ कहे उसके भाषणों को सुनता रहता और चुपचाप सीटी बजाते हुए सोचता.

"वह समझती नहीं—मुझे ताज्जुब है वह कभी समझ भी सकेगी या नहीं ?"

वह नारी की कोमलता का भूखा था। कुछ ऐसी चीज जो गहरी और पूर्ण हो तथा जो रक्त को वेग से सञ्चलित कर आत्मा में एक ज्वाला उत्पन्न कर दे। परन्तु आत्मा का वह प्यार पाने के लिए वह शहर की बाहरी सीमा पर जाता—उस बदसूरत मोड्‌वीया की लड़की लिजा से पाने के लिए जिसमें गुणों का सौन्दर्य था। लिज़ा उसके जीवन की कहानियों और भविष्य के सपनों की बातें सुनकर बहुत खुश होती थी। यह देखना बड़ा अच्छा लगता था कि एक आदमी तुम्हारे सामने बैठा हुआ तुम्हारे मुँह से निकले हुए प्रत्येक शब्द को भूखे की तरह निगलता चला जाता है जैसे गहरी मूर्छा से उठकर कोई व्यक्ति गहरी साँसें लेता है।

उसके सूखे हृदय में भी कोई ऐसी चीज थी जो पावेल के लिए अपरिचित और रहस्यमय थी। ऐसा लगता जैसे कभी-कभी वहाँ एक छोटी सी भूरी चिड़िया कुहुक उठती हो।

"तुम चर्च जाते हो?" एकबार उसने पावेल को प्यार से दबाते हुए पूछा।

"नहीं, तुम जानती हो…… "

काफी देर बाद पावेल उसे यह समझा सका कि वह चर्च क्यों नहीं जाता परन्तु जब वह बताना खत्म कर चुका तो वह बोली :

"एक ही बात है। तुम दुनियाँ में शान्ति फैलाने की बातें करते हो और चर्च में भी वे 'सारे विश्व में शान्ति' फैलाने की बातें करते हैं…… "

"नहीं, एक मिनट ठहरो! मैं संघर्ष की बातें करता हूँ।"

"लेकिन संघर्ष भी तो उसी के लिए है—चारों ओर शान्ति लाने के लिए ……"

पावेल ने उससे फिर बहस की। वह उत्तेजित हो उठा और अपने हाथ घुमाते हुए उसने मेज पर घूँसे मारे। इस बात का अनुभव कर वह और उत्साहित हो उठा कि अब वह अपने विचारों को अधिक आसानी से और अच्छी तरह कह पा रहा है। यह सोचकर वह बहुत खुश हुआ।

वह मोर्ड्वीया की लड़की उसी हठ के साथ जवाब देती रही :

"नहीं, मुझे यह अच्छा लगता है जब पादरी अपनी गम्भीर आवाज में कहता है—'भगवान की शान्ति तुम सब को प्राप्त हो।' मैं इस बात की चिन्ता नहीं करती कि यह कौन कहता है जब तक कि मनुष्य शान्ति के सन्देश को सुन रहे हैं।"

और उससे सटकर खड़ी होती हुई, उसकी आँखों में देखती हुई वह धीमी और डरी आवाज में बोली :

"तुम देखो न, लेकिन आदमी बदमिजाज हैं, जगह-जगह आदमी आपस में लड़ रहे हैं—शराबखानों में और बाजारों में—हर जगह। अगर वे लड़ना शुरू करेंगे तो लड़ाई में हम [illegible] को भंग करेंगे।

यहाँ तक कि चर्चों में भी आदमी जगह के लिए लड़ते हैं। छोटे बच्चों पर मार पड़ती है। आदमी गिरफ्तार होते हैं और फांसी पर लटका दिये जाते हैं। और कितनों का खून कर दिया जाता है। पुलिस आदमियों को बुरी तरह मारती है। लेकिन आदमी एक दूसरे को भी पीटते हैं। वे केवल क्रुद्ध कर ही दूसरों को पीटते हैं। उस समय मैंने भी क्रुद्ध कर वह करना चाहा था। मैं अपने प्रति भयंकर हो उठी थी—तुम किसलिए जी रही हो, मूर्ख? दुनियाँ में भले आदमी नहीं हैं और इसी से यह इतनी भयानक होगई है। हो सकता है कुछ थोड़े से हों भी—एक यहाँ, दूसरा वहाँ" परन्तु ऐसे मुश्किल से ही नजर आते हैं।"

वह उसकी बातें सुनकर उस पर हँसा, परन्तु लिज़ा ने अपनी बातें इतनी सरलता से कही थीं—उनमें बनावट या कल्पना की छाया भी नहीं थी—कि उन्होंने पावेल के हृदय में उसके प्रति क्षमा की भावना उत्पन्न करदी और उन दोनों को, एक दूसरे को समझने की भावना के कोमल सूत्र से, और नजदीक ला दिया। यह सूत्र लिज़ा के सच्चे-अकल्पित विश्वास और पावेल के कठोर शुष्क ज्ञान को एक दूसरे से आबद्ध कर रहा था।

अनेक बार वह मजाक करते हुए हँसकर और गम्भीर हो अपने विषय पर लौटा परन्तु हर बार उसे नम्र विरोध का सामना करना पड़ा। लिजा ने न तो विरोध किया और न उसके तर्कों से अपने को विचलित ही होने दिया।

"तुम बहुत आगे देख रही हो—तुम बहुत अधिक चाहती हो!" उसने हँसते हुए कहा—"हम और तुम उस शान्ति को नहीं देख पायेंगे। हमारी जिन्दगी संघर्ष में ही बीत जायगी।"

उसने इस पर सोचा और जवाब दिया·

"अगर तुम यह जानते हो कि 'कल' अच्छा होगा तो 'आज' की बुरी चीजें इतनी भयंकर नहीं लगतीं और वे इतनी शक्तिशाली भी नहीं दिखाई देतीं..."

कभी-कभी, लिजा के कमरे में बैठा हुआ पावेल अपनी स्त्री के विषय में सोचता और उसके हाथ शिथिल हो जाते। उसका हृदय दुख और कड़वाहट से भर उठता। वह ठंडा पड़ जाता और लज्जा और क्रोध से अपनी लानत मलामत करने लगता :

"तुम अपने को प्रगतिशील और न जाने क्या क्या मानते हो। बुर्जुवा लोगों की अनैतिकता को बुरा भला कहने वाला और तुम यहाँ हो...... "

इस व्याकुल कर देने वाले विचार से उसका ध्यान किसी प्रकार अन्य विचारों की तरफ चला जाता जो अत्यन्त गहरे और विस्तृत थे। ऐसे विचार जो अभी तक अस्पष्ट थे और जिनके विषय में वह बोलना चाहता था। बार बार उसने लिजा के सम्मुख अपने हृदय की वेदना को खोलकर रखा और अपनी स्त्री के विषय में बातें कीं कि वह उसे कितना प्यार करता था और फिर भी उसके लिए लिजा के बिना रहना कितना दुखदायक था।

"जिस तरह मैं तुमसे बात करता हूँ उस तरह किसी भी दूसरे से नहीं कर सकता। मालूम पड़ता है कि आदमी में हमेशा कुछ ऐसी बातें रहती हैं जिन्हें वह सिर्फ एक स्त्री से ही कह सकता है। फिर भी मैं अपनी स्त्री से कहने में असमर्थ हूँ। न मैं अपने कामरेडों से ही कह सकता हूँ। कुछ भी हो, यह बड़ा विचित्र सा लगता है। आदमी को अपने विषय में बात करने में लज्जा आती है और तुम्हें तो कह कर अपने मन का भार हल्का करना ही होता है!"

लिजा ने अपनी खुरदरी हथेली और पतले हाथ की उँगलियों से उसका सिर थपथपाया और उसकी बातें सुनती रही।

"मैंने इस विषय पर बातें करने की कोशिश की परन्तु आदमी किताबी भाषा में जवाब देते हैं-किताबें तो मैं खुद पढ़ सकता हूँ। अपने विषय में साफ बातें कहने में लोगों को शर्म आती है। मेरा ख्याल है कि जो मुसीबत मेरे साथ है वही दूसरे बहुतों के साथ है। ऐसी बातें जो हृदय

के अतिरिक्त और कहीं नहीं लिखी गई, जिन्हें कहने में आदमी शरमाता है और जिन्हें कहना बड़ा जरूरी है नहीं तो मन को बड़ी वेदना होती है ।

उसने चमकती हुई नीली आँखों के एक जोड़े में देखा और भूल गया कि वे आँखें भेंड़ी थीं । लिजा का हाथ उसके सिर पर, उसके कन्धे पर कांपा । वह उसकी उद्विग्नता को समझ रही थी ।

पावेल ने उसे अपने घुटनों पर बैठा लिया और अचानक हृदय में एक टीस और उत्तेजना का अनुभव कर उसके खुरदरे गर्म गालों और होठों को चूम लिया ।

"कोई बात नहीं, प्यारे" उसने आँखों को फैलाते हुए कहा "तुम सफल होगे, यह सब बीत जायगा ?' कभी कभी वह लिजा की गोदी में सिर रख कर गहरी नींद सो जाता । वह उसके उठने के समय तक चुपचाप बैठी रहती और एक दयालु नर्स की तरह उसके सिर को थपथपाती रहती ।

पावेल अपने साथ एक अखबार लाता, घने अक्षरों में पास पास छपे हुए पन्ने को मेज पर फैलाता और उसके ऊपर झुक कर गम्भीरता-पूर्वक अपने यूरोप के और सारे ससार के कामरेडों के विषय में, उनके अथक प्रयत्नों और संघर्षों के विषय में पढ़ने लगता । पार्टी के लीडरों के विषय में और प्रतिदिन के जीवन संघर्ष में भाग लेने वाले बहादुर व्यक्तियों के बारे में बातें करता ।

वह चुपचाप, स्थिर बैठी रहती । कभी कभी ही कोई सवाल पूछती परन्तु पावेल पूर्ण आश्वस्त रहता कि वह लड़की उसकी बातों को पूरी तरह समझ रही है ।

उसने गौर किया कि जब महापुरुषों और धर्म प्रचार का नाम लिया जाता तो लिजा का चेहरा असाधारण रूप से गम्भीर हो उठता और उसके नेत्र परियों की कहानी सुनते हुए बच्चे की आँखों की तरह चमक उठते कभी कभी उसकी उस जमी हुई निगाह में घबड़ाहट सी दिखाई देती जिसे देखकर उसे एक चतुर वफादार कुत्ते की निगाह का ध्यान आ जाता जो किसी चीज को गौर से देख रहा हो और जिसकी विशेषता को केवल उसी का पशु हृदय समझने में समर्थ हो । ऐसे क्षणों में उसे लगता कि

यह धीरे बोलने वाली, मोटी लड़की किसी भी काम को करने के लिए पूरी तरह से योग्य थी ...

अक्सर वह पूछती :

"तुमने कौन से नाम बताए?"

कुछ देर रुक वह बिलकुल स्पष्टता से उन नामों को दुहराती और एक बार फिर पूछती :

"इनका रूसी भाषा में क्या नाम होगा?"

"मैं नहीं जानता। हमारे यहाँ ऐसे नाम नहीं होते ..."

"क्या हमारे यहाँ ऐसे पवित्र शहीद नहीं हुए हैं?" वह शंकित और हताश होकर पूछती।

पावेल खिलखिलाकर हँस उठता।

"पवित्र शहीद आत्माएँ हमारे मार्ग में नहीं आतीं, मेरी प्यारी लड़की! हम नर्क में रहते हैं, वे यहाँ पैदा नहीं होतीं।"

"वे पैदा होंगी!" लिजा ने एकबार घोषणा की।

उसकी वह ध्वनि बड़ी अद्भुत सी लगी, जैसे आधी रात के बाद घण्टे का पहला शब्द, रात के अँधेरे में नए दिन के उत्पन्न होने की सूचना देता है। पावेल ने अपने दोस्त के चेहरे की ओर देखा परन्तु वहाँ उसे कोई विशेषता नहीं दिखाई दी। कुछ देर तक सोचने के उपरान्त उसने पूछा :

"तुम इन नामों के विषय में क्यों पूछती हो?"

उसने बिना जवाब दिए सिर झुका लिया। तब पावेल ने धीरे से उसका सिर ऊपर उठाया और हँसते हुए बोला :

"हो सकता है कि तुम उनके लिए प्रार्थना करने का विचार करती हो, ऐं?"

"इसमें क्या हुआ" उसने कहा—"मैं ऐसा ही करती हूँ। केवल मैं बिना नाम लिए ही प्रार्थना करती हूँ। बिलकुल साधारण रूप से—'भगवान उन लोगों की मदद करे जो दूसरों की भलाई करते हैं'! तुम मेरी हँसी उड़ा सकते हो, परन्तु मुझे परवाह नहीं।"

"यह बेकार है, लिजा !"

"हरेक आदमी अपनी शक्ति भर अच्छे आदमियों की सहायता करता है।"

"यह अच्छी बात नहीं, लिजा ! नहीं, तुम्हें मदद करने का दूसरा तरीका सीखना पड़ेगा।"

"जब मैं सीख लूँगी तब करूँगी।"

पावेल से और सटकर उसने कहा .

"इसका कोई महत्व नहीं, है कोई ? इससे उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता, क्यों, पहुँच सकता है ?"

पावेल ने कुछ उत्तर नहीं दिया और उसे बाहों में भर लिया। उसके विचार धुँधली परन्तु महत्वपूर्ण बातों को सोच रहे थे।

उसके कामरेडों ने गौर किया कि पावेल अपना कुछ समय उन लोगों से और अपनी स्त्री से बचाकर कहीं दूसरी जगह बिताता है। परन्तु वे यह दिखाते हुए खामोश रहे कि वे उसकी बातों का विश्वास करते हैं।

केवल सर्दीकोव-ढलाई का काम करने वाला खुशमिजाज व्यक्ति-ने एक दिन उससे पूछा·

"मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी भी किसी औरत से मुहब्बत होगई है, पावेल, क्यों ?"

इस अचानक किए गए प्रश्न से वह चौंक उठा और हड़बड़ा कर बोला .

"और कौन ?"

चेचकरू मुँह और छितरे बालों वाले सर्दीकोव ने अपने झुलसे हुए हाथ को फटकारते हुए कहा :

"पकड़े गए, यार ! कहो, अब इस बारे में क्या कहते हो ! देखो, मैं अभी तुम्हारी स्त्री से जाकर कह दूँ तो !"

"नहीं, कुछ मत कहना !" पावेल ने गम्भीर होकर कहा।

"तुम मुझे क्या दोगे ? एक किताब दो। नेक्रासोव की एक किताब दे दो, क्यों दोगे न ?"

"नहीं दूँगा। लेकिन मैं उससे खुद ही कह दूँगा……"

सर्दीकोव स्तम्भित होकर उसकी तरफ देखता रह गया।

"तुम उससे कह दोगे? अपनी औरत से?"

"क्यों, हाँ, कह दूँगा!"

"किसलिए?"

"मैं कह दूँगा तो ठीक रहेगा!"

सर्दीकोव ने भौंहों में गाठें दीं, एक तरफ को देखा और गहरी साँस ली।

"यह गम्भीर मामला है, अच्छा, यह ठीक है! हरेक व्यक्ति देख सकता है कि वह तुम्हारे योग्य नहीं। वह बेपढ़े लिखे घर में पैदा हुई है। मूर्खता उसके रक्त में समाई हुई है। तुम एक काले घोड़े को धोकर सफेद नहीं बना सकते और इस पर समय बर्बाद करना भी उचित नहीं।"

"वह समझ नहीं पाया है!" पावेल ने सोचा।

"तुम उसे प्यार नहीं करते," उसने खामोशी से कहा।

"तुमने ही तो कहा था," सर्दीकोव ने कठोरता से कहा—"मैं नहीं करता, मैं दूसरी को प्यार करता हूँ—"

फिर पावेल ने पूछा:

"तुम भी उसी रास्ते पर चल रहे हो?"

"किस रास्ते पर? ओह, हाँ……"

सर्दीकोव ने एक फीकी हँसी हँसते हुए कहा:

"हाँ, भाई, मैं भी इसी भंवरजाल में फँस गया हूँ।"

पावेल ने आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखा और पूछा:

"यह कैसे हुआ? क्या तुम दोनों में निभती नहीं ''क्या तुम्हारी स्त्री तुम्हारी कामरेड नहीं?"

"यही तो बात है—वह कामरेड है!" सर्दीकोव रूखेपन से बोला—"यही तो मुसीबत है—वह हरदम भयंकर रूप से खांसती रहती है—

वह घुलती चली जा रही है ······· "

वे एक धुँए से काली पड़ी हुई दीवाल के पास, फैक्टरी के अहाते के अन्दर बातें कर रहे थे और उनके सिर के ऊपर कहीं, भाप से मलवा फेंकने वाला यंत्र बराबर शोर मचा रहा था : "पफ, पफ"

धुँए से लदी हुई हवा में कराह, चीख पुकार, कर्कश आवाजें, भट्ठी की गरज और लोहे की खड़खड़ाहट भर रही थी।

'तीन साल में दो बच्चों की पैदायश." सर्दीकोव तन्मयतापूर्वक सिगरेट बनाता हुआ बड़बड़ा रहा था, "और, यह ऐसा लगता है कि वह एक ऐसी चीज है जिसे हम लोग सह नहीं सकते। डाक्टर सलाह देता है कि स्त्री से दूर रहो। खैर, मैंने उससे दूर रहना शुरू किया, उस पर रहम खाया। इससे मुझे इतना कष्ट हुआ कि भाई मैं तुमसे कह नहीं सकता। खैर, मैं उससे इतने दिनों तक दूर रहा कि मुझे ऐसी जगह जाना पड़ा जहाँ मुझे नहीं जाना चाहिए था। मैं जानता हूँ कि अब मेरे सिर पर मुसीबत आने वाली है। और अब पीछे लौटने का रास्ता नहीं रहा है, वह बन्द हो चुका है। पीछे लौटना! इसका मतलब कुछ भी नहीं है! मेरी स्त्री को गाँव में जाकर रहना पड़ेगा जिससे बच्चे न पैदा हों। मुझे ऐसा दिखाई देता है भाई कि बच्चे हम लोगों के लिए नहीं हैं। फिर हमारे लिए यहाँ और है ही क्या?"

उसने चारों तरफ रद्दी लोहे के ढेर, कोयले से काली पड़ी हुई धरती और फैक्टरी की धुँआ और भाप उगलने वाली छत की ओर देखा।

"वे हमारी गेंद को लेकर निकल गए है। और हमारे पास फिर खेलने के लिए एक भी ट्रम्प नहीं है– यह बहुत बुरी हालत है, पावेल!"

उसने पावेल के कन्धे के ऊपर होकर अपनी बची हुई सिगरेट फेंकदी और अपनी दूकान में घुस गया। पावेल ने उसे इससे पहले इस रूप में कभी नहीं देखा था। वह सिर झुकाए और हताश होकर चारों तरफ इस तरह देखता जा रहा था मानो उसे किसी के द्वारा अचानक हमला किए जाने का डर हो। और जब वह उस कारखाने के काले जबड़ों द्वारा निगल लिया गया

तो पावेल को याद आया कि वह किस तरह एक चिड़िया की तरह चहकता रहता था। वह कितना हँसोड़, थियेटर जाने का शौकीन और गाने वाला था। पावेल गहरे विचार में डूब गया। उसे लगा कि जैसे अभी उससे कोई और ही आदमी बात कर रहा था, कोई ऐसा आदमी जो पुराने सर्दीकोव से अधिक घनिष्ठ और परिचित था। यह पहिला मौका था जब उसने एक कामरेड को अपने दिमाग में घूमने वाली बातों को इतनी सरलतापूर्वक कहते सुना था। अपनी खराद पर खड़ा हुआ पावेल सोचने लगा।

"वह अब मुझे समझ सकेगा। मुझे उससे और गहरी दोस्ती करनी पड़ेगी। जिस तरह मैं रहता हूँ यह ठीक नहीं ....।"

उसके विचार पूरे न हो सके। एक हफ्ते से भी कम समय में ही सर्दीकोव ईंटों के अहाते के पास झाड़ियों में पड़ा पाया गया और बहुत समय तक उसे अस्पताल में रखा गया।

"क्या जिन्दगी है!" अपने मकान के कमरे में इधर से उधर चहल कदमी करता हुआ पावेल कह रहा था, "मुझे उसके लिए अफसोस है। इतना भयंकर अफसोस है कि मैं तुमसे कह नहीं सकता, दाशा! वह इतना अच्छा आदमी है ...."

वह उसकी बगल में बैठ गया और धीमी आवाज में कहता रहा :

"तुम्हें पता है उसने अभी कुछ दिन हुए मुझसे अपनी औरत के बारे में बात की थी .... "

"अच्छा होता कि वह अपना मुँह बन्द रखता, बदमाश!" दाशा बड़बड़ाई, "क्या तुम समझते हो कि मुझे उसके पिटने का कारण मालूम नहीं?"

"देखो दाशा!"

" दरअसल तुम हरेक बदमाश के लिए कोई न कोई बहाना ढूँढ लेते हो, वह तुम्हारा कामरेड था न!"

उसने गुस्से से कहा।

"दार्या ! मेरे कामरेडों में कोई भी बदमाश नहीं है।"

"चीखो मत !"

दाशा अपनी कोहनियों से रोकती रही परन्तु पावेल ने उसे अपनी बाहों में भर कर उससे सर्दीकोव का सारा किस्सा कह सुनाया। पहले उसे बड़ा मजा आया फिर अपने पति को घृणा से दूर धकेलते हुये उसने फटकारना शुरू किया:

"ओह, नीच शैतान ! क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि मार्या इन सब हो रही हरकतों के बारे में जानती थी ?"

"अरे भगवान, तू कहीं उससे कह मत बैठना !" पावेल चौंक कर चीख उठा।

"आह ! मैं कहूँगी। मेरा बुरा हो अगर मैं उससे न कहूँ !" दाशा ने भयानक रूप से मुस्कराते हुये कहा—"यह उनकी शिक्षा का नतीजा है। बदमाश हैं सब के सब ! मुझे उसकी स्त्री के लिये अफसोस है, सचमुच बेचारी अक्सर बच्चे पैदा करती है—तुम्हारा इस बारे में क्या ख्याल है, क्यों ?"

दाशा की आदत थी कि जब उसे गुस्सा आता था तो वह सिर को ऊपर की तरफ झटकारती, नाक से गहरी गहरी साँसें लेती जिससे उसके नथुने घोड़े की तरह फूलने और काँपने लगते। इससे वह और भी अधिक आकर्षक हो उठती परन्तु इससे पावेल के मन में विरक्ति उत्पन्न हो जाती और एक भयंकर घृणा जाग उठती। वह उसे बीमार, दीन और नम्र रूप में देखना पसन्द करता था या एक भिकारी को सड़कों पर चिथड़ों में नम्रता पूर्वक झुकते। और सर्दीकोव की स्त्री चालाक और चतुर थी। वह ऐसे आदमियों द्वारा भीख माँगा जाना पसन्द करती थी जो उसके हृदय के लिए पूर्णतः अपरिचित होते, उस हृदय के लिए जो काला और भारी गोल वस्तु के समान था जैसे एक लोहे की गेंद।

शनिवार की शाम को पावेल लिजा के कमरे में बैठा हुआ फुसफुसाते हुए कह रहा था

" वे मनुष्यों को उस हालत में ले आये हैं जहाँ अच्छाई और

इन्सानियत भी जो मनुष्यों में स्वाभाविक रूप से होती है, गन्दगी के समान दिखाई देने लगती है। मेरी आत्मा के चारों ओर एक फन्दा जकड़ दिया गया है। मैं नहीं जानता कि इससे कैसे छुटकारा पाऊँ। मैं उस स्त्री और अपनी लड़की को भी प्यार करता हूं- वास्तव में प्यार करता हूं परन्तु वह मेरी बेटी को क्या दे सकती है? और मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, लिजा। आह, मोड्वीया की सुन्दरी, तुम्हारी आत्मा बड़ी सुन्दर है, तुम मेरी मित्र हो…"

वह नीचा सिर किए उसकी बात सुनती रही और गम्भीरतापूर्वक धीरे से उसने अपनी संक्षिप्त राय प्रकट की:

"मैं नहीं जानती कि तुम क्या करोगे। मैं तुम्हारी सहायता करने की कोई तरकीब नहीं सोच पाती………………" परन्तु उसने एक रास्ता निकाल लिया।

एक बार अपने ससुर और स्त्री से कलह होने के बाद पावेल बहुत निराश होकर, खामोश शहर की सड़कों पर, चहार दीवारियों, ताले लगे हुए फाटकों और काली खिड़कियों—जिनके पीछे वसन्त की रात बाहर की ठंडी चाँदनी से छिपी हुई पड़ी थी, को पीछे छोड़ता हुआ थके हुए कदमों से चुपचाप चला जा रहा था।

"इस तरफ या उस तरफ!" उसने अपने आप सोचा। कभी रोशनी में और फिर मकानों और पेड़ों की छाया में होता हुआ वह आगे बढ़ता गया।

"नहीं, इन सबको जहन्नुम में जाने दो! जैसी जिन्दगी मैं चाहता हूं वैसी ही बितानी चाहिए या दासों की तरह इसे प्यार करना पड़ेगा। मुझे जिन्दगी प्यारी है" …मैं ऊब गया हूं।"

वह मुश्किल से चल पा रहा था। उसके पैर छाया में इस प्रकार कांपते दिखाई पड़ रहे थे मानों वे भीगी बालू या दलदल में हों। वह सड़क पार कर दूसरी तरफ आ गया जो पीली चाँदनी में नहा रही थी।

शहर उस नामन्तो रात्रि में अनिच्छापूर्वक कच्ची नींद में डूब गया परन्तु काली छायायें सड़क पर अब भी इस प्रकार घूम रही थीं जैसे किसी

असफल अनुसन्धान के उपरान्त मनुष्य दिखाई देते हैं। एक काला सवार घोड़े की जीन पर हिलता हुआ उसकी बगल से निकल गया। घोड़े की टापों से सड़क पर दो नीली चिनगारियाँ उठती हुई दिखाई दीं।

एक भारी डील-डौल वाला सिपाही एक लम्बे बालों वाले मजदूर को गले में रस्सा डालकर ले जा रहा था। मजदूर ने इधर उधर लड़खड़ाते हुए अपना हाथ धमकी देते हुए उठाया और एक बड़ी मक्खी की तरह भनभना उठा :

"मैं तुम्हें दिखा दूंगा, ज जरा ठ-ठहरो और दे-देखो "

एक डाकघर का कर्मचारी एक जवान खूबसूरत स्त्री की बाँह में बाह डाले हुए निकला और अपने पीछे विचित्र शब्दों की एक लड़ी सी छोड़ता गया

"बिल्कुल थोड़ा सा खुला हुआ और कोई भी उसमें से नहीं जा सकता ......"

दरवाजों में होकर मुँह बाहर डालते हुए कुत्ते उनींदी आवाज में भौंक उठते। चर्च का चौकीदार आराम से घण्टे बजा रहा था। वह एक चोट मारता और तब तक इन्तजार करता जब तक उसकी गूज हवा में गायब न हो जाती जैसे ठंडे पानी से भरे हुए कटोरे में आँसू की बूद।

"दस" पावेल ने गिना।

उसने उस छोटी मोर्ड्‌वीया की लड़की को आश्चर्यचकित कर दिया जो एक भूरा घाघरा और पीला ब्लाऊज पहने हुए थी जिसके सामने गोटा लगा हुआ था। उसके पास तीन ब्लाऊज थे और उन सब में विभिन्न प्रकार की पीली छाया थी। वे सब उसके छोटे भी हो गए थे। जब वह अपने हाथ उठाती तो उनके किनारे उसकी कमर पर से ऊपर खिसक आते और जब वह अपना शरीर झुकाती तो घर की बनी हुई लिनिन की शमीज की एक झलक हरेक देख सकता था जिसे वह उसके नीचे पहने रहती थी। उसका घाघरा भी उसके ठीक तरह से नहीं आता था, टेढ़ा मेढ़ा सा लगता था।

"उसके बाल सुन्दर हैं" उसने अपने आप को याद दिलाई। वह लिजा में स्त्री की सुन्दरता को किसी न किसी रूप में देखना चाहता था।

"कितने आकर्षक बाल हैं; कितने कोमल! उसकी आँखें भी कितनी प्यारी हैं......"

परन्तु किसी ने भीतर से विरोध किया :

"उसके घुटनों की हड्डियाँ निकली हुई हैं। कन्धे भी..."

लिजा के कमरे की खिड़की में से अन्धकार उसे घूर रहा था। उसने काँच से अपना मुँह सटाकर उस छोटी खिड़की पर उँगलियों से धीरे धीरे खटखटाना प्रारम्भ किया जैसा कि वह हमेशा किया करता था। बहुत देर तक खामोशी रही और फिर रोशनदान में से एक अजीब धीमी सी आवाज आई :

"तुम किसे चाहते हो?"

"क्या लिजा घर पर है?"

एक अस्पष्ट उत्तर सुनाई दिया :

"वह यहाँ नहीं रहती!"

"तुम क्या कह रही हो?"

"वह चली गई!"

"वह कब गई?"

"चार दिन हो गए! अब तुम भाग जाओ।"

"एक मिनट ठहरो!" अपने सीने को दीवाल से सटाते हुए पावेल ने जोर से कहा—"क्या वह मेरे लिए कोई सन्देश नहीं छोड़ गई?"

"तुम कौन हो?"

"नाकोव—पावेल नाकोव।"

"तुम्हारे लिए एक चिट है—यहाँ। मैं इसे खिड़की से फेंक रही हूँ..."

एक रोशनी चमकी और तुरन्त गायब हो गई।

दूसरी बार फिर रोशनी चमकी और खिड़की एक बूढ़े पीले चेहरे की

तरह चमक उठी जिस पर एक काला तिरछा घाव का निशान पड़ा हो।

एक कागज का सफेद खड़खड़ाता हुआ कोना खिड़की से बाहर निकला। पावेल ने उसे पकड़ लिया, खोला और खिड़की की धुंधली रोशनी में बड़े बड़े अक्षरों को पढ़ने लगा :

"पावेल मिट्रिच, मेरे प्यारे आदमी, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं परन्तु यह बहुत बुरा होगा जैसे कि तुम्हारी स्त्री के साथ होगा—बिलकुल वही बात है। क्योंकि मेरे मन में तुम्हारी स्त्री के प्रति द्वेष पैदा होगया है। मैं उसे घृणा करती हूं और तुम्हारे लिए यह फिर वैसी ही चीज हो जायगी इसलिए मैं जा रही हूँ, नहीं जानती कहाँ, लिजा बेटा।"

उसने कागज को मरोड़ डाला परन्तु फिर फौरन ही उसे खोला, एकबार फिर उसकी टेढ़ी मेढ़ी पक्तियों को देखा, फिर तुरन्त उसके टुकड़े कर डाले और तिरस्कारपूर्वक अपने आप से कहा

"इससे अच्छी किसी चीज के लिए न सोच सकी बदसूरत कुतिया।"

उसने धीरे से उन टुकड़ों को जमीन पर डाल दिया और मैदान की ओर देखने लगा - बिलकुल हताश और एकाकी—अपने हृदय की तरह जिसे अचानक एक भय ने जकड़ लिया था।

"बेवकूफ लड़की !"

चहार दीवारी को अपने कन्धों से रगड़ते हुए बहुत खामोशी से वह पीछे मुड़ा और उदास होकर बड़बड़ाया

"ओह, लिजा, तुम कहाँ चली गईं ? ………"

बुढ़िया इज़रगिल

मैंने ये कहानियाँ अक्करमान के नजदीक बेसरबिया के समुद्र तट पर सुनी थी।

एक शाम को अँगूर तोड़ने का काम समाप्त कर, मैं मोल्डेविया के निवासियों जिनके साथ मैं यही काम कर रहा था - के साथ समुद्र तट पर गया मैं बुढ़िया इज़रगिल के साथ पीछे रह गया जो एक घनी द्राक्षा-लता के नीचे जमीन पर आराम से लेटी हुई सन्ध्या के धुंधलेके में समुद्र की ओर जाते हुए मनुष्यों की अस्पष्ट रेखाओं को देख रही थी।

वे लोग गाते और हँसी मजाक करते तट की ओर चले जारहे थे। मनुष्य छोटी कमीजें और चौड़ी मुहरी की पतलूनें पहने हुए थे। उनके चेहरे तांबे के रंग के मूछें घनी और काली तथा बाल लम्बे थे जो लहराते हुए कन्धों से नीचे लटक रहे थे। औरतें और लड़कियां प्रसन्न और प्रफुल्ल दिखाई पड़ रही थीं। उनके नेत्र गहरे काले थे, रोशनी और हवा से उनके चेहरे सांवले पड़ गए थे। उनके रेशमी जैसे मुलायम बाल पीठ के ऊपर लहरा रहे थे। सुहावनी हल्की गर्म हवा उन बालों को लहरा कर उनमें बंधे हुए सुन्दर आभूषणों की छोटी छोटी घंटियों को मधुर ध्वनि से बजा रही थी। हवा एक नदी की विस्तृत धारा के समान मन्थर गति से बह रही थी। यदा कदा किसी अवरोध से टकराकर भयंकर हो उठती थी और उन औरतों के बालों को घोड़े के अयालों की भाँति कन्धों पर इधर उधर बिखरा देती थी। अपने इस अद्भुत रूपमें उन स्त्रियों का रूप ऐसा हो जाता था मानो वे किसी परीलोक की नारियाँ हों। जैसे २ वे लोग हम से दूर होते गए, घिरती हुई रात और

तरह चमक उठी जिस पर एक काला तिरछा घाव का निशान पड़ा हो।

एक कागज का सफेद खड़खड़ाता हुआ कोना खिड़की से बाहर निकला। पावेल ने उसे पकड़ लिया, खोला और खिड़की की धुंधली रोशनी में बड़े बड़े अक्षरों को पढ़ने लगा.

"पावेल मिट्रिच, मेरे प्यारे आदमी, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं परन्तु यह बहुत बुरा होगा जैसे कि तुम्हारी स्त्री के साथ होगा—बिलकुल वही बात है। क्योंकि मेरे मन में तुम्हारी स्त्री के प्रति द्वेष पैदा होगया है। मैं उसे घृणा करती हूं और तुम्हारे लिए यह फिर वैसी ही चीज हो जायगी इसलिए मैं जा रही हूँ, नहीं जानती कहाँ, लिजा बेटा।"

उसने कागज को मरोड़ डाला परन्तु फिर फौरन ही उसे खोला, एकबार फिर उसकी टेढ़ी मेढ़ी पंक्तियों को देखा, फिर तुरन्त उसके टुकड़े कर डाले और तिरस्कारपूर्वक अपने आप से कहा

"इससे अच्छी किसी चीज के लिए न सोच सकी बदसूरत कुतिया।"

उसने धीरे से उन टुकड़ों को जमीन पर डाल दिया और मैदान की ओर देखने लगा - बिलकुल हताश और एकाकी—अपने हृदय की तरह जिसे अचानक एक भय ने जकड़ लिया था।

"बेवकूफ लड़की!"

चहार दीवारी को अपने कन्धों से रगड़ते हुए बहुत खामोशी से वह पीछे मुड़ा और उदास होकर बड़बड़ाया.

"ओह, लिजा, तुम कहाँ चली गई? ...."

———

बुढ़िया इज़रगिल

मैंने ये कहानियाँ अक्करमान के नजदीक बेसरबिया के समुद्र तट पर सुनी थी ।

एक शाम को अँगूर तोड़ने का काम समाप्त कर, मैं मोल्डेविया के निवासियों जिनके साथ मैं यही काम कर रहा था - के साथ समुद्र तट पर गया मैं बुढ़िया इज़रगिल के साथ पीछे रह गया जो एक घनी द्राक्षा-लता के नीचे जमीन पर आराम से लेटी हुई सन्ध्या के धुंधलके में समुद्र की ओर जाते हुए मनुष्यों की अस्पष्ट रेखाओं को देख रही थी ।

वे लोग गाते और हँसी मजाक करते तट की ओर चले जारहे थे । मनुष्य छोटी कमीजें और चौड़ी मुहरी की पतलूनें पहने हुए थे । उनके चेहरे तांबे के रंग के मूछें घनी और काली तथा बाल लम्बे थे जो लहराते हुए कन्धों से नीचे लटक रहे थे । औरतें और लड़कियां प्रसन्न और उत्फुल्ल दिखाई पड़ रही थीं । उनके नेत्र गहरे काले थे, रोशनी और हवा से उनके चेहरे सांवले पड़ गए थे । उनके रेशमी जैसे मुलायम बाल पीठ के ऊपर लहरा रहे थे । सुहावनी हल्की गर्म हवा उन बालों को लहरा कर उनमें बंधे हुए सुन्दर आभूषणों की छोटी छोटी घंटियों को मधुर ध्वनि से बजा रही थी । हवा एक नदी की विस्तृत धारा के समान मन्थर गति से बह रही थी । कदा कदा किसी अवरोध से टकराकर भयंकर हो उठती थी और उन औरतों के बालों को घोड़े के अयालों की भाँति कन्धों पर इधर उधर बिखरा देती थी । अपने इस अद्भुत रूपमें इन स्त्रियों का रूप ऐसा हो जाता था मानो ये किसी परीलोक की नारियाँ हों । जैसे २ वे लोग हम से दूर होते गए, घिरती हुई रात और

मेरी कल्पना ने उन्हें एक सुन्दर आवरण में लपेटना प्रारम्भ कर दिया।

कोई एक बेला बजा रहा था। एक लड़की धीमी मधुर आवाज में गा रही थी, हँसने की आवाज भी सुनाई दे रही थी।

हवा में समुद्र की तीखी गन्ध भरी हुई थी। जमीन से सोंधी सीलन भरी हुई गन्ध उठ रही थी। यद्यपि शाम होने से पहले वर्षा से इस गन्ध को धोने का पूरा प्रयत्न किया था। आकाश में इधर उधर विभिन्न आकृतियों और रंगों के बादलों के छोटे छोटे टुकड़े घूम रहे थे। कहीं वे हलके धुयें के नीले और राख जैसे रंग के प्रतीत होते और कहीं गहरे काले रंग के जैसे हलकी काली चट्टान के टुकड़े हों। उनके बीच से गहरा नीला आकाश झाँक उठता था जिसमें सुनहली सितारे जड़े हुए थे। यह सब चीजें—ध्वनियाँ और गन्ध, बादल और मनुष्य—बहुत सुन्दर लग रहे थे परन्तु उनमें सर्वत्र एक दुख की छाया सी पड़ी हुई मालूम पड़ती थीं मानों वे किसी दुखान्त नाटक के प्रारम्भिक पात्र हों। और प्रत्येक वस्तु ऐसी प्रतीत होती थी मानो उसके विकास को रोक दिया गया हो और असमय में ही वह नष्ट होने लगी हो। आवाजें दूर होती जा रही थीं और दूर और दूर होते होते अन्त में एक करुणापूर्ण सिसकी सी सुनाई देने लगी थीं।

"तुम उनके साथ क्यों नहीं गए?" उस दिशा की ओर इशारा करते हुए, जिधर वे लोग गए थे, बुढ़िया इज़रगिल ने मुझसे पूछा।

समय ने उसकी कमर झुका दी थी। किसी समय रहे हुए उज्वल नेत्रों की आभा फीकी और धुंधली पड़ गई थी। उसकी काँपती सी नीरस आवाज अद्भुत प्रतीत होती थी। उस आवाज में एक विशेष प्रकार की खड़-खड़ाहट सी थी मानों उसकी हड्डियाँ बज रहीं हों।

"मेरा मन नहीं था।" मैंने उत्तर दिया।

"ऊँह, तुम सभी रूसी जन्म से ही बुड्ढों जैसे मन वाले होते हो। तुम पिशाच की तरह सुस्त और काहिल भी हो। हमारी लड़कियाँ तुमसे डरती हैं। मगर तुम तो जवान और ताक़तवर हो।"

चाँद निकला—थाली जैसा बड़ा और गोल, गहरे खूनी रंग का।

ऐसा लगता था मानो यह घास के उस अनन्त विस्तार से उत्पन्न हुआ है जिसमें सदियों से आदमी का रक्त और मांस सूखता रहा है और सम्भवतः इसी कारण से यह मैदान इतना उपजाऊ बन गया है । जैसे ही चाँद निकला, उसने हमारे ऊपर द्राक्षालता की रुपहली छाया फैला दी । मैं और वह बुड्ढी स्त्री दोनों छाया और चन्द्रिका के उस सुन्दर जाल के नीचे रुक गये ; हमारी बांयी ओर आकाश में विचरण करते हुए बादलों की छाया मैदान पर पड़ रही थी । बादल चाँद की रुपहली किरणों में डूबे हुए अधिक सुन्दर और पारदर्शी दिखाई पड़ रहे थे ।

"देखो, वह लारा है ।"

मैंने उस ओर देखा जिधर उस औरत ने अपने काँपते हुए हाथ और टेढ़ी उँगलियों से इशारा किया था और मैंने अनेक छायायें उधर उड़ती हुई देखीं । परन्तु उनमें से एक अधिक गहरी और मोटी थी । यह दूसरी छायाओं से अधिक तेज और नीची होकर उड़ रही थी । यह एक बड़े बादल की छाया थी जो और बादलों से बहुत नीचे, धरती के पास, तेजी से उड़ा चला जा रहा था ।

"मुझे कोई नहीं दिखाई देता," मैंने कहा ।

"तुम्हारी आँखें मुझ से भी कमजोर हैं, एक बुढ़िया की आँखों से भी । देखो, उधर वह एक काली सी वस्तु जो मैदान के ऊपर भागी चली जा रही है ।"

मैंने बार बार उधर देखा परन्तु छायाओं के अतिरिक्त कुछ भी न देख सका ।

"यह तो एक छाया है । तुम उसे लारा क्यों कहती हो ?"

"क्योंकि यह वही है । अब उसका अस्तित्व छाया से अधिक कुछ भी नहीं रहा । इसमें कोई आश्चर्य नहीं । वह हजारों वर्ष जीवित रहा । सूर्य की किरणों ने उसके शरीर के रक्त, मांस और हड्डियों को बिल्कुल सुखा दिया और हवा उन्हें धूल की तरह उड़ा कर ले गई । तुम जानते हो कि ईश्वर अभिमानी व्यक्तियों को कैसा दण्ड देता है ?"

"मुझे सुनाओ, यह कैसे हुआ।" मैंने उन मैदानों में प्रचलित अनेक अद्भुत कहानियों में से एक कहानी सुनने की आशा से उस वृद्धा से प्रार्थना की।

और उसने मुझे यह कहानी सुनाई।

"यह घटना हजारों साल पहले घटी थी। समुद्र के उस पार, बहुत दूर, जहाँ से सूर्य उदय होता है, एक देश है, जिसमें एक बड़ी नदी बहती है। उस देश में उत्पन्न होने वाले वृक्ष और घास की पत्तियाँ इतनी बड़ी होती हैं कि उनमें से एक के नीचे बैठ कर वहाँ चमकने वाले प्रखर सूर्य की गर्मी से आदमी अपने को बचा सकता है।"

"उस देश की जमीन इतनी अच्छी है ?"

"उस देश में मनुष्यों की एक शक्तिशाली जाति निवास करती थी। वे पशु पालते, जंगली जानवरों का शिकार करते, और फिर गोश्त की दावत खाते तथा लड़कियों के साथ मिलकर नाचते और गाते।

"एक दिन, जब दावत हो रही थी, एक लड़की को, जिसके बाल रात्रि की तरह काले और चिकने थे, एक गरुड़ आकाश से झपटा और उड़ा ले गया। उपस्थित मनुष्यों ने उसे बचाने के लिए ऊपर की ओर तीर छोड़े। परन्तु वे छोटे छोटे तीर गरुड़ तक न पहुँच सके और असफल होकर पृथ्वी पर आ गिरे। तब उस जाति के आदमी उस लड़की को ढूंढने निकले परन्तु उनका सारा प्रयत्न व्यर्थ रहा। वे उसे न ढूंढ सके। फिर समय बीतने पर जैसे सब चीजें भुला दी जाती हैं, वैसे ही वे सभी उस लड़की को भूल गए।"

बुढ़िया ने गहरी साँस ली और चुप हो गई। उसकी उस कर्कश आवाज में जैसे बीते हुए युगों की वे सब शिकायतें, धुंधली स्मृतियों के रूप में साकार हो उठीं। सागर चुपचाप, उन पुरानी कहानियों में से, जो सम्भवतः उसी के किनारे पर गढ़ी गई थीं, एक को पुनः सुन रहा था।

"बीस साल बाद वह लड़की एक दिन स्वयं लौट आई—थकी और मुरझाई हुई सी। उसके साथ एक सुन्दर और शक्तिशाली युवक था, वैसा

ही जैसी कि वह स्वयं बीस साल पहले थी । जब उसकी जाति के आद-मियों ने उससे पूछा कि इतने दिन वह कहाँ रही, तो उसने बताया कि वह पक्षी उसे पहाड़ों पर उड़ा ले गया था और वहाँ वह उसकी पत्नी बनकर रही थी। वह युवक उसका पुत्र था। उसका पिता, वह पक्षी, मर चुका था। जब वह बहुत कमजोर हो गया तो एक दिन आकाश में बहुत ऊँचा उड़ा और वहाँ से अपने पंख बन्द कर उन पहाड़ों की दरारों में गिर कर मर गया ... .।"

"सब लोगों ने आश्चर्यपूर्वक उस गरुड़-पुत्र की ओर देखा और पाया कि वह रूपरेखा में उनसे भिन्न नहीं था परन्तु उसके नेत्रों में पक्षीराज गरुड़ के नेत्रों की सी शान्त गर्व की छाया थी। जब वे उससे बातें करते तो अगर उसका मन होता तो बातें कर लेता अन्यथा चुप रह जाता। जब उस जाति के बड़े बूढ़े सरदारों ने आकर उससे बातें कीं तो उसने उनके साथ पूर्ण समानता का व्यवहार किया । उन्होंने इसे अपना अपमान समझा । उन्होंने उसे झिड़का और कहा कि वह अभी बिना परों वाले उस छोटे से तीर की तरह है जिस के फल पर शान नहीं चढ़ाई गई है। साथ ही उन्होंने बताया कि उस जैसे हजारों उनकी इज्जत करते हैं और आज्ञा मानते हैं। इतना ही नहीं बल्कि उससे दूनी अवस्था वाले हजारों व्यक्ति भी उनकी आज्ञा का पालन करते हैं । परन्तु उसने गर्व-पूर्वक बहादुरी से उनकी ओर देखा और बोला कि संसार में उसकी समानता करने वाला अन्य कोई भी नहीं है। और अगर दूसरे उनका सम्मान करते हैं तो वह ऐसा करने का कोई इरादा नहीं रखता । इस पर वे बहुत बिगड़े और क्रोधपूर्वक कहा—

"इसे हमारे यहाँ स्थान नहीं मिल सकता । जहाँ यह चाहे वहाँ चला जाय।"

"वह हँसा और अपनी इच्छानुसार उस सुन्दर लड़की की ओर चला जो बहुत देर से उसकी ओर टकटकी बाँधे देख रही थी। पास पहुँच कर उसने उस लड़की को अपनी भुजाओं में कस कर सीने से लगा

लिया। परन्तु वह लड़की उसका अपमान करने वाले सरदारों में से एक की बेटी थी। इसीलिए, यद्यपि वह बहुत सुन्दर था, तो भी उसी लड़की ने झटका देकर उसे एक ओर हटा दिया क्योंकि उसे अपने पिता का भय था। वह वहाँ से जाने के लिए मुड़ी ही थी कि उस युवक ने उस पर आघात किया और जब वह जमीन पर गिर पड़ी तो उसकी छाती पर खड़ा हो गया जिससे उसके मुख से खून का फव्वारा बह निकला। उस लड़की की दम घुटी, वह साप की तरह ऐंठी और मर गई।

"इस दृश्य को देखने वाले सभी भय से जड़ बने खड़े रह गए। यह पहला अवसर था जब उनकी आँखों के सामने एक नारी की इस प्रकार हत्या की गई थी। वे बहुत देर तक निस्तब्ध खड़े उस मरी हुई लड़की की ओर देखते रहे जो खुले नेत्र और रक्त से सना मुँह लिए धरती पर पड़ी थी। और फिर उन्होंने उस युवक की ओर देखा जो उस लड़की की बगल में गर्व से मस्तक उन्नत किए उन लोगों का सामना करने की अभिलाषा से खड़ा था। उसका सिर दंड के भय से भयभीत होकर झुका नहीं था। जब उन लोगों की यह स्तब्धता दूर हुई तो उन्होंने उस युवक को पकड़ कर बांध लिया और उसी बँधी दशा में उसे वहीं जमीन पर डाल दिया। क्योंकि उन्होंने सोचा कि इस निरस्त्र को मारना बड़ा आसान है परन्तु उसकी इस प्रकार की मौत से उनकी प्रतिहिंसा की आग न बुझ सकेगी।

"रात्रि गहरी हो चली। चारों ओर धीमा धीमा भयकर शब्द गूँजने लगा। गिलहरियों की शोकपूर्ण सीटी की सी ध्वनि मैदान में चारों ओर फैल गई। द्राक्षालता में छिपे हुए झींगरों की झनकार से सम्पूर्ण वातावरण व्याप्त हो उठा। वृक्षों की पत्तियों में से निकलती हुई वायु, सनसनाहट की ध्वनि उत्पन्न कर रही थी मानो वे पत्तिया फुसफुसाहट की सी आवाज में आपस में दुख सुख की बातें कर रही हों। पूर्णिमा का चाँद जो पहले खून की तरह लाल था, अब पीला पड़ चुका था और जैसे जैसे वह आकाश में ऊपर उठता जाता था उसका रंग और भी अधिक पीला

पड़ता जा रहा था। मैदान में चारों ओर एक गहन नीलिमा का साम्राज्य छा गया था……!

"और तब वे लोग, उस युवक को उसके उस अपराध के लिए उचित दंड देने की व्यवस्था करने के लिए एकत्र हुए। कुछ ने सुझाव रखा कि घोड़ों से बांधकर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए जांय परन्तु यह दंड उदार और कम कष्टदायक था। दूसरों ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति उसके एक एक तीर मारे परन्तु यह भी नहीं माना गया। कुछ बोले कि उसे खम्भे से बांधकर आग लगा दी जाय परन्तु इस प्रस्ताव का विरोध इसलिए हुआ क्योंकि उस आग से उठे हुए धुँए के कारण वे उसकी यातना को स्पष्ट नहीं देख सकेंगे। इसके बाद अनेक दूसरे प्रस्ताव उपस्थित किए गए परन्तु उनमें से एक भी पूर्णरूपेण सन्तोषजनक नहीं माना गया। जब वे विवाद कर रहे थे, उस युवक की माँ उनके सामने घुटनों के बल बैठी हुई मौन प्रार्थना कर रही थी। वह अपने पुत्र के लिए दया की भिक्षा मांगने में असमर्थ हो रही थी क्योंकि उसे इसके लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहे थे। वे घण्टों तक बहस करते रहे, अन्त में गम्भीर मनन के उपरान्त एक बुद्धिमान व्यक्ति बोला—

"हमें उससे यह पूछना चाहिए कि उसने ऐसा क्यों किया।"

उन्होंने उससे पूछा और उसने उत्तर दिया—

"मेरे बन्धन खोल दो। मैं इस दशा में कुछ भी नहीं बताऊँगा।"

और जब लोगों ने उसके बन्धन खोल दिए तो उसने उनसे ऐसे पूछा मानो वह अपने गुलामों से बात कर रहा हो—

"तुम लोग क्या चाहते हो ?"

"तुमने सुन लिया है……" उस बुद्धिमान व्यक्ति ने उत्तर दिया।

"मैं अपने व्यवहार की सफाई तुमको क्यों दूँ ?"

"इसलिए कि हमें ज्ञान हो जाय। ए घमन्डी युवक ! सुन, तुझे जान से मार दिया जायगा। हमें बताओ तुमने ऐसा क्यों किया। हम लोग जीवित रहेंगे और हमारे लिए यह लाभदायक होगा कि हम जितना जानते हैं उससे और अधिक जान सकें।"

"अच्छा, ठीक है। मैं तुम लोगों को बताऊँगा यद्यपि मैं स्वयं ठीक तरह से नहीं जानता कि क्या हुआ था। मेरा ख्याल है कि मैंने उसे मार डाला क्योंकि उसने मेरी अवहेलना की थी लेकिन मैं उसे चाहता था।"

"लेकिन वह तुम्हारी तो नहीं थी।" उससे कहा गया।

"क्या तुम सदैव उसी वस्तु को काम में लाते हो जो तुम्हारी होती है? परन्तु इस संसार में हरेक मनुष्य के पास केवल बोलने की शक्ति, हाथ और पैर ही अपने होते हैं मगर वह पशु, स्त्री, जमीन और न जाने कितनी अन्य वस्तुएँ अपने अधिकार में रखता है।"

इसके उत्तर में उसे बताया गया कि इन सब वस्तुओं को मनुष्य धन देकर खरीदता है। वह इनके लिए अपनी बुद्धि, अपनी शक्ति और कभी कभी अवसर पड़ने पर अपने प्राणों की कीमत चुकाता है परन्तु उसने उत्तर दिया कि वह अपने को उन लोगों से पूर्ण रूप से अलग रखना चाहता है।

उन्होंने उससे बहुत देर तक बहस की और इस परिणाम पर पहुँचे कि वह इस ससार में अपने को एकमात्र और सर्वश्रेष्ठ समझता है तथा अपने अतिरिक्त दूसरों के विषय में कभी नहीं सोचता। उसकी इस एकाकी रहने की भावना की भयकरता से वे सिहर उठे। उसके विचार कितने भयानक थे! उसकी कोई जाति नहीं थी, और न उसके पशु, पत्नी आदि ही थे। वह इस प्रकार की कोई वस्तु चाहता भी न था।

जब उन लोगों को उसके विचारों का पूर्ण ज्ञान हो गया तो उन्होंने पुन उसके लिए उचित दड निश्चित करने के लिए वाद विवारम्भ कर दिया। लेकिन इस बार उन्होंने देर न लगाई। वह बुद्धिमान व्यक्ति, जो अब तक चुप बैठा था, बोला—

"ठहरो! मैंने एक दंड सोचा है,-बहुत भयंकर दण्ड। तुम हजारों वर्षों तक सिर खपाने पर भी ऐसा दंड नहीं सोच सकते। उसे छोड़ पूर्णत स्वतत्र छोड़ दो। यही उसका दंड होगा।

इसी समय एक अद्भुत घटना घटी। आकाश में भयंकर गर्जन हुआ यद्यपि वहाँ बादलों का नाम निशान भी नहीं था। इस गर्जना द्वारा देवताओं ने दंड की इस विधि को स्वीकर कर लिया था। सबने सिर झुकाए और बिखर गए। मगर वह युवक, जिसको अब 'लारा' का नाम दिया गया था, जिसका अर्थ था, जाति से निकला हुआ', उन आदमियों पर, जो उसे छोड़कर जा रहे थे, बड़ी जोर से हँसा। जब वह अकेला रह गया, अपने पिता की तरह पूर्ण स्वतंत्र तो पुनः एकबार जोर से हँसा। परन्तु उसका पिता मानव जाति का नहीं था जब कि वह स्वयं मानव था। इसलिए उसने पक्षी के समान स्वतंत्र जीवन बिताना प्रारम्भ कर दिया। वह उन लोगों के डेरों में घुस जाता और उनके जानवरों, लड़कियों और अपनी मनपसन्द चीजों को चुपचाप चुरा ले जाता। वे उस पर तीर बरसाते, परन्तु उसका शरीर उस भयानक दण्ड के अप्रत्यक्ष प्रभाव से रक्षित था—उसकी मृत्यु नहीं हो सकती थी। वह अमर था। वह बड़ा फुर्तीला, लालची, ताकतवर और निर्दयी था। परन्तु वह आदमियों के सामने कभी नहीं पड़ता था। वह हमेशा कुछ दूरी पर ही दिखाई देता। और इस प्रकार वह उस जाति के गाँवों में बहुत समय तक, सैंकड़ो वर्षों तक चक्कर काटता रहा। परन्तु एक दिन वह आबादी के बहुत पास आ गया और जब मनुष्य उसे पकड़ने दौड़े तो वह भागा नहीं और न उसने अपनी रक्षा करने का ही प्रयत्न किया। उनमें से एक आदमी समझ गया और उसने चिल्लाकर दूसरों को चेतावनी दी—

"उसे पकड़ना मत। वह मरना चाहता है।"

वे सब एकदम रुक गए। वे नहीं चाहते थे कि जिस व्यक्ति ने इतना भयङ्कर अपराध किया है, मृत्यु से उसकी यंत्रणा कम हो जाय। वे उसे मारना नहीं चाहते थे। वे रुककर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। वह खड़ा हुआ उनकी कठोर बातों को सुनता रहा और हँसता रहा। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने हृदय को टटोलने का प्रयत्न कर रहा हो। अचानक वह झपटा और एक चट्टान उठाकर उन लोगों को मारने दौड़ा।

परन्तु वे उसके वारों को बचाते रहे और लौटकर उस पर किसी ने भी चोट नहीं की। अन्त में श्रान्त होकर निराशा की एक भयकर चीख उसके गले से निकली और वह जमीन पर गिर पड़ा। वे दूर खड़े होकर उसे देखते रहे। वह थोड़ा सा उठा और उस भाग दौड़ में गिरे हुए एक खंज़र को उठाकर अपने सीने में घोंपने का प्रयत्न किया परन्तु वह खंजर उसके सीने से इस प्रकार टकराया जैसे पत्थर पर मारा गया हो। वह पुनः जमीन पर गिर पड़ा और अपना सिर पत्थरों से फोड़ने लगा। उन चोटों से जमीन पर गड्ढे बन गए परन्तु उसके कहीं खरोंच तक न आ सकी।

"वह नहीं मर सकता।" वे लोग प्रसन्नता से चीखे।

"वे उसे छोड़कर चले गए। वह ऊपर को मुँह किए जमीन पर पड़ा रहा। उसने चीलों को, काले धब्बे की तरह, दूर आसमान में मड़राते देखा और उसकी आँखों में क्रूरता का विष लहरा उठा जिससे वह पूरे संसार को खाक बना सकता था। तब से वह मृत्यु की प्रतीक्षा करता हुआ नितांत एकाकी घूमा करता है। और इस प्रकार वह निरन्तर, चारों ओर घूमता फिरता है ·· ··। तुमने देखा? वह बिलकुल छाया की तरह है और वह अनन्त काल तक ऐसा ही रहेगा। वह न तो मनुष्यों की बोली को समझ सकता है और न उसकी समझ में इनके कार्य ही आते हैं। वह कुछ भी नहीं समझ पाता। वह घूमने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करता जैसे कोई चीज ढूँढ़ता फिर रहा हो। न वह जीवन का सुख जानता है और न मौत ही उस पर रहम करती है। मानवों के संसार में उसे कोई स्थान नहीं·· ··। इस प्रकार घमण्डी व्यक्ति को अपने घमण्ड के लिए सजा दी गई थी!"

उस बुढ़िया ने गहरी सांस ली और चुप होगई। उसका सीने पर झुका हुआ सिर कई बार एक अनोखे तरीके से इधर उधर हिला। मैंने उसकी ओर देखा। मुझे ऐसा लगा कि उस पर नींद का असर हो रहा है और किसी अज्ञात कारण से मेरा हृदय उसके लिए वेदना से भर उठा। उसने अपनी कहानी को अत्यन्त सुन्दर और चेतावनी देने वाले ढङ्ग से समाप्त

किया था। इतना सब कुछ होते हुए भी उसमें एक शङ्कित और गुलाम मन की सी घुटन थी।

तट पर लोग अनोखे ढङ्ग से गा रहे थे। पहले एक पतली, मधुर लहराती हुई आवाज़ आई। इसने गीत की दो तीन कड़ियाँ गाईं फिर एक दूसरी आवाज़ ने इस गीत को प्रारम्भ से गाना शुरू किया। पहली आवाज पूर्ववत् गाती रही। इसके उपरान्त एक तीसरी, चौथी और पाँचवीं आवाज ने इस गीत को गाया—एक दूसरे के बाद। अचानक वही गीत पुनः प्रारम्भ किया गया। इस बार कई आदमी मिलकर उसे गा रहे थे।

प्रत्येक स्त्री की आवाज दूसरों की आवाज से बिल्कुल अलग सुनाई दे रही थी। उन सब के सम्मिलित स्वरों से संगीत की ऐसी धारा प्रवाहित हो उठी थी जैसे इन्द्रधनुषी रंगों वाला एक पहाड़ी झरना पहाड़ की ऊँची नीची जमीन पर उछलता कूदता कलकल करता बह रहा हो। उन स्त्रियों का वह मधुर स्वर जब पुरुष कंठों से निकले हुए स्वर से मिलता तो ऐसा प्रतीत होता मानो नीचे से जल का एक भीषण प्रवाह, झरने के उस कोमल प्रवाह को आत्मसात् करने, भयंकर लहरें उत्पन्न करता हुआ, निरन्तर ऊपर चढ़ा जा रहा हो।

संगीत के इन स्वरों में समुद्र का गर्जन डूब गया था।

[२]

"तुमने कभी ऐसा संगीत अन्यत्र भी सुना है!" इज़रगिल ने सिर ऊँचा कर तथा मुस्कराकर अपना पोपला, बिना दाँतों वाला मुख खोलते हुए पूछा।

"नहीं। मैंने ऐसा संगीत अन्यत्र कहीं भी नहीं सुना ···· "

"और न तुम कभी सुन सकोगे। तुम गाने के बहुत शौकीन मालूम पड़ते हो। केवल सुन्दर व्यक्ति, जिन्हें जीवन से प्रेम है, अच्छा गाना गा सकते हैं। इन जीवन को प्रेम करते हैं। यहाँ गाने वाले वे मनुष्य

क्या दिन भर के परिश्रम से बुरी तरह थके हुए नहीं हैं ? उन्होंने सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त घोर परिश्रम किया। परन्तु जैसे ही चाँद निकला उन्होंने गाना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु वे लोग, जो भली प्रकार जीना नहीं जानते, सोने चले गए होंगे और वे लोग जो जिन्दगी को आनन्द से भरी पूरी मानते हैं—गा रहे हैं।"

"परन्तु उन्हें तन्दुरुस्ती · · ·" मैंने कहना प्रारम्भ किया।

"जीवित रहने के लिए प्रत्येक का स्वास्थ्य ठीक होता है। स्वास्थ्य ! अगर तुम्हारे पास पैसा है तो क्या तुम उसे खर्च नहीं करोगे। स्वास्थ्य भी धन की तरह है। तुम जानते हो जब मैं जवान थी तब मैंने क्या किया था ? मैं सूर्योदय से सूर्यास्त तक बराबर गलीचे बुना करती थी, बिना एक क्षण भी विश्राम किए। मैं सूर्य किरन के समान जीवन के प्रकाश से भरी हुई थी, परन्तु फिर भी मुझे दिन भर बिना हिले डुले एक ही स्थान पर मूर्ति की तरह बैठा रहना पड़ता था। और मैं इतनी देर तक बैठी रहती थी कि मेरी हड्डियाँ दर्द करने लगती थीं। लेकिन रात होते ही मैं भाग कर अपने प्रेमी के पास पहुँच जाती और उसे आलिंगन में आबद्ध कर लेती। मैं लगातार तीन महीने तक ऐसा करती रही जब तक कि प्रेम का उफान शान्त न हो गया। मैं पूरी रात उसके साथ बिताती और फिर भी मैं अब तक जीवित हूँ। मेरी धमनियों में काफी खून है। मैंने जीवन में कितना प्यार किया है, कितने चुम्बनों का आदान प्रदान हुआ है और · · ·"

मैंने उसकी आँखों में गहराई से देखा। उसकी काली आँखें निष्प्रभ थीं। इन सुखद स्मृतियों ने भी उनमें जीवन की चमक नहीं जगा पाई थी। चाँद की रोशनी में उसके सूखे, पपड़ी पड़े हुए होंठ, भूरे बालों वाली सावली ठोढ़ी और झुर्रियोंदार नाक जो उल्लू की चोंच सी दिखाई दे रही थी, चमक रही थी। उसके गालों में गड्ढे पड़ गए थे जिनसे राख जैसे रंग के मटमैले बाल चिपके हुए थे। ये बाल उस लाल रंगवाले ऊनी शाल के थे जिसे वह अपने सिर पर बाँधे रहती थी। उसका चेहरा, गर्दन और हाथ झुर्रियों से भरे हुए थे। प्रत्येक बार जब वह हिलती

तो मुझे ऐसा लगता कि कहीं उसकी यह सूखी हुई खाल चटक कर और टुकड़े-टुकड़े होकर नीचे न गिर पड़े और मेरी आँखों के सामने काली निष्प्रभ आँखों वाला कोई कंकाल खड़ा रह जाय।

उसने पुनः अपनी कांपती और कर्कश आवाज़ में कहना शुरू किया :

"बिरलत नदी के किनारे, फालमा नामक स्थान में मैं अपनी मां के साथ रहती थी। मैं पन्द्रह वर्ष की थी जब वह पहली बार हमारे खेत पर आया। वह लम्बा और सुन्दर था। उसकी मूँछें काली थीं। और वह अत्यन्त हँसमुख प्रतीत होता था। वह एक नाव में बैठकर आया और उसने सुरीली मधुर आवाज़ में पुकारा जिससे कि हम खिड़की से उसे सुन लें—"ए! क्या तुम्हारे पास कोई शराब है और खाने के लिए भी कुछ है?" मैंने खिड़की से बाहर झाँका और अखरोट के पेड़ की शाखों में से नदी की ओर देखा जो चाँद की रोशनी में बिलकुल नीली दिखाई दे रही थी। वह एक छोटी कमीज पहने हुए था। कमर में एक चौड़ी पेटी बँधी थी जिसके दोनों छोर लटक रहे थे। वह एक पैर नाव में तथा दूसरा किनारे पर रखे हुए झूमता हुआ गा रहा था। मुझे देखकर बोला—"कितनी सुन्दर छोकरी यहाँ रहती है और मुझे मालूम भी न हुआ?" जैसे कि वह मुझे छोड़कर संसार भर की सब सुन्दर लड़कियों को जानता हो। मैंने उसे शराब और सुअर का उबला हुआ गोश्त दिया। इसके चौथे दिन मैंने पूर्ण रूप से अपने को उसे दे दिया। रात को हम दोनों एक साथ नाव पर घूमने जाते। वह रोज़ आता और गिलहरी की तरह धीमी सीटी बजाता। मैं एक मछली के समान खिड़की में होकर नदी में कूद पड़ती और तब हम दूर, बहुत दूर तक नाव खेते चले जाते। वह प्रुट नदी पर मल्लाह का काम करता था। बाद में जब मेरी मां को सब कुछ मालूम पड़ गया और उसने मुझे मारा तो मेरे प्रेमी ने मुझे अपने साथ दोब्रुजा भाग चलने के लिए कहा। वह उससे भी आगे डेन्युब नदी की सहायक नदियों की ओर जाने को तैयार था। परन्तु तब तक उसके प्रति मेरा प्रेम समाप्त हो चुका था क्योंकि वह केवल गाता और चुम्बन लेता था, इससे अधिक और कुछ नहीं करता था। मैं उससे ऊब

निस्तब्ध हो गई थीं—समुद्र की उन गरजती हुई लहरों की ध्वनि ने उन्हें डुवा दिया था क्योंकि हवा तेज चलने लगी थी। "मैं एक तुर्क को भी प्यार करती थी। मैं स्कुतरी में उसके हरम में रहती थी। मैं वहाँ पूरे एक हफ्ते रही वहाँ का जीवन इतना बुरा तो नहीं था परन्तु मैं उससे ऊब उठी। वहाँ चारों ओर स्त्रियाँ—केवल स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ थीं। उनकी संख्या आठ थी। दिन भर वे खातीं, सोती और बेवकूफी की बातें करतीं—यही उनके काम थे। या वे आपस में मुर्गियों की तरह लड़ने लगतीं। वह तुर्क अब जवान नहीं रहा था। उसके लगभग सभी बाल सफेद हो गए थे और वह बेहद मोटा दिखाई देने लगा था। वह मालदार भी था। और एक पादरी की तरह बातें करता था। उसकी आखे काली और इतनी मर्म भेदिनी थीं कि उनसे वह आपके हृदय का पूरा भेद मालूम कर लेने की क्षमता रखता था। वह नमाज पढ़ने का भी बहुत शौकीन था। मैंने सबसे पहले उसे बुखारेस्ट मे देखा—बाज़ार में घूमते हुए। वह एक राजा की तरह सिर उठाकर चल रहा था। मे उसे देखकर मुस्कराई। उसी दिन शाम को मुझे पकड़कर उसके घर ले जाया गया। वह चन्दन और नारियल की लकड़ी का व्यापार करता था और बुखारेस्ट कुछ माल खरीदने आया था। उसने मुझसे पूछा—'क्या तुम मेरे साथ चलोगी ? 'हाँ, अवश्य' 'ठीक है।' और मै उसके साथ चली आई। वह तुर्क बहुत धनी था उसके एक बेटा था-छोटा सा सावले रग का सुन्दर लड़का। वह लगभग सोलह वर्ष का होगा। उसके साथ मै तुर्क के यहाँ से भाग निकली और भागकर बल्गेरियन पहुची। वहाँ एक बल्गेरियन औरत ने अपने प्रेमी के कारण मेरी छाती में छुरा मार दिया। वह आदमी उसका प्रेमी था य पति-मुझे ठीक तरह से याद नहीं।"

"मै पादरिनों के एक मठ मे बहुत दिनो तक बीमार पड़ी रही। पालेन्ड की रहने वाली एक लड़की ने मेरी सेवा-सुश्रुषा की। उसका एक भाई था जो अरजार-पालक्का के पास एक मठ का पादरी था। यह कभी कभी मुझसे मिलने आया करता था। मेरे सामने वह एक कीड़े की तरह

बिलबिलाता रहता। स्वस्थ होने पर मैं उनके साथ उनके देश पोलेन्ड को चली गई।"

"जरा ठहरो! उस छोटे तुर्क का क्या हुआ?"

"वह लड़का? मर गया। मैं नहीं जानती कि वह घर की याद में मरा या प्रेम के कारण परन्तु वह पीला पड़ गया—एक नए पौधे की तरह जो सूर्य की तेज धूप में मुरझा जाता है। वह धीरे २ सूखता गया। उसकी वह दशा अब भी मेरी आँखों के सामने चित्र के समान स्पष्ट हो उठती है। वह बर्फ के टुकड़े की तरह बिलकुल नीला पड़ गया था परन्तु प्रेम की अग्नि अब भी उसके भीतर जल रही थी। वह मुझसे बराबर अपने ऊपर झुककर चूमने की प्रार्थना करता था। मैं उसे प्यार करती थी और मुझे याद है कि मैंने उसे खूब चूमा था। फिर उसकी हालत बहुत खराब हो गई। वह मुश्किल से चल फिर सकता था। शय्या पर लेटा हुआ मुझसे अत्यन्त दीनतापूर्वक, एक भिखारी के समान, भीख सी माँगा करता कि मैं उसकी बगल में लेटकर उसे गरमी पहुचाती रहूं। मैं उसकी बात मान लेती और जैसे ही मैं उसके पास लेटती वह आग की तरह उत्तेजित हो उठता। एकबार जब मैं जगी तो देखा कि वह बिलकुल ठण्डा पड़ गया था। उसकी मृत्यु हो गई थी। मैं उसके ऊपर बहुत देर तक रोती रही। कौन कह सकता है कि शायद मैंने ही उसकी हत्या की थी। उस समय अवस्था में मैं उससे दुगनी बड़ी और पूर्ण स्वस्थ, सबल और उत्साह से भरी हुई थी और वह "वह एक छोटा सा बालक था!"

उसने गहरी सांस ली—और मैंने पहली बार देखा कि उसने तीनबार क्रोस का चिह्न बनाया और अपने सूखे होंठों ही होंठों में कुछ बड़बड़ा उठी।

"अच्छा, तो तुम पोलेन्ड चली गईं," मैंने उसे कहानी जारी रखने के लिए उकसाया।

"हाँ……उस पोल के साथ। वह एक नीच और कुत्सित व्यक्ति था। जब उसे औरत की जरूरत होती तो एक जवान बिलौटे की तरह तिरछा चलता हुआ मेरे पास आता और मुझसे गर्म शहद के समान मीठे

परन्तु वासना की ज्वाला से जलते हुए शब्दों में बातें करता। लेकिन जब उसे मेरी जरूरत नहीं होती तो वह मुझे खाने को दौड़ता और उसके शब्द कोड़ों का सा भयंकर आघात करते। एक बार हम लोग नदी तट पर घूमते चले आ रहे थे। उस समय मेरे प्रति उसका व्यवहार बड़ा उद्दन्डता पूर्ण और आक्रमणकारी का सा हो उठा। ओह! ओह!! क्या मैं उस समय पागल हो उठी थी। मैं गुस्से से उबल रही थी। मैंने उसे बच्चे की तरह हाथों पर उठा लिया, वह एक छोटा सा आदमी था, और उसे इस बुरी तरह भींचा कि कष्ट से चेहरा सफेद पड़ गया। और तब मैंने उसे जोर से घुमाकर नदी में फेंक दिया। वह जोर से चीखा। उसकी वह चीख कितनी अद्‌भुत थी। मैंने उसे पानी में छटपटाते देखा और घर चली आई। उसके बाद मैं उससे कभी नहीं मिली। इस मामले में मैं बहुत भाग्यशालिनी थी। मैं उस आदमी से जीवन में फिर कभी नहीं मिली जिसे मैंने कभी प्यार किया था। इस तरह की मुलाकातें बड़ी दुखदायी होती हैं। उनसे मिलते समय ऐसा लगता है मानो मुर्दे से मिल रहे हो।

वह बुढ़िया बोलते २ चुप होगई और एक गहरी साँस ली। मैं कल्पना में उन व्यक्तियों के चित्र बनाने लगा जिन्हें उस बुढ़िया ने अपनी कथा के रूप में पुनर्जीवित कर दिया था। वह आग के से लाल रंग वाला, गलमुच्छे धारण किए हुजूलियन, पाइप पीता हुआ चुपचाप फाँसी के तख्ते की ओर जाता हुआ। सम्भव है कि उसकी आँखें नीली और शान्त थीं जिनके द्वारा वह प्रत्येक वस्तु को पूर्ण दृढ़ता और तन्मयता से देखने का आदी था। उसकी बगल में काले गलमुच्छों वाला प्रुट का निवासी वह मछुआ है जो मरना नहीं चाहता इसलिए रो रहा है। मृत्यु की कल्पना से उसका चेहरा पीला पड़ गया है, उसकी वे प्रसन्नता से नाचती हुई आँखें सूनी सी होगई हैं और उसकी मूछें, आँसुओं से भीगकर, निराश होकर उसके वेदना से ऐंठे हुए-मुख के दोनों ओर लटक रही हैं ... और वह बुड्ढा थल थल शरीर वाला तुर्क जो सम्भवत, एक भाग्यवादी और क्रूर

व्यक्ति है······उसकी बगल में उसका पुत्र, जो एक सुन्दर, कोमल, फूल के समान है जिसे जहरीले चुम्बनों ने मुरझा दिया है···और वह घमण्डी पोल, नम्र और क्रूर, वकवादी और खामोश··· ये सब केवल अस्पष्ट छाया सी लगती हैं। और वह जिसका इन लोगों ने आलिंगन किया था मेरे पास जिन्दा बैठी हुई थी परन्तु समय की चोट से मुरझाई हुई, जिसका शरीर टूट गया है, रक्त सूख चुका है, हृदय की सम्पूर्ण अभिलाषाऐं मर चुकी हैं, नेत्रों से जीवन की ज्योति गायब हो चुकी है—वह केवल एक छाया सी रह गई है। मगर फिर भी जिन्दा है।

उसने पुनः कहना प्रारम्भ किया :

"पोलेन्ड में मेरे दिन वड़े कष्ट में वीते। वहाँ के आदमी वडे कायर और झूँठे हैं। मैं उनकी सांप की सी दुरंगी चाल को समझने में असमर्थ रही। वे वात करते समय फुसकारते थे। वे क्यों फुसकारते थे? ईश्वर ने ही उनके चरित्र में यह दुरंगी चाल भर दी थी। क्योंकि वे दगाबाज थे। मैं विना यह जाने कि कहाँ जा रही हूँ उस देश में इधर उधर भटकती रही। मैंने देखा कि वे रूसियों के शासन के खिलाफ विद्रोह की तैयारी कर रहे थे। घूमती हुई मैं वोख्नीया शहर पहुँची। वहाँ एक यहूदी ने मुझे खरीद लिया। अपने लिए नहीं परन्तु मुझसे वेश्यावृति कराने के लिए। मैंने इसे स्वीकार कर लिया। जीवित रहने के लिए मनुष्य को कुछ न कुछ तो करना ही पड़ता है। मैं और कुछ नहीं कर सकती थी इसलिए मुझे जीवित रहने की कीमत अपने शरीर से चुकानी पड़ी। लेकिन मैंने मनमें सोचा : जब मेरे पास इतना पैसा हो जायगा जिससे मैं अपने घर खिरलत पहुँच सकूँ तो मैं इस गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंकूँगी चाहे वे कितनी ही मजबूत क्यों न हो। वहाँ मेरी जिन्दगी कितनी अद्भुत थी। रईस आदमी मेरे यहाँ आते और दावतें उड़ाते। मैं बताऊँ, इसमें उनका अधिक खर्च न होता था। वे मेरे लिए आपस में लड़ते और वर्वाद होते। एक ने मुझे पाने के लिए बहुत दिनों तक कोशिश की इसके लिए उसने यह तरीका अपनाया। एक दिन वह अपने नौकर के साथ, जो एक थैला

लिए हुए था, मुझ से मिलने आया। उसने वह थैला लेकर उसका सारा सामान मेरे सिर पर उडेल दिया। मेरे सिर पर चोट पहुँचाते हुए सोने के सिक्के नीचे गिरने लगे। परन्तु उनके फर्श पर टकराने की झनकार ने मेरे मन को प्रसन्नता से भर दिया। इतने पर भी मैंने उसे, खाली वापस लौटा दिया। उसका चेहरा मोटा और गीला तथा पेट एक बड़े तकिए की तरह था। वह एक तन्दुरुस्त सुअर के समान था। हाँ, मैंने उसे भगा दिया, यद्यपि उसने मुझे बताया कि उसने अपनी जमीन, घर, घोड़े आदि सब कुछ इसलिए बेच दिया जिससे वह मुझे सोने से नहला सके। उस समय में घावों से भरे हुए चेहरे वाले एक सज्जन पुरुष से प्रेम कर रही थी। उसके चेहरे पर घाव के आड़े तिरछे निशान थे जिन्हें तुर्कों ने बनाया था जिनसे वह अभी कुछ दिन पहले यूनानियों की ओर से लड़ा था। वह एक बहादुर मनुष्य था। वह जाति का पोल था फिर उसे यूनानियों की ओर से लड़ने की क्या पड़ी थी। लेकिन वह उन्हें दुश्मन से लड़ने में मदद करने के लिए गया। उसके मुँह पर कोड़े मारे गए थे जिससे उसकी एक आँख फूट गई थी। बाँए हाथ की दो उँगलियाँ भी गायब थीं ··· पोल होते हुए भी उसे यूनानियों के लिए चिन्तित होने की क्या पड़ी थी? इसका कारण यह था कि उसे वीरता के कार्य अच्छे लगते थे और जो आदमी इस आदत का होता है वह ऐसे काम करने के मौके ढूँढ ही लेता है। और वे लोग जिन्हें ऐसे काम करने का अवसर नहीं मिलता वे या तो आलसी होते हैं या कायर और या वे यह नहीं जानते कि जिन्दगी किसे कहते हैं क्योंकि अगर आदमी जिन्दगी का असली मतलब समझते होते तो वे सब अपनी मृत्यु के उपरान्त इसकी एक छाया छोड़ जाना चाहते। और फिर जीवन, बिना कोई स्मृति चिन्ह छोड़े, उन्हें इस प्रकार न खा जाता। ओह वह घावों के निशानों वाला आदमी वास्तव में अच्छा आदमी था। वह कोई भी अच्छा काम करने के लिए दुनियाँ के किसी भी कोने में जाने को तैयार रहता था। मेरा ख्याल है तुम्हारे आदमियों ने, बगावत के समय उसे मार डाला। तुम मगयारों ने क्यों लड़े? ठीक है, ठीक है, कुछ मत कहो।"

मुझे बोलने के लिए मना कर बुढ़िया इज़रगिल स्वयं चुप हो गई और विचारों में डूब गई। कुछ देर बाद पुनः बोली :

"मैं एक सगयार को भी जानती थी। एक दिन जब वह मेरे घर से गया तो जाड़ों के दिन थे—फिर वह वसन्त ऋतु में आकर मिला जब बरफ गल चुकी थी। वह एक खेत में पड़ा हुआ था—किसी ने उसके सिर में गोली मार दी थी। तुम्हारा इसके विषय में क्या ख्याल है। तुम जानते हो, प्रेम, प्लेग से भी अधिक, आदमियों की हत्या करता है। मुझे विश्वास है कि यदि तुम इस बात का पता चलाओ तो मेरी बात सत्य प्रमाणित होगी। ... मैं किस विषय में बातें कर रही थी? पोलेन्ड के विषय में ... हाँ, याद आया, मैंने अपना अन्तिम खेल वहीं खेला था। वहाँ मेरी मुलाकात एक बड़े अमीर से हुई। वह बहुत सुन्दर था—शैतान की तरह सुन्दर और आकर्षक। मैं अधेड़ हो चुकी थी, लगभग चालीस साल की। हाँ, मुझे विश्वास है उस समय मैं चालीस वर्ष की ही थी उसे अपने सौन्दर्य का अब भी घमण्ड था और औरतों ने उसे और भी बिगाड़ रखा था। उसे पाने में मुझे बड़े सकट उठाने पड़े...हाँ। वह मुझे एक साधारण स्त्री की तरह अपनाना चाहता था परन्तु मैं इसके लिए कभी तैयार न होती। मैं कभी किसी की गुलाम नहीं बनी। मैंने यह बात उस यहूदी से भी तय की थी। मैंने उसे कमा कर बहुत पैसे दिए थे और अब मैं क्रेको शहर में रह रही थी। उस समय मेरे पास सब कुछ था—घोड़े, सोना और नौकर। वह शैतान की तरह घमण्डी बन कर मेरे पास आता और चाहता कि मैं भागकर उसके सीने से लग जाऊँ। हम आपस में झगड़ते। मुझे याद है इसी के कारण मैं अपने चेहरे की बहुत कुछ कोमलता खो चुकी थी। ऐसा बहुत दिनों तक चलता रहा ... परन्तु अन्त में मेरी विजय हुई ... वह मेरे सम्मुख झुक गया। परन्तु मुझे प्राप्त करने के कुछ ही समय उपरान्त उसने मुझे त्याग दिया। तब मैंने वास्तव में अनुभव किया कि मेरा यौवन बीत चुका था। ओह! ... इसका ज्ञान कितना भयानक था ... ...कितना भयानक! तुम जानते हो, मैं

उस दुष्ट को प्यार करती थी ' ' परन्तु जब हम मिलते तो वह मेरा मज़ाक उड़ाता ' नीच पशु ' ' इतना ही नहीं वह दूसरे आदमियों से भी मेरा मजाक उड़वाता था—मुझे अच्छी तरह मालूम था। मेरे लिए यह सहन करना बड़ा कठिन था। परन्तु फिर भी कम से कम वह मेरे पास तो था और मैं उसे प्यार करती थी जब वह तुम—रूसी लोगों से युद्ध करने चला गया तो मैं उसके वियोग में बीमार पड़ गई। मैंने उसके ख्याल को भुला देने की बड़ी कोशिश की परन्तु असफल रही। अन्त में मैंने उसके पास जाने का निश्चय किया। वह वारसा के नजदीक जगलों में तैनात था।"

"लेकिन जब मैं वहाँ पहुंची तो ज्ञात हुआ कि तुम लोगों ने उन्हें पहले ही हरा दिया है और वह पासके ही एक गाँव में युद्ध बन्दी के रूप में क़ैद है।"

"इसका मतलब था कि अब मैं उसे कभी भी न देख सकूँगी--मैंने मन में सोचा। परन्तु, ओह! मैं उसे देखने के लिए कितनी व्याकुल थी! इसलिए मैंने उससे मिलने का प्रयत्न किया। मैंने एक लगड़ी भिखारिन का रूप बनाया और कपड़े से अपना मुँह ढक कर गाँव में पहुँची। पर गाँव कज्जाकों और सिपाहियों से भरा हुआ था। मैं बड़ी मुश्किल से वहाँ तक पहुच सकी। मैंने उन कैदियों का पता लगा लिया। मैंने देखा कि उन कैदियों तक पहुँचना बड़ा कठिन था। परन्तु किसी भी प्रकार मुझे वहाँ पहुँचना तो था ही। इसलिए एक दिन रात्रि के अन्धकार में रेंगती हुई चुपचाप वहाँ गई--एक तरकारी के खेत में होती हुई, मेंड़ों की आड़ लेती हुई कि अचानक एक सन्तरी ने मेरा रास्ता रोक लिया। मुझे उन कैदियों की गाने की और बातें करने की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। वे ईश्वर की माता का भजन गा रहे थे और उसमें मुझे अपने आर्कड्ेक की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। मुझे अपने वे दिन याद आए जब आदमी मेरे सामने दुम हिलाया करते थे और आज मेरी यह दशा थी कि मैं एक आदमी

के पीछे जमीन पर साँप की तरह रेंग रही थी और सम्भव था कि इसमें मेरी मृत्यु हो जाती। सन्तरी ने मेरी आवाज सुनी और आगे बढ़ा। अब मैं क्या करती? मैं उठ खड़ी हुई और उसकी ओर बढ़ी। मेरे पास न तो कोई चाकू था और न कोई और चीज मेरे पास उस समय केवल मेरे हाथ और जबान की ही ताकत थी। मुझे अफसोस हो रहा था कि मैं अपना खन्जर क्यों न ले आई। मैंने फुसफुसाते हुए कहा—'ठहरो'। परन्तु उस सन्तरी ने अपनी सङ्गीन मेरे सीने पर अड़ा दी। मैंने धीमी आवाज में उससे कहा—'मुझे मारो मत, ठहरो। यदि तुम्हारे हृदय है तो मेरी बात तो सुन लो। मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है परन्तु मैं तुमसे भीख मांगती हूँ।' उसने अपनी बन्दूक नीची करली और धीमी आवाज में मुझसे कहा— ए औरत भाग जाओ। तुम यहाँ क्या करती हो? मैंने उसे बताया कि यहाँ मेरा पुत्र बन्दी है सिपाही, समझे,''' मेरा बेटा। तुम्हारे भी एक माँ होगी? है न? तो मुझे देखो'''मेरे भी तुम्हारी ही तरह एक पुत्र है और वह यहाँ बन्दी है। मुझे केवल एक बार उसे देख लेने दो। शायद उसे शीघ्र ही मरना पड़े और सम्भव है कि कल तुम भी मारे जाओ? उस समय क्या तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए नहीं रोयेगी? क्या तुम्हारे लिये यह दुखदायी नहीं होगा कि तुम बिना अपनी माँ को देखे ही मर जाओगे? ऐसी ही दशा मेरे पुत्र की भी होगी। अपने ऊपर मेरे उस बेटे के ऊपर और मेरे ऊपर—एक माँ के ऊपर—रहम करो।"

"ओह! कितनी देर तक मैं उससे विनती करती रही। पानी पड़ रहा था और हम दोनों भीग गये थे। वायु जैसे क्रुद्ध होकर फुसकारती हुई मेरे थप्पड़ मार रही थी—कभी पीठ पर और कभी छाती पर। मैं उस सङ्ग दिल सैनिक के सम्मुख खड़ी काँप रही थी परन्तु वह कहता जा रहा था—"नहीं? कदापि नहीं!" और प्रत्येक बार जब मैं उस शान्त और उपेक्षापूर्ण शब्द को सुनती तो मेरे हृदय में अपने आर्कडेक को देखने की अभिलाषा और बलवती हो उठती। बात करते करते अचानक मैंने उस सिपाही को पकड़ लिया—वह ठोटा सा

दुबला पतला आदमी था और खाँस रहा था। मैंने उसके सामने जमीन पर बैठकर उसके घुटने पकड़ लिए और उत्तेजनापूर्ण शब्दों में उससे भीतर जाने की आज्ञा माँगने लगी। अचानक मैंने जोर से उसके घुटने खींच लिए और वह कीचड़ में जा गिरा? जल्दी से मैंने उसका मुँह नीचे कीचड की ओर पलट कर जोर से दबा दिया जिससे कि वह चिल्ला न सके। परन्तु वह चिल्लाया नहीं। वह केवल मुझे अपनी पीठ पर से फेंक देने के लिए छटपटाता रहा। मैंने अपने दोनों हाथों का पूरा जोर लगा कर उसका मुँह कीचड में और गहरा घुसेड़ दिया जिससे उसकी दम घुट गई। फिर मैं तेजी से उस घेरे की ओर दौड़ी जहाँ पोल कैद थे। "आर्कडेक" मैंने, एक दीवाल की सँधि मे से धीरे से पुकारा। उन पोलों के कान बड़े तेज थे। उन्होंने मेरी आवाज सुनकर गाना बन्द कर दिया। मैंने अपने बिल्कुल सामने उसके नेत्रों को ताकते देखा। "क्या तुम बाहर आ सकते हो—" मैं धीरे से फुसफुसाई। "हाँ, फर्श पर रेंग कर"—उसने कहा। "तो आ जाओ।" और उनमें से चार रेंग कर घेरे के बाहर आ गए—तीन अन्य और चौथा मेरा आर्कडेक। "सन्तरी कहाँ है?" आर्कडेक ने मुझसे पूछा। "वह वहाँ पड़ा हुआ है।" और हम चुपचाप रेंगने लगे—बिल्कुल धीरे धीरे, जमीन से सट कर। मूसलाधार वर्षा हो रही थी और हवा गरज रही थी। हम लोग गाँव छोड़ कर एक जंगल में घुसे और बहुत दूर तक चुपचाप चलते रहे। हमारी रफ्तार तेज थी। आर्कडेक मेरा हाथ थामे हुए था। उसका हाथ गर्म था और उत्तेजना से काँप रहा था, मुक्ति की उत्तेजना से। ओह! मुझे उसके साथ चलने में कितना आनन्द आ रहा था। वह चुप था। वे अन्तिम क्षण थे, मेरी इस लालची जिन्दगी के अन्तिम सुन्दर क्षण। अन्त में हम एक चौरस मैदान में पहुचे और रुक गए। उन चारों ने मुझे धन्यवाद दिया। ओह, बहुत देर तक वे ऐसी बातें करते रहे जो मेरी समझ में नहीं आ रही थीं! मैं चुपचाप उनकी बातें सुन रही थी। परन्तु मेरी आँखें अपने आदमी पर जमी हुई थीं यह सोचते हुए कि अब वह क्या कहेगा। अचानक उसने मेरा आलिंगन किया और अत्यन्त

गम्भीरता पूर्वक बोला'' ''''मुझे ठीक याद नहीं कि उसने क्या कहा था कि वह इस उपकार के बदले—मैंने भागने में उसकी जो मदद की है—मुझे प्रेम करेगा। और उसने मेरे सामने घुटनों के बल बैठ कर मुस्कराते हुए कहा—"मेरी रानी।" कृतघ्न कुत्ता! मैं ऐसी पागल हो उठी कि मैंने कस कर उसके एक ठोकर दी और उसके मुँह पर थप्पड़ मारना चाहती थी कि वह लड़खड़ाया और उछल कर खड़ा हो गया। वह पीला पड़ गया और खड़ा २ मुझे धमकाता रहा। बाकी के तीनों मुझे घूर रहे थे। परन्तु किसी ने एक भी शब्द नहीं कहा। मैंने उनकी ओर देखा और मुझे उनके प्रति घृणा और उपेक्षा हो उठी—मुझे अच्छी तरह याद है कि उस समय मेरे मनमें उनके प्रति यही भावनायें थी। मैंने उनसे कहा—"चले जाओ"। बदले में उन कुत्तों ने मुझसे पूछा—"क्या तुम वापस जाकर दुश्मनों को यह बता दोगी कि हम किस मार्ग से भागे हैं?" वे कितने नीच थे। फिर भी चली आई। दूसरे दिन तुम्हारे रूसियों ने पकड़ लिया लेकिन शीघ्र ही छोड़ दिया। उस समय मैंने अनुभव किया कि अब मुझे अपने लिये कहीं एक घर बना लेना चाहिए। मैं स्वतंत्र बुलबुल के से इस जीवन से ऊब उठी थी। मैं थक गई थी, मेरे पंखों की शक्ति नष्ट हो चली थी और मेरे परों की चमक मारी गई थी। हाँ, यह उपयुक्त। इसलिए मैं वहाँ से पहले गैलीसिया गई और फिर डोम्ब्जा पहुची। तब से मैं बराबर यहीं रह रही हूँ—लगभग पिछले तीस वर्षों से। मेरा एक पति था—मोल्डेविया का निवासी। वह एक वर्ष पहले मर गया। और अब मैं ऐसा जीवन बिता रही हूँ, एकाकी। परन्तु यह पूर्ण रूप से एकाकी नहीं है। वे लोग मेरे साथी हैं।"

इतना कहकर उसने समुद्र की ओर हाथ का इशारा किया। तट पर अब पूर्ण शान्ति थी। कभी कभी एक बहुत धीमा अस्पष्ट शब्द सुनाई देता और शीघ्र ही शान्त हो जाता।

"वे मुझे प्यार करते हैं। मैं उन्हें ऐसी ही मजेदार बातें सुनाती हूँ और वे इन्हे पसन्द करते हैं। वे सब अभी जवान हैं ..... उनके साथ रहना अच्छा लगता है। मै उन्हें देखकर अपने विषय में सोचने लगती हूँ, एक समय मै भी ऐसी ही थी ..... परन्तु उस समय के मनुष्यों में अधिक बल और उत्साह था। यही कारण था कि उस समय जीवन आज से अधिक प्रसन्न और अच्छा था।"

वह खामोश होगई। मैं उसके पास बैठे बैठे दुखी हो उठा। परन्तु वह ऊँघ रही थी। उसका सिर हिलता जाता था और वह अपने आप कुछ बडबड़ा रही थी, शायद प्रार्थना कर रही हो। समुद्र से एक बादल उठा काला विशाल—एक पर्वत के समान जैसे किसी पर्वत श्रेणी की चोटियाँ उठ रही हों। यह मैदान के ऊपर रेंगता हुआ बढ़ रहा था। जैसे जैसे यह आगे बढ़ता जाता था। इसमें से छोटे छोटे टुकड़े टूट टूट कर इससे आगे भागे चले जारहे थे—एक के बाद दूसरे तारों को ढकेलते हुए। समुद्र का गर्जन गम्भीर हो उठा था। हमसे कुछ दूर पर उगी हुई अँगूर की बेलों से एक प्रकार की चुम्बनों की फुसफुसाहट की और गहरी साँस लेने की सी आवाज़ आ रही थी। दूर मैदान मे एक कुत्ता भौंक उठा। हवा मे एक विचित्र प्रकार की गन्ध भर गई जिसने हमारी नसों को व्याकुल बना दिया—और हमारी नाक को गुदगुदा दिया। आकाश में उड़ते हुए उन बादलों की विभिन्न प्रकार की छायायें पृथ्वी पर रेंग रहीं थीं जैसे चिड़ियों का कोई झुण्ड उड़ा जा रहा हो—कभी छिप जाता हो और कभी फिर दिखाई देने लगता हो। चन्द्रमा एक गोल धुँधले धब्बे सा दिखाई दे रहा था और कभी कभी यह भी बादल के किसी टुकड़े के पीछे छिप जाता था। और दूर घास के मैदानों में जो [illegible] काले और अस्पष्ट हो उठे थे, छोटी छोटी नीली रोशनियाँ दिखाई पड़ रही थीं, जैसे कि वह मैदान अपने में कुछ छिपाने का प्रयत्न कर रहा हो। [illegible] क्षण के लिए चमकती—कभी यहाँ और कभी वहाँ और गायब [illegible] मानों बहुत से आदमी उस मैदान में फैले हुए दियासलाई

जला जला कर कुछ ढूंढ़ने का प्रयत्न कर रहे हों जिन्हें हवा तुरन्त बुझा देती थी। वे आग की नीली लपटों सी दिखाई दे रही थीं और उनमें कुछ रहस्य सा भरा प्रतीत होता था।

"क्या तुम्हें कुछ चमक दिखाई दे रही है?" इज़रगिल ने मुझसे पूछा।

"क्या? वे नीली लपट सी?" मैंने दूर मैदान की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"नीली? हाँ वही..........अच्छा तो वे अब भी चमक रही हैं। अच्छा, ठीक! परन्तु अब वे मुझे दिखाई नहीं पड़तीं। अब ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो मुझे नहीं दीखतीं।"

"वे चिनगारियाँ से आती हैं?" मैंने उस बुढ़िया से पूछा।

मैंने इन चिनगारियों के विषय में पहले भी कुछ सुना था परन्तु मैं उस बुढ़िया से उनके विषय में सुनना चाहता था।

"वे चिनगारियाँ दान्को के जलते हुए हृदय से निकल रही हैं।" उसने कहा—"पुराने जमाने में एक हृदय था जो एक बार फट गया और उसमें से लपटें निकलने लगीं। ये चिनगारियाँ उन्हीं लपटों से निकल रही हैं। मैं तुम्हें इसकी कहानी सुनाऊँगी। यह भी एक पुरानी कहानी है—पुरानी, बहुत पुरानी। आज कल ऐसा कहीं नहीं होता—न वे बहादुरी के कारनामे ही हैं- न वैसे आदमी ही रहे और न वैसी कहानियाँ ही सुनने में आती हैं। क्यों?.......... तुम बता सकते हो? ....नहीं तुम नहीं बता सकते? ....तुम जानते ही क्या हो? तुम नए लड़के कुछ भी नहीं जानते? ऊँह...... अगर तुम गुजरे हुए जमाने को अच्छी तरह से जानने की कोशिश करो तो वहाँ तुम्हें अपनी सब पहेलियों का उत्तर मिल जायगा...... मगर तुम लोग जाने का प्रयत्न ही नहीं करते और इसीलिए इस संसार में भली प्रकार जीना भी नहीं जानते। क्या मैं नहीं जानती कि आजकल मनुष्य कैसे जीवन व्यतीत करते हैं? ओह! मैं जब देखती हूँ हालांकि अब मेरी आँखें इतनी तेज नहीं रहीं जैसी कि पहले थीं। मैं देखती हूँ

कि आज मनुष्य अच्छी तरह जीना नहीं जानते; वे पेट के लिए दिन रात परिश्रम करते रहते हैं और सारा जीवन इसी में बिता देते हैं। और जीवन में भोगने योग्य सभी अच्छी वस्तुओं से वंचित रह कर अपना सम्पूर्ण समय नष्ट कर अन्त में भाग्य को दोष देने लगते हैं। भाग्य से और इससे क्या सम्बन्ध? प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है। मैं आज कल के हर तरह के आदमी देखती हूँ परन्तु मुझे बहादुर और मजबूत आदमी नहीं दिखाई देते। वे सब कहाँ चले गए·········? और अब सुन्दर आदमी तो बहुत ही कम रह गये हैं।"

वह बुढ़िया विचारों में खो गई—उन बहादुर और सुन्दर पुरुषों और स्त्रियों का क्या हुआ? वे कहाँ गायब हो गए? और वह उस अन्धेरे मैदान की ओर टकटकी बाँध कर देखने लगी मानो वहाँ अपने प्रश्नों का उत्तर ढूँढ रही हो।

मैं चुपचाप उसकी कहानी का इन्तजार करता रहा क्योंकि मुझे भय था कि अगर मैंने उससे कुछ और पूछा तो वह तुरन्त अपने असली मार्ग से भटक जायगी और इधर उधर की बातें करने लगेगी।

अन्त में उसने बोलना प्रारम्भ किया और यह कहानी सुनाई—

२

पुराने जमाने में बहुत पहले, घास के मैदानों में एक जाति रहती थी जिसके तीन ओर अत्यधिक घना जङ्गल था। उस जाति के लोग खुशमिजाज, ताकतवर और बहादुर थे। परन्तु एक दिन उन पर भयङ्कर मुसीबत आई। किसी अज्ञात प्रदेश से आकर कुछ विदेशी जातियों ने उन्हें भगाकर उस घने जङ्गल में दूर तक खदेड़ दिया। वह जङ्गल घना और दलदलों से भरा हुआ था क्योंकि उसमें उगे हुए वृक्ष बहुत पुराने, और लम्बे थे। उनकी शाखाएं आपस में इस तरह उलझी हुई थीं कि प्रकाश भी नहीं दिखाई देता था। सूर्य की किरणें उस घनी हरियाली को चीर कर बड़ी मुश्किल से जमीन तक पहुंच पाती थीं। सूर्य की किरणें जमीन पर पहुँच कर दुर्गन्धपूर्ण गैस उत्पन्न कर देती थीं जिससे आदमी

तुरन्त मर जाते थे। उस भागी हुई जाति की औरतें और बच्चे इससे बुरी तरह व्याकुल होकर रोने लगे और पुरुष जीवन से निराश हो गए। उन्होंने अनुभव किया कि यदि उन्हें जीवित रहना है तो यह जङ्गल छोड़ना पड़ेगा लेकिन ऐसा करने के केवल दो ही उपाय थे—या तो वे अपने पुराने घरों को वापिस चले जाँय परन्तु वहाँ उन्हें पुनः अपने उन निर्दयी और शक्तिशाली दुश्मनों के हाथों में पड़ना पड़ता। या वे इस जङ्गल में होकर आगे बढ़ें परन्तु यहाँ दैत्यों जैसे विशाल वृक्षों ने उनका मार्ग रोक रक्खा था जो अपनी विशाल शाखाओं को एक दूसरे से दृढ़ता पूर्वक उलझाए हुए थे तथा जिनकी जड़ें उस दलदली भूमि में गहराई तक जमी हुई थीं ये वृक्ष उस उदास वातावरण में चुपचाप और स्थिर खड़े थे। दिन में भी वहाँ अन्धेरा रहता था और रात को जब वे लोग आग जलाते तो ऐसा लगने लगता था जैसे वे वृक्ष उन्हें और भी नजदीक आकर घेरकर खड़े होगए हों। वे आदमी, जो मैदान के खुले वातावरण में रहने के आदी थे रात दिन इस काले अन्धकार पूर्ण, दुर्गन्धि से परिपूर्ण जङ्गल में रहने को बाध्य थे जो उन्हें खा जाना चाहता था। जब हवा पेड़ों की चोटियों पर होकर बहती तो वह जङ्गल और भी भयानक हो उठता जैसे भयंकर वातावरण में कोई शोकगीत गाया जा रहा हो। ये आदमी शक्तिशाली थे और जिन लोगों ने इन्हें भगा दिया था, उनके पास पुनः जा सकते थे परन्तु वे युद्ध में मरने से भयभीत थे क्योंकि उन पर प्राचीन परम्पराओं को सुरक्षित रखने का उत्तरदायित्व था। यदि वे युद्ध में मारे जाते तो उनके साथ उनकी परम्परायें भी नष्ट हो जातीं। इसी कारण वे पीछे नहीं लौटना चाहते थे। वे रात भर उदास बैठे हुए सोचते रहते, चारों ओर सनसनाहट का शब्द उदास हो जाता। दलदल की जहरीली हवा उनका दम घोटने लगती। जब वे बैठे रहते तो उनके अलावा की रोशनी से उत्पन्न छायायें मूक भाव से उछलती हुई उनके चारों ओर नाचती रहतीं। ऐसा प्रतीत होता कि ये छायायें नहीं नाच रहीं बल्कि उस जङ्गल और दलदल में रहने वाले भूत-प्रेत अपनी विजय का उत्सव मना रहे थे। इस प्रकार ये मनुष्य

विचार मग्न और दुखी बैठे रहते। परन्तु मनुष्य के शरीर और आत्मा को कठोर परिश्रम और भी इतना नहीं थका पाता जितना कि दुख पूर्ण चिन्तन थका देता है। इसलिए ये लोग अपनी इस चिन्ता से पीले पड़ गए। उनमें एक भय समा गया था जिसने उसकी भुजाओं की शक्ति को निर्बल बना दिया था। औरतें विषैली वायु से मरे हुए मनुष्यों को देख कर बुरी तरह चीखतीं चिल्लातीं जिससे वहाँ एक भय का साम्राज्य छा जाता। वे उन लोगों के भाग्य पर रोतीं जो भय से जकड़ गए थे। उस जंगल में कायरता पूर्ण शब्द सुनाई देने लगे—पहले इनकी ध्वनि धीमी और निर्बल थी परन्तु बाद में सब खुल्लमखुल्ला चिल्लाकर इस प्रकार की बातें करने लगे। आदमी दुश्मन के हाथों अपनी स्वतन्त्रा बेचने को तैयार हो गए। सब पर मृत्यु का भय छाया हुआ था। गुलामी की जिन्दगी से कोई भी भयभीत नहीं था। परन्तु उसी समय दान्को सामने आया और उसने बिना किसी सहायता के इन सब को बचा लिया।"

यह स्पष्ट हो रहा था कि इस बुढ़िया ने यह कहानी पहले भी कई बार दूसरों को सुनाई है, क्योंकि वह एक निश्चित शैली और संगीत पूर्ण ध्वनि के साथ इसे सुना रही थी। उसकी धीमी और कर्कश आवाज ने मेरी कल्पना में उस जंगल का स्पष्ट चित्र अंकित कर दिया जहाँ वे अभागे आदमी दलदल की जहरीली गैस से मर रहे थे।

"दान्को उन्हीं पुराने आदमियों जैसा था जवान और सुन्दर। सुन्दर मनुष्य हमेशा बहादुर होते हैं। उसने अपने साथियों से कहा—"तुम केवल सोच-सोच कर अपने मार्ग की चट्टान को दूर नहीं कर सकते। जो लोग कुछ नहीं करते उन्हें कुछ भी नहीं मिल सकता। हम अपनी शक्ति इस सोचने और झींकने में क्यों बर्बाद कर रहे हैं। साहस पूर्वक उठ खड़े हो। हम इस जंगल को काट कर अपना मार्ग बनायेंगे। उसका कहीं न कहीं तो अंत होगा ही—संसार की प्रत्येक वस्तु का एक अन्त होता है। आओ,उठो, हम—"

उन्होंने उसकी ओर देखा और अनुभव किया कि वह

श्रेष्ठ है क्योंकि उसके नेत्रों से अपार शक्ति और जीवन की आग निकल रही थी।

"हमारा पथ प्रदर्शन करो"—उन लोगों ने कहा।

"और वह उनका पथ प्रदर्शक और मुखिया बना।

बुढ़िया चुप हो गई और मैदान की ओर देखने लगी जहाँ अन्धकार और गहरा होता जा रहा था। दूर पर दान्को के जलते हुए हृदय से रह रह कर चिनगारियाँ निकल रहीं थी—नीले फूलों की तरह, जो क्षण भर के लिए खिल कर मुरझा जाते हैं।

"और दान्को उन्हें आगे ले चला। एकमत होकर वे सब उसके पीछे चले क्योंकि उनका दान्को में पूर्ण विश्वास था। यह बड़ा बीहड़ मार्ग था। चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था। कदम कदम पर दलदल अपना लालची, सड़ा हुआ, दुर्गन्ध पूर्ण मुंह खोलकर आदमियों को निगल जाता। पेड़ पत्थर की तरह उनका रास्ता रोक लेते, उनकी शाखाएं आपस में गुंथी हुई थीं और जड़ें सांपों की तरह चारों ओर फैली हुई थीं। कदम कदम पर इन लोगों को अपना खून और पसीना बहाना पड़ रहा था। वे बहुत समय तक आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहे। जैसे जैसे वे आगे बढ़ते गए जङ्गल और घना होता गया। उनकी शक्ति समाप्त हो चली थी। अब वे दान्को के खिलाफ बड़बड़ाने लगे थे और कहते थे कि वह अभी लड़का और अनुभवहीन है और नहीं जानता कि उन्हें कहाँ ले जारहा है। परन्तु वह सब के आगे प्रसन्न और शांत मुद्रा में आगे बढ़ता गया।

"एक दिन उस जंगल में एक भयंकर तूफान आया। वृक्ष डरावने रूप से सांय सांय करने लगे। जंगल में इतना घना अँधकार छा गया कि मानो जब से यह जंगल उत्पन्न हुआ था तब से लेकर अब तक की सम्पूर्ण रातें आज इस एक स्थान पर इकट्ठी हो गई हों। ये लोग तूफान की उस भयंकर

तेज़ी में विशाल वृक्षों से युद्ध करते हुए आगे बढ़ते गए। वे लोग आगे बढ़ते और वे प्राचीन, विशाल और मजबूत वृक्ष क्रोध से चरमरा उठते। उनकी चोटियों पर बिजली चमकती जिससे वे प्रकाशित हो उठतीं। बिजली की यह चमक क्षणिक होती। वे लोग भयभीत हो उठे थे। बिजली की चमक में वे वृक्ष ऐसे प्रतीत होते थे मानो जीवित हों, और लोगों को घेरने के लिए अपनी विशाल भुजाएं जाल की तरह फैला रहे हों जिससे कि वे वहीं रुक जाँय और अंधकार की कैद से भाग न सकें। उन शाखाओं के अन्धकार में से कोई भयानक और मृत्यु जैसी शीतल वस्तु उनकी ओर घूम रही थी। यह एक भयानक मार्ग था। और वे मनुष्य इससे थककर हिम्मत हार बैठे। परन्तु अपनी इस निर्बलता को प्रकट करने में उन्हें लज्जा का अनुभव होता इसलिए उन्होंने अपना गुस्सा दान्को पर निकालना प्रारम्भ किया जो उनके आगे आगे धीरता पूर्वक चला जा रहा था। उन्होंने बड़बड़ाना प्रारम्भ किया कि वह उन्हें ठीक तरह से रास्ता दिखाना नहीं जानता। तुम्हारा इस विषय में क्या ख्याल है ?"

वे जगल के उस भयानक वातावरण में रुक गए और थकावट और गुस्से से भरकर दान्को को बुरा भला कहने लगे·

"कमीने आदमी," उन्होंने कहा, तुम्हीं "हमारी इस मुसीबत की जड़ हो। तुमने हमें रास्ता दिखाने का प्रय न किया और भटका दिया और अब तुम्हें इसके लिए मरना पड़ेगा।"

"तुम लोगों ने कहा-हमें रास्ता दिखाओ और मैंने रास्ता दिखाया," दान्को ने गर्वपूर्ण मुद्रा से उनकी ओर देख कर कहा, "मुझ में नेतृत्व करने की शक्ति है इसी कारण मैंने तुम्हारा नेतृत्व किया। लेकिन तुम लोग ? तुम लोगों ने अपनी मदद के लिए क्या किया ? तुम लोग केवल मेरे पीछे चलते रहे। तुम लोग एक लम्बी यात्रा के लिए आवश्यक अपनी शक्ति को कायम रखने में भी असमर्थ रहे। तुम लोग केवल चलते रहे, भेड़ों के झुंड की तरह आँखें बन्द किये ?"

"परन्तु इन शब्दों ने उन लोगों को और अधिक उत्तेजित कर दिया।"

"तुम्हें मरना पड़ेगा! तुम्हें मरना पड़ेगा!" वे लोग चिल्लाये!

"जंगल में निरन्तर इन शब्दों की प्रतिध्वनि गूँजती रही। बिजली की चमक में जंगल का भयानक अन्धकार टुकड़े-टुकड़े हो उठता। दान्को ने उन लोगों की ओर देखा जिनके लिए उसने इतना कठिन परिश्रम किया था और पाया कि वे लोग जंगली पशुओं की तरह हिंसक हो उठे हैं। उन्होंने उसे चारों ओर से घेर लिया। उनमें से किसी के भी चेहरे पर मानवता का भाव नहीं था। उनसे दया की कोई आशा नहीं रही थी। तब दान्को के हृदय में क्रोध उमड़ आया परन्तु उन लोगों पर रहम कर उसने उस क्रोध को दबा दिया। वह इन लोगों को प्यार करता था और जानता था कि उसके बिना वे सब नष्ट हो जायेंगे। इसलिए वह उन्हें बचाने के लिए व्यग्र हो उठा जिससे कि वह उन्हें किसी आसान मार्ग पर ले जा सके। और उसके नेत्रों में यह व्यग्रता प्रबल रूप से चमक उठी। परन्तु यह देख कर उन लोगों ने समझा कि उसके नेत्र क्रोध से जल रहे हैं। क्रोध के कारण ही उसके नेत्र इस प्रकार चमक उठे हैं, इसलिए वे भेड़ियों की तरह सावधान हो गये, और उसके आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे। उन्होंने उसे चारों ओर से अच्छी तरह घेर लिया जिससे उसे पकड़ कर मार डालें। उनके विचारों को भांप गया। इससे उसके हृदय की वह व्यग्रता और चिन्ता की चमक और तीव्र हो गई क्योंकि उनके कृतघ्नता पूर्ण विचारों ने उसे दुखी बना दिया था।"

"जंगल में शोकपूर्ण ध्वनियाँ व्याप्त थीं। तूफ़ान गरज रहा था और मूसलाधार वर्षा हो रही थी।"

"मैं इन आदमियों के लिये क्या कर सकता हूँ?" तूफ़ान के चीत्कार को दबा देने वाली भयंकर आवाज़ में दान्को चिल्लाया।

"अचानक उसने दोनों हाथों से अपना सीना पकड़ कर फाड़ डाला, अपना हृदय बाहर निकाला और उसे हाथों में लेकर सिर के ऊपर कर खड़ा हो गया।

वह सूर्य की तरह चमक रहा था—सूर्य से भी अधिक प्रकाशवान। चारों ओर खामोशी छा गई और वह जंगल मानव प्रेम की इस मशाल से प्रका-

शित हो उठा ! इस प्रकाश से डर कर अन्धकार जङ्गल की सघनता में जा छिपा और काँपता हुआ उस दुर्गन्ध पूर्ण दलदल में समा गया। वे मनुष्य आश्चर्य से मूर्ति की तरह खड़े रह गए।

"आगे बढ़ो!" दान्को चिल्लाया और अपने प्रज्वलित हृदय के प्रकाश से मार्ग दिखाता हुआ आगे बढ़ा।

वे उसके पीछे २ चले—मन्त्रमुग्ध की भाँति। जङ्गल में पुन सनसनाहट व्याप्त होगई। वृक्ष आश्चर्य से अभिभूत होकर झूमने लगे। परन्तु उन दौड़ते हुए आदमियों की हर्षध्वनि में जङ्गल का वह शोर डूब गया। वे सब तेजी से भागे जा रहे थे। उस प्रज्वलित हृदय ने, जो एक अद्भुत दृश्य उपस्थ कर रहा था उन्हें बहादुर बना दिया था। अब भी आदमी गिर कर मर रहे थे परन्तु अब गिरते समय न तो वे रोते थे और न शिकायत करते थे। और दान्को अब भी सबसे आगे था। उसका हृदय निरन्तर प्रकाश फेंक रहा था।

अचानक उन्होंने देखा कि सामने जङ्गल खुल गया है। उसने उन्हें बाहर निकाल दिया और स्वय वहीं पीछे रह गया वैसा ही सघन और शान्त। और दान्को तथा उसके सब साथी खुली हुई रोशनी और साफ हवा मे आ गए। हवा वर्षा से निर्मल हो गई थी। उनके पीछे तूफान अब भी जङ्गल में गरज रहा था परन्तु यहाँ सूर्य चमक रहा था। मैदान जैसे गहरी साँसें ले रहा था। घास के पत्तों पर वर्षा की बूँदें मोती की तरह चमक रही थीं और नदी सोने की सी धारा प्रतीत हो रही थी, शाम हो चली थी। नदी पर पड़ती हुई, ढलते हुए सूर्य की किरणें, उसके जल को लाल बना रही थीं उस रक्त की तरह लाल जो दान्को के निकाले हुए हृदय मे एक गर्म धारा की तरह बह उठा था।

"वीर और बहादुर दान्को ने अपने सामने फैले हुए विस्तृत घास के मैदान को गौर से देखा। वह इस स्वतन्त्र भूमि की ओर प्रसन्नता पूर्वक देखकर हँस उठा। उसकी इस हँसी में गर्व भरा हुआ था। और तब वह जमीन पर गिर पड़ा और मर गया।"

"उन मनुष्यों ने जो अत्यधिक हर्ष और आशा से भर उठे थे, यह नहीं देखा कि वह मर गया है। और उन्होंने यह भी नहीं देखा कि उसका वीर हृदय उसके मृत शरीर के पास अब भी जल रहा था। उनमें से केवल एक ने, जो दूसरों से अधिक सावधान था, इस दृश्य को देखा और भयाक्रांत होकर उस वीर हृदय पर चढ़ बैठा। वह हृदय फट कर चिनगारियों में बदल गया और बुझ गया।

"इन नीली चिनगारियों को उत्पन्न करने वाला रहस्य यही है जो इन घास के मैदानों में तूफान आने से पूर्व दिखाई देने लगता है।"

जब उस बुढ़िया ने अपनी सुन्दर कहानी समाप्त की तो उस मैदान में एक गम्भीर निस्तब्धता छा गई मानो वह उस बहादुर दान्को की उस अपूर्व इच्छा शक्ति की कहानी सुनकर स्तब्ध रह गया हो जिसने मनुष्यों के लिये अपना जलता हुआ हृदय बाहर निकाल लिया था और प्रतिदान में कुछ भी न माँगकर मर गया था। बुढ़िया ऊँघने लगी थी। मैंने उसकी ओर देखा और मन में सोचा कि अभी न जाने कितनी कहानियाँ और प्राचीन स्मृतियाँ इस बुढ़िया के मस्तिष्क में संचित होंगी। मैंने दान्को के उस विशाल जलते हुए हृदय के विषय में सोचा और उस कल्पना शील मानव मस्तिष्क के विषय में भी सोचा जो इतनी सुन्दर और रोमाँचक कहानियों की कल्पना करता है।

इजरगिल अब गहरी नींद में सो रही थी। हवा ने उसके कम्बल को एक तरफ हटा दिया था और उसकी खुली सूखी छाती दिखाई दे रही थी। मैंने उसके वृद्ध शरीर को भली भाँति ढक दिया और स्वयं भी उसके पास जमीन पर लेट गया। मैदान में सघन अन्धकार और शान्ति का साम्राज्य छाया हुआ था। बादल अब भी धीरे २ और उद्विग्नता पूर्वक आकाश में चले जा रहे थे। समुद्र का गम्भीर और शोकपूर्ण स्वर सुनाई दे रहा था।

आवारा प्रेमी

सुबह ६ बजे के लगभग मुझे ऐसा लगा कि कोई भारी सा प्राणी मेरे बिस्तर में घुस आया है और किसी ने मुझे झकझोर कर सीधा मेरे कान पर चीख कर कहा :

"उठो"

यह मेरे साथी शाश्का की आवाज थी जो कम्पोजीटर था। वह एक मजेदार आदमी था—उन्नीस वर्ष के लगभग अवस्था, सिर पर बिखरे हुए लाल बाल, चीते की सी चमकदार हरी आँखें और रांगे की धूल से गन्दा हुआ चेहरा।

"चलो, उठो।" मुझे बिस्तर से बाहर खींचता हुआ वह चीखा। "चलो आज मौज करने चलें। मेरे पास कुछ पैसे हैं—छ: रूबल और बीस कोपेक। और आज स्टेपखा का जन्म दिन है। तुम अपना साबुन किस जगह रखते हो?"

वह कोने में रखे हुए मुँह धोने के तसले के पास गया और बुरी तरह से अपने चेहरे को रगड़ने लगा। बीच-बीच में शोर मचाते और खांसते हुए उसने मुझसे पूछा –

"बताओ—'स्टार' (तारा) क्या इसे जर्मन भाषा में 'एस्ट्रा' कहते हैं?"

"नहीं मेरा अनुमान है यह ग्रीक उच्चारण है।"

"ग्रीक? हमारे यहां एक नई प्रूफ पढ़ने वाली आई है जो कविता करती है और अपने हस्ताक्षरों के स्थान पर 'एस्ट्रा' लिखती है। उसका असली नाम तुर्गेनिकोवा, अन्तोनिया वेस्सीलिव्ना है। वह एक छोटी सी

सुन्दर स्त्री है—देखने में सुन्दर—सिर्फ कुछ बगड़ी ज्यादा है.......... तुम्हारा कंघा कहाँ है ?"

जैसे ही उसने कंघे को अपने लाल वालों के गुच्छे में डाल कर उन्हें सुलझाना चाहा, उसकी नाक पर बल पड़ गए और उसने गालियाँ देनी शुरू कर दीं। अचानक वात करते-करते, वह एक शब्द को अधूरा ही छोड़कर, खिड़की के धुँधले शीशे में गौर से अपनी शकल देखने लगा।

बाहर सामने ईंटों की दीवाल पर धूप चमक रही थी। रात वर्षा होने से दीवाल गीली थी और धूप उसके लाल रंग को और उज्वल बना रही थी। बरसाती पानी को बहाने वाले पाइप पर एक काला कौआ बैठा हुआ चोंच से अपने पंख सँभाल रहा था।

"यह लोटा कितना खराब है!" शारका बोला और फिर अचानक कहने लगा—"उस काले कौवे को देखो। कैसा अपना शृङ्गार कर रहा है। मुझे जरा सुई और धागा देना। अपने कोट का एक बटन सीना है।"

वह कमरे में चारों तरफ कूदता फिर रहा था जैसे गर्म ईंटों पर नाच रहा हो। उसने इतना ऊधम मचाया कि उससे मेरी मेज पर रखे हुए कुछ कागज उड़कर नीचे गिर पड़े।

फिर खिड़की पर खड़े होकर, मटपटे ढङ्ग से सुई चलाते हुए उसने पूछा—

"क्या कभी लोडिर नाम का कोई राजा हुआ था ?"

"तुम्हारा मतलब है—लोयर—क्यों, किसलिए पूछ रहे हो ?"

"कैसी मजेदार बात है! मैं सोच रहा था कि उसका नाम लोडिर था और संसार के सभी आलसी व्यक्ति उसी के वंशज हैं। चलो पहले किसी होटल में चलकर चाय पी जाय। उसके बाद हम लोग पादरियों के गिरजे में प्रार्थना सुनने चलेंगे और पादरिनों को देखेंगे। मुझे पादरिनें बड़ी अच्छी लगती हैं।......... और 'मोस्लेक्टिन्स' (दुरदर्शी) का क्या अर्थ है ?"

वह लगातार, बिना रुके प्रश्न पूछे चला जा रहा था जैसे मटर की सूखी फलियाँ हिलाने पर खड़खड़ाने लगती है। मैंने उसे बताना शुरू किया कि 'प्रोस्पेक्टस' का क्या अर्थ है और वह बिना इस बात की प्रतीक्षा लिए कि मैं बात पूरी कर लूँ, बोलता चला गया।

"गत रात्रि को वह बेवकूफ लेखक, रैड डेमिनो, छापेखाने आया—पीए हुए, जैसी कि उसकी हमेशा की आदत है और मुझसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी कि तुम्हारे 'प्रोस्पेक्टिव' (भविष्य की उन्नति की आशा) कैसे हैं।"

बटन को जिस स्थान पर उसे लगाना चाहिए था उससे कुछ ऊपर सींकर उसने अपने सफेद दाँतों से धागे को काटा फिर अपने मोटे फूले हुए होंठों को चाटा और उदास स्वर में बोला—

"लिजोच्का का कहना बिलकुल ठीक है। मुझे किताबें पढ़नी चाहिए। नहीं तो मैं जीवन भर मूर्ख और जङ्गली ही बना रह कर मर जाऊँगा और कुछ भी नहीं सीख सकूँगा। परन्तु मैं पढ़ूँ कब? मेरे पास समय तो है ही नहीं।"

"इन लड़कियों के पीछे घूमने में इतना समय बर्बाद मत किया करो··· ·।"

"क्या मैं कोई मुर्दा। मैं अभी बुड्ढा तो हुआ नहीं हूँ! प्रतीक्षा करो! जब मैं शादी कर लूँगा तो यह काम छोड़ दूँगा।"

शरीर को फैलाते हुए उसने कहा·

"मैं लिजोच्का से शादी करूँगा। वह एक फैशनेबिल लड़की है। उसका फ्राक उसका··· · उसे क्या कहते हैं?······'साटिक का बना हुआ है। वह उसे पहन कर इतनी सुन्दर लगती है कि जब मैं उसे उस फ्राक को पहने देखता हूँ तो मेरे पैर काँपने लगते हैं। मेरी ऐसी इच्छा होती है कि मैं उसे जल्दी से निगल जाऊँ।"

बहुत गम्भीर होकर मैंने कहा:

"सावधान रहना! कहीं तुम स्वयं न निगल लिए जाओ।"

उसने शङ्कित भाव से मुस्करा कर सिर हिलाया।

"उस दिन दो विद्यार्थी हमारे समाचार पत्र पर बहस कर रहे थे। एक बोला कि प्रेम बड़ा खतरनाक व्यापार है, परन्तु दूसरा बोला—नहीं, इसमें कोई खतरा नहीं? देखा वे दोनों कैसे चालाक हैं? लड़कियाँ इन विद्यार्थियों को ही पसन्द करती हैं। वे उन्हें उतना ही चाहती हैं जितना कि फौजियों को।"

हम लोग घर से चल दिए। सड़कों के ऊँचे नीचे लगे हुए पत्थर, वर्षा के जल से धुल कर, सरकारी कर्मचारियों की गंजी खोपड़ी की तरह चमक रहे थे। आसमान बर्फ जैसे सफेद बादलों से ढका हुआ था और यदा-कदा सूर्य उनके बीच में से झांकने लगता था। पतझड़ की तेज हवा मनुष्यों को सूखे पत्तों की तरह सड़क पर उड़ाए लिए जा रही थी। वह हम पर आक्रमण करती और कानों में सनसनाती। शाश्का ने जाड़े से काँप कर अपनी मैली, चिकनी पतलून की जेबों में हाथ घुसेड़ लिए। वह एक हलकी जाकेट, एक नीली कमीज और एड़ी घिसे हुए पीले ऊँचे बूट पहने हुए था।

"अर्द्ध-रात्रि को एक यान आकाश में ऊपर उड़ा।"

उसने हमारी पग-ध्वनि से ताल मिलाते हुए गाया। "मुझे यह कविता अच्छी लगती है। यह किसने लिखी है!"

"लरमोन्टोव"

मैं हमेशा इसे नेक्रासोव के नाम के साथ जोड़ देता हूँ।"

"और वह बहुत समय तक इस संसार में तड़पता रहा, हृदय में विचित्र इच्छाएं लिए हुए।" और अपनी हरी आँखों को मटकाते हुए उसने धीमी आवाज में दुहराया—"हृदय में विचित्र इच्छाएं लिए हुए।"

"मेरे भगवान मैं इसे कितनी अच्छी तरह समझ गया हूँ, इतनी अच्छी तरह कि मैं स्वयं उड़ने की इच्छा करने लगता हूँ'''अद्भुत इच्छाएं''''''

एक पुराने मैले से घर के दरवाजे से एक लड़की छुट्टी के दिन की पोशाक में बाहर निकली। वह लाल रंग की स्कर्ट, काला ब्लाउज जिस पर ज़री का काम हो रहा था और सुनहले रंग का एक रेशमी शाल पहने हुए थी।

शाश्का ने अपनी सिकुड़ी हुई टोपी सिर से उतारी और सम्मानपूर्वक झुककर उस लड़की से बोला ·

"भगवान तुम्हें ऐसे सुन्दर दिन बार बार दिखाए, कुमारी "

उस लड़की का सुन्दर कोमल गोल चेहरा पहले तो एक मृदु मुस्कान से खिल उठा परन्तु उसने तुरन्त ही अपनी पतली भौंहों में गाँठ देकर उसे घूरते हुए क्रोध और भयमिश्रित स्वर में कहा—

"लेकिन मैं तो तुम्हें नहीं जानती।"

"ओह ! यह कोई बात नहीं है," शाश्का ने प्रसन्न होकर उत्तर दिया-"मेरे साथ हमेशा ऐसा ही होता है। पहले तो वे मुझे नहीं पहचानतीं लेकिन जब पहचान लेती हैं तो मुझे प्रेम करने लगती हैं।"

"अगर तुम बदतमीजी करना चाहते हो ··· " लड़की ने चारों ओर देखते हुए कहा। सड़क बिलकुल सूनी थी, केवल बहुत दूर मोड़ पर गोभियों से भरी हुई एक गाड़ी चली जा रही थी।

"मैं भेड़ की तरह सीधा हूँ," शाश्का ने उस लड़की की बगल में चलते और उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा—"मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि आज तुम्हारा जन्मदिन है···"

"कृपा करके मुझे अकेला छोड़ दो।"

लड़की ने क़दम तेज कर दिए और जान बूझ कर किनारे पर लगी हुई ईंटों पर अपनी एड़ी को खटखट करने लगी। शाश्का रुक गया और बड़बड़ाया

"अच्छा, ठीक है। मैं पीछे रह गया। क्या वह घमण्डिन नहीं है? कैसी दयनीय स्थिति है कि मेरे पास ऐसी पोशाक ही नहीं है जिसे पहन कर मैं यह खेल खेल सकूँ। अगर मैं कोई दूसरा अच्छा सा सूट पहने होता तो वह मेरी ओर आकर्षित होती। ख़ैर, तुम कोई चिन्ता मत करो।"

"तुम कैसे जानते हो कि आज उसका जन्मदिन है?"

"मैं कैसे जानता हूँ? वह अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहन कर

आई है और खर्च जा रही है। मैं बहुत गरीब हूँ। यही वजह है, अगर मेरे पास खूब धन होता तो मैं देहात में अपने लिए एक छोटी सी रियासत खरीद लेता और भले आदमी की तरह रहता......देखो ?"

चार बिखरी दाढ़ियों वाले व्यक्ति चीड़ का बना हुआ सादा मुरदा रखने का एक बक्स लिए हुए बगल की एक गली में से निकले। उनके आगे आगे उस बक्स का ढक्कन सिर रखे एक लड़का चल रहा था और उनके पीछे गड़रिए की सी लाठी हाथ में लिए एक लम्बा भिखारी था। उसका चेहरा कठोर था और ऐसा लगता था मानो पत्थर में से काट कर गढ़ दिया गया हो। चलते समय उसके लाल डोरों से भरे हुए नेत्र उस मुरदे की भूरी नाक पर जमे हुए थे जो खुले हुए बक्स में से दिखाई दे रहे थे।

"वह बढ़ई मर गया होगा," शाम्का ने सन्देह प्रकट किया और सिर से टोपी उतार ली—"परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे और सम्बन्धियों और मित्रों से उसे सदैव दूर रखे।"

उसका चेहरा मुस्कराहट से भर गया और स्वच्छ नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे।

"मार्ग में मुरदे का मिलना अच्छा शकुन माना जाता है" उसने बताया और कहा, "चले आओ।"

हम लोग मोस्कवा' नामक सराय में पहुँचे और मेज कुर्सियों से भरे हुए एक छोटे से कमरे में घुसे। मेजों पर गुलाबी कपड़े बिछे थे। खिड़कियों पर नीले रंग के परदे पड़े थे जिनका रंग धुँधला पड़ गया था। खिड़कियों की देहली पर गुलदस्ते सजे हुए थे और उनके ऊपर पिंजड़ों में छोटी २ चिड़ियाँ चहक रही थीं। स्थान हवादार, गर्म और आराम देह था।

हमने मसालेदार तला हुआ माँस, चाय, आधी बोतल वोद्का (शराब) और 'पीर्शन छाप की एक दर्जन सिगरेट लाने की आज्ञा दी। शाम्का खिड़की के पास एक मेज पर बैठ गया और एक भले आदमी की तरह आराम से बैठकर बातें करने लगा :

"मुझे यह सभ्यतापूर्ण और सरल जीवन अच्छा लगता है," उसने

कहा "तुम लोग हमेशा शिकायत करते रहते हो कि यह बुरा है, वह बुरा है, लेकिन क्यों ? हरेक चीज वैसी ही है जैसी कि उसे होना चाहिये। तुम्हारा स्वभाव आदमियों का सा नहीं है, उसमें एकता का अभाव है।"

जब वह मेरी आलोचना कर रहा था मैंने उसकी ओर देखा और सोचने लगा :

"इस लड़के में कितना उत्साह है। एक मनुष्य जो इतनी सुन्दर भावनाएँ रखता है इस जीवन में अज्ञात रह कर नहीं मर सकता।"

लेकिन वह उपदेश देते देते अब थक गया था। उसने अपना चाकू उठाया और चिड़ियों को परेशान करने के लिए प्लेट पर रगड़ने लगा। तुरन्त ही वह कमरा उन चिड़ियों की सुरीली आवाज से भर उठा।

"इससे ही ये बोलने लगती हैं।" अपने से बहुत प्रसन्न होते हुए शारका ने कहा। फिर चाकू को नीचे रख कर उसने अपने लाल बालों में उँगलियाँ फेरीं और ऊँचे स्वर में सोचने लगा :

"नहीं ! लिजोच्का मेरे साथ विवाह नहीं करेगी। यह सोचना ही व्यर्थ है। लेकिन कौन जानता है ? सम्भव है वह मुझे प्रेम करने लगे। मैं उसके प्रेम में पागल हो रहा हूँ।"

"लेकिन ज़ीना के विषय में तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"ओह ! जिम्का बहुत सीधी है। लिजोच्का····· वह बहुत तेज है।" शारका ने बताया।

वह एक अनाथ पितृहीन युवक था। सात वर्ष की अवस्था में ही वह एक फल बेचने वाले के यहाँ काम करने लगा था फिर उसने एक शीशे का काम करने वाले के यहाँ नौकरी की। दो वर्ष तक उसने एक आटे की मिल में मजदूर का काम किया। वह मिल एक सेठ की थी। और अब एक साल से ऊपर हो गया। वह एक प्रकाशक के यहाँ कम्पोजीटर का काम कर रहा है। उसे समाचार पत्रों का काम बहुत अच्छा लगता था। बिना पूरी तरह ध्यान दिए ही वह अपने अवकाश के समय में लिखने पढ़ने

लगा। साहित्य की रहस्यमय बातों के लिए उसके मनमें बड़ा आकर्षण था। विशेष रूप से उसे कविता पढ़ने का बहुत शौक था और उसने स्वयं भी कुछ कविताऐं बनाई थीं। कभी कभी वह मेरे पास रौंग की धूल से मैले कागज, जिन पर पेंसिल से कुछ लिखा होता, लाता। इन कविताओं का विषय सदैव एक ही रहता और वे कुछ कुछ इस प्रकार की होती थीं :

"मैं प्रथम दृष्टि-निक्षेप में ही तुम्हें प्यार करने लगा था जब काली झील पर मेरे नेत्र तुम्हारे नेत्रों से मिले थे। और उस समय से मेरे विचारों में केवल तुम और तुम्हारा स्वर्गिक चन्द्रमुख नाचता रहता है।"

जब मैंने उसे बताया कि यह कविता नहीं है तो उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा—"क्यों नहीं है ? देखो ? यह पूर्ण रूप से तुकान्त है। इसमें प्रत्येक पंक्ति के अन्तिम शब्द का अन्तिम अक्षर दूसरी तथा अन्य पंक्तियों के अन्तिम शब्द के अन्तिम अक्षर से मिलता हुआ है।"

"परन्तु सोचो लरमोन्तोव की कविता में कैसी सुन्दर ध्वनि है।"

"ओह, ठीक है। उसने कितना अभ्यास किया है जब कि मैंने अभी आरम्भ किया है। इन्तजार करो और तब देखना जब मुझे इसका अभ्यास हो जाय।"

उसका आत्म-विश्वास बड़ा मजेदार था परन्तु इसमें कोई गलत बात नहीं थी। उसे यह साधारण सा विश्वास हो गया था कि जिन्दगी उसे प्यार करती है जैसे कि धोबिन स्तेपखा उसे प्यार करती है। और यह कि वह जो कुछ चाहे कर सकता और यह कि सफलता प्रत्येक स्थान पर उस की प्रतीक्षा कर रही है।

गिरजे में घण्टे बज रहे थे—प्रातःकाल की प्रार्थना करने के लिए। उन चिड़ियों ने उस आवाज को सुनकर जो खिड़की के शीशों को झनझना रही थी, गाना बन्द कर दिया।

लड़का बुदबुदाया :

"हमें प्रातःकाल की प्रार्थना में जाना चाहिये अथवा नहीं ?"

और स्वय ही तय किया: "चलो, चलें।"

रास्ते में उसने शिकायत के स्वर में आत्म भर्त्सना सी करते हुए कहा।—

"मुझे बताओ तो जरा, तुम इसे कैसे समझाओगे ? मैं चर्च में हमेशा ऊव उठता हूँ परन्तु मुझे वहाँ जाना अच्छा लगता है। वहाँ वे पादरिनें कितनी सुन्दर और जवान हैं ? मुझे उनके लिये दुख है।"

चर्च में वह दरवाजे पर खड़ा हो गया जहाँ भिखारी और दूसरे गरीव आदमी इकट्ठे हो गये थे। उसकी हरी आँखें प्रार्थना गाने वालियों के एक झुण्ड को गाते देखकर आश्चर्य से फटी सी रह गईं। वे पीले चेहरे की नोकीली टोपियाँ पहने विल्कुल सीधी और सतर खड़ी थीं मानो काले पत्थर में से काट कर वनाई गई हों। वे एक स्वर में गा रहीं थीं और उनकी सुरीली आवाज में एक अद्भुत पवित्रता भरी हुई थी। प्रतिमाओं पर जड़ा हुआ सोना चमक रहा था और काँच के शीशों पर मोमवत्तियों का प्रकाश प्रतिविम्वित हो रहा था जो सुनहली तितलियों सा लग रहा था।

भिखारियों ने गहरी साँसें लीं और अपनी धुँधली आँखों को गुम्वज की ओर कर प्रार्थना पढ़ने लगे। आज सप्ताह का अन्तिम दिन था इसलिये चर्च में उपस्थिति वहुत कम थी। केवल वही लोग आये थे जिनके पास करने को कुछ भी नहीं था और यह नहीं जानते थे कि अपने समय का उपयोग कैसे करें।

शाश्का के सामने माला के दाने फिराती हुई एक पादरिन खड़ी थी— एक लम्बी चौड़ी औरत जो एक लम्बी सी टोपी लगाये हुए थी। शाश्का जो केवल उसके कन्धों तक पहुचता था अपने पंजों पर खड़ा होकर उसके चौड़े मुख और आँखों की ओर देखने लगा जो उस टोपी से ढके हुए थे और वह इस प्रकार खड़ा हुआ धृष्टतापूर्वक अपना होंठ आगे को वढ़ाए हुए उसे घूर रहा था मानो चुम्वन लेना चाहता हो।

पादरिन ने धीरे से अपना सिर घुमाया और उसे कनखियों से देखा

जैसे कि खूब मोटी ताजी बिल्ली चूहे को देख रही हो। वह एकदम घबड़ा उठा और मेरी बाँह खींचता हुआ तेजी से चर्च से बाहर निकल गया।

"तुमने देखा कि वह मेरी ओर किस तरह देख रही थी?" भय से आँखें बन्द करते हुए उसने कहा। तब उसने जेब से अपनी टोपी निकाली, उससे अपने मुँह का पसीना पोंछा और नाक चढ़ाई।

"हे भगवान! वह मेरी तरफ किस तरह देख रही थी........जैसे कि मैं शैतान होऊँ। इससे मेरा हृदय डूबने लगा था।"

तब वह हँसा और बोला:

"उसे हम लोगों का बड़ा बुरा अनुभव हुआ होगा।"

शाश्का हृदय का बड़ा दयालु था परन्तु उसके मन में लोगों के लिए दया की भावना तनिक भी नहीं थी। वह भिखारियों को खूब पैसे देता था और पूरे मन से देता था जितने मन से एक धनी व्यक्ति भी नहीं दे सकता। परन्तु वह इसलिए देता था क्योंकि दरिद्रता से उसे हार्दिक घृणा थी। दैनिक जीवन के साधारण दुखों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वह उनकी बातें करता और खूब हँसता था।

"तुमने सुना है? मिश्का सिजोव को सजा होगई।" उसने उत्साह पूर्वक एक दिन मुझ से कहा—"वह जीविका की खोज में बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा और एक दिन उसने एक छाता चुराया और पकड़ा गया। वह चोरी करना नहीं जानता था। उन्होंने उसे वहीं पकड़ लिया। मैं उसी रास्ते से जा रहा था कि अचानक देखा कि वह पुलिस वाले के साथ भेड़ की तरह चुपचाप चला जा रहा है। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और मुँह खुला हुआ था। मैंने उसे पुकारा—"मिश्का, परंतु उसने जवाब नहीं दिया जैसे कि वह मुझे जानता ही न हो।"

हम एक दुकान में गए और शाश्का ने एक पाउंड मुरब्बे की मिठाई खरीदी।

"मुझे स्त्रेपखा के लिए कुछ पेस्ट्री (एक प्रकार की मिठाई) भी

चाहिए," उसने कहा, "परन्तु मुझे पेरि पेस्ट्रीयाँ पसन्द नहीं हैं .. यह मुरब्बा उससे अच्छा है।"

मिठाई के साथ उसने कुछ केक और अखरोट भी खरीदे और तब हम एक शराब की दुकान पर गये। वहाँ से उसने शराब की दो बोतलें खरीदीं जिनमें एक का रङ्ग हल्का लाल और दूसरी का तूतीया जैसा था। काँख में उन बन्डलों को दबाये, सड़क पर चलते हुए उसने उस पादरिन के विषय में यह कहानी गढ़ी।

"वह एक मोटी ताजी औरत है, है न? एक दूकानदार की स्त्री रही होगी—एक परचूनिये की। मेरा ख्याल है वह अपने पति के प्रति सच्ची नहीं थी। वह एक छोटा सा दुबला पतला आदमी होगा . यह औरतें कितनी चालाक होती हैं? उदाहरण के लिये स्तेपखा को ही ले लो .   "

इस समय तक हम लोग एक मकान के दरवाजे पर पहुँच गये थे जिसका रङ्ग भूरा था और जिसमें हरी खिड़कियाँ लगी हुई थीं। बाँस के टुकड़ों से बने हुए उस दरवाजे को शाश्का ने लात मार कर खोला जैसे कि यह उसका अपना ही घर हो, अपनी टोपी जरा तिरछी की और अहाते में घुस गया जो भोज पत्र के पीले, तथा चिनार के पुराने सूखे पत्तों से भरा हुआ था। अहाते के दूसरे सिरे पर, बाग की दीवाल के सहारे बना हुआ कपड़े धोने का एक घर था जो खिड़कियों की देहली तक बन्द था। इसकी छत पीली सी हरी काई से ढकी हुई थी और वृक्षों की शाखाएं इस छत के ऊपर हिलती रहती थीं और अपनी पत्तियों को अनिच्छापूर्वक गिराती रहती थीं। अपनी उन दो खिड़कियों से वह धोबी-घर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक मेढ़क उदासीनता पूर्वक शंकित दृष्टि से देख रहा हो।

लगभग चालीस वर्ष की अवस्था वाली एक लम्बी चौड़ी स्त्री ने दरवाजा खोला। चेचक के दागों से भरा हुआ चेहरा, प्रसन्नता से चमकती हुई आँखें और मोटे लाल होठ जो एक उत्फुल्ल मुस्कराहट से खुल गये थे—यह उसका रूप था।

"मेहमानो तुम्हारा क्या स्वागत करूँ !" उसने सुरीली आवाज में जोर से कहा। शाश्का ने उसके चौड़े और भारी कन्धों पर हाथ रख और अपना मुँह उसके नजदीक ले जाते हुए कहा —

"भगवान यह शुभ दिन तुम्हें बार २ दिखायें स्टेपि स्टेपनिदा याकीमोव्ना और पवित्र रहस्यों को समझाने के लिये तुम्हे बधाई।"

"परन्तु मैं तो उस पवित्र भोज में नहीं गई थी।" स्टेपखा ने विरोध किया।

"सब एक ही बात है।" शाश्का ने उसके होठों को तीन बार चूमते हुए कहा। उसके बाद दोनों ने चुम्बनों के चिन्हों को मिटा डाला, स्टेपखा ने अपनी हथेली से और शाश्का ने अपनी टोपी से।

बगल के अन्धेरे कमरे में, जो आग जलाने के सीकचों, टोकरियों और कपड़े धोने के बड़े २ टबों से भरा हुआ था, उन्हें स्टेपखा की लड़की पाशा दिखाई पड़ी जो अपने खेल में व्यस्त थी। पाशा की बड़ी २ बाहर उभरी हुई आँखें जो बेवकूफों की तरह ताज्जुब से दूसरों की ओर ताका करती थी, बच्चों के एक प्रकार के रोग के कारण, जिसमें हड्डियाँ मुलायम हो जाती हैं, ऐसी हो गई थीं। उसके मुलायम सुनहले बाल बहुत अधिक घने थे।

"भगवान तुम्हें यह शुभ दिन बार बार दिखाए, पान्या।"

"ठीक है" लड़की ने उत्तर दिया।

"बेवकूफ गुड़िया" स्टेपखा ने कहा, "तुम्हें कहना चाहिये 'धन्यवाद'।"

"ओह, ठीक है।" लड़की ने गुस्से से चिड़चिड़ा कर जवाब दिया। धोबिन के घर का एक तिहाई भाग एक बड़ी भट्टी ने घेर रखा था। और पहिले जहाँ नहाने वालों का सामान रखने के खाने बने हुए थे अब उस स्थान पर एक चौड़ी खाट थी। कोने में मूर्तियों के नीचे एक मेज रखी हुई थी—चाय पीने के लिए। और दीवाल के सहारे एक बेंच खड़ी थी जिस पर हाथ मुँह धोने का तसला आसानी से रखा जा सकता था।

एक झबरा कुत्ता, अपने टूटे हुए नाखूनों वाले भारी पंजों को खिड़की की चौखट पर रखे खुली खिड़की से भिखारी की तरह झांक रहा था। खिड़की की चौखट के पास गुलदस्ते रखे हुए थे जिनमें विभिन्न रंगों के फूल सज रहे थे।

"यह जानती है कि कैसे रहा जाता है," शास्का ने उस गन्दे कमरे में चारों ओर देख कर कहा और मेरी ओर आँख मिचकाई जैसे कह रहा हो कि मैं तो मजाक कर रहा हूँ।

मेजवान ने तन्दूर में से बहुत होश्यारी से एक समोसा निकाला और अपनी अँगुलियों से उसका लाल छिलका हटा दिया। पाशा अपना खिलौना लिए हुए भीतर आई और शास्का की ओर गुस्से से देखा। परन्तु शास्का ने अपने होंठ चाटते हुये कहा—

"मुझे शादी जल्दी कर लेनी चाहिये? मुझे समोसे बहुत अच्छे लगते हैं।"

"लेकिन केवल समोसे खाने के लिये तो कोई शादी नहीं करता," स्टेपखा ने गम्भीरता से कहा।

"ओह, वह मैं समझता हूँ।"

वह मोटी ताजी स्त्री यह सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ी परन्तु उसके नेत्रों में एक प्रकार की गम्भीरता थी जब उसने आगे कहा—

"एक दिन तुम शादी करोगे और मुझे भूल जाओगे।"

"लेकिन तुम कितनों को भूल चुकी हो?" शास्का ने मूर्खतापूर्ण उत्तर देते हुए कहा—

स्तेपखा भी मुस्कराई। अपनी पोशाक से, जो उसकी अवस्था को देखते हुए बहुत भड़कीली थी, वह एक धोबिन सी न मालूम देकर एक शादी पक्की कराने वाली दलाल या भविष्य बताने वाली ज्योतिषिन सी लगती थी।

उसकी लड़की की, जो किसी दुखान्त परियों की कहानी में वर्णित एक चुप रहने वाली परी सी लग रही थी, उपस्थिति यहाँ दूसरों को खल

आवश्यकता नहीं थी। वह बड़ी सावधानी के साथ खाना खाती मानो कि वह समोसे न खाकर मछली खा रही हो जो काँटों से भरी हुई हो। और रह रह कर अपनी बड़ी बड़ी आँखें शारका की ओर घुमाती और उसके चंचल मुख की ओर बड़ी विचित्रता से देखती जैसे कि वह अन्धी हो।

कुत्ता खिड़की पर खड़ा हुआ बड़ी दीनता पूर्वक भोंकने लगा। फौजी बैंड से उत्पन्न सैनिक संगीत और सैकड़ों भारी पगों के सावधानी और दृढ़ता पूर्वक एक साथ जमीन पर पड़ने की ध्वनि सड़क से वायु पर तैरती हुई अन्दर आ रही थी।

स्तेपखा ने अपनी लड़की से कहा :

"तुम बाहर दौड़कर सिपाहियों को क्यों नहीं देखतीं ?"

"मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"बहुत सुन्दर !" कुत्ते को समोसे का एक टुकड़ा फेंकते हुए शारका बोला "मुझे अब कुछ नहीं चाहिए।"

स्तेपखा ने उसकी ओर मातृ स्नेह से देखा और अपनी छाती पर ब्लाउज को कसते हुए गहरी साँस लेकर कहा—

"नहीं, यह सत्य नहीं है, अभी तुम्हें बहुत सी और चीजों की जरूरत है।"

"जो कुछ मैंने अभी कहा है वह पूर्ण सत्य है" शारका उत्तर देते हुए बोला—"अब मुझे और कुछ भी नहीं चाहिये यदि पाशा मुझे अपनी आँखों से परेशान करना बन्द करदे।"

"मैं तुम्हारी बिल्कुल परवाह नहीं करती," लड़की ने धीरे से कुढ़ कर उत्तर दिया। उसकी माँ ने गुस्से से उसकी ओर देखा परन्तु कहा कुछ नहीं।

शारका अपनी कुर्सी पर बैठने में बेचैनी सी अनुभव करते हुए परेशान होकर लड़की की ओर देख कर गुस्से में बोला :

"मुझे ऐसा अनुभव होता है जैसे मेरी आत्मा में कहीं कुछ अभाव है। इसलिए मेरे ईश्वर ! मेरी सहायता कर। मैं चाहता हूं कि मेरी

आत्मा पूर्ण सन्तुष्ट और शान्त रहे परन्तु ऐसा नहीं हो पाता। तुम मेरी हालत को समझ रहे हो मेक्सीमित्र ? जब मुझे बुरा लगता है तब मैं चाहता हूं कि मुझे अच्छा लगे और जब मेरे जीवन में कभी खुशी का मौका आता है तब मैं परेशान हो उठता हूँ। ऐसा क्यों होता है ?"

वह अब भी परेशानी अनुभव कर रहा था—यह मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसकी आँखें बेचैनी से कमरे में इधर उधर दौड़ रही थी मानो उसमें फैली हुई गन्दगी का निरीक्षण कर रही हो उनमें एक कठोर असन्तोष की आग चमक उठी। यह स्पष्ट था, कि वह यहाँ अपने को उपेक्षित सा समझ रहा था और इसका ज्ञान उसे अभी हुआ था।

वह संसार में होने वाली बुराइयों के विषय में और उन मनुष्यों की मूर्खता और अन्धेपन के विषय में जो इन बुराइयों को करने के आदी हो गए और उन्हें देख नहीं पाते उत्साह पूर्वक बातें करने लगा। भयभीत चुहिया की भाँति उसके विचार इधर से उधर दौड़ रहे थे और उनमें बड़ी जल्दी जल्दी होने वाले परिवर्तन के कारण उन्हें समझना बड़ा कठिन हो रहा था।

"यहाँ सब कुछ गलत हो रहा है-मैंने तो संसार में यही पाया है। एक स्थान पर यहाँ तुम्हारा गिर्जा बना हुआ है और उसी के बगल में ·· शैतान जानता है क्या होता रहता है। इग्नौकेन्ती वेस्सीलीविच जेमस्कोव ने अपनी एक कविता में लिखा है—

"प्रकाश के उन क्षणों को बहुत बहुत धन्यवाद है जो मेरे हृदय के अवसाद को क्षणभर के लिए दूर कर देते हैं। उन क्षणों में तुम्हारे स्वर्गीय शरीर के साथ साक्षात सम्बन्ध की मधुर स्मृतियाँ भरी होती हैं।"

परन्तु वह कानूनी दाँव पेचों से अपनी सगी बहन का मकान हथियाने में नहीं हिचका था और उस दिन उसने अपनी घरेलू नौकरानी नासया के बाल पकड़ कर खींचे थे।

"उसने ऐसा क्यों किया ?" स्टेपखा ने, अपने खुरदरे हाथों को देखते हुए, जो बत्तख के पैरों की तरह लाल थे, पूछा। अचानक उसका चेहरा कठोर हो उठा और उसने अपने नेत्र नीचे झुका लिए।

"मुझे नहीं मालूम......नस्त्या उस पर अदालत में मामला चलाना चाहती थी परन्तु उसने तीन रूबल दे दिए और वह शान्त हो गई...... बेवकूफ कहीं की।"

अचानक शास्का उछल पड़ा और बोला—"अब हमारे जाने का समय हो गया।"

"कहाँ जाने का"—मेजबान ने पूछा।

"हमें कुछ काम है," शास्का ने झूठ बोलते हुए कहा," मैं शाम को फिर आऊँगा।"

उसने पाशा की ओर मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया परन्तु वह लड़की कुछ क्षणों तक उसकी उँगलियों की तरफ देखती रही जैसे कि उसमें उन्हें छूने का साहस न हो और तब उसने शास्का का हाथ पकड़ कर इस तरह झकझोरा मानो उसे बाहर धकेल रही हो।

हम बाहर आए। अहाते में सिर पर टोपी लगाते हुए शास्का बुदबुदाया।

"शैतान! वह लड़की मुझे पसन्द नहीं करती और मैं उसके सामने झेंप जाता हूँ। अब शाम को मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।"

उसके चेहरे पर बुरे भाव झलकने लगे और वह शरमा गया।

"मुझे स्टेपखा को छोड़ देना चाहिए," उसने कहा, "यह अच्छा काम नहीं है। वह मुझसे दुगुनी बड़ी है, और...... "

लेकिन जब तक कि हम सड़क के मोड़ पर पहुँचे वह पुनः पहले की तरह हँस रहा था और बिना शेखी बघारे बड़ा प्रसन्न होकर कहता जा रहा था—

"वह मुझे प्यार करती है। फूल की तरह मेरी चौकसी करती है। इसलिए मेरे भगवान, मेरी सहायता कर। यह सोच कर मुझे बड़ी लज्जा आती है। कभी कभी तो मुझे उसका साथ बहुत अच्छा लगता है...... अपनी माँ के साथ से भी अच्छा। यह कितना अद्भुत है। मेरे भाई, मैं तुम्हें बताता हूँ कि ये बड़ी मुसीबत होती हैं—ये औरतें। परन्तु इतने

पर भी वे होती हैं। वे हमारे प्रेम की पूर्ण अधिकारिणी हैं। ... लेकिन क्या उन्हें प्यार करना सम्भव है ?"

"इससे अच्छा तो यह होगा कि तुम कम से कम एक को ही पूरी तरह प्यार करो।" मैंने सलाह दी।

"एक-एक को", उसने सोचते हुए कहा—"लेकिन केवल एक को प्रेम करने का प्रयत्न करना ।"

वह दूर निगाह गड़ा कर देखने लगा–नदी की उस नीली धारा के उस पार, पीले चरागाहों को, शरद ऋतु की हवा द्वारा उखड़ी हुई काली झाड़ियों को जो सुनहले रङ्ग की विरल पत्तियों से ढकी हुई थीं। इस समय शाश्का का चेहरा कोमल और विचार मग्न दिखाई दे रहा था। यह स्पष्ट था कि इस समय वह उन सुखद स्मृतियों में डूवा हुआ था जो उसके हृदय को प्रसन्नता से भर देती थीं जैसे सूरज की किरणें नदी की धारा को सुनहले रङ्ग से भर देती हैं।

"आओ, थोड़ी देर बैठलें," पादरियों के मठ के पास एक पुलिया के नजदीक रुकते हुए उसने कहा।

आसमान में हवा बादलों को भगाए लिए जा रही थी। चरागाह के मैदान पर उनकी छायाएँ भाग रही थीं। नदी पर एक मछुआ नाव के टूटे हुए पेंदे की मरम्मत कर रहा था।

"सुनो," शाश्का बोला—"अस्तरखान चलें।"

"किसलिए ?"

"ओह, वैसे ही। या चलो मास्को चलें।"

"लेकिन लिजा का क्या होगा ?"

"लिजा अच्छा आ ' आ ।"

उसने मेरी आँखों में सीधे देखा और कहा—"मैं अभी तक उसके प्रेम में पड़ा हूँ या नहीं ?"

"किसी पुलिस के सिपाही से पूछो।" मैंने जवाब दिया।

वह खिलखिलाकर हँस उठा–बिल्कुल बच्चे की तरह। उसने सूरज

की ओर देखा और फिर मैदान में भागती हुई छायाओं को देखता हुआ उछल कर खड़ा हो गया और बोला''

"ये मिठाई बनाने वाली लड़कियाँ अब बाहर आती ही होंगी । चलो चलें !"

वह सड़क पर तेजी से चलने लगा। उसके नेत्रों में चिन्ता झलक रही थी, हाथ पतलून की जेबों में थे और टोपी माथे पर आगे की ओर खिसक आई थी, लड़कियाँ एक बारक जैसी इकमंजली इमारत से एक दूसरे के पीछे, रूमाल बांधे और अपनी पोशाकों पर भूरे काम करने के कपड़े पहने, भागती हुई आईं। उनमें से एक जीना थी—सांवले रङ्ग की सुन्दरी, (जिसके चेहरे पर मंगोलों की सी झलक थी) बड़ी २ भूरी आँखें और छाती पर खूब कसा हुआ लाल ब्लाउज पहने हुए।

"चलो, काफी पीने चलो।" शारका ने उसका हाथ पकड़ कर कहा। फिर वह जल्दी २ कहने लगा–"क्या तुम मुझे यह बताना चाहती हो कि तुम उस रूखे चिड़चिड़े नीच आदमी से शादी करना चाहती हो ? क्यों, वह तुमसे जलता है''' '' ।"

"हरेक पति को जलना ही चाहिए" जीना ने गम्भीरता पूर्वक कहा— "क्या तुम यह चाहते हो कि मैं तुमसे शादी करूँ ?"

"नहीं, मुझसे भी मत करो।"

"छोड़ो इन बातों को" लड़की ने घूरते हुए कहा—"तुम काम पर क्यों नहीं गए ?"

"आज मैंने छुट्टी लेली है।"

"ऊँह, तुमने ! मुझे काफी नहीं पीनी।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" उसे एक मिठाई की दूकान की ओर खींचते हुए शारका ने कहा।

जब ये दोनों खिड़की के पास एक छोटी मेज पर बैठ गए तो शारका ने उससे पूछा :

"तुम मेरा विश्वास करती हो ?"

"मैं हरेक जानवर का विश्वास करती हूँ—लोमड़ी का भी और जङ्गली चूहे का भी। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है—मैं कुछ देर तक सोचूँगी।" लड़की ने धीरे से उत्तर दिया।

"अच्छा, तुम्हारे बिना मेरा जीवन कुत्तों से भी बदतर हो जायगा।"

उस समय शाश्का वास्तव में अनुभव सा करने लगा कि उसका जीवन एक दुख पूर्ण भयानक सङ्कट में से गुजर रहा है। उसके होठ काँपे और आँखें भर आईं। उसे वास्तव में वेदना पहुँची थी।

"अच्छा, ठीक है। मैं तो एक बर्बाद व्यक्ति हूं, अपने दुखों में आकंठ निमग्न। लेकिन यह ठीक है जब तक कि मैं भाग्य को अपने अनुकूल बना लूँ। लेकिन तुम भी इतनी आसानी से नहीं छूट सकोगी। मैं तुम्हें चैन नहीं लेने दूंगा। भले ही वह एक धनवान व्यापारी और अपने घोड़ों का मालिक हो परन्तु तुम मेरे विषय में सोचते-सोचते खाना-पीना भूल जाओगे। मेरे शब्दों को याद रखना ।"

"अब समय आ गया है जब मैं गुड़ियों से खेलना बन्द करदूं," लड़की ने धीमे स्वर में परन्तु क्रोध पूर्ण मुद्रा में कहा।

"ओह, अच्छा, तो तुम मुझे एक गुड़िया समझती हो, क्यों?"

"मैं तुम्हारे विषय में नहीं कह रही थी।"

"देखो, इन लोगों को देखो, मेक्सीविच। यह साँपों की जाति है। इनमें हृदय नहीं है। वह मेरे हृदय में अपने जहरीले दाँत गड़ाती है और मैं पीड़ा से थथराता हूं। परन्तु वह कहती है-ओह, तुम तो गुड़िया हो।"

शारका क्रोधित हो उठा था। उसके हाथ काँप रहे थे और गुस्से से आँखें लाल हो रही थीं।

"ऐसे जानवरों के साथ कोई कैसे रह सकता है?" उसने पूछा।

"कितना सुन्दर अभिनय कर रहा है," मैंने उसकी ओर प्रशंसा से देखकर मन में सोचा।

उसके अभिनय ने लड़की को बहुत प्रभावित किया। अपने होठों को रूमाल से पोंछते हुए उसने बड़ी नम्र आवाज में पूछा—

"रविवार को क्या तुम स्वतन्त्र होगे ?"

"स्वतन्त्र किस से ? तुमसे ?"

"बेवकूफ मत बनो······यहाँ आओ, मेरे पास··· ।"

वे एक कोने में चले गये और शास्का चमकती आँखों से उत्साह-पूर्वक बहुत देर तक बातें करता रहा। अन्त में लड़की ने गहरी सांस लेते हुए उदास स्वर में कहा—

"मेरे भगवान ? तुम कैसे पति साबित होगे ?"

"मैं" शास्का चीखा—"ऐसा"

और मोटे मिठाई बनाने वाले की उपस्थिति में तनिक भी संकुचित हुए बिना उसने लड़की को अपनी भुजाओं में भर लिया और उसके होंठों का चुम्बन किया।

"क्या कर रहे हो, क्या पागल हो गए हो,' परेशान होकर अपने को छुड़ाते हुए लड़की ने कहा।

वह चिड़िया की भाँति दरवाजे में होकर उड़ गई। शास्का थका हुआ सा मेज पर बैठ गया और सिर हिलाता हुआ बोला :

"क्या मिजाज है ? एक जंगली जानवर की तरह खतरनाक है··· लड़की नहीं है।'

"आखिर तुम उससे चाहते क्या हो ?"

"मैं यह नहीं चाहता कि वह उस गंजे, अफीमची ड्राइवर से श··· करे। यह बहुत बुरी बात है। मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। यह कदापि··· बाहर है।"

बिल्कुल ठंडी होगई काफी को खत्म करने के बाद ऐसा मालूम··· मानो वह उस सम्पूर्ण वृत्तान्त घटना को बिल्कुल भूल गया हो और··· संगीत के से मधुर स्वर में कहने लगा :

"तुम जानते हो ? जब छुट्टी वाले दिन या माहाहान्त··· लड़कियों के झुण्ड के झुण्ड घूमने निकलते हैं, या काम समाप्त कर··· जाते हैं, या स्कूल में पढ़कर घर लौटते हैं, तो मेरा दिल काँपने···

मेरे ईश्वर ! मैं अपने आप सोचने लगता हूँ—यह सब झुण्ड की झुण्ड आखिर क्यों हैं। इनमें से हरेक किसी न किसी को प्यार अवश्य करेगी और यदि वे अब नहीं करतीं तो कल तो उन्हें अवश्य ही प्यार करना पड़ेगा या अधिक से अधिक एक महीने बाद तो अवश्य ही। वह एक ही बात है। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैं तो केवल यही मानता हूँ। यही जीवन है ! क्या जीवन में प्यार से भी अच्छी और कोई चीज है ? सोचो जरा—रात क्या है ? प्रत्येक व्यक्ति आलिंगन और चुम्बन में व्यस्त है। ओह, भाई, यही सब कुछ है, तुम जानते हो, यह एक ऐसी चीज है जिसका तुम केवल अनुभव भी कर सकते हो, उसे बता नहीं सकते। यह स्वर्ग है—वास्तविक स्वर्ग।

उछल कर वह बोला—"आओ घूमने चलें।"

आकाश भूरे बादलों से ढका हुआ था, धूल के कणों की भाँति वर्षा की छोटी छोटी फुहियाँ पड़ रही थीं—हल्की सूखी सी ठंड थी। परन्तु शाश्का, हर बात से बे-फिकर, हर बात को भुला देने वाला, अपनी हल्की जाकेट पहने बराबर बातें करता जा रहा था—दूकानों की खिड़कियों में रखी हुई प्रत्येक वस्तु के विषय में जो उसकी नजर में पड़ जाती—नेकटाईयाँ, रिवाल्वर, खिलौने, स्त्रियों के फ्राक, मशीनें, मिठाइयाँ और चर्च में पहने जाने वाले लबादे आदि सभी वस्तुओं के विषय में वह लगातार बातें किए चला जा रहा था। अचानक उसकी निगाह एक थियेटर के बड़े-बड़े टाइप में छपे हुए इश्तहार पर पड़ी।

"यूरियल अकोस्टा ! मैं उसे देख चुका हूँ। तुमने देखा है ? ये यहूदी खूब बात करते हैं ! है न ऐसी बात ? तुम्हें याद है ? यह सब झूठ है। एक प्रकार के व्यक्ति स्टेज पर मिलते हैं और दूसरे प्रकार के

गलियों में या बाजारों में । मुझे हँसोड़ आदमी अच्छे लगते हैं—यहूदी और तातारी । देखो तातारी कितनी मस्ती से खुल कर हंसते हैं 'यह अच्छी बात है कि वे स्टेज पर तुम्हें वास्तविक जीवन नहीं दिखाते, केवल वह दिखाते हैं जो बिल्कुल एकाकी, अपरिचित सा और कृत्रिम होता है । जहाँ तक असली जीवन को दिखाने का प्रश्न है वे चुप्पी साधे रहते हैं । और इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि हमारा अपना असली जीवन ही हमारे लिये बहुत है ! लेकिन यदि वे तुम्हें सच्चा जीवन दिखाएँ तो यह पूरी तरह से असली और सत्य होना चाहिये और बिना किसी दयाभाव के स्टेज पर बच्चों को भी अभिनय करना चाहिये क्योंकि जब वह अभिनय करते हैं तो वह सच्चा होता है ।

"लेकिन तुम तो उसे पसन्द नहीं करते जो बिल्कुल वास्तविक होता है ।"

"क्यों नहीं ? मैं पसन्द करता हूँ यदि यह रोचक हो तो ।"

सूर्य पुनः वर्षा के जल से धुले उस नगर पर चमकने लगा । हम लोग उस समय तक सड़कों पर घूमते रहे जब तक कि गिरजे में सांध्य प्रार्थना के घण्टे बजने शुरू नहीं हुए । शाश्का मुझे एक टूटे फूटे स्थान की ओर खींच कर ले गया । वहाँ एक फलों के बाग की चहारदीवारी थी जिसका मालिक रैन्किन नामक एक क्रूर सरकारी कर्मचारी था—सुन्दरी लिजा का पिता ।

"यहीं मेरा इन्तजार करना, करोगे न ?" उसने मुझसे प्रार्थना की और बिल्ली की तरह उछल कर उस दीवाल पर चढ़ गया । उसने वहाँ एक खम्भे के सहारे बैठ कर धीरे से सीटी बजाना शुरू किया । फिर अपनी टोपी को अत्यन्त प्रसन्नता और नम्रतापूर्वक उठाकर, वह एक लड़की से बातें करने लगा, जो मुझे दिखाई नहीं दे रही थी । वहाँ बैठा हुआ वह इस

मेरे ईश्वर! मैं अपने आप सोचने लगता हूँ—यह सब मुण्ड की मुण्ड आखिर क्यों हैं। इनमें से हरेक किसी न किसी को प्यार अवश्य करेगी और यदि वे अब नहीं करतीं तो कल तो उन्हें अवश्य ही प्यार करना पड़ेगा या अधिक से अधिक एक महीने बाद तो अवश्य ही। वह एक ही बात है। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैं तो केवल यही मानता हूँ। यही जीवन है! क्या जीवन में प्यार से भी अच्छी और कोई चीज है? सोचो जरा—रात क्या है? प्रत्येक व्यक्ति आलिंगन और चुम्बन में व्यस्त है। ओह, भाई, यही सब कुछ है, तुम जानते हो, यह एक ऐसी चीज है जिसका तुम केवल अनुभव भी कर सकते हो, उसे बता नहीं सकते। यह स्वर्ग है–वास्तविक स्वर्ग।

उछल कर वह बोला—"आओ घूमने चलें।"

आकाश भूरे बादलों से ढका हुआ था, धूल के कणों की भाँति वर्षा की छोटी छोटी फुहियाँ पड़ रही थीं—हल्की सूखी सी ठंड थी। परन्तु शाश्का, हर बात से बे-फिकर, हर बात को भुला देने वाला, अपनी हल्की जाकेट पहने बराबर बातें करता जा रहा था–दूकानों की खिड़कियों में रखी हुई प्रत्येक वस्तु के विषय में जो उसकी नजर में पड़ जाती–नेकटाईयाँ, रिवाल्वर, खिलौने, स्त्रियों के फ्राक, मशीनें, मिठाइयाँ और चर्च में पहने जाने वाले लबादे आदि सभी वस्तुओं के विषय में वह लगातार बातें किए चला जा रहा था। अचानक उसकी निगाह एक थिएटर के बड़े-बड़े टाइप में छपे हुए इश्तहार पर पड़ी।

"यूरियल अकोस्टा! मैं उसे देख चुका हूँ। तुमने देखा है? ये यहूदी खूब बात करते हैं! है न ऐसी बात? तुम्हें याद है? यह सब झूठ है। एक प्रकार के व्यक्ति स्टेज पर मिलते हैं और दूसरे प्रकार के

गलियों में या बाजारों में । मुझे हँसोड़ आदमी अच्छे लगते हैं—यहूदी और तातारी । देखो तातारी कितनी मस्ती से खुल कर हंसते हैं "यह अच्छी बात है कि वे स्टेज पर तुम्हें वास्तविक जीवन नहीं दिखाते, केवल वह दिखाते हैं जो बिल्कुल एकाकी, अपरिचित सा और कृत्रिम होता है । जहाँ तक असली जीवन को दिखाने का प्रश्न है वे चुप्पी साधे रहते हैं । और इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि हमारा अपना असली जीवन ही हमारे लिये बहुत है । लेकिन यदि वे तुम्हें सच्चा जीवन दिखाएँ तो यह पूरी तरह से असली और सत्य होना चाहिये और बिना किसी दयाभाव के स्टेज पर बच्चों को भी अभिनय करना चाहिये क्योंकि जब वह अभिनय करते हैं तो वह सच्चा होता है ।

"लेकिन तुम तो उसे पसन्द नहीं करते जो बिल्कुल वास्तविक होता है ।"

"क्यों नहीं ? मैं पसन्द करता हूँ यदि वह रोचक हो तो ।"

सूर्य पुनः वर्षा के जल से धुले उस नगर पर चमकने लगा । हम लोग उस समय तक सड़कों पर घूमते रहे जब तक कि गिरजे में सांध्य प्रार्थना के घण्टे बजने शुरू नहीं हुए । शास्का मुझे एक टूटे फूटे स्थान की ओर खींच कर ले गया । वहाँ एक फलों के बाग की चहारदीवारी थी जिसका मालिक रेन्किन नामक एक क्रूर सरकारी कर्मचारी था—सुन्दरी लिजा का पिता ।

"यहाँ मेरा इन्तजार करना, करोगे न ?" उसने मुझसे प्रार्थना की और बिल्ली की तरह उछल कर उस दीवाल पर चढ़ गया । उसने वहाँ एक खम्भे के सहारे बैठ कर धीरे से सीटी बजाना शुरू किया । फिर अपनी टोपी को अत्यन्त प्रसन्नता और नम्रतापूर्वक उठाकर, वह एक लड़की से बातें करने लगा, जो मुझे दिखाई नहीं दे रही थी । वहाँ बैठा हुआ वह इस

प्रकार उछल कूद मचा रहा था कि मुझे यह भय हुआ कि कहीं नीचे न गिर पड़े।

"नमस्कार, एलिजावेता याकोव्लेव्ना ?"

मैं दीवाल की दूसरी तरफ से आने वाले जवाब को तो नहीं सुन सका परन्तु दो तख्तों की दरार में से मुझे, फूलोंदार एक फ्राक, एक सफेद हाथ की पतली कलाई जिसमें मालियों की एक कैंची थी दिखाई दी।

"नहीं," शाश्का ने उदास स्वर में परन्तु झूठ बोलते हुए कहा—"मैं अभी तक उसे पढ़ने का अवसर नहीं निकाल पाया हूँ। तुम जानती हो मैं कितनी सख्त महनत करता हूँ और मैं रात को ही तो काम करता हूँ। दिन को मुझे इसीलिये सोना पड़ता है और मेरे साथी भी मुझे ठीक तरह से आराम नहीं करने देते। जब मैं काम करते समय एक के बाद एक अक्षर जमाता जाता हूँ तो मुझे एक मात्र तुम्हारा ही ध्यान रहता है। हाँ, सचमुच । परन्तु मुझे टाइप की पूरी लाइनें बनाना अच्छा नहीं लगता। कविता पढ़ने में अधिक आसान होती है क्या मैं नीचे आ जाऊँ ? क्यों नहीं ? नेक्रोसोव ! हाँ अच्छा, बहुत, सिर्फ वह प्रेम के विषय में अधिक नहीं लिखता। तुम गुस्सा क्यों हो ? एक मिनट ठहरो, क्या इसमें कोई बुरी बात है ? तुमने मुझसे पूछा कि मुझे क्या पसन्द है और मैंने कहा कि मुझे सबसे अच्छा प्रेम लगता है—हरेक व्यक्ति इसे ही पसन्द करता है, ठहरो "

उसने बोलना बन्द कर दिया और उस दीवाल पर एक खाली बोरे की तरह लटक गया, फिर सीधा बैठ कर वह वहाँ एक दुखी और चिन्तित कौवे की तरह कुछ सैकिन्डों तक बैठा रहा और अपनी टोपी की नोंक से अपने घुटने को थपथपाता रहा। डूबते हुए सूर्य की सुनहली किरणों में

हवा से धीरे धीरे लहराते हुए उसके लाल रङ्ग के वस्त्र बड़े सुन्दर लग रहे थे।

"वह चली गई!" उसने जमीन पर कूदते हुए गुस्से से कहा। "उसे यह बहुत बुरा लगा है कि मैंने एक किताब नहीं पढ़ी—एक किताब। शैतान उसे ले जाय। उसने मुझे एक चीज दी जो एक पुस्तक की अपेक्षा चपटे लोहे जैसी प्रतीत हो रही थी। वह लगभग डेढ़ इञ्च मोटी थी.... चलो चलें।"

"कहाँ?"

"इसकी क्या फिकर।"

वह धीरे धीरे पैर घसीटता हुआ चलने लगा। उसके चहरे पर थकावट के चिन्ह थे। वह खिड़कियों की ओर जिन पर सूर्य की तिरछी किरणें पड़ रहीं थीं, दुःख पूर्ण मुद्रा से देखता हुआ चल रहा था।

"आखिर उसे किसी न किसी को तो प्यार करना ही पड़ेगा" उसने सोचते हुए कहा—"वह मुझे प्यार क्यों नहीं करती? परन्तु नहीं! वह चाहती है कि मैं किताबें पढ़ूं। सोचती है कि मैं मूर्ख हूं। उसकी आँखें दिन की रोशनी से भी अधिक चमकदार हैं—और वह चाहती है कि मैं किताबें पढ़ूं! यह अच्छा मजाक है। वास्तव में, मैं उसके योग्य नहीं परन्तु तुम केवल अपने बराबर वाले से ही तो हमेशा प्रेम नहीं करते!"

कुछ क्षणों तक खामोश रहने के उपरान्त वह धीरे धीरे गुनगुनाने लगा:

"और वह बहुत समय तक इस संसार में उदासी रही, हृदय में विचित्र अभिलाषाएं लिए हुए। और एक बुढ़िया नौकरानी हो बनी रही। मूर्ख!"

मैं हँसा। उसने चकित होकर मेरी ओर देखा और पूछा

"क्या बात है ? क्या मैं बेवकूफी की बातें कर रहा हूँ। उँह, भाई मेक्सीमिच ! मेरा हृदय उफन रहा है उफनता चला जा रहा है जिसका कोई अन्त नहीं। मैं अनुभव करता हूँ जैसे मुझ में हृदय के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है केवल हृदय विस्तृत ।"

हम नगर के सिरे पर पहुँच गये थे परन्तु इस बार दूसरे सिरे पर। हमारे सामने एक विस्तृत मैदान फैला हुआ था और दूर 'यग लेडीज इन्स्टीट्यूट' का विशाल श्वेत भवन दिखाई दे रहा था जो वृक्षों से घिरा हुआ, ईंटों की एक दीवाल के पीछे था और जिसकी ईंटों की सड़क ओसरे तक चली गई थी।

"मैं उसके लिए किताबें पढ़ूँगा। इससे मैं मर तो जाऊँगा नहीं," शास्का ने सोचते हुए गम्भीरता पूर्वक कहा—"भविष्य भयकर उलझन है। मैं तुम्हें क्या बताऊँ भाई ? मैं जाकर स्टेपखा से मिलूँगा मैं उसकी गोद में सिर रखकर सो जाऊँगा। फिर मैं जागूँगा, हम दोनों शराब पीयेंगे और मैं फिर सो जाऊँगा। मैं रात भर उसके साथ रहूँगा। आज हमारा दिन बुरा नहीं बीता है—हम दोनों का ?"

उसने कस कर मेरा हाथ दबाया और कोमलता पूर्वक मेरी ओर देखने लगा।

"मुझे तुम्हारे साथ घूमना अच्छा लगता है," उसने कहा, "तुम मेरे साथ हो और फिर भी ऐसा लगता है कि तुम वहाँ नहीं हो। तुम मेरी आज़ादी में जरा भी रुकावट नहीं डालते। इसी को मैं अच्छा और सच्चा साथी होना मानता हूँ।"

इस प्रकार मेरी अनुचित प्रशंसा कर शास्का मुड़ा और तेजी से नगर की ओर चल दिया। उसके हाथ जेबों में पड़े हुए थे, उसकी टोपी सिरके पिछले हिस्से पर झुकी हुई थी। वह सीटी बजाता हुआ चला रहा था। वह बहुत पतला और तेज मालूम पड़ रहा था-एक सुनहली सिरे वाली कील की तरह। मुझे दुख था कि वह स्टेपखा के पास वापिस जा रहा था परन्तु अब मै जान गया था कि उसे कोई न कोई ऐसा अवश्य चाहिए जिसे वह प्यार करे। उसे अपने हृदय की उदार भावना-प्रेम को किसी न किसी को अवश्य देना है।

सूर्य की लाल किरणें उसकी पीठ पर पड़ रही थीं। ऐसा मालूम हो रहा था मानो वे उसे आगे की ओर धकेल रही हों।

जमीन ठंडी हो रही थी, खेत सुनसान थे, नगर से जैसे धीमी धीमी मन्द ध्वनि उठ रही थी। शास्का नीचे झुका, एक पत्थर उठाया और हाथ का झटका देकर दूर फेंक दिया।

फिर मेरी तरफ चिल्ला कर बोला--"अच्छा, फिर मिलेंगे।"

नमक का दलदल

"नमक के दलदल पर चले जाओ, दोस्त। वहाँ हमेशा काम मिल सकता है। जब चाहो तब। क्योंकि वह काम बहुत मुश्किल है। कोई भी वहाँ ज्यादा दिनों तक नहीं ठहरता। सब भाग जाते हैं। उसे बर्दाश्त नहीं कर पाते। तुम जाकर दो एक दिन काम करके देख लो। वहाँ एक ठेले की मजदूरी लगभग सात कोपेक मिलती है। उससे एक दिन का गुजारा मजे में चल जाता है।"

उस मछुवे ने, जिसने मुझे यह सलाह दी थी, थूका, समुद्र के नीले क्षितिज की ओर देखा और अपने आप एक नीरस गाना गुनगुना उठा। मैं उसके पास मछली पकड़ने वालों की एक झोपड़ी की छाया में बैठा हुआ था। वह बैठा हुआ अपना पाजामा सी रहा था और जम्हाई लेता बड़ी उदासीनता के साथ इधर उधर देखता हुआ बताता जा रहा था कि वहाँ काम काफी नहीं था और यह कि काम पाने के लिए वहाँ बड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।

"जब तुम वहाँ बहुत ज्यादा थक जाओ तो यहाँ चले आना और सुस्ता लेना। हमें वहाँ की बातें बताना। यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। यही कोई पाँच मील के करीब है। यह जिन्दगी भी बड़ी अजीब है।"

मैंने उससे विदा ली, उसकी सलाह के लिए धन्यवाद दिया और किनारे किनारे नमक के दलदल की तरफ चल पड़ा। अगस्त का महीना था। सुबह भी गर्मी पड़ रही थी। आसमान निर्मल था, समुद्र शान्त था। इसकी लहरें एक दूसरी के पीछे, हल्की सी शोकपूर्ण ध्वनि के साथ रेतीले किनारे पर टकरा रही थीं। अपने से काफी आगे, नीली धुन्ध में, तट की पीली बालू पर

मुझे सफेद धब्बे से दिखाई दे रहे थे। यह श्रोचाकोव नामक कस्बा था। मेरे पीछे वह झोपड़ी चमकीली पीली बालू के टीलों और समुद्र की नीली चमक में छिप गई थी।

झोपड़ी में, जहाँ मैंने रात बिताई थी, मैंने अनेक प्रकार की ऐसी पुरानी कहानियाँ और रायें सुनी थीं जिन्होंने मेरे उत्साह को ढीला कर दिया था। लहरों का संगीत मेरी मानसिक स्थिति के अनुकूल था और उसे और गहरा बना रहा था।

कुछ ही देर बाद नमक का दलदल दिखाई पड़ने लगा। जमीन के तीन टुकड़े, प्रत्येक लगभग चार सौ वर्गगज लम्बा चौड़ा और नीची मेड़ों तथा हल्की खाईयों से एक दूसरे से पृथक, नमक खोदने की तीन विभिन्न स्थितियों की सूचना दे रहे थे। पहले टुकड़े में समुद्र का पानी भरा हुआ था जो भाप बन कर उड़ जाने के बाद नमक की हल्के भूरे एवं गुलाबी रंग की एक पर्त जमीन पर छोड़ देता था। दूसरे टुकड़े में नमक को ढेरियों की शक्ल में इकट्ठा किया जा रहा था। औरतें फावड़े हाथ में लिए, घुटनों तक चमकीली काली कीचड़ में खड़ी, बिना एक दूसरे से बातें किए, चुपचाप काम कर रहीं थीं। उनके हल्के भूरे रंग के शरीर उस गहरी, नमकीन, तेजाबी कीचड़ में लापरवाही के साथ इधर उधर फिर रहे थे। इस कीचड़ को यहाँ वाले 'रैप' कहते थे। तीसरे टुकड़े में नमक को हटाया जा रहा था। एक एक ठेले पर दो दो आदमी लगे हुए उन्हें धीरे धीरे चुपचाप खींचे लिए जा रहे थे। ठेलों के पहिए चूँ चरं का शोर मचा रहे थे। और यह शोर ऐसा लगता था मानो मनुष्यों की नंगी पीठें शोकपूर्ण स्वर में भगवान से प्रार्थना कर रही हों। और भगवान ऐसी असह्य गर्मी की वर्षा कर रहा हो जिसने झुलसी हुई भूरी जमीन को, जिस पर जगह जगह नमक के दलदल में उगने वाली घास और चमकती हुई नमक की पर्तें पड़ी हों, विदीर्ण कर डाला हो। उन ठेलों की उस मनहूस चरं चूँ की आवाज के ऊपर फोरमैन की भारी आवाज सुनाई पड़ रही थी जिसमें वह उन मजदूरों को गालियाँ दे रहा था जो नमक के ठेले उसके पैरों के पास उलट रहे थे। उसका काम बाल्टी से उस पर पानी

छिड़कना और फिर उसकी ऊँची सी मीनार खड़ी कर देना था। वह एक लम्बा और हबसियों की तरह काला आदमी था और नीली कमीज तथा सफेद पाजामा पहन रहा था। वह एक नमक के ढेर पर खड़ा, फावड़े को हवा में हिलाता हुआ उन आदमियों पर चिल्ला रहा था जो तख्तों पर ठेलों को चला रहे थे।

"इसे बाईं तरफ खाली करो! बाईं तरफ, ओ रीछ! तेरी चमड़ी को शैतान ले जाय! मुक्कों के मारे दोनों आँखें सुजा दूंगा! अबे ओ बिच्छू, तू किधर जा रहा है।"

दुष्टतापूर्वक उसने अपनी कमीज के किनारे से अपने मुँह का पसीना पोंछा, घुरघुराया और बिना रुके गालियाँ देता हुआ, अपनी पूरी ताक़त लगा कर फावड़े से नमक को समतल करने में लग गया। मजदूर मशीन की तरह अपने ठेलों को ऊपर ले जाते और उसकी आज्ञा मानकर मशीन की तरह खाली कर देते। वह बराबर हुक्म देता जा रहा था "बाईं तरफ, दाहिनी तरफ।" ऐसा कर वे अपनी पीठ सीधी करते और लड़खड़ाते कदमों से, काली कीचड़ में आधे डूबे हुए काँपते तख्तों पर होकर, अपने ठेलों को ले, जो अब कम आवाज कर रहे थे, दूसरी खेप लेने के लिए लौट आते।

"इनमें जरा सी मिर्चें झोंक दो न, हरामियो!" फोरमैन उन पर चीखा।

वे भयभीत से, चुपचाप इसी तरह काम करते चले जा रहे थे मगर कभी कभी उनके धूल और पसीने से सने उदास थके हुए चेहरों की मरोड़ में क्रोध और असन्तोष के भाव झलक उठते थे। कभी कभी कोई ठेला तख्तों पर से फिसल कर कीचड़ में समा जाता। आगे वाले ठेले और भी आगे बढ़ जाते, पीछे आने वाले ठेलों को रुक जाना पड़ता जब कि उन्हें पकड़े हुए चिथड़े पहने आवाराओं की सी मुद्रा वाले मजदूर अपने उन साथियों को उदासीनता के साथ देखते रहते जो उस मनों भारी ठेले को उठाकर पुन तख्तों पर रखने में व्यस्त रहते।

निर्मल आकाश में से सूर्य गर्मी की एक धुंधली सी चादर तानता हुआ तेजी से चमक रहा था। वह बढ़ते हुए उत्साह के साथ अपनी तीखी किरणों को निरन्तर पृथ्वी पर केन्द्रित कर रहा था मानो कि यह दिन अन्य सभी दिनों से पृथ्वी के प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त करने के लिए अधिक उपयुक्त था।

जब मैंने यह सब देख और समझ लिया तो मैंने कोई काम पाने के लिए अपना भाग्य आजमाने का निश्चय कर लिया। अपने चेहरे पर उदासीनता का सा भाव धारण कर मैं उस तख्ते पर चढ़ा जिसके नीचे मजदूर खाली ठेले लिए जा रहे थे।

"बधाई दोस्तो भगवान तुम्हारा भला करें।"

इस बधाई के बदले में मिला उत्तर बिल्कुल अप्रत्याशित सा था। पहले मजदूर ने जो एक तगड़ा भूरे बालों वाला व्यक्ति था तथा घुटनों तक पाजामा और कन्धों तक कमीज की बाहें चढ़ाए था तांबे के से रंग के अपने शरीर का प्रदर्शन करते हुए मेरी बात को नहीं सुना और मेरी तरफ तनिक भी ध्यान न देकर आगे बढ़ गया। दूसरे मजदूर ने जो भूरे बालों तथा कंजी आँखों वाला व्यक्ति था, मेरी तरफ दुश्मन की सी नजर से देखा और एक भारी गाली देते हुए मुँह चिढ़ाया। तीसरे ने जो स्पष्ट रूप से एक ग्रीक था क्योंकि उसका रंग मक्खी की तरह भूरा तथा बाल घुंघराले थे—ऐसा भाव प्रकट किया कि उसे इस बात का दुख है कि उसके दोनों हाथ घिरे हुए हैं इसलिए वह घूंसों से मेरी नाक का स्वागत करने में असमर्थ है। यह बात एक ऐसे उदासीनता पूर्ण स्वर में कही गई थी जिसका उस इच्छा से कोई सम्बन्ध नहीं था। चौथे ने अपनी पूरी ताकत से चीखते हुए कहा—"हलो, बनावटी आँखों वाले अन्धे!" और उसने मुझे ठोकर मारने की कोशिश की।

अगर मैं गलती नहीं करता तो यह स्वागत वैसा ही था जिसे सभ्य समाज में 'उपेक्षापूर्ण स्वागत' कहा जाता है और इससे पहले इस प्रभावशाली ढंग से मेरा ऐसा स्वागत कहीं भी नहीं हुआ था। दुःखी होकर मैंने अनजाने ही अपना चश्मा उतारा और जेब में रख लिया फिर फोरमैन की तरफ ध्यान

पाने के लिए बढ़ा। उसके पास पहुँचने से पहले ही वह चीखा

"ए, क्या चाहते हो? काम चाहते हो?"

मैंने उसे बताया कि हाँ, काम चाहता हूं।

"तुमने कभी ठेला खींचा है?"

मैंने बताया कि मैंने मिट्टी ढोई है।

"मिट्टी? इससे क्या होता है। मिट्टी ढोना दूसरी बात है। यहं नमक ढोया जाता है, मिट्टी नहीं। तुम तो जाकर शैतान के यहाँ रहो। च ये राक्षसों जैसी हड्डियों वाले, इसे यहाँ मेरे पैरों के पास डालो।"

'राक्षसों जैसी हड्डियों' वाला मजदूर, जो भीम जैसा भारी और त चौड़ा व्यक्ति था तथा जिसकी मूँछें फैहरा रहीं थीं और नाक फुन्सियों से रही थी, जोर से घुरघुराया और अपना ठेला पलट लिया। नमक बाहर नि पड़ा। उस मजदूर ने गाली दी, फोरमैन ने भी जवाब में गाली दी, दोन एक दूसरे की तरफ आत्मीयता पूर्ण मुस्कराहट के साथ देखा और मेरी मुड़े।

"अच्छा, तो तुम क्या चाहते हो?" फोरमैन ने पूछा।

"क्यों, क्या अपनी रोटियों के लिए नमक लेने के लिए आये हो, भालू?" उस भीमकाय मजदूर ने फोरमैन की तरफ आँखें मारते हुए पूछ

मैंने फोरमैन से प्रार्थना की कि मुझे काम पर ले ले और उसे विश दिलाया कि मैं जल्दी ही काम सीख लूँगा और दूसरों के बराबर काम लगूँगा।

"इस काम को सीखने से पहले ही तुम अपनी पीठ का भुर्ता लोगे। मगर मुझे क्या? चलो, काम करो। मगर मैं पहले दिन तुम्हें प कोपिक से ज्यादा नहीं दूंगा। ए, इसे एक ठेला दे दो।"

न मालूम कहाँ से एक अधनंगा लड़का निकल आया। उसकी टांगों पर घुटनों तक चिथड़े लिपटे हुए थे।

"मेरे साथ आओ," उसने मेरी तरफ सन्देह के साथ देखते हुए कह

मैं उसके साथ उस जगह गया जहाँ ठेलों का एक अम्बार सा

हुआ था और अपने लिए एक हल्का सा ठेला छांटने में लग गया। लड़का अपनी टांगें खुजाता और मेरी तरफ देखता हुआ खड़ा रहा।

जब मैंने अपना ठेला छांट लिया तो वह बोला : "जरा देखो तो सही तुमने कौनसा छांटा है तुम्हें दिखाई नहीं देता कि इसके पहिए टेढे हैं ?"—इतना कह कर वह दूर हट गया और जमीन पर लेट गया।

मैंने दूसरा ठेला छांटा और उन मजदूरों के साथ जा मिला जो नमक लेने के लिए जा रहे थे मगर मेरा मन एक अस्पष्ट सी बेचैनी से भरा हुआ था जिसने मुझे अपने साथी मजदूरों से बात करने से रोक दिया। उन सबके चेहरों पर थकावट और चिड़चिड़ेपन का भाव झलक रहा था। यद्यपि यह भाव निश्चित रूप से था। फिर भी अस्पष्ट था। वे लोग बिल्कुल पस्त और भयानक हो रहे थे। वे लोग सूरज पर क्रुद्ध हो रहे थे क्योंकि वह उनकी चमड़ी को झुलसा रहा था, तख्तों पर इसलिए कि वे उनके ठेलों के भार से झुक जाते थे, उस काली कीचड़ से, जो गाढ़ी, नमकीन और नुकीले टुकड़ों से भरी हुई थी, इसलिए कि वह उनके पैरों में पहले तो घाव बना देती थी और फिर उन घावों को काट काट कर नासूर के रूप में बदल देती थी। संक्षेप में कहें तो वे वहाँ की प्रत्येक वस्तु पर क्रुद्ध हो रहे थे। यह भयानक क्रोध उनकी उस दृष्टि में, जिससे वे एक दूसरे की तरफ देखते थे, तथा उन गालियों में जो रह रह कर उनके चटकते गलों में से निकल उठती थीं, स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। किसी ने मेरी तरफ निगाह उठाकर भी नहीं देखा। मगर जब हम लोग जमीन के उस टुकड़े में घुसे और तख्तों पर होकर नमक के चार ढेरों की तरफ बढ़े और मैंने अचानक अपनी टांग में कड़ी चोट अनुभव की और इस आशा से मुड़ा कि शायद कोई मुझ पर हमला करे।

"अपने पैर उठा, काहिल यहीं का।"

मैंने जल्दी से अपने पैर उठा लिए फिर अपने ठेले को रख कर उसमें नमक भरने लगा।

"और भरो," उस डॉन के निवासी भीम ने हुक्म दिया जो मेरे पास ही खड़ा हुआ था।

मैंने, जितना भर सकता था, उतना भर लिया। उसी समय पीछे वाले मजदूर आगे वालों पर चीखे. "आगे बढ़ो !" आगे वालों ने थूक से हाथ गीले किए और जोर से शोर मचाते हुए अपने ठेलों को उठाया। ऐसा करने में वे झुककर दोहरे हो गए और अपनी गर्दनों को आगे निकाले हुए उन्होंने पूरा जोर लगाया, मानो ऐसा करने से उनका बोझा हल्का हो गया हो।

उनके तरीके की नकल करते हुए मैंने भी, अपनी शक्ति भर झुक कर आगे की तरफ जोर लगाया। मैंने ठेला उठा लिया। पहिया जोर से चरमराया। मुझे लगा कि मेरी गले की हड्डी टूट जायेगी। जोर पड़ने से मेरे बाँह की माँस पेशियां फड़कने लगीं। मैंने लड़खड़ाते हुए पहला क़दम उठाया, फिर दूसरा.. मुझे दाहिनी तरफ, बाईं तरफ और कभी सामने की तरफ धक्के लग रहे थे . कि अचानक पहिया तख्ते से नीचे उतर गया और मैं मुँह के बल कीचड़ में जा गिरा। ठेले ने उपदेश सा करते हुए मेरे सिर पर अपने हैन्डिल की चोट मारी और फिर धीरेसे उलट गया। और उन कान फाड़ने वाली सीटियों, चीख पुकारों और अट्टहास की उन ध्वनियों ने, जो मेरे गिरते ही उठीं थीं, मानो मुझे उस गर्म कीचड़ में और भी गहरा डुबो दिया। और जब मैं उस भारी ठेले को उठाने के व्यर्थ प्रयत्न में, हाथ पैर पीट रहा था तो मैंने अपने सीने में एक भयानक दर्द का अनुभव किया।

"आखिर यह तख्तों पर क्यों नहीं चल सका ?" उसने कहा और गुस्से से बड़बड़ाता हुआ अपना ठेला लिए आगे बढ़ गया।

आगे वाले आदमी अपने रास्ते पर चलते रहे; पीछे वाले मेरे ठेले को उठाने के प्रयत्नों को उपहास एवं क्रोध भरी दृष्टि से देखते रहे। मेरे शरीर पर से पसीना और कीचड़ की फुहारें सी छूट रही थीं। किसी ने भी मेरी मदद नहीं की। नमक के ढेर पर से फोरमैन की आवाज आई :

"रुक क्यों गए, शैतानो ! कुत्तो ! सुअरो ! निगाह से ओझल होते ही हरामखोरी पर उतर आये। चलो, आगे बढ़ो, तुम पर खुदा का कहर टूटे !"

"रास्ता छोड़ो," वह उक्रेन निवासी चीखा और अपने ठेले को बगली से मेरे सिर को लगभग टकराते हुए आगे बढ़ गया।

अकेले रह जाने पर मैंने किसी तरह अपने ठेले को बाहर निकाल लिया और क्योंकि अब वह खाली और चारों तरफ कीचड़ से सना हुआ था, मैं उसे लेकर वहाँ से इस इरादे से भागा कि बदल कर दूसरा ले आऊँ।

"फिसल गए दोस्त ? कोई बात नहीं; हरेक के साथ पहले पहल ऐसा ही होता है।"

मैंने चारों तरफ नजर डाली और देखा कि एक बीस साल का छोकरा एक नमक के ढेर के पास कीचड़ में एक तख्ते पर पालथी मारे हुए बैठा है। वह अपने हाथ के अँगूठे को चूस रहा था। उसने मेरी तरफ इशारा किया और उसकी उन आँखों ने, जो उंगलियों में होकर देख रही थीं, दया और मुस्कान भरी हुई थीं।

"मैं परवाह नहीं करता। जल्दी ही सीख जाऊँगा। तुम्हारे हाथ को क्या हुआ ?" मैंने पूछा।

"जरा सी खरोंच लग गई है मगर इसमें नमक लग रहा है। अगर इसे चूना न लाय तो शायद काम छोड़ कर भाग जाना पड़े। इस हाथ से फिर काम नहीं किया जा सकता। मगर वह फोरमैन तुम पर चीखे इससे पहले ही तुम काम पर लग जाओ तो अच्छा होगा।"

मैं वापस चला आया। दूसरा ढेर लाते समय कोई घटना नहीं घटी।

मैंने, जितना भर सकता था, उतना भर लिया। उसी समय पीछे वाले मजदूर आगे वालों पर चीखेः "आगे बढ़ो!" आगे वालों ने थूक से हाथ गीले किए और जोर से शोर मचाते हुए अपने ठेलों को उठाया। ऐसा करने में वे झुककर दोहरे हो गए और अपनी गर्दनों को आगे निकाले हुए उन्होंने पूरा जोर लगाया, मानो ऐसा करने से उनका बोझा हल्का हो गया हो।

उनके तरीके की नकल करते हुए मैंने भी, अपनी शक्ति भर झुक कर आगे की तरफ जोर लगाया। मैंने ठेला उठा लिया। पहिया जोर से चर-मराया। मुझे लगा कि मेरी गले की हड्डी टूट जायेगी। जोर पड़ने से मेरे बाँह की माँस पेशिया फड़कने लगीं। मैंने लड़खड़ाते हुए पहला क़दम उठाया, फिर दूसरा मुझे दाहिनी तरफ, बाईं तरफ और कभी सामने की तरफ धक्के लग रहे थे . कि अचानक पहिया तख्ते से नीचे उतर गया और मैं मुँह के बल कीचड़ में जा गिरा। ठेले ने उपदेश सा करते हुए मेरे सिर पर अपने है-न्डिल की चोट मारी और फिर धीरेसे उलट गया। और उन कान फाड़ने वाली सीटियों, चीख पुकारों और अट्टहास की उन ध्वनियों ने, जो मेरे गिरते ही उठीं थीं, मानो मुझे उस गर्म कीचड़ में और भी गहरा डुबो दिया। और जब मैं उस भारी ठेले को उठाने के व्यर्थ प्रयत्न में, हाथ पैर पीट रहा था तो मैंने अपने सीने में एक भयानक दर्द का अनुभव किया।

"जरा मदद करो, दोस्त," मैंने उस भीमकाय उक्रेन निवासी से कहा जो मेरे पास खड़ा हुआ दोनों हाथों से पेट पकड़े हँसी के मारे बुरी तरह हिल रहा था।

"कीचड़ पीने वाले हरामी! नहा रहे हो, क्यों? इसे तख्ते पर ऊपर उठाओ। बाईं तरफ से जोर लगाओ। च्, च्! अगर तुमने ध्यान नहीं रखा तो यह कीचड़ तुम्हें निगल जायेगी।" और फिर वह अपना पेट पकड़े हुए तब तक हँसता रहा जबतक कि उसके आंसू न निकल आए।

मेरे सामने वाले भूरे बालों वाले बुड्ढे ने मेरी तरफ देखा और हाथ के इशारे से मुझे एक तरफ हटा दिया।

"आखिर यह तख्तों पर क्यों नहीं चल सका?" उसने कहा और गुस्से से बड़बड़ाता हुआ अपना ठेला लिए आगे बढ़ गया।

आगे वाले आदमी अपने रास्ते पर चलते रहे; पीछे वाले मेरे ठेले को उठाने के प्रयत्नों को उपहास एवं क्रोध भरी दृष्टि से देखते रहे। मेरे शरीर पर से पसीना और कीचड़ की फुहारें सी छूट रही थीं। किसी ने भी मेरी मदद नहीं की। नमक के ढेर पर से फोरमैन की आवाज आई:

"रुक क्यों गए, शैतानो! कुत्तो! सुअरो! निगाह से ओझल होते ही हरामखोरी पर उतर आये। चलो, आगे बढ़ो, तुम पर खुदा का कहर टूटे!"

"रास्ता छोड़ो," वह उक्रेन निवासी चीखा और अपने ठेले को बगली से मेरे सिर को लगभग टकराते हुए आगे बढ़ गया।

अकेले रह जाने पर मैंने किसी तरह अपने ठेले को बाहर निकाल लिया और क्योंकि अब वह खाली और चारों तरफ कीचड़ से सना हुआ था, मैं उसे लेकर वहाँ से इस इरादे से भागा कि बदल कर दूसरा ले आऊँ।

"फिसल गए दोस्त? कोई बात नहीं; हरेक के साथ पहले पहल ऐसा ही होता है।"

मैंने चारों तरफ नजर डाली और देखा कि एक बीस साल का छोकरा एक नमक के ढेर के पास कीचड़ में एक तख्ते पर पालथी मारे हुए बैठा है। वह अपने हाथ के अँगूठे को चूस रहा था। उसने मेरी तरफ इशारा किया और उसकी उन आँखों में, जो उंगलियों में होकर देख रही थीं, दया और मुस्कान भरी हुई थीं।

"मैं परवाह नहीं करता। जल्दी ही सीख जाऊँगा। तुम्हारे हाथ को क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"जरा सी खरोंच लग गई है मगर इसमें नमक लग रहा है। अगर इसे चूसा न जाय तो शायद काम छोड़ कर भाग जाना पड़े। इस हाथ से फिर काम नहीं किया जा सकता। मगर वह फोरमैन तुम पर चीखे इससे पहले ही तुम काम पर लग जाओ तो अच्छा होगा।"

मैं वापस चला आया। दूसरी खेप लाते समय कोई घटना नहीं घटी।

फिर मैं तीसरी और चौथी तथा इसके बाद दो खेप और लाया। किसी ने मेरी तरफ जरा भी ध्यान नहीं दिया और मुझे इस स्थिति से बहुत बड़ा सन्तोष मिला जिसके लिए कि साधारण तौर पर मुझे खेद होता।

"खाने का समय होगया," किसी ने आवाज लगाई।

मुक्ति की एक गहरी साँस लेकर मजदूर लोग खाना खाने चले गए मगर उस समय भी उन्होंने कोई उत्साह अथवा आराम करने का मौका पाने पर किसी तरह की खुशी प्रकट नहीं की। वे हर काम अनिच्छापूर्वक और क्रोध एव विरक्ति की भावना को मानो दबाकर कर रहे थे। ऐसा लगता था मानो परिश्रम से चकनाचूर हड्डियों तथा गर्मी से थकी हुई मास पेशियों को यह विश्राम कोई भी आनन्द प्रदान करने में असमर्थ था। मेरी पीठ दुख रही थी। मेरी टांगों तथा कन्धों की भी यही हालत थी मगर मैंने इसे प्रकट नहीं होने दिया और जल्दी से शोरवे के बर्तन की तरफ बढ़ा।

"वहीं ठहरो," एक फटी नीली कुर्ती पहने हुए एक बुड्ढे मजदूर ने कहा। उसके चेहरे का रंग शराब पीने के कारण उसकी कुर्ती की ही तरह नीला हो गया था। और उसकी घनी तनी हुई भौहों के नीचे लाल, भयानक और मजाक सा उड़ाती हुई आँखें घूर रहीं थीं।

"वहीं ठहरो। तुम्हारा क्या नाम है?"

मैंने उसे बता दिया।

"हु! तुम्हारा बाप बेवकूफ था कि जिसने तुम्हारा ऐसा नाम रखा। मैक्सिम नाम वाले लोगों को पहले ही दिन शोरवे के बर्तन के पास जाने की इजाजत नहीं है। मैक्सिम लोग पहले दिन अपने ही खाने पर गुजर करते है, सुना तुमने? अगर तुम्हारा नाम इवान या और कुछ होता तो यह दूसरी बात होती। मिसाल के तौर पर मुझे ही ले लो। मेरा नाम मट्वी है, इसलिए मुझे खाना मिल गया। मगर मैक्सिम को नहीं मिलेगा। वह सिर्फ मुझे खाते हुए देख सकता है। बर्तन के पास से दूर हट जाओ।"

मैंने उसकी तरफ आश्चर्य के साथ देखा फिर दूर हट कर जमीन पर बैठ गया। मैं इस तरह के व्यवहार से भौंचक्का सा हो रहा था। इससे पहले

मुझे इस तरह का अनुभव नहीं हुआ था और मैंने ऐसे व्यवहार के योग्य कभी कोई काम नहीं किया था। इससे पहले भी अनेक अवसर ऐसे आए थे जब मैंने अन्य मसदूरों के साथ मिल कर काम किया था और प्रारम्भ से ही हमारे सम्बन्ध मित्रतापूर्ण और पारस्परिक सहयोग के रहे थे। यहाँ के वातावरण में कुछ विचित्रता थी और अपने अपमान और चोट के बावजूद भी मेरे हृदय में इसे जानने की जिज्ञासा बलवती हो उठी। मैंने इस रहस्य का उद्घाटन करने का निश्चय कर लिया और ऐसा निश्चय कर मैं बाहर से बिल्कुल शान्त हो कर उन लोगों को खाना खाते देखता रहा और उनके काम पर वापस जाने की प्रतीक्षा करने लगा। इस बात का पता लगाना बड़ा जरूरी था कि मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया गया।

[२]

आखिरकार उन्होंने खाना समाप्त किया, डकारें लीं और तम्बाखू पीते हुए उस बर्तन से दूर हट कर घूमने लगे। वह भीमकाय उक्रेन-निवासी और टांगों में पट्टियां लपेटे वह लड़का आकर मेरे सामने बैठ गए जिससे तख्तों पर छोड़े गए ठेलों की कतार मेरी निगाह से ओझल हो गई।

"तम्बाखू पीना चाहते हो दोस्त ?" उक्रेन-निवासी ने पूछा।

"शुक्रियाः मुझे कोई परहेज नहीं," मैंने जवाब दिया।

"तुम्हारे पास अपनी तम्बाखू नहीं है ?"

"अगर होती तो तुमसे न लेता।"

"ठीक है। लो," और उसने मुझे अपना पाइप पकड़ा दिया "क्या यहाँ बराबर काम करने का इरादा है ?"

"हाँ, जब तक कर सकूँगा।"

"हूँ, कहाँ से आये हो ?"

मैंने उसे बता दिया।

"क्या यहाँ से बहुत दूर है ?"

"लगभग तीन हजार मील।"

"ओहो ! बहुत दूर है। यहाँ कैसे आ गए ?"

"वैसे ही जैसे तुम आ गए।"

"तो तुम्हें भी चोरी के जुर्म में गाँव से निकाल दिया गया था।

"यह क्या माजरा है ?" यह अनुभव करते हुए कि मुझे फांस लिया गया मैंने पूछा।

"मैं यहाँ इसलिए आया था क्योंकि मुझे चोरी के कारण गाँव से निकाल दिया गया था और तुमने अभी कहा कि तुम भी उसी वजह से आए हो," और मुझे फन्दे में फांसने की सफलता पर वह खिलखिला कर हसने लगा।

उसका साथी खामोश रहा। उसने मेरी तरफ सिर्फ आँख मारी और धूर्तता के साथ मुस्कराने लगा।

"ठहरो ..." मैंने कहना शुरू किया।

"इन्तजार करने का समय नहीं दोस्त। काम पर वापस जाना है। चलो, उठो। मेरा ठेला ले लो और लाइन में मेरे पीछे रहना। मेरा ठेला बहुत अच्छा है। चलो।"

और वह चला गया। मैं उसका ठेला पकड़ने ही वाला था कि उसने जल्दी से कहा "ठहरो, मैं खुद उठा लूँगा। अपना मुझे दे दो। मैं अपना इसमें रख लूँगा और इसे सवारी कराऊँगा—इसे थोड़ा सा आराम तो कर लेने दो।"

'मेरे मन में शक पैदा हो गया। उसके साथ साथ चलते हुए मैंने उसके ठेले को गौर से देखा जो मेरे ठेले में उल्टा पड़ा हुआ था। ऐसा मैंने इस लिए किया कि कहीं मेरे साथ कोई शैतानी न की जा रही हो। मगर जिस बात पर मैंने गौर किया वह यह थी कि मैं एकाएक सबके आकर्षण का केन्द्र बन गया था। इसे छिपाने के प्रयत्न किए गए मगर मेरी तरफ रहरह कर आँख मारना, इशारे करना और फुसफुसाना यह बता रहा था कि जरूर कोई बात है। मैं जानता था कि मुझे सतर्क रहना चाहिए और मैंने सोचा कि पहले जो कुछ हो चुका है उसे देखते हुए इस बार जो कुछ होगा वह नितान्त मौलिक होगा।

"हम लोग आ गए," उक्रेन निवासी ने अपना ठेला बाहर निकाल कर मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, "इसे भरो।"

मैंने चारों तरफ देखा। हरेक मेहनत से काम कर रहा था इसलिए मैंने भी नमक भरना शुरु कर दिया। वहाँ नमक के फावड़ों पर से फिसलने के शब्द के अलावा और कोई भी शब्द नहीं सुनाई दे रहा था और मुझे यह खामोशी बहुत अखरी। मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि यहाँ से चले जाने में ही मेरी भलाई है।

"इतना काफी है। क्या सोगए? काम करो," नीले चेहरे वाले मद्‌वी ने हुक्म दिया।

मैंने ठेले के हत्थे पकड़े और भारी ताकत लगाकर उसे आगे को धकेला। एक भयानक दर्द से मेरी चीख निकल गई और मैंने ठेला छोड़ दिया। इससे और भी ज्यादा दर्द हुआ, पहिले से भी ज्यादा भयानक : मेरी दोनों हथेलियों की चमड़ी उधड़ गई थी। दर्द और गुस्से से दाँतो भींचे हुए मैंने ठेले के हत्थों को गौर से जाँचा और देखा कि उनका बाहरी हिस्सा फाड़कर सब को दूर रखने के लिए उसमें छोटी छोटी लकड़ियां ठोक दी गई थीं। यह सब इतनी कारीगरी के साथ किया गया था कि मुश्किल से पकड़ाई में आ सकता था। यह हिसाब लगा लिया गया था कि जब मैं हत्थों को जोर से पकड़ूंगा तो वे लकड़ियां निकल जायंगी और मेरी चमड़ी बीच में फंस जायगी। उनकी यह गणना सत्य प्रमाणित हुई। मैंने सिर उठाया और चारों तरफ देखा। चीख पुकार, शोर आदि मेरे चेहरे पर थप्पड़ सा मार रहे थे। मैंने अपने चारों ओर भद्दी और क्रूर मुस्कानें बिखरी हुई देखीं। नमक के ढेर पर से फोरमैन को गन्दी गालियां सुनाई दीं मगर किसी ने भी परवाह नहीं की। वे मेरी स्थिति से बहुत अधिक आकर्षित हो उठे थे। मैंने अपने चारों ओर नाराज़ी और लड़खड़ाती हुई निगाहों से देखा। मैं इस बात का अनुभव कर रहा था कि मेरा हृदय अपमान की भावना से, इन लोगों के प्रति घृणा से और बदला लेने की इच्छा से भीतर ही भीतर उबल रहा था। वे लोग हंसते और बकते हुए मेरे सामने इकट्ठे हो गए और मैं भयानक स्वर से [illegible]

से अत्याधिक व्याकुल होकर उन्हें अपमानित और परेशान करना चाह रहा था।

"जानवरो !" मैं घूंसे हिलाता और उन्हें उसी भद्दे तरीके से गालियाँ देता हुआ जैसी कि वे मुझे दे रहे थे, उनकी तरफ बढ़ता हुआ चीखा।

भीड़ में आतंक सा छा गया और वे लोग बेचैनी के साथ पीछे हट गए, मगर वह भीमकाय उक्रेन-निवासी और नीले चेहरे वाला मट्वी अपनी जगह खड़े रहे और चुपचाप आस्तीनें चढ़ाने लगे।

"आओ, आओ," उक्रेन निवासी ने मुझपर बराबर अपनी निगाह जमाये प्रसन्न होकर कहा।

"गेव्रीला, इसकी तबीयत ठीक कर देना," मट्वी ने उसे उत्साहित करते हुए कहा।

"तुमने मेरे साथ ऐसी हरकत क्यों की ?" मैंने चीख कर कहा। "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? क्या मैं तुम लोगों की ही तरह इन्सान नहीं हूँ ?" मैंने और भी अनेक भद्दी, गन्दी बातें बकीं और गुस्से से काँपने लगा और साथ ही इस बात से चौकन्ना रहा कि मेरे साथ और कोई भद्दी हरकत न होने पावे।

मगर इस बार जो निस्तेज फीके चेहरे मेरी तरफ घूमे उनमें थोड़ी सी सहानुभूति झलक रही थी और कुछ पर तो अपराध की काली छाया छा रही थी। यहाँ तक कि मट्वी और उक्रेन-निवासी भी एकाध कदम पीछे हट गए। मट्वी अपनी कमीज को मरोड़ने लगा तथा वह उक्रेन-निवासी अपनी जेबों में हाथ डाल कर टटोलने लगा।

"तुमने ऐसा क्यों किया ? किसलिए किया ?" मैंने जोर देते हुए कहा।

वे लोग बिल्कुल खामोश रहे। उक्रेन-निवासी जमीन पर निगाह गड़ाए एक सिगरेट को उलटता पलटता रहा। मट्वी वहाँ से सब से दूर हट गया। औरों ने उदास होकर अपने सिर झुकाए और अपने अपने ठेलों की तरफ मुड़ दिए। फोरमैन चीखता और घूंसे हिलाता हुआ आया। यह सब इतनी तेजी से हुआ कि नमक इकट्ठा करने वाली वे औरतें जिन्होंने मेरी चीख

सुन कर काम छोड़ दिया था, उस समय हमारे पास पहुँची जब मजदूर अपने अपने ठेलों पर वापस पहुँच गए थे। मैं इस कटु भावना से उद्वेलित होता हुआ वहाँ अकेला रह गया कि मेरे साथ अन्याय हुआ था और मैं उसका [illegible] नहीं ले सका। इस भावना ने उस पीड़ा को और भी असह्य बना दिया। मैं अपने प्रश्न का उत्तर चाहता था; मैं बदला लेना चाहता था। इस-लिए मैंने चीखते हुए कहा :

"एक मिनट ठहरो, साथियो !"

वे लोग रुक गए और चुपचाप मेरी तरफ देखने लगे।

"मुझे यह बताओ तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया। तुम्हारे भी तो आत्मा है !" अब भी वे खामोश थे और यह खामोशी ही उनका जवाब थी। अब अधिक स्वस्थ और शान्त होकर मैंने उनसे बातें करना शुरू कर दिया। मैंने यह कहते हुए शुरू किया कि मैं भी उन्हीं की तरह एक आदमी हूँ; कि उन्हीं की तरह मुझे भी पेट की भूख शान्त करनी पड़ती है इसलिए काम करना पड़ता है; कि मैं यहाँ उन्हीं की तरह काम करने आया था क्योंकि हम सब एक से भाग्य से बँधे हुए हैं; कि मैं उन्हें नीची निगाह से नहीं देखता या अपने को उनसे ऊँचा नहीं समझता।

"हम सब बराबर हैं," मैंने कहा, "और हमें हर तरह से एक दूसरे को समझना और आपस में एक दूसरे की मदद करना चाहिए।"

वे वहाँ खड़े हुए गौर से मेरी बातें सुन रहे थे हालांकि मुझसे आँखें नहीं मिला पा रहे थे। मैंने देखा कि मेरे शब्दों ने उन्हें प्रभावित किया है और इससे मुझे और भी उत्साह मिला। उन पर एक निगाह डालने पर ही मुझे इस बात का विश्वास हो गया। मैं एक विचित्र और तीखे आनन्द की भावना से भर उठा और नमक के एक ढेर पर गिर कर रोने लगा। कौन नहीं रोता ?

जब मैंने सिर उठाया तो मैं अकेला था। काम का समय समाप्त हो चुका था। और मजदूर पाँच पाँच और छः छः की टोलियों में नमक के ढेर के पास बैठे हुए, डूबते सूरज की रोशनी में गुलाबी बने नमक की पृष्ठभूमि को बड़े बड़े काले गन्दे धब्बों जैसे शरीरों से गन्दा बना रहे थे। चारों तरफ

से अत्याधिक व्याकुल होकर उन्हें अपमानित और परेशान करना चाह रहा था।

"जानवरो!" मैं घूंसे हिलाता और उन्हें उसी भद्दे तरीके से गालियाँ देता हुआ जैसी कि वे मुझे दे रहे थे, उनकी तरफ बढ़ता हुआ चीखा।

भीड़ में आतंक सा छा गया और वे लोग बेचैनी के साथ पीछे हट गए, मगर वह भीमकाय उक्रेन-निवासी और नीले चेहरे वाला मट्वी अपनी जगह खड़े रहे और चुपचाप आस्तीनें चढ़ाने लगे।

"आओ, आओ," उक्रेन निवासी ने मुझपर बराबर अपनी निगाह जमाये प्रसन्न होकर कहा।

"गेव्रीला, इसकी तबीयत ठीक कर देना," मट्वी ने उसे उत्साहित करते हुए कहा।

"तुमने मेरे साथ ऐसी हरकत क्यों की?" मैंने चीख कर कहा। "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? क्या मैं तुम लोगों की ही तरह इन्सान नहीं हूँ?" मैंने और भी अनेक भद्दी, गन्दी बातें बकीं और गुस्से से काँपने लगा और साथ ही इस बात से चौकन्ना रहा कि मेरे साथ और कोई भद्दी हरकत न होने पावे।

मगर इस बार जो निस्तेज फीके चेहरे मेरी तरफ घूमे उनमें थोड़ी सी सहानुभूति झलक रही थी और कुछ पर तो अपराध की काली छाया छा रही थी। यहाँ तक कि मट्वी और उक्रेन-निवासी भी एकाध कदम पीछे हट गए। मट्वी अपनी कमीज को मरोड़ने लगा तथा वह उक्रेन-निवासी अपनी जेबों में हाथ डाल कर टटोलने लगा।

"तुमने ऐसा क्यों किया? किसलिए किया?" मैंने जोर देते हुए कहा।

वे लोग बिल्कुल खामोश रहे। उक्रेन-निवासी जमीन पर निगाह गड़ाए एक सिगरेट को उलटता पलटता रहा। मट्वी वहाँ से सब से दूर हट गया। औरों ने उदास होकर अपने सिर खुजाए और अपने अपने ठेलों की तरफ मुड़ दिए। फोरमैन चीखता और घूंसे हिलाता हुआ आया। यह सब इतनी तेजी से हुआ कि नमक इकट्ठा करने वाली वे औरतें जिन्होंने मेरी चीख

सुन कर काम छोड़ दिया था, उस समय हमारे पास पहुँची जब मजदूर अपने अपने ठेलों पर वापस पहुँच गए थे। मैं इस कटु भावना से उद्वेलित होता हुआ वहाँ अकेला रह गया कि मेरे साथ अन्याय हुआ था और मैं उसका [illegible] नहीं ले सका। इस भावना ने उस पीड़ा को और भी असह्य बना दिया। मैं अपने प्रश्न का उत्तर चाहता था; मैं बदला लेना चाहता था। इसलिए मैंने चीखते हुए कहा :

"एक मिनट ठहरो, साथियो !"

वे लोग रुक गए और चुपचाप मेरी तरफ देखने लगे।

"मुझे यह बताओ तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया। तुम्हारे भी तो आत्मा है !" अब भी वे खामोश थे और यह खामोशी ही उनका जवाब थी। अब अधिक स्वस्थ और शान्त होकर मैंने उनसे बातें करना शुरू कर दिया। मैंने यह कहते हुए शुरू किया कि मैं भी उन्हीं की तरह एक आदमी हूँ; कि उन्हीं की तरह मुझे भी पेट की भूख शान्त करनी पड़ती है इसलिए काम करना पड़ता है; कि मैं यहाँ उन्हीं की तरह काम करने आया था क्योंकि हम सब एक से भाग्य से बँधे हुए हैं; कि मैं उन्हें नीची निगाह से नहीं देखता या अपने को उनसे ऊँचा नहीं समझता।

"हम सब बराबर हैं," मैंने कहा, "और हमें हर तरह से एक दूसरे को समझना और आपस में एक दूसरे की मदद करना चाहिए।"

वे वहाँ खड़े हुए गौर से मेरी बातें सुन रहे थे हालांकि मुझसे आँखें नहीं मिला पा रहे थे। मैंने देखा कि मेरे शब्दों ने उन्हें प्रभावित किया है और इससे मुझे और भी उत्साह मिला। उन पर एक निगाह डालने पर ही मुझे इस बात का विश्वास हो गया। मैं एक विचित्र और तीखे आनन्द की भावना से भर उठा और नमक के एक ढेर पर गिर कर रोने लगा। कौन नहीं रोता ?

जब मैंने सिर उठाया तो मैं अकेला था। काम का समय समाप्त हो चुका था। और मजदूर पाँच पाँच और छः छः की टोलियों में नमक के ढेर के पास बैठे हुए, डूबते सूरज की रोशनी से गुलाबी बने नमक की पृष्ठभूमि को बड़े बड़े काले गन्दे धब्बों जैसे शरीरों से गन्दा बना रहे थे। चारों तरफ

पूर्ण शान्ति थी। समुद्र से हवा का एक झोंका आया। एक नन्हा सा सफेद बादल का टुकड़ा आसमान पर तैरता हुआ जा रहा था। उससे छोटे छोटे भाप के टुकड़े टूट टूट कर आकाश की नीलिमा में घुलते चले जा रहे थे। वातावरण बड़ा उदास था।

मैं उठा और नमक के उस ढेर की तरफ इस पक्के इरादे से गया कि वहाँ से विदा लेकर अपनी मछली मारने वाली झोंपड़ी में वापस लौट जाऊँगा। मट्वी, उक्रेन-निवासी, फोरमैन और तीन दूसरे मोटी गर्दनों वाले अधेड़ मजदूर उठ खड़े हुए और मेरे पास पहुँचने पर मुझसे मिलने आए और इससे पहले कि मैं एक भी शब्द कह सकूँ मट्वी ने मेरी तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया और बिना मेरी तरफ देखे बोला.

"यह बात है, दोस्त अच्छा यह होगा कि तुम यहाँ से छोड़ कर वापस चले जाओ। हमने तुम्हारी मदद के लिए थोड़ा सा पैसा इकट्ठा कर लिया है। इसे ले लो।"

उसके हाथ में थोड़े से तांबे के सिक्के पड़े हुए थे जो उसके मेरी तरफ हाथ बढ़ाते समय बज उठे। मैं इस तरह स्तम्भित हो उठा था कि सिर्फ उनकी तरफ ताकता रह गया। वे लोग सिर नीचे किए, चुपचाप, बेवकूफों की तरह अपने चिथड़ों को मरोड़ते, पैर बदलते, चारों तरफ निगाह चुराते हुए देखते अपने कन्धे उचकाते खड़े थे। उनकी हरेक हरकत से यह स्पष्ट हो रहा था कि वे बहुत परेशान थे और जल्दी से जल्दी मुझसे छुटकारा पाना चाह रहे थे।

"मैं नहीं लूँगा," मट्वी के हाथ को दूर हटाते हुए मैंने कहा।

"अच्छा, अच्छा, हमारा अपमान मत करो। हम लोग सचमुच इतने बुरे नहीं हैं। हम जानते हैं कि हमने तुम्हारे दिल को चोट पहुंचाई है मगर जब तुम इतनी आसानी से फंस गए तो क्या यह हमारा दोष है? नहीं,हमारा दोष नहीं है। यह तो जिन्दगी के उस तरीके का दोष है जिसमें हम सब रह रहे हैं। हम लोग भी कैसी जिन्दगी बिता रहे हैं। एक कुत्ते की सी जिन्दगी। मनो भारी ठेला, पैरों को काटने वाली यह नमकीन कीचड़, दिन भर पीठ पर तपने वाला सूरज, और—पचास कोपेक रोजाना की तनख्वाह। यह सब किसी

भी मनुष्य को जानवर बना देने के लिए काफी है। सारे दिन काम, सिर्फ काम, अपनी पूरी आमदनी शराब में उड़ा डालो और फिर काम पर आ जुटो। और यही इस जिन्दगी का प्रारम्भ और अन्त है। जब तुम इस तरह पाँच साल गुजार देते हो तो फिर तुममें जरा भी इन्सानियत बाकी नहीं बचता—पूरे जानवर बन जाते हो। ऐसी है यह जिन्दगी। सुनो दोस्त, हमने तुम्हारे साथ जो मजाक किया है, हम आपस में तो उससे भी खराब मजाक करने के आदी हैं। और कहने को हम लोग दोस्त हैं जबकि तुम एक नए आने वाले आदमी हो। तो हम तुम्हारे ऊपर रहम क्यों करें? इसीलिए तुम्हें यह भुगतना पड़ा। तुमने जो बातें हमसे कही हैं उनसे क्या होता है? तुमने ठीक बात कही है—यह सब ठीक है—मगर यह हमारे लायक नहीं है। तुम्हें इसका इतना बुरा नहीं मानना चाहिये। हम सिर्फ मजाक बना रहे थे। और आखिरकार हमारे भी दिल हैं। अच्छा यही होगा कि तुम यहाँ से चले जाओ। तुम अपने तरीके से सोचते हो और हम अपने तरीके से। इस थोड़ी सी भेंट को ले लो और यहाँ से चले जाओ, दोस्त। हमने तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं की है और तुमने भी हमारा कोई नुकसान नहीं किया। यह तो नेक काम का बुरा नतीजा मिला है मगर तुम और क्या उम्मीद करते हो? हमारे साथ भी तो कोई भलाई नहीं करता। और तुम्हें यहाँ किसी भी वजह से नहीं ठहरना चाहिए। तुम इस वातावरण के योग्य नहीं। हम लोग तो एक दूसरे के आदी हो चुके हैं और तुम—तुम हमारे वर्ग के व्यक्ति नहीं हो। इससे कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए अच्छा यही होगा कि तुम चले जाओ। अपना रास्ता पकड़ो, सलाम।"

मैंने उन सब की तरफ देखा। यह स्पष्ट था कि वे सब मट्यो से सहमत थे इसलिए मैंने अपना थैला अपने कन्धे पर डाला और चलने को तैयार हो गया।

एक मिनट ठहरो, मुझे भी एक शब्द कह लेने दो," मेरे कन्धे पर अपना हाथ रखते हुए उक्रेन-निवासी ने कहा। "अगर तुम्हारे अलावा और कोई होता तो मैं यादगार बनाए रखने के लिए घूँसे से उसका जबड़ा तोड़ देता। मगर कोई भी तुम पर हाथ नहीं उठा रहा और हमने तो तुम्हें एक

सौगात भी दी है। तुम्हें इसके लिए हमें धन्यवाद देना चाहिए।" उसने थूका और अपनी तम्बाखू की थैली को घुमाने लगा, मानो कह रहा हो कि : देखा मैं कितना चालाक हूँ।

इस सब से दुखी होकर मैं जल्दी से अपनी विदा मांग कर अपने रास्ते पर चल पड़ा। एक बार फिर मैं समुद्र के किनारे किनारे चल दिया। इस बार उस मछली मारने वाली झोंपड़ी की तरफ जहाँ मैंने रात बिताई थी। आसमान साफ और गर्म था, समुद्र निर्जन और भव्य था। तट पर छोटी छोटी हरी लहरें शोर मचाती हुई टकरा रहीं थी। किसी अज्ञात कारणवश मै बुरी तरह दुखी और लज्जित हो रहा था। धीरे धीरे गरम बालू पर पैर घसीटता हुआ आगे बढ़ा। धूप की रोशनी में समुद्र तेजी से चमक रहा था। लहरों से उदास और अस्पष्ट ध्वनियाँ उठ रही थीं।

जब मैं उस झोंपड़ी पर पहुचा तो मेरा परिचित मछुवा मुझ से मिलने उठ खड़ा हुआ।

"क्यों, वहाँ का नमक पसन्द नहीं आया," उसने उस व्यक्ति के से, सन्तोष के साथ कहा जिसकी भविष्यवाणी खरी उतरी हो।

मैंने बिना एक भी शब्द कहे उसकी तरफ देखा।

"नमक कुछ ज्यादा था," उसने जोर देते हुए कहा। "भूख लगी है? चलो, थोड़ा सा हलुआ खा लो। न मालूम वे इतना ज्यादा क्यों बना लेते हैं—आधा बच रहा है। जल्दी जल्दी चम्मच चलाओ। बहुत बढ़िया हलुवा है। इसमें कई तरह की मछलियाँ पड़ी हैं।"

दो मिनट बाद मैं बुरी तरह थका हुआ, मैला कुचैला और भूखा, कई प्रकार की मछलियों वाला स्वादहीन हलुवा खाता हुआ झोंपड़ी के बाहर छाया में बैठा हुआ था।

सेमेगा कैसे पकड़ा गया

सेमेगा एक सराय में मेज के सामने अकेला बैठा हुआ था। उसके आगे वोदका का एक अद्धा और पन्द्रह कोपेक की कीमत का पका हुआ गोश्त रखा था।

इमारत के सबसे नीचे वाले कमरे में, जिसकी मेहराबदार छत धुंए से काली पड़ गई थी, तीन बत्तियाँ जल रही थीं—एक शराब बेचने के स्थान के ऊपर तथा दो कमरे के बीचोंबीच। धुंए से हवा घुट रही थी जिसमें धुंधली काली शक्लें इधर से उधर तैरती हुई सी घूम रही थीं। वे यहाँ ऊँची आवाज में शोरोगुल मचाती हुईं तानें अलाप रही थीं और साथ ही साथ बातें करती हुईं कसमों की झड़ी लगा रही थीं क्योंकि वे यह जानती थीं कि यहाँ वे कानून की पकड़ के बाहर थीं।

बाहर पतझड़ के अन्त में चलने वाला भयानक तूफान गरज रहा था। चिपकने वाले बरफ के बड़े बड़े टुकड़ों की वर्षा हो रही थी। मगर कमरे के भीतर मौसम गर्म था और चहल पहल से भर रहा था। वहाँ एक मन-भावनी सुन्दर गन्ध छा रही थी।

सेमेगा धुंए में आँखें गड़ाए बराबर दरवाजे की तरफ देख रहा था। जैसे कभी किसी को भीतर लेने के लिए दरवाजा खुलता था तो उसकी आँखें चमक उठती थीं। जब ऐसा होता तो वह सामने की तरफ जरा सा झुक जाता था और कभी कभी नए आने वाले का निरीक्षण करने के लिए अपने हाथ को जरा सा ऊपर उठा कर अपना चेहरा छिपा लेता था। और ऐसा वह एक विशेष कारणवश करता था।

जब वह नए आने वाले का पूरा निरीक्षण कर लेता और अपने म को, जिस तरह भी वह चाहता था, सन्तुष्ट कर लेता, तो वोदका का ए ग्लास भरता और गटक जाता, फिर लगभग आधे दर्जन गोश्त के टुकड़े औ आलू उठाकर मुँह में भर लेता और धीरे धीरे चबाता रहता ऐसा क समय वह अपने होंठों से आवाज करता और अपनी सिपाहियान ढंग मुछों को चाटता जाता।

उसके विशाल बिखरे बालों वाले सिर की छाया नम भूरी दीवाल पड़ कर एक विचित्र सा उपस्थित कर रही थी। जब वह अपना मुँह चल या तो वह छाया अजीब तरह से हिलने लगती थी मानो किसी की त बराबर इशारा कर रही हो। और उसे बदले में जवाब न मिल रहा हो।

सेमेगा का चेहरा चौड़ा, ऊँची हड्डियों वाला और बिना दाढ़ी था। आँखें बड़ी और भूरी थीं जिन्हें वह अक्सर सिकोड़ते रहने का आ था। आँखों के ऊपर घनी काली भौंहें छा रहीं थीं और बांई भौंह के ऊप लगभग उसे छूता हुआ धुँधले रंग के घुंघराले बालों का एक गुच्छा झ रहा था।

कुल मिलाकर सेमेगा का चेहरा ऐसा नहीं था जिस पर विश्वास कि जा सके। उसके चेहरे की कठोर दृढ़ता में एक घबड़ाहट की छाया भरी हु थी, एक ऐसा भाव जो इन व्यक्तियों और इस स्थान पर कभी भी नह दिखाई देता था।

वह एक फटा हुआ ऊनी कोट पहने हुए था जो कमर पर ए रस्सी से कस लिया गया था। उसकी बगल में उसकी टोपी और दस्ता रखे थे और कुर्सी के पीछे एक मोटी, लम्बी लाठी रखी हुई थी जिसके ऐ सिरे पर जड़ को छाट कर मूठ सी बना ली गई थी।

इस तरह बैठा हुआ वह मजे से भोजन कर रहा था और जैसे ह उसने और शराब मंगानी चाही कि झटके के साथ दरवाजा खुला और एक गोल और चिथड़ों में लिपटी हुई सी चीज लुढ़कती हुई भीतर घुस आई जो

ऐसी लग रही थी मानो एक रस्सी का बन्डल खुलता हुआ भीतर चला आया हो।

"होशयार, पुलिस आ रही है!" वह चीज बच्चे की सी घबड़ाई हुई आवाज में चीखी।

लोगबाग फौरन चौकन्ने हो गए। आवाजें बन्द हो गईं। आपस में सलाह मशविरा शुरु हो गया और उनमें से कुछ लोगों ने भारी और बेचैनी सी भरी हुई आवाज में कुछ सवाल पूछे।

"तुम सच कह रहे हो?"

"मुझे गोली मार देना! वे दोनों तरफ से आ रहे हैं। घुड़सवार और पैदल दोनों! दो अफसर और पल्टन की पल्टन सिपाहियों की!"

"तुमने कुछ सुना वे किसकी तलाश में हैं?"

"मेरा ख्याल है सेमेगा की। उन्होंने निकीफोरिच से उसके बारे में पूछा था," वह बच्चों जैसी आवाज चहक उठी और वह गेंद जैसी मूर्ति शराबखाने की तरफ लुढ़कती हुई चली गई।

"क्यों, क्या उन्होंने निकीफोरिच को पकड़ लिया?" सेमेगा ने अपने उलझे हुए बालों पर टोपी लगाते और निश्चिन्तता के साथ उठते हुए पूछा।

"हाँ, वह अभी पकड़ा गया है।"

"कहाँ?"

"स्मोल्का गली में चाची मारिया के यहाँ।"

"तुम अभी वहीं से आ रहे हो?"

"हाँ। मैं बागों की चहार दीवारियाँ फलाँगता हुआ सीधा चला आ रहा हूँ और अब 'दज़ेरे' की तरफ चल दिया। मेरा ख्याल है वहाँ भी उन्हें मालूम हो जाना चाहिए।"

"जल्दी जाओ।"

पलक झपकते ही वह लड़का सराय से बाहर जा पहुँचा। जैसे ही उसके पीछे दरवाजा बन्द हुआ कि सराय का मालिक, दुबला पतला, ईश्वर से डरने वाला ईश्रोना पेत्रोविच जो बड़े बड़े काँचों वाला चश्मा और काली टोपी पहने हुए था, चीखा।

"ए, शैतान के बच्चे ! यह तुमने क्या किया, हरामी की औलाद ! पूरी प्लेट निगल गया।"

"किस चीज की ?" सेमेगा ने पूछा जो अब दरवाजे की तरफ बढ़ रहा था।

"कलेजी की। प्लेट को चाट पोंछ कर साफ कर गया। मैं देख ही न सका कि उसने इतनी जल्दी कैसे की। सारी एक बार में ही निगल गया।"

"तो मेरा ख्याल है कि अब तुम भीख मांगते फिरोगे।" सेमेगा ने दरवाजे से बाहर निकलते हुए रूखी आवाज में कहा।

सड़क में चलती हुई गोली और थपेड़े मारती हुई हवा हल्का सा शोर मचा रही थी। बरफ के गीले टुकड़े इतने जोर से बरस रहे थे कि हवा उबलते हुए हलुवे की तरह भारी और घनी हो उठी थी।

सेमेगा वहाँ खड़ा होकर क्षण भर सुनता रहा मगर वहाँ हवा की सनसनाहट और मकानों की दीवालों और छतों पर पड़ने वाली बरफ की आवाज के अलावा और कोई भी आवाज नहीं सुनाई पड़ रही थी।

वह आगे चल दिया और लगभग दस कदम चलने के बाद एक चहार दीवारी के ऊपर चढ़ कर दूसरी तरफ उतर गया जो किसी के मकान का पिछवाड़े वाला बाग था।

एक कुत्ता भौंका और जवाब में एक घोड़ा हिनहिनाया और फर्श पर अपने सुम पटकने लगा। सेमेगा फुर्ती से दीवाल फाँद कर सड़क पर वापस आ गया और तेजी से शहर के भीतर की ओर चल दिया।

कुछ देर बाद उसे अपने आगे कुछ शोर सा सुनाई दिया जिसने उसे एक दूसरी चहारदीवारी पर चढ़ने को मजबूर कर दिया। इस बार उसने बिना किसी दुर्घटना के मकान के सामने वाला अहाता पार कर लिया। उसके बाद खुले फाटक में होकर बाग में पहुचा फिर दूसरी चहार दीवारियों और बागों को पार करता हुआ उस सड़क पर आ पहुचा जो उस सड़क के समानान्तर चल रही थी जिस पर इयोना पेत्रोविच की सराय थी।

चलते हुए उसने छिपने के लिये कोई सुरक्षित स्थान खोजने के विषय में सोचा परन्तु असफल रहा।

सारे सुरक्षित स्थान अब असुरक्षित बन गये थे क्योंकि पुलिस ने चारों ओर ढूँढ़ खोज प्रारम्भ कर दी थी और ऐसे तूफ़ानी मौसम में खुले में बाहर रात बिताना या पुलिस द्वारा पकड़े जाने का खतरा मोल लेना कोई अच्छी बात नहीं थी।

वह हल्के कदमों से आगे बढ़ा और बराबर तूफ़ान की सफेद धुन्ध में आगे निगाहें गड़ाये रहा जिसमें चुपचाप मकान, गाड़ियों के अड्डे, सड़क पर लगी हुई बत्तियाँ, पेड़ आदि उभर आते, जो सब मुलायम बरफ के टुकड़ों से ढके हुए थे।

उसने अपने सामने, कहीं से, तूफ़ान की गरज से ऊपर उठती हुई एक अवाज सुनी। यह एक बच्चे की रोने की कोमल ध्वनि के समान थी। वह एक जङ्गली जानवर की तरह, जो खतरे को भाँप कर ठिठक जाता है, आगे को गर्दन बढ़ाये, रुक कर सुनने लगा।

आवाज बन्द हो गई।

सेमेगा ने सिर झटकारा और आगे बढ़ा। उसने अपनी टोपी खींचकर आँखों के ऊपर कर ली और गर्दन को बरफ से बचाने के लिये कन्धे सिकोड़ लिये।

फिर उसने रोने की आवाज सुनी, और इस बार वह ठीक उसके पैरों के नीचे से आ रही थी। वह चौंका, ठिठका, नीचे झुका, हाथों से जमीन को टटोला, फिर सीधा खड़ा हुआ और पाये हुए बण्डल पर जमी हुई बरफ को झाड़ने के लिये उसे झकझोरा।

"ओह, बहुत सुन्दर! एक बच्चा! अब क्या किया जाय!" वह बच्चे को गोद में देखते हुए बुदबुदा उठा।

बच्चा गर्म था और हाथ पैर फेंक रहा था। पिघली हुई बरफ में पूरी तरह भीग रहा था। उसका चेहरा, सेमेगा की मुट्ठी के बराबर भी न था, लाल और झुर्रियों से भरा था। उसकी आँखें बन्द थीं और उसका नन्हा सा मुँह

बराबर खुल रहा था और दूध पीने की हरकत कर रहा था। चारों तरफ लिपटे हुए कपड़े में से पानी की बूँदें उसके बिना दांतों वाले मुँह में धीरे धीरे गिर रही थीं।

आश्चर्य चकित सेमेगा ने अनुभव किया कि इस कपड़े में से टपकने वाली बूँदें बच्चे के मुँह में नहीं जानी चाहिये, इसलिये उसने बण्डल को नीचे की तरफ करके झाड़ दिया।

ऐसा लगा कि यह हरकत बच्चे को पसंद नहीं आई, क्योंकि वह विरोध सा करते हुए गला फाड़ कर रोने लगा।

"चा-चा!" सेमेगा ने कठोरतापूर्वक कहा "चुप-चुप! बिल्कुल खामोश हो जा वर्ना अभी पिटेगा। आखिर मैं तेरे लिये इतना परेशान क्यों हो रहा हूँ, क्यों? मानो कि मुझे तेरी बड़ी जरूरत है न! और तू है कि रोये चला जा रहा है, बेवकूफ कहीं का!"

मगर सेमेगा के शब्दों का बच्चे पर तनिक भी असर नहीं हुआ। वह बराबर धीरे धीरे, बंधी हुई लय के साथ चीखता रहा जिससे सेमेगा बहुत परेशान हो उठा।

"अच्छा रहने दे भाई, यह अच्छी बात नहीं! मैं जानता हू कि तू भीग रहा है और तुझे ठण्ड लग रही है—और यह कि तू नन्हा सा है, मगर मैं तेरा क्या करूँ?"

बच्चा फिर भी चीखता रहा।

"मैं तेरी कोई भी मदद नहीं कर सकता," सेमेगा ने कपड़ों को बच्चे के चारों तरफ कस कर लपटते और उसे पुन जमीन पर रखते हुए गम्भीर होकर कहा।

"मैं कुछ भी नहीं कर सकता। तू खुद जानता है कि मैं तेरी कुछ भी मदद नहीं कर सकता। मैं खुद भी तेरी ही तरह अनाथ हूँ। इसलिये अब हम तो चल दिये।"

और हाथ को फटकारते हुए सेमेगा चल दिया और बड़बड़ाता रहा।

"अगर पुलिस की दौड़ न होती तो सम्भव था कि मैं तेरे लिये कोई

जगह ढूँढ लेता। मगर पुलिस मेरे पीछे पड़ी है। मैं ऐसी हालत में क्या कर सकता हूं। कुछ भी नहीं कर सकता, दोस्त। तू मुझे माफ कर देना। तू तो एक निश्छल आत्मा है और तेरी मां डायन है। अगर कुतिया, तू कभी मेरे हाथ पड़ गई तो मैं तेरी हड्डी पसली एक कर दूंगा! इससे आगे के लिये तुझे एक सबक मिल जायगा। इससे आगे अब दूसरा कदम मत बढ़ाना, शैतान की नानी, राक्षसी। भगवान करे तू भूख से तड़फ तड़फ कर मरे, धरती तेरी लाश को कब्र में से निकाल फेंके। तू समझती है कि इसी तरह बच्चे पैदा कर करके उन्हें इधर उधर फेंकती फिरेगी? क्यों? और अगर मैं तेरी चुटिया पकड़ कर गलियों में खचेड़ता फिरूँ तो? मैं इस काम को बड़ी अच्छी तरह कर सकता हूं, छिनाल तू नहीं जानती कि इस तरह का तूफान में तू बच्चों को इधर-उधर नहीं फेंक सकती? ये बेचारे कमजोर और असहाय हैं और इस बरफ के निगल जाने से मर सकते हैं। अगर बच्चे को फेंकना ही था तो किसी सुन्दर रात को ही फेंकती, मूर्खा कहीं की। बिना आँधी पानी वाली रात में वे ज्यादा देर तक जिन्दा रह सकते हैं और मनुष्यों द्वारा उनके पाये जाने की सम्भावना कहीं अधिक है। ऐसी भयानक रात में कोई किसलिये बाहर निकलेगा!"

और सेमेगा बच्चे की मा के साथ इस वार्तालाप में इतना तन्मय हो रहा था कि उसे खुद भी नहीं मालूम पड़ा कि कब वह लौटा और कब उसने बच्चे को फिर उठा लिया। मगर उसने बच्चे को उठाया और अपने कोट के भीतर छिपा लिया और उसकी मां को आखिरी गाली देकर, भारी हृदय से अपने रास्ते पर चल पड़ा। इस समय वह उस बच्चे की ही तरह दीन हो रहा था जिसके लिये उसके हृदय में इतनी गहरी करुणा की भावना थी।

बच्चा धीरे से कुनमुनाया और रोने लगा जिसकी आवाज भारी ऊनी कोट और सेमेगा के भारी हाथ के नीचे दबकर रह गई। सेमेगा कोट के नीचे सिर्फ एक फटी हुई कमीज पहने हुए था इसलिये उसने शीघ्र ही बच्चे के नन्हे से शरीर की गर्मी को महसूस किया।

"ओह नन्हें चमगीदड़!" बरफ में रास्ता बनाता हुआ सेमेगा बड़बड़ा या। "तुम्हारा मामला तो बड़ा नाजुक दिखाई पड़ता है, दोस्त, क्योंकि मुझे

तेरा क्या करना चाहिये ? मुझे बता न? और वह तेरी मा—अच्छा, अब चुप-चाप सो जा ! नहीं तो बाहर गिर पड़ेगा ?"

मगर बच्चा बराबर हाथ पैर फेंकता रहा और सेमेगा ने महसूस किया वह कमीज के एक फटे हुए छेद में से सेमेगा की छाती पर अपना मुँह रगोड़ रहा था।

सेमेगा अचानक रास्ते पर मूर्ति की तरह खड़ा हो गया और जोर से बोला

"अरे यह तो दूध ढूँढ़ रहा है! अपनी मा का दूध ! हे भगवान ! अपनी मां का दूध !"

और किसी कारणवश सेमेगा सर से लेकर पैर तक काँप उठा। उसका यह काँपना शायद लज्जावश हो या भयवश परन्तु यह एक ऐसी भावना थी जो विचित्र, सशक्त, दुखद और हृदय-स्पर्शी अवश्य थी।

"यह मुझे अपनी मा समझ रहा है। क्यों, नन्हें से प्राणी ! ठीक है न ! मुझसे तू क्या चाहता है ? मैं तो एक सिपाही हूँ, दोस्त, और अगर तू जानना ही चाहे तो एक चोर भी हू।"

हवा एकान्त में सनसनाती रही।

"अब तुझे सो जाना चाहिये। सो जा ! आजा रीनिंदिया आजा सो जा ! मुझसे तुझे एक बूँद भी नहीं मिल सकेगी, भइया ! सो जा ! मैं तुझे गाना सुनाऊँगा, हालाकि यह काम तो तेरी मा को करना चाहिये था। अच्छा, अच्छा अब रहने दे, आजा री निंदिया आजा। मैं धाय नहीं हू—सो जा !"

और अचानक बच्चे के ऊपर नीचे सिर झुकाये, हल्के लम्बे स्वरों मे, अपनी भरसक कामल आवाज मे सेमेगा गा उठा

"तू हरजाई और कुटिल है,
नहीं किसी के काम को।"

यह गाना उसने लोरी के स्वर मे गाया।

दूधिया धुन्ध सेमेगा के चारों तरफ गहरी होती रही और सेमेगा बच्चे को अपने कोट मे छिपाये सड़क पर चलता रहा। और जब कि बच्चा बराबर

रोता रहा तो उस चोर ने कोमल स्वर में गाया।

"मैं किसी सुन्दर रात में आकर तुमसे मिलूँगा,
और बिछुड़ते समय तुम व्यग्र हो उठोगी।"

और उसके गालों पर होकर पिघली हुई बरफ की बूँदें टपकती रहीं। रह रह कर वह चोर काँप उठता था। उसका गला रुध गया था और हृदय पर एक बोझ सा छा रहा था। और इस तूफान में सुनसान सड़क पर, रोते हुए बच्चे को अपने कोट में छिपाए चलते हुए उसने अपने को जितना एकाकी अनुभव किया उतना पहले कभी भी नहीं किया था।

मगर वह फिर भी पहले की ही तरह चलता रहा।

अपने पीछे उसे घोड़े के सुमों की हल्की आवाज सुनाई दी। घुड़सवार पुलिस की अस्पष्ट आकृतियाँ उस अंधकार में से प्रकट हुईं और तुरन्त सेमेगा के पास आ पहुँचीं। दो आवाजों ने एकसाथ पूछा।

"कौन जा रहा है?"

"तुम्हारा क्या नाम है?"

"यह तुम क्या ले जा रहे हो? दिखाओ?" एक पुलिस वाले ने अपने घोड़े को उसके बराबर लाते हुए हुक्म दिया।

"यह? एक बच्चा है!"

"तुम्हारा नाम?"

"सेमेगा—स्क्यार वाला।"

"ओहो! वही जिसकी हम तलाश कर रहे हैं! चलो, मेरे घोड़े के सामने आओ!"

"यह अच्छा होगा कि मैं और बच्चा दोनों मकानों की छाया में चलें। वहाँ हवा इतनी तेज नहीं है। सड़क के बीचोंबीच चलना हमारे लिए ठीक नहीं होगा—हम मछली की ही तरह ठंड से जमे जा रहे हैं।"

पुलिस वालों की समझ में उसकी बात नहीं आई मगर उन्होंने उसे मकानों की छाया में चलने की इजाजत दे दी और खुद उसके पीछे से

अधिक नजदीक चलते रहे और क्षणभर को भी उस पर से अपनी निगाहें नहीं हटाईं।

इस तरह घिरा हुआ सेमेगा पुलिस थाने पहुँचा।

"तो तुमने उसे गिरफ्तार कर लिया, क्यों कर लिया न ? अच्छा किया।" जैसे ही वे लोग दफ्तर में घुसे पुलिस के प्रधान अफसर ने कहा।

"बच्चे का क्या होगा ? मैं इसका क्या करूँ ?" सेमेगा ने सिर हिलाते हुए पूछा।

"यह क्या है ? कैसा बच्चा ?"

"यह। मुझे सड़क पर मिला था। यह रहा।"

और सेमेगा ने बच्चे को कोट के बाहर निकाला। बच्चा निर्जीव उसके हाथों में लटकता रह गया।

"मगर यह तो मरा हुआ है !" पुलिस के प्रधान ने कहा।

"मरा हुआ ?" सेमेगा ने दुहराया। उसने उस नन्ही सी पोटली को घूर कर देखा और मेज पर रख दिया।

"खूब," उसके मुँह से निकल पड़ा और फिर गहरी सांस लेकर बोला "मुझे इसे फौरन ही उठा लेना चाहिए था। काश कि मैं ऐसा करता, मगर मैंने नहीं किया मैंने। इसे उठाया और फिर वहीं रख दिया।

"यह तुम क्या बड़बड़ा रहे हो ?" प्रधान ने पूछा।

सेमेगा ने चारों तरफ सूनी निगाहों से देखा।

बच्चे की मृत्यु के साथ ही उसकी वे भावनाएं भी मर गईं जिन्हें उसने सड़क पर चलते हुए अनुभव किया था।

यहाँ वह कठोर हृदय अफसरों से घिरा हुआ था। उसे अपने सामने जेल और मुकदमे के अलावा और कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। उसके हृदय में एक चोट सी लगी। उसने बच्चे की तरफ क्रोध के साथ देखा और गहरी सांस लेकर कहा।

"तुम भी खूब रहे ! मैंने तेरी वजह से अपने को पकड़ा दिया और

इनका नतीजा कुछ भी नहीं निकला। और मैं सोच रहा था'''मगर तुम मेरी गोद में ही मर गये, हुँ!"

और सेमेगा ने जोर से अपनी गर्दन के पीछे खुजाया।

"इसे ले जाओ," सेमेगा की तरफ इशारा करते हुए प्रधान ने कहा।

वे उसे ले गए।

और कहानी समाप्त हो गई।

ठंड से ठिठुर कर न मरने वाले

दो नन्हे बच्चों की कहानी

'बड़े दिन' से सम्बन्धित कहानियों में यह बात एक प्रथा सी बन गई है कि साल में एक बार अनेक छोटे बच्चे और बच्चियाँ बरफ में ठिठुर कर मर जाते हैं। किसी सुन्दर 'बड़े दिन' की कहानी में, आम तौर पर, कोई गरीब नन्हा सा लड़का या गरीब नन्हीं सी लड़की, किसी विशाल इमारत की खिड़की में से, बैठक में सजे हुए 'बड़े दिन के पेड़' की चकाचौंध कर देने वाली सजावट को मुग्ध दृष्टि से देखते खड़े रह जाते हैं और फिर निराश होकर उस भयानक ठंड में ठिठुर कर मर जाते हैं।

यद्यपि नन्हें से नायक नायकाओं को इस प्रकार मार देना बड़ा क्रूर है फिर भी मैं लेखकों की सुन्दर भावनाओं का आदर करता हूँ। मैं जानता हूँ कि वे इन गरीब नन्हें बच्चों को ठन्ड से इसलिए मरवा डालते हैं कि जिससे अमीर बच्चे यह जान सकें कि दुनियाँ में गरीब बच्चे भी हैं। मगर जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, इतने सुन्दर एवं महान उद्देश्य के लिए भी मैं किसी नन्हें से गरीब लड़के या लड़की को इस तरह ठन्ढ से ठिठुरा कर नहीं मार सका।

मैं खुद कभी ठन्ड से ठिठुर कर नहीं मरा और न मैंने किसी गरीब लड़के या लड़की को ठन्ढ से ठिठुर कर मरते देखा है, इसलिए मुझे भय है कि अगर मैं ठन्ड से ठिठुर कर मरते समय उठने वाली भावनाओं का चित्रण करूँगा तो सम्भव है कि मेरा मजाक उड़े। और साथ ही यह बात बड़ी असगत सी लगती है कि दूसरे को किसी के अस्तित्व का ज्ञान कराने के लिए उसे मार दिया जाय।

और यही कारण है कि मैं यह अच्छा समझता हूँ कि एक ऐसी कहानी कहूँ जिसमें एक गरीब लड़का या लड़की ठन्ड से ठिठुर कर नहीं मरे।

यह बड़े दिन की शाम को छः बजे की घटना है। हवा बरफ के बादल उड़ाती हुई तेजी से बह रही थी। पारदर्शक ठन्डे बादल, धुनी हुई रुई के समान हल्के और सुन्दर, चारों तरफ उड़ते फिर रहे थे। वे राहगीरों के गालों से टकरा कर उनमें सुइयाँ सी चुभा देते और घोड़ों के अयालों पर बरफ छिड़क जाते। घोड़े अपने सिर हिलाते और नथुनों में से भाप के बादल छोड़ते हुए जोर से हिनहिना उठते। पाले से ढके हुए तार सफेद एंठी हुई रस्सी से लगते। आसमान साफ और तारों से भरा था। तारे इतने साफ चमक रहे थे कि लगता था मानो किसी ने इस अवसर के निमित्त उन्हें पालिश से रगड़ कर चमका दिया हो, जो नितान्त असम्भव था।

सड़कें भीड़ और शोरोगुल से भर रही थीं। घोड़े सड़क पर दौड़ रहे थे। लोगबाग फुटपाथों पर चल रहे थे, कुछ तेजी से तथा कुछ आराम के साथ धीरे धीरे। तेज चलने वाले इसलिए तेज चल रहे थे कि उन पर जिम्मेदारियाँ थीं। और वे गरम कोट नहीं पहने थे; धीरे धीरे चलने वाले इसलिए मटरगश्ती कर रहे थे कि उन्हें न कोई चिन्ता थी और न उन पर कोई जिम्मेदारियाँ ही थीं। ये लोग गरम कोट पहने थे और इनमें से कुछ तो फरदार कोट भी पहने थे।

यह घटना उस व्यक्ति के साथ घटी जिसे कोई चिन्ता नहीं थी मगर जो एक सुन्दर कालर वाला रुंयेदार कोट पहने हुए था। यह घटना इस व्यक्ति के बिल्कुल पैरों के नीचे घटी जो बड़ी शान के साथ चला जा रहा था। हुआ यह कि फटे चिथड़ों में लिपटी हुई दो गेंदें लुढ़कीं और उसी समय दो नन्हीं पतली सी आवाजें सुनाई पड़ीं :

"दयालु महाशय···," एक नन्हीं लड़की की सुरीली आवाज आई।

"सरकार···," एक नन्हें लड़के का पतला स्वर गूँजा।

"आप हम गरीबों को एक टुकड़ा रोटी दे सकते हैं?"

"रोटी के लिए एक पैसा। त्यौहार के लिए," उन्होंने एक साथ स्वर

में स्वर मिलाते हुए अपनी प्रार्थना समाप्त की।

ये नन्हे बच्चे मेरी कहानी के नायक और नायका थे। लड़के का नाम था मिश्का प्रिश्क और लड़की का कात्का रियाबाया।

वह महाशय नहीं रुके इसलिए वे बच्चे बारबार उनकी टाँगों के बीच में से निकल कर उनके सामने आ खड़े होते। कात्का ने आत्यधिक आशान्वित होकर धीरे से कहा," सिर्फ एक टुकड़ा, सिर्फ एक टुकड़ा,,' और मिश्का ने भरसक उन महाशय का रास्ता रोकने का प्रयत्न किया।

और जब उन महाशय को नाक में दम आ गया तो उन्होंने अपने रुएदार कोट के बटन खोले, अपना बटुआ बाहर निकाला, उसे अपनी नाक के पास ले गए और उसमें से एक सिक्का निकालते हुए उसे खूब जोर से नाक डालकर सूंघा। और सिक्के को अपनी तरफ बढ़े हुए एक मैले कुचैले नन्हें से हाथ पर रख दिया।

पलक झपकते ही चिथड़ों की वे दोनों गेंदें उन महाशय के रास्ते में से हट गईं और एक फाटक पर जाकर खड़ी हो गईं जहाँ दोनों एक दूसरे से चिपकी हुई कुछ देर तक खड़ी हुई चुपचाप सड़क पर निगाह दौड़ाती रहीं।

"उस बुड्ढे शैतान ने हमें देख नहीं पाया," एक द्वेषपूर्ण विजयी स्वर में उस नन्हें गरीब लड़के ने कहा।

"वह मोड़ पर तमाशा देखने चला गया है," लड़की ने बताया। "उस बदमाश ने क्या दिया ?"

"दस कोपेक," मिश्का लापरवाही से बोला।

"तो अब कुल कितना हो गया ?"

सत्तर और सात कोपेक।"

"इतना ? तो अब हम जल्दी ही घर चलेंगे, क्यों चलेंगे न ? बहुत ठन्ड है।"

"इसके लिए अभी बहुत समय है," मिश्का ने उसे अनुत्साहित करते हुए कहा। "ध्यान रखना कि ज्यादा खुलकर काम मत करना। अगर उस बदमाश ने देख लिया तो तुझे भीतर ले जाकर खूब मरम्मत करेगा। देखा वह

एक बजरा आया। चलो, चलें।"

यह बजरा रुयेंदार कोट पहने एक मोटी औरत थी जिससे प्रकट होता है कि मिश्का बहुत शैतान लड़का था, बहुत ही बदतमीज और बड़ों का अनादर करने वाला।

"दयालु माता...," वह करुण स्वर में चीखा।

"कुमारी माता के नाम पर...," कात्का ने स्वर में स्वर मिलाया।

"श् श्! इस बुड्ढी सुअरिया ने तीन कोपेक से ज्यादा नहीं दिए," मिश्का ने गाली देते हुए कहा और दुबारा फाटक की तरफ दौड़ गया।

बरफ अब भी सड़क पर तेजी से गिर रही थी और हवा और जोर से चलने लगी थी। तार के खम्भों में से सनसनाहट की आवाज आ रही थी, स्लेज गाड़ियों के नीचे बरफ टूटने की ध्वनि उठ रही थी और कहीं दूर, सड़क के दूसरे छोर से एक औरत की गूंजती हुई हंसी की आवाज आई।

"मैं सोचती हूँ कि चाची अनफिसा आज रात को फिर शराब पियेगी," अपने साथी से और सटते हुए कात्का ने पूछा।

"मेरा भी यही ख्याल है। उसे शराब पीने से कैसे रोका जा सकता है, वह तो पियेगी ही," मिश्का ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

हवा ने छतों पर पड़ी हुई बरफ को उड़ाना और बड़े दिन की खुशी में सीटी बजाना शुरू कर दिया। एक दरवाजे का खटका खुला। इसके बाद काँच के दरवाजे के बन्द होने की आवाज आई और एक भारी आवाज ने पुकारा:

"चौकीदार!"

"चलो घर चलें," कात्का ने कहा।

"फिर वही पुराना राग अलापने लगी।," ऊबे हुए मिश्का ने कहा," तू घर क्यों जाना चाहती है।"

"वहाँ गर्मी है," कात्का ने संक्षेप में समझाया।

गर्मी!" मिश्का ने मजाक उड़ाते हुए कहा। "और जब ये सब मिल कर तुझे नाचने को मजबूर करेंगे तब तुझे कैसा लगेगा? या तेरे गले में शराब

काश्का, जो बुरी तरह कांप रही थी, उठकर खड़ी हो गई

"वहुत, बहुत ज्यादा ठंड है," लड़की फुसफुसाई

सचमुच ठंड बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। धीरे धीरे बरफ के बादल ज... और ठोस हो गए थे जो कहीं बरफ के खम्भों के रूप में तथा कहीं हीरे जड़े विशाल परदों के रूप में दिखाई पड़ते थे। जब वे सड़क की बत्तियों के ऊपर होकर निकलते या रोशनी से चमकती हुई दूकानों की खिड़कियों के सामने होकर गुजरते तो बड़ा सुन्दर दृश्य उत्पन्न कर देते थे। वे विभिन्न प्रकार के रंगों से चमक रहे थे। उनकी ठंडी तीखी चमक आँखों में दर्द पैदा कर देती थी।

मगर इस दृश्य का सौन्दर्य मेरे नन्हे नायक और नायिका को आकर्षित करने में असमर्थ रहा।

"ओहो!" अपने खोल में से नाक बाहर निकालते हुए मिश्का बोला, "यह तो पूरा टैना का टैना आ रहा है! चल काश्का, उठ!"

"दयालु सज्जनो ....," लड़की सड़क पर दौड़ती हुई कांपती आवाज में चीखी।

"सबसे छोटा सिक्का, मिश्का," ने प्रार्थना की और फिर जोर से चीखा : "भाग काश्का!"

"ओ शैतान, जरा मेरे हाथ तो पड़ जाओ!" एक लम्बे पुलिस के सिपाही ने दपटा जो अचानक फुटपाथ पर आ निकला था।

मगर वे दिखाई भी नहीं पड़े। दोनों गेंदें लुढ़कती हुई क्षणभर में ही आँखों से ओझल हो गईं।

"भाग गए शैतान, "पुलिस वाला हिनहिनाया और सड़क की तरफ देखकर प्रसन्न होकर मुस्करा उठा।

दोनों नन्हे शैतान अपनी पूरी ताकत से दौड़ते और हंसते चले जा रहे थे। का का का पैर बारबार उसके कपड़े में उलझ जाता था जिससे वह गिर पड़ती थी।

"हे भगवान, फिर गिर पड़ी! जैसे ही वह गिरती तो डरी हुई

ढकेल कर तुझे पिछली बार की तरह त्यागने को मजबूर कर देंगे, तब ? वर वाह !"

और उसने उस मनुष्य की तरह अपने कन्धे उचकाए जो अपना मूल्य समझता है और अपनी राय के ठीक होने के विषय में जिसकी निश्चित धारणा होती है। कात्का ने अंगड़ाते हुए जम्हाई ली और फाटक के एक कोने में ढेर हो गई।

"तू सिर्फ खामोश रह। अगर सर्दी लगती है तो दाँती भींच कर उसे बर्दाश्त कर। सर्दी दूर हो जायेगी। आजकल में ही मेरे और तेरे लिए गरम कपड़ों का इन्तजाम हो जायेगा। मैं जानता हूँ कि मैं कर लूंगा। मैं यह चाहता हूँ कि—"

और यहाँ उसने अपनी उस महिला के हृदय में कल्पना और जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए कि वह क्या चाहता है, बात अधूरी छोड़ दी। मगर लड़की तनिक भी जिज्ञासा न दिखा और भी सिकुड़ कर सो गई। जिसे देख कर मिश्का उसे कुछ चिन्तित सा होकर चेतावनी दी :

"देखना, कहीं सो मत जाना ! ठन्ड से ठिठुर कर मर जायगी। सुना, कात्का !"

"डरो मत, नहीं मरूँगी," दाँत कटकटाते हुए कात्का बोली।

अगर मिश्का न होता तो कात्का सचमुच ठिठुर कर मर गई होती। मगर उस नन्हें से शैतान ने पक्का इरादा कर लिया था कि वह उस लड़की को बड़े दिन की शाम को पुराना जैसा कोई भी काम करने से रोकेगा।

"खड़ी हो। लेटने पर तो और भी ज्यादा ठन्ड लगती है। जब हम खड़े रहते हैं तो लम्बे चौड़े दिखाई पड़ते हैं और तब ठन्ड को हमें पकड़ने में बड़ी कठिनाई होती है। लम्बे चौड़े प्राणी ठन्ड के दाँत खट्टे कर देते हैं। मिसाल के लिए घोड़ों को ही ले लो। वे कभी ठिठुर कर नहीं मरते। आदमी घोड़ों से छोटे होते हैं इसलिए हमेशा ठिठुर कर मरते रहते हैं। मैं कहता हूँ, खड़ी हो जा। जब हमें पूरा एक रूबल मिल जायेगा तब हम समझेंगे कि आज का दिन अच्छा कटा।"

काश्का, जो बुरी तरह कांप रही थी, उठकर खड़ी हो गई

"बहुत, बहुत ज्यादा ठंड है," लड़की फुसफुसाई

सचमुच ठंड बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। धीरे धीरे बरफ के बादल ऊपर ढेर हो गए थे जो कहीं बरफ के खम्भों के रूप में तथा कहीं हीरे जड़े विशाल परदों के रूप में दिखाई पड़ते थे। जब वे सड़क की बत्तियों के ऊपर होकर निकलते या रोशनी से चमकती हुई दूकानों की खिड़कियों के सामने होकर गुजरते तो बड़ा सुन्दर दृश्य उत्पन्न कर देते थे। वे विभिन्न प्रकार के रंगों से चमक रहे थे। उनकी ठंडी तीखी चमक आँखों में दर्द पैदा कर देती थी।

मगर इस दृश्य का सौन्दर्य मेरे नन्हे नायक और नायिका को आकर्षित करने में असमर्थ रहा।

"ओहो!" अपने खोल में से नाक बाहर निकालते हुए मिश्का बोला, "यह तो पूरा टैना का टैना आ रहा है! चल का-का, उठ!"

"दयालु सज्जनो……," लड़की सड़क पर दौड़ती हुई कांपती आवाज में चीखी।

"सबसे छोटा सिक्का, मिश्का," ने प्रार्थना की और फिर जोर से चीखा: "भाग काश्का!"

"ओ शैतान, जरा मेरे हाथ तो पड़ जाओ!" एक लम्बे पुलिस के सिपाही ने दपटा जो अचानक फुटपाथ पर आ निकला था।

मगर वे दिखाई भी नहीं पड़े। दोनों गेंदें लुढ़कती हुई क्षणभर में ही आँखों से ओझल हो गईं।

"भाग गए शैतान," पुलिस वाला हिनहिनाया और सड़क की तरफ देखकर प्रसन्न होकर मुस्करा उठा।

दोनों नन्हें शैतान अपनी पूरी ताकत से दौड़ते और हंसते चले जा रहे थे। का-का का पैर बारबार उसके कपड़े में उलझ जाता था जिससे वह गिर पड़ती थी।

"हे भगवान्, फिर गिर पड़ी! जैसे ही वह गिरती तो टूटी हुई

उद्देश्य कर तुझे पिछली बार की तरह त्यागने को मजबूर कर देंगे, तब ? घर ? वाह !"

और उसने उस मनुष्य की तरह अपने कन्धे उचकाए जो अपना मूल्य समझता है और अपनी राय के ठीक होने के विषय में जिसकी निश्चित धारणा होती है। कात्का ने अंगड़ाते हुए जम्हाई ली और फाटक के एक कौने में ढेर हो गई।

"तू सिर्फ खामोश रह। अगर सर्दी लगती है तो दाँती भींच कर उसे बर्दाश्त कर। सर्दी दूर हो जायेगी। आजकल में ही मेरे और तेरे लिए गर्म कपड़ों का इन्तजाम हो जायेगा। मैं जानता हूँ कि मैं कर लूंगा। मैं यह चाहता हूँ कि—"

और यहाँ उसने अपनी उस महिला के हृदय में कल्पना और जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए कि वह क्या चाहता है, बात अधूरी छोड़ दी। मगर लड़की तनिक भी जिज्ञासा न दिखा और भी सिकुड़ कर सो गई। जिसे देख-कर मिश्का उसे कुछ चिन्तित सा होकर चेतावनी दी

"देखना, कहीं सो मत जाना ! ठन्ड से ठिठुर कर मर जायगी। सुना, कात्का !"

"डरो मत, नहीं मरूँगी," दाँत कटकटाते हुए कात्का बोली।

अगर मिश्का न होता तो कात्का सचमुच ठिठुर कर मर गई होती। मगर उस नन्हें से शैतान ने पक्का इरादा कर लिया था कि वह उस लड़की को बड़े दिन की शाम को पुराना जैसा कोई भी काम करने से रोकेगा।

"खड़ी हो। लेटने पर तो और भी ज्यादा ठन्ड लगती है। जब हम खड़े रहते हैं तो लम्बे चौड़े दिखाई पड़ते हैं और तब ठन्ड को हमें पकड़ने में बड़ी कठिनाई होती है। लम्बे चौड़े प्राणी ठन्ड के दाँत खट्टे कर देते हैं।! मिसाल के लिए घोड़ों को ही ले लो। वे कभी ठिठुर कर नहीं मरते। आदमी घोड़ों से छोटे होते हैं इसलिए हमेशा ठिठुर कर मरते रहते हैं। मैं कहता हूँ, खड़ी हो जा। जब हमें पूरा एक रूबल मिल जायेगा तब हम समझेंगे कि आज का दिन अच्छा कटा।"

कारका, जो बुरी तरह कांप रही थी, उठकर खड़ी हो गई

"बहुत, बहुत ज्यादा ठंड है," लड़की फुसफुसाई

सचमुच ठंड बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। धीरे धीरे बरफ के बादल और ठोस हो गए थे जो कहीं बरफ के खम्भों के रूप में तथा कहीं हीरे जड़े विशाल परदों के रूप में दिखाई पड़ते थे। जब वे सड़क की बत्तियों के ऊपर होकर निकलते या रोशनी से चमकती हुई दूकानों की खिड़कियों के सामने होकर गुजरते तो बड़ा सुन्दर दृश्य उत्पन्न कर देते थे। वे विभिन्न प्रकार के रंगों से चमक रहे थे। उनकी ठंडी तीखी चमक आँखों में दर्द पैदा कर देती थी।

मगर इस दृश्य का सौन्दर्य मेरे नन्हे नायक और नायिका को आकर्षित करने में असमर्थ रहा।

"ओहो!" अपने खोल में से नाक बाहर निकालते हुए मिश्का बोला, "यह तो पूरा टैना का टैना आ रहा है! चल का'का, उठ!"

"दयालु सज्जनो''''''," लड़की सड़क पर दौड़ती हुई कांपती आवाज में चीखी।

"सबसे छोटा सिक्का, मिश्का," ने प्रार्थना की और फिर जोर से चीखा "भाग कारका।"

"ओ शैतान, जरा मेरे हाथ तो पड़ जाओ!" एक लम्बे पुलिस के सिपाही ने दपटा जो अचानक फुटपाथ पर आ निकला था।

मगर वे दिखाई भी नहीं पड़े। दोनों गेंदें लुढ़कती हुई क्षणभर में ही आँखों से ओझल हो गईं।

"भाग गए, शैतान, "पुलिस वाला हिनहिनाया और सड़क की तरफ देखकर प्रसन्न होकर मुस्करा उठा।

दोनों नन्हे शैतान अपनी पूरी ताकत से दौड़ते और हंसते चले जा रहे थे। का'का का पैर बारबार उसके कपड़े में उलझ जाता था जिससे वह गिर पड़ती थी।

"हे भगवान् फिर गिर पड़ी! जैसे ही वह गिरती तो उठती हुई

धकेल कर तुझे पिछली बार की तरह त्यागने को मजबूर कर देंगे, तब ? घर ? वाह !"

और उसने उस मनुष्य की तरह अपने कन्धे उचकाए जो अपना मूल्य समझता है और अपनी राय के ठीक होने के विषय में जिसकी निश्चित धारणा होती है। कात्का ने अंगड़ाते हुए जम्हाई ली और फाटक के एक कौने में ढेर हो गई।

"तू सिर्फ खामोश रह। अगर सर्दी लगती है तो आँखें मींच कर उसे बर्दाश्त कर। सर्दी दूर हो जायेगी। आजकल में ही मेरे और तेरे लिए गर्म कपड़ों का इन्तजाम हो जायेगा। मैं जानता हूँ कि मैं कर लूंगा। मैं यह चाहता हूँ कि—"

और यहाँ उसने अपनी उस महिला के हृदय में कल्पना और जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए कि वह क्या चाहता है, बात अधूरी छोड़ दी। मगर लड़की तनिक भी जिज्ञासा न दिखा और भी सिकुड़ कर सो गई। जिसे देख-कर मिश्का उसे कुछ चिन्तित सा होकर चेतावनी दी

"देखना, कहीं सो मत जाना ! ठन्ड से ठिठुर कर मर जायगी। सुना, कात्का !"

"डरो मत, नहीं मरूँगी," दाँत कटकटाते हुए कात्का बोली।

अगर मिश्का न होता तो कात्का सचमुच ठिठुर कर मर गई होती। मगर उस नन्हें से शैतान ने पक्का इरादा कर लिया था कि वह उस लड़की को बड़े दिन की शाम को पुराना जैसा कोई भी काम करने से रोकेगा।

"खड़ी हो। लेटने पर तो और भी ज्यादा ठन्ड लगती है। जब हम खड़े रहते हैं तो लम्बे चौड़े दिखाई पड़ते हैं और तब ठन्ड को हमें पकड़ने में बड़ी कठिनाई होती है। लम्बे चौड़े प्राणी ठन्ड के दाँत खट्टे कर देते हैं। मिसाल के लिए घोड़ों को ही ले लो। वे कभी ठिठुर कर नहीं मरते। घोड़ों से छोटे होते हैं इसलिए हमेशा ठिठुर कर मरते रहते हैं। मैं खड़ी हो जा। जब हमें पूरा एक रूबल मिल जायेगा तब ...न आज का दिन अच्छा कटा।"

कास्का, जो बुरी तरह कांप रही थी, उठकर खड़ी हो गई

"बहुत, बहुत ज्यादा ठंड है," लड़की फुसफुसाई

सचमुच ठंड बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। धीरे धीरे बरफ के बादल ऊपर ठोस हो गए थे जो कहीं बरफ के खम्भों के रूप में तथा कहीं हीरे जड़े विशाल परदों के रूप में दिखाई पड़ते थे। जब वे सड़क की बत्तियों के ऊपर होकर निकलते या रोशनी से चमकती हुई दूकानों की खिड़कियों के सामने होकर गुजरते तो बड़ा सुन्दर दृश्य उत्पन्न कर देते थे। वे विभिन्न प्रकार के रंगों से चमक रहे थे। उनकी ठंडी तीखी चमक आँखों में दर्द पैदा कर देती थी।

मगर इस दृश्य का सौन्दर्य मेरे नन्हे नायक और नायिका को आकर्षित करने में असमर्थ रहा।

"ओहो!" अपने खोल में से नाक बाहर निकालते हुए मिश्का बोला, "यह तो पूरा टैना का टैना आ रहा है! चल का का, उठ!"

"दयालु सज्जनो ····," लड़की सड़क पर दौड़ती हुई कांपती आवाज में चीखी।

"सबसे छोटा सिक्का, मिश्का," ने प्रार्थना की और फिर जोर से चीखा · "भाग कास्का।"

"ओ शैतान, जरा मेरे हाथ तो पड़ जाओ!" एक लम्बे पुलिस के सिपाही ने डपटा जो अचानक फुटपाथ पर आ निकला था।

मगर वे दिखाई भी नहीं पड़े। दोनों गेंदें लुढ़कती हुई क्षणभर में ही आँखों से ओझल हो गईं।

"भाग गए शैतान, "पुलिस वाला हिनहिनाया और सड़क की तरफ देखकर प्रसन्न होकर मुस्करा उठा।

दोनों नन्हे शैतान अपनी पूरी ताकत से दौड़ते और हंसते चले जा रहे थे। का का का पैर बारबार उसके कपड़े में उलझ जाता था जिससे वह गिर पड़ती थी।

"हे भगवान्, फिर गिर पड़ी!' जैसे ही वह गिरती तो हंसती हुई

कहती और भयभीत होकर पीछे की तरफ देखती। यह सब होते हुए भी वह हंस रही थी। "वह कहाँ है ?"

मिश्का हसी के मारे अपना पेट पकड़े राहगीरों को धक्के देते हुए भागता रहा जिसके लिये उसे कई बार करारे तमाचे और धक्के खाने पड़े।

"रहने दे······तुझे शैतान ले जाय······जरा इसे देखो तो सही ! ओ बेवकूफ ? देखो, फिर वह भाग छूटी ! कभी ऐसी अजीब बात और भी हुई थी ?"

कात्का के बारबार गिरने ने उसके उत्साह को और भी बढ़ा दिया।

"अब वह हमें कभी भी नहीं पकड़ सकेगा इसलिए धीरे धीरे चल। वह बुरा आदमी नहीं है। वह दूसरा, वह जिसने एक बार सीटी बजाई थी। एक बार मैं भाग रहा था कि अचानक रात के चौकीदार के पेट से जा टकराया। मेरा सिर उसके हथियार से टकरा गया था।"

"मुझे याद है। तुम्हारे इतना बड़ा गुमड़ा निकल आया था," इतना कहकर कात्का हंसी के मारे लोट पोट हो गई।

"अच्छा, अच्छा, इतना काफी है," मिश्का ने गम्भीरता के साथ उसे टोका। "मेरी बात सुन।" दोनों एक दूसरे की बगल में गम्भीर और उत्सुक होकर चलने लगे।

"वहाँ मैंने तुझसे झूठ बोला था। उस बदमाश ने मुझे दस न देकर बीस कोपेक दिए थे। और उससे पहले भी मैंने झूठ बोला था, जिससे कि तू यह न कहे कि घर चलने का समय हो गया। आज का दिन बहुत बढ़िया रहा। जानती है कि आज कुल कितना मिला ? एक रूबल और पाँच कोपेक।

इतना बहुत है।"

"काफी है न," कात्का ने सांस लेते हुए कहा, "इतने से तो तुम एक जोड़ा बूट खरीद सकते हो—कबाड़िये के यहाँ से।"

"बूट ! हुँ ! मैं तेरे लिए बूटों का एक जोड़ा चुरा लाऊँगा। जरा इन्तजार तो कर। कुछ दिनों से एक जोड़े पर मेरी निगाह है। जरा सबर कर उन्हें उड़ा दूंगा। मगर यह क्या चल होटल चलें, चलेगी न ?"

"चाची को फिर मालूम हो जायेगा और वह फिर मारेगी—जैसे कि उसने उस बार मारा था," कात्का ने शंकित होकर कहा मगर उसके स्वर से यह प्रतीत हो रहा था कि वह होटल की गर्मी और आनन्द के आकर्षण से अपने को वंचित नहीं करना चाहती।

"हमें मारेगी? नहीं, नहीं मारेगी। हम एक ऐसे होटल में चलेंगे जहाँ हमें कोई भी नहीं जानता होगा।"

"सच?" कात्का ने आशान्वित होकर धीरे से कहा!

"तो देख, अब हमें यह करना है: सबसे पहले तो हम आठ कोपेक का मसालेदार गोश्त, और पाँच कोपेक की सफेद डबल रोटी खरीदेंगे। यह कुल तेरह कोपेक की हुईं। फिर तीन २ कोपेक वाले दो मोटी रोटी के टुकड़े लेंगे—छः कोपेक। अब कुल उन्नीस कोपेक हुए। फिर छः कोपेक वाली चाय लेंगे: उसमें से चौथाई तेरे लिए होगी। जरा सोच तो सही! और तब हमारे पास बचेंगे—"

मिश्का रुका और खामोश हो गया। कात्का ने उसकी तरफ गम्भीर प्रश्नसूचक मुद्रा से देखा।

"यह तो बहुत ज्यादा खर्च हो जायेगा," लड़की ने सहमते हुए कहा।

"चुप रह! ठहर! यह इतना ज्यादा नहीं है। दर असल यह तो बहुत कम है। हम आठ कोपेक का माल और खायेंगे। कुल तेतीस कोपेक का। अगर हम ऐसा करें तो बिल्कुल ठीक रहेगा। आज 'बड़ा दिन' है। न? तो हमारे पास बचेगा" अगर यह सब मिलाकर चौथाई रूबल हो जाता है तो"दस कोपेक वाले आठ सिक्के" और अगर तेतीस होते हैं तो दस कोपेक वाले सात सिक्के और कुछ ऊपर बच रहता है। देखा कितना बच रहेगा? वह इससे ज्यादा की और क्या उम्मीद करती है, चुड़ैल कहीं की! चल! जल्दी कर!"

हाथ में हाथ डाला दोनों फुटपाथ पर उछलते कूदते चल दिए। बरफ उनकी आंखों में भरकर उन्हें अन्धा बनाए दे रही थी। रहरह कर बरफ का

बादल उन पर झपटता और उन दोनों के नन्हे शरीरों को बरफ की पारदर्शक चादर से ढक देता जिसे वे भोजन और गर्माहट पाने की जल्दी में तेजी से झटक कर आगे बढ़ जाते।

"सुनो," इस तरह तेजी से चलने के कारण हांपते हुए कात्का ने कहा," मैं इसकी परवाह नहीं करती कि तुम क्या सोचते हो लेकिन अगर चाची को मालूम होगया तो··· ···मैं तो कह दूंगी कि यह सब तुम्हारी करतूत थी। मुझे परवाह नहीं। तुम तो हमेशा भाग जाते हो और मुझे सब भुगतना पड़ता है वह हमेशा मुझी को पकड़लेती है और फिर मुझे तुमसे भी ज्यादा मार खानी पड़ती है। सुन लो, मैं तो यही कह दूंगी।"

"जा और कह दे," मिश्का ने सिर हिलाते हुए कहा, "अगर वह मुझे मारेगी तो मैं सब भुगत लूँगा। जा, अगर चाहती है तो जाकर कह दे!"

वह अपने को बहुत बहादुर अनुभव कर रहा था और सिर ऊँचा किए सीटी बजाता हुआ चलने लगा। उसका चेहरा पतला और आँखें मक्कारी से भरी हुई थीं जिनमें अक्सर ऐसा भाव झलक उठता था जो, उससे बड़ी उमर के व्यक्तियों में पाया जाता है। उसकी नाक लम्बी और जरा सी मुड़ी हुई थी।

'यह रहा होटल। दो हैं। किसमें चला जाय?"

"छोटे वाले में। मगर पहले मोदी के यहाँ चलो। आओ!"

जब उन्होंने जितना चाहिए उतना खाना खरीद लिया तो छोटे होटल में घुस गए। होटल में धुंआ, भाप और गहरी तीखी गन्ध भर रही थी। आवारा, चौकीदार और सिपाही वहाँ के अन्धकार पूर्ण वातावरण में बैठे हुए थे और अत्यधिक गन्दे वेटर मेजों के चारों तरफ चक्कर काट रहे थे। ऐसा लगता मानों वहा की प्रत्येक वस्तु चीख रही हो, गाना गा रही हो और गालियाँ बक रही हो।

मिश्का ने कौने में एक खाली मेज ढूंढ ली और फुर्ती से उसकी तरफ बढ़ा, अपना कोट उतारा और तब शराबखाने की तरफ चला चारों तरफ शर्मीली निगाहें डालते हुए कात्का भी अपना कोट उतारने लगी।

"मुझे थोड़ी सी चाय मिल जायेगी, महाशय?" मिश्का ने काउन्टर को अपने हाथों से थपथपाते हुए कहा।

"चाय? जरूर मिलेगी। अपने आप ले लो। जाकर थोड़ा सा गरम पानी ले आओ। ध्यान रखना कोई चीज टूटने न पाये। अगर तोड़ दी तो तुम्हारी तबियत झक कर दूंगा।"

मगर मिश्का वेटर को बुलाने दौड़ गया।

दो मिनट बाद, एक ठेला हाँकने वाले की सी मुद्रा में जिसने दिन में अच्छी कमाई की थी, सिगरेट बनाता हुआ मिश्का अपनी लड़की को बगल में बैठा हुआ था। कात्का उसकी तरफ प्रशंसात्मक दृष्टि से देख रही थी। उसके नेत्रों में यह देखकर आश्चर्य और भय का सा भाव छा रहा था कि मिश्का लोगों की भीड़ में भी कितनी आसानी से अपना काम बना आया था। होटल के कान फाड़ने वाले शोरगुल में कात्का की जान सी निकली जा रही थी और हर क्षण उसे यह भय लग रहा था कि किसी भी क्षण उन दोनों को कान पकड़ कर बाहर निकाल दिया जा सकता है। मगर उसने किसी भी दशा में मिश्का पर अपने इन भावों को प्रकट नहीं होने दिया। इसलिए उसने अपने दुरंगे बालों पर हाथ फेरा और पूर्ण रूप से यह दिखाने की कोशिश करने लगी कि इस सब का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा। ऐसा करने में उसके गन्दे गाल बारबार लाल हो उठते थे और अपनी परेशानी को छिपाने के लिए वह बारबार अपनी आँखें सिकोड़ रही थी। इसी बीच मिश्का गम्भीरता के साथ उसे तरीके बता रहा था और ऐसा करने में वह सिम्नी नामक एक कुली के स्वर और शब्दावली की नकल करने की कोशिश कर रहा था जो उसकी दृष्टि में शराब के नशे की दशा में भी अत्यन्त प्रभाव शाली प्रतीत होता था तथा चोरी में तीन महीने की सजा काट चुका था।

"तो मिसाल के तौर पर यह सोच लो कि तुम भीख माँग रही हो। [illegible] से कैसे भीख माँगोगी? इतना कहना ही काफ़ी नहीं है कि, 'रहम करो।' भीख माँगने का यह तरीका नहीं। तुम्हें करना यह चाहिए

बादल उन पर झपटता और उन दोनों के नन्हे शरीरों को बरफ की पारदर्शक चादर से ढक देता जिसे वे भोजन और गर्माहट पाने की जल्दी में तेजी से झटक कर आगे बढ़ जाते।

"सुनो," इस तरह तेजी से चलने के कारण हांपते हुए कात्क्या ने कहा," मैं इसकी परवाह नहीं करती कि तुम क्या सोचते हो लेकिन अगर चाची को मालूम होगया तो......मैं तो कह दूंगी कि यह सब तुम्हारी करतूत थी। मुझे परवाह नहीं। तुम तो हमेशा भाग जाते हो और मुझे सब भुगतना पड़ता है वह हमेशा मुझी को पकड़लेती है और फिर मुझे तुमसे भी ज्यादा मार खानी पड़ती है। सुन लो, मैं तो यही कह दूंगी।"

"जा और कह दे," मिश्का ने सिर हिलाते हुए कहा, "अगर वह मुझे मारेगी तो मैं सब भुगत लूँगा। जा, अगर चाहती है तो जाकर कह दे!"

वह अपने को बहुत बहादुर अनुभव कर रहा था और सिर ऊँचा किए सीटी बजाता हुआ चलने लगा। उसका चेहरा पतला और आँखें मक्कारी से भरी हुई थीं जिनमें अक्सर ऐसा भाव झलक उठता था जो, उससे बड़ी उमर के व्यक्तियों में पाया जाता है। उसकी नाक लम्बी और जरा सी मुड़ी हुई थी।

'यह रहा होटल। दो हैं। किसमें चला जाय?"

"छोटे वाले में। मगर पहले मोदी के यहाँ चलो। आओ!"

जब उन्होंने जितना चाहिए उतना खाना खरीद लिया तो छोटे होटल में घुस गए। होटल में धुंआ, भाप और गहरी तीखी गन्ध भर रही थी। आवारा, चौकीदार और सिपाही वहाँ के अन्धकार पूर्ण वातावरण में बैठे हुए थे और अत्यधिक गन्दे वेटर मेजों के चारों तरफ चक्कर काट रहे थे। ऐसा लगता मानों वहा की प्रत्येक वस्तु चीख रही हो, गाना गा रही हो और गालियाँ बक रही हो।

मिश्का ने कोने में एक खाली मेज ढूंढ ली और फुर्ती से उसकी तरफ बढ़ा, अपना कोट उतारा और तब शराबखाने की तरफ चला चारों तरफ शर्मीली निगाहें डालते हुए कात्का भी अपना कोट उतारने लगी।

"मुझे थोड़ी सी चाय मिल जायेगी, महाशय ?" मिश्का ने काउन्टर को अपने हाथों से थपथपाते हुए कहा।

"चाय ? जरूर मिलेगी। अपने आप ले लो। जाकर थोड़ा सा गरम पानी ले आओ। ध्यान रखना कोई चीज टूटने न पाये। अगर तोड़ दी तो तुम्हारी तबियत झक कर दूंगा।"

मगर मिश्का वेटर को बुलाने दौड़ गया।

दो मिनट बाद, एक ठेला हाँकने वाले की सी मुद्रा में जिसने दिन में अच्छी कमाई की थी, सिगरेट बनाता हुआ मिश्का अपनी लड़की की बगल में बैठा हुआ था। काल्का उसकी तरफ प्रशंसात्मक दृष्टि से देख रही थी। उसके नेत्रों में यह देखकर आश्चर्य और भय का सा भाव छा रहा था कि मिश्का लोगों की भीड़ में भी कितनी आसानी से अपना काम बना आया था। होटल के कान फाड़ने वाले शोरगुल में काल्का की जान सी निकली जा रही थी और हर क्षण उसे यह भय लग रहा था कि किसी भी क्षण उन दोनों को कान पकड़ कर बाहर निकाल दिया जा सकता है। मगर उसने किसी भी दशा में मिश्का पर अपने इन भावों को प्रकट नहीं होने दिया। इसलिए उसने अपने दुरंगे बालों पर हाथ फेरा और पूर्ण रूप से यह दिखाने की कोशिश करने लगी कि इस सब का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा। ऐसा करने में उसके गन्दे गाल बारबार लाल हो उठते थे और अपनी परेशानी को छिपाने के लिए वह बारबार अपनी आँख सिकोड़ रही थी। इसी बीच मिश्का गम्भीरता के साथ उसे तरीके बता रहा था और ऐसा करने में वह सिम्नी नामक एक कुली के स्वर और शब्दावली की नकल करने की कोशिश कर रहा था जो उसकी दृष्टि में शराब के नशे की दशा में भी अत्यन्त प्रभाव शाली प्रतीत होता था तथा चोरी में तीन महीने की सजा काट चुका था।

"तो मिसाल के तौर पर यह सोच लो कि तुम भीख माँग रही हो। [illegible] तुम कैसे भीख माँगोगी ? इतना कहना ही अच्छा नहीं है कि, '[illegible] [illegible] करो।' भीख माँगने का यह तरीका नहीं। तुम्हें करना यह चाहिये

कि उस व्यक्ति की टाँगों में घुस जाओ और उसे डरा दो कि वह कहीं तुम्हारे ऊपर न गिर पड़े।"

"मैं ऐसा ही करूँगी," काल्का ने अधीन सी होकर स्वीकृति भरी।

"ठीक" उसके साथी ने इसे पसन्द करते हुए सिर हिलाया। "इसी तरह करना चाहिये। और फिर मिसाल के लिये चाची अनफिसा को ले लो। चाची अनफिसा क्या है। सबसे पहले तो वह पियक्कड़ है। और साथ ही ..."

और मिश्का ने बिना किसी झिझक के बता दिया कि चाची अनफिसा और क्या है।

काल्का ने अपनी चाची की विशेषताओं के प्रति अपनी पूरी सहमति जताते हुए सिर हिलाया।

"तू उसकी बात नहीं मानती, यह अच्छी बात नहीं है। मिसाल के तौर पर तुझे तो यह कहना चाहिये—"चाची मैं अच्छी लड़की बनूँगी, तुम जो कुछ कहोगी। उसे मानूँगी ..." दूसरे शब्दों में उनकी जरा सी खुशामद कर लो और फिर जो मनचाहे वह करो। यह तरीका है।

मिश्का खामोश हो गया और शानदार ढङ्ग से अपना पेट खुजाने लगा जैसे कि सिम्नी व्याख्यान देने के बाद खुजाया करता था। अब जबकि कहने के लिये और कोई भी विषय नहीं रहा तो उसने धीरे से सिर हिलाया और बोला

"अच्छा तो खाना शुरू करें।"

शुरू करो," कान्का ने हामी भरते हुए सिर हिलाया जो कुछ देर से गोश्त और रोटी को भूखी निगाहों से देख रही थी।

और वे दोनों उस गीलन भरे धुँधली लालटेनों से प्रकाशित होटल के अँधेरे में खाना खाने लगे। होटल में फूहड़ गीत और गन्दी गालियों की गूँज भर रही थी। दोनों मन लगा कर, चुन चुन कर, धीरे धीरे, सच्चे विलासी लोगों की तरह खाते रहे। और अगर कान्का तहजीब भूलकर, लालची की तरह इतना बड़ा कौर मुँह में भर लेती जिससे उसके गाल फूलकर ठतेअरो

आँखे बाहर को निकलने की सी लगतीं तो गम्भीर मिश्का नाराज होकर कहता'

"इतनी तेजी से भागी जा रही हो, मैडम।"

जिसे सुन कर उसे बड़े कौर को तेजी से निगलने के प्रयत्न में कात्का की दम घुटने लगती और यह मेरी कहानी का अन्त है। मुझे इस बात का तनिक भी पछतावा नहीं है कि यह बताऊँ कि इन बच्चों ने वह शाम कैसे समाप्त की। तुम इस बात का पूरा विश्वास कर सकते हो कि उनका ठिठुर कर मर जाने का कोई भय नहीं है। वे जीवित हैं। आखिर मैं उन्हें ठण्ड से ठिठुरा कर क्यों मार डालूँ।

मैं इस बात को सबसे बड़ी बेवकूफी समझता हूँ कि उन बच्चों को ठण्ड में ठिठुरा कर मार डालूँ जिन्हे एक दिन इस तरह मरना ही है जो इससे अधिक स्वाभाविक और साधारण ढङ्ग होगा।